श्री विजयलक्ष्मीसूरि विरचित

श्री

उपदेश प्रासाद भाषांतर.

विभाग १ लो.

(स्तंभ १ थी ४)

व्याख्यान ६१.

समकितना ६७ बोल उपर अनेक कथाओ संयुक्त.

भव्यजंतुओने अत्यंत उपयोगी जाणीने गद्यपद्यात्मक संस्कृत ग्रंथनुं गुर्जर गिरामां भाषांतर करी

छपावी प्रसिद्ध करनार.

श्री जैन धर्म प्रसारक सभा

भावनगर.

वीर संवत २४३७ विक्रम संवत १९६७ शाक १८३३

भावनगर—आनंद प्रीन्टींग प्रेस.

किंमत रु. १-८-०

शार्दूल विक्रीडित

जो जन्या जयवारिधौ निरवधौ नर्वोऽभवत् सभ्रमात् ।
भ्राम्यन्त: कथमप्यवाप्य सुकृतान्मानुष्यजन्माद्भुत ।
तत्साफल्यकृते विधत्त विनयेनाराधन साधन ।
श्री सिद्ध परमेष्ठिनामविरत शर्मद्रुमाम्भोधरम् ।

હે ભવ્ય જીવો ! અપાર આ ભવ સમુદ્રમાં જન્મ જરાની પરંપરામાં ભમતા પુણ્યના ઉદયથી મનુષ્ય જન્મ પામીને તેને સફળ કરવા માટે જલદીથી સુખરૂપ વૃક્ષને મેઘ સમાન પંચ પરમેષ્ઠિનું વિનય વડે આરાધન કર ।

ઉપદેશપ્રાસાદ નામ્યા

प्रस्तावना

आ उपदेशप्रासाद ग्रंथ श्री विजयलक्ष्मीसूरिए अत्यंत उपकारक रच्यो छे. तेनी अंदर सख्याबंध कथाओ दाखल करवा उपरांत शास्त्राधार पण पुष्कळ दाखल कर्या छे. मध्यम बुद्धिवाळा वांचकोने माटे तो आवा ग्रंथनी खास आवश्यकता छे. आ ग्रंथने अत्युपयोगी जाणीने तेनुं भाषांतर कराववानुं बहु वर्ष अगाउ अमे शरु कर्युं ते दरम्यान आ पहेलो भाग बीजा तरफथी बहार पाडवानी तैयारी सांभळवामां आवता तेना प्रसिद्ध कर्ताने लखी छपायेल भाग बाध्या विना मंगाव्यो तो तेनी अंदर अक्षरो उपरांत अर्थ ने भावार्थनी पण पारावार भूलो जोइ तेमानी केटलीक लखी मोकली ते तेमणे पोतानी बुकनी साथेज छपावीने प्रगट करी परंतु वांचनाराओ दरेक स्थळ वांचता शुद्धिपत्र तरफ जोता नथी तेथी तेनो पूरतो उपयोग थइ शक्यो नहीं. त्यार पछी अमे बीजो भाग तेनी साथे मळीने छपाव्यो अने त्यार पछीना त्रणे भागो स्वतंत्र छपावी प्रगट कर्या. पहेला भागनी शुद्ध आवृत्ति करवा घणी चीवट हती छतां ग्रंथ पूरो कर्या पछी ते काम हाथ धरवानो विचार राखेलो होवाथी ते विचार आजे पार पड्यो छे. ग्रंथ पूरो छपाइ गयो छे ने आ पहेलो भाग पण शुद्ध स्थितिमां प्रगट कर्यो छे. प्रथम छपायेल आ भागनी बुक जो के हालमां भाग्येज मळी शकती नथी परंतु जेमणे ते खरीदेल छे तेमने मेळवी जोता आमां ने तेमां केटलो तफावत छे ते समजी शकाय तेम छे

आ विभागमां प्रथमना चार स्तंभनुं भाषांतर समावेलुं छे. तेमां ६१ व्याख्यान आवेला छे. आ भागमां एकलो समकितनो विषयज समावेलो छे प्रारंभमां मंगळाचरण करी मंगळ करवानी आवश्यकता सिद्ध करी पहेला व्याख्यानमां जिनेश्वरना ३४ अतिशयनुं वर्णन कर्युं छे ते वांचवा योग्य छे. त्यार पछीना त्रण व्याख्यानमां समकितना भेदो विगेरे बतावामां आवेल छे. ते साथे दरेक व्याख्यानमां एक एक कथा पण आपवामां आवी छे. पांचमा व्याख्यानथी समकितना ६७ भेदनी व्याख्या शरु थाय छे. ए ६७ भेदना वर्णन उपर एकंदर ५७ व्याख्यान छे ने तेनी अंदर ६१ कथाओ आपवामां आवेली छे. ते कोष्टकनी रीते आ नीचे बतावामां आवेल छे. शरुना ४ व्याख्यान समकितना भेदो विगेरे बताववा माटे छे. तेमां प्रथमना ३ व्याख्यानमां समकितना रोचक कारक ने दीपक

ख्या त्रण भेद छे, तेनु वर्णन करी तेनी उपर त्रण कथाओ पण आपेली छे. छे-ल्लु ने वधारानु (६१ मु) व्याख्यान समकितना वस्तुस्वरूप माटे छे. ते खास वांचवा योग्य छे. आ व्याख्यान वधारानु एटला माटे छे के आ ग्रंथनु नाम उपदेश-रूपी प्रासाद एटले महेल छे, तेमां स्तंभ (थांभलाओ) २४ राख्या छे, ते दरेक स्तंभमां १५-१५ व्याख्यानो आपवामां आव्या छे, एटले एकंदर २४ स्तंभमां मळीने वर्षना दिवस जेटला अर्थात् ३६० व्याख्यानो छे. आनी मतलब एवी छे के व्याख्यान कर्त्ता मुनि दररोज एक एक व्याख्यान वांचे तो एक वर्ष सुधी पहोंचे एवो आ ग्रंथ छे. आ अपेक्षाए ४ स्तंभमां ६० व्याख्यान जोइए तेमां ६१ मु दाखल कर्यु छे ते वधारानु छे. जेथी मांते पण ३६० ने बदले ३६१ व्या-ख्यान करवामां आव्या छे

समकितना ६७ भेद	तेना पर व्याख्यान	तेमां आवेल कथाओ.
४ श्रद्धा.	४ व्याख्यान	४ कथाओ
३ लिंग	३ ,,	३ ,,
१० विनय	३ ,,	३ ,,
३ शुद्धि	४ ,,	४ ,,
५ दूषण	५ ,,	७ ,,
८ प्रभावक	१२ ,,	१३ ,,
५ भूषण.	५ ,,	७ ,,
५ लक्षण	५ ,,	६ ,,
६ यतना	२ ,,	२ ,,
६ आगार	६ ,,	८ ,,
६ भावना.	१ ,,	१ ,
६ स्थान.	३ ,,	३ ,,
६७	५३	६१

आ विभागमां आवेला ६१ व्याख्यानो अने तेमां आवेली एकंदर ६७ कथाओनी अंदर खास करीने प्रारंभना अने मांतना चार चार व्याख्याननी अंदर बतावेलु समकितनु स्वरूप ने तेना भेदो विगेरे लक्ष पूर्वक वांचवा योग्य छे. तदुपरांत छ स्थान उपरना ३ व्याख्यानमां गौतमादिक गणधरनी ३ कथाओ छे ते पण खास वांचवा योग्य छे तेनी अंदर वेदनुक तत्वज्ञान समाचेलुं छे सातमा व्याख्यानमां आवेली जमालीनी कथामां ने १९ मा व्याख्यानमां आवेल बीजा

निह्नवनी कथामां पण बहु समजवा जेवु छे. कथाना रसीको माटे आठ प्रजावकना द्वार उपरना १७ व्याख्यानमा समावेल १३ कथाओ अने काकजंघ कोकाशनी कथा विगेरे खास वाचवा लायक छे. एकंदर रीते विचारीए तो आ आखो विजाग वांचवा लायक छे. आ विजागमा प्रथम खम[1] पूर्ण थाय छे.

ग्रंथने उपयोगी बनाववा माटे ग्रंथकारे अनेक शास्त्रोनी जे जे सहादतो आपी छे ने प्रस्तावीक जे जे श्लोको आपेला छे ते तमाम अर्थ साथे आ जाषांतरनी अदर पण आपवामा आवेला छे जेथी आ जाषांतर बहु उपयोगी बनेल छे.

पांचे विजागनी अदर कया कया विषयो दाखल करेला छे ते अमे पांचमा विजागनी प्रस्तावनामा तमाम बतावेल छे. ते साथे पांचे जागमां आवेल तमाम कथाओनु लीस्ट अक्षरानुक्रमे छेवटना विजागनी माते आपवामां आवेल छे

आ ग्रथकर्त्ताना चरित्र सबधी वधारे हकीकत न मळी शकवाथी अमे ते संबंधी विशेष लखी शक्या नथी परंतु जो कोइ मुनिमहाराज के गृहस्थ ते संबधी खबर आपशे तो अमे जुदुं पण तेमनु चरित्र बहार पाडवा इच्छीए छीए.

समकित धर्म मात्रनु मूळ छे.[2] समकित शिवायनो धर्म ते अक विनाना शून्य जेवो छे. तेथी समकितनी अजिलाषा प्रथम कर्त्तव्य छे आ विभाग खास समकितना अजिलाषीने माटेज छे, तेथी तेमणे आ विजागनो लाज लेवानी खास जरर छे.

प्रारंजमा वधारे लखीने उत्सुक वांचनाराओने न रोकतां तेमनी साद्यत वांचवानी लागणीने तेज थवा माटे अनुक्रमणिका वांची जवानी जलामण करी आ टुंकी प्रस्तावना समाप्त करवामा आवे छे. परम कृपाळु परमात्मा पासे प्रार्थना करवामा आवे छे के तेमनी कृपाथी आ विजाग अनेक जव्य जीवोने समकितनी प्राप्तिना निमित्तभूत थाओ अने अमारो प्रयास सफळ निवडो. तथास्तु.

आश्विन.
संवत १९६७.

श्री जैनधर्म प्रसारक सजा,
जावनगर.

---

१ खड एटले महेलना विभाग-रूम-हाल समकितना स्वरूप सबंधी पहेला खड आ विभागमां पूर्ण करेल छे ते प्रवेशक रूम छ २ आनी पुष्टि माटे जुआ व्याख्यान ५४ मु -

स्थंभ १ थी ४. व्याख्यान ६१ नी अनुक्रमणिका.

कां

स्तंभ ३ जो.

स्थंभ ४ थो

સ્તંભ ૪ થો સંપૂર્ણ.

॥ श्री उपदेशप्रासाद भाषान्तर ॥

। स्तंभ पहेलो ।



व्याख्यान १ लु.

मगळाचरण.

स्वस्तिश्रीदो नाभिभूर्विश्वबन्धु–र्गीर्वाणार्थ्यो वस्तुतस्तत्त्वसिन्धुः
भास्वद्दीप्त्यानिर्जितादित्यचन्द्र,ःसत्त्वानव्यादादिमोऽयजिनेन्द्र. १

भावार्थ—" जे नाभिराजाना पुत्र कल्याण अने लक्ष्मीने आपनारा छे, समग्र विश्वने बन्धु समान छे, परमार्थथी तत्त्वज्ञानना सागर समान छे, जेनी देवताओ प्रार्थना करे छे, अने जेणे पोतानी देदीप्यमान कान्तिथी सूर्यचन्द्रने जीतेला छे एवा आ प्रथम जिनेन्द्र (ऋषभस्वामी) सकल जीवोनु रक्षण करो. "

श्रीभूपनाभिजनपान्वयपुष्करस्थे, चिद्रूपदीधितिगणै रविरेव योऽभूत्।
स्वीयौजसा शमितमोहतमःसमूहो,कल्याणवर्णविभुरस्तुविभूतये सः२

भावार्थ—" पृथ्वीनु पालन करनार श्रीमान् नाभिराजाना वंशरूपी आकाशमा जे (प्रभु) सम्यग्ज्ञान रूपी किरणोना समूहवडे सूर्य समान थया, अने जेमणे पोताना तेजथी मोहरूपी अन्धकारना समूहनो नाश कर्यो ते सुवर्ण समान कान्तिवाळा प्रभु अमारी संपत्तिनी वृद्धि माटे थाओ. "

मोक्षलक्ष्मीना अद्वितीय हेतु रूप, त्रण लोकनी लक्ष्मीना सद्वितीय[1] हेतुरूप, आत्मस्वरूपने प्रकट करनार अने गम्भीरतारूप लक्ष्मीने उत्पन्न करवामा सागर समान एवा श्री विश्वसेन राजाना पुत्र श्री शान्तिनाथ स्वामीनो हु आश्रय करु छु.

मोहरूपी असुरनो नाश करवामा नारायण (विष्णु) जेवा अने कामदेवनो नाश करवामा महादेव (शंकर) जेवा तथा मनने जीतनारा तेमज पाणिग्रहण

१ बीजा हेतु साथे प्रगट आत्मरूप

करवाना मीषे करीने तिर्यंचोए दया करवान माटेज रागा रज्या एवा श्री नेमि नाथ प्रभु अमोने सुख आपनार थाओ

शंखने धारण करनार (शंखेश्वर) कृष्णे जेनी प्रार्थना करी छे, तथा जे नावना पण नाथ छे एवा हे वामा राणीना पुत्र शंखेश्वर पार्श्वनाथ स्वामी! तमे जयवंता वर्तो ए प्रमाणे जिनेश्वर थकी त्रिपदीरूप वर्णने पामेला एवा गणधरोए जेमनी स्तुति करी छे एवा तथा जे पार्श्वनाथ स्वामीना उपनामनी संख्या आतरिक, नवपल्लव विगेरे नामोवडे जिनतनु छंद एना प्रमाण जेटली एटले एक हजार ने आठनी करेली जगत् प्रसिद्ध छे ते सुखदायी संख्यानी हु हर्ष पूर्वक स्तुति करु छु.

जे सिद्धार्थराजाना पुत्र अनंतज्ञान रूपी कल्पवृक्षना नन्दनवन समान छे, संसारना तापने नाश करवामा बावनाचन्दन जेवा छे, जेमणे अनिंदित वचनवडे विश्वने विकसित कर्यु छे, अने जेमणे पोताना (तीर्थंकरना) भवनी पूर्वना त्रीजा जवमा अगियार लाख अंशी हजारने पाचसो मासक्षमण कर्या छे ते श्री वीरस्वामी जयवंता वर्तो

भव्य प्राणीओने अर्चन करवा योग्य, कामदेवने जीतनारा, स्वयंभू तथा संसारनो नाश करनारा एवा श्री अजि नाथ संभवनाथ विगेरे तीर्थंकरो प्रथमना वक्ता अने कर्ता विगेरे शुभ आत्मावाळा सत्पुरुषोने सुखना कारणभूत थाओ.

प्रथम पंचपरमेष्ठीने नमस्कार करीने हु आ उपदेशप्रासादनी वृत्ति तेमा वर्षना दिवस प्रमाणे त्रणसोने साठ व्याख्यानो कहेवा होवाथी अब्ददिनपरिमिता नामनी करु छु. आ स्थळे हु प्रथम त्रण प्रणव (ॐकार) स्थापीने पछी त्रण आकाशबीज (ह्रीं) स्थापीने अने पछी सरस्वतीबीज (ऐं)ने स्थापीने—ए रूप मंत्रने नमन करीने आ शास्त्र शरु करु छु

जेम बाळकनु कालु घेलु बोलेलु वचन पण पितानी पासे शोभे छे, तेम आ मारु प्रमाद रूपी वचन पण श्रुतधरोनी पासे सत्यपणाने पामो. जेम कोइ तृषातुर माणस क्षीर सागरमांथी थोडु जळ लइने पण पोतानी तृषा दूर करे छे, तेम हु पण शास्त्रोमांथी थोडु थोडु ग्रहण करीने आ व्याख्या शरु करु छु, तेथी हु निंद्य नहा थाउ आ ग्रंथमा प्रथम एक एक श्लोक कहीने तेना उपर गद्यमां

एक एक दृष्टान्त आपेलु छे, तेथी तेनी संख्या पण वर्षना दिवस प्रमाणे त्रणसो ने साठनी थयेली छे.

दरेक ग्रंथनी शरुआतमा नमस्कार[1] रूप, ग्रन्थनी वस्तुनु प्रदर्शन[2] करवा रूप अथवा आशीर्वाद[3] रूप मंगळ विघ्नना नाश माटे तथा शिष्ट जनना आचारनु पालन करवा माटे करवु जोइए. कह्यु छे के—

श्रेयांसि बहुविघ्नानि, भवन्ति महतामपि ।

अश्रेयसि प्रवृत्तानां, क्वापि यान्ति विनायकाः ॥ १ ॥

भावार्थ—" महापुरुषोने पण श्रेयना कार्यमा घणा विघ्नो आवे छे, अने अशुभ कार्यमा प्रवर्तेला माणसोना विघ्नो दूर जता रहे छे. "

तेथी करीने ग्रन्थना आरंभमां विघ्नसमूहनी शान्ति करवा माटे उपर कहेलु मंगळ शास्त्रना प्रारंभमा, मध्यमा अने अन्तमा करवाने इच्छेलु छे. अहीं कोइ शिष्य प्रश्न करे के " स्याद्वाद धर्मना वर्णन रूप आ ग्रन्थ होवाथी समग्र ग्रन्थज मंगळ रूप छे, तो पछी शास्त्रना आरंभ, मध्य अने अन्तमा मंगळ करवानी शी जरुर छे ? केमके मंगळ करवानु काइ पण प्रयोजन रहेतु नथी." आ प्रश्ननुं गुरुमहाराज समाधान करे छे के " हे शिष्य ! 'मंगळ करवानु काइ पण प्रयोजन नथी' ए जे तें मंगळ नहीं करवामा हेतु (कारण) आप्यो ते हेतु असिद्ध छे कारण के—शिष्यजनो निर्विघ्नपणे ग्रन्थ पूर्ण करी शके (अभ्यास करी शके), तेटला माटे आरंभमा मंगळ करवु जोइए, तेज ग्रन्थ शिष्यजनोना हृदयमा सुदृढ थवा माटे मध्यमा मंगळ करवु जोइए, अने तेज ग्रन्थ शिष्य प्रशिष्यादिक परंपराए करीने सर्वने उपकारी थवा माटे अन्त्य मंगळ करवानी जरुर छे. माटे तें मंगळ नहीं करवामा बतावेलु कारण असिद्ध छे. ते विषे प्रशंसनीय भाष्य रूपी धान्य उत्पन्न करवामा पृथ्वी समान श्री जिनभद्रगणि महाराजे कह्यु छे के—

तं मंगलमाईए, मज्झे पज्जंतए य सत्थस्स ।

पढमं सत्थत्थाविग्घ, पारं गमनाय निद्दिट्ठं ॥१॥ इत्यादि

---

१ जेमा इष्टदेवताने नमस्कार करेलो होय ते. २ जेमा प्रस्तुत ग्रंथनो विषय देखाडवामा आवे ते. ३ जेमा आशीर्वादनु वचन कहेवामा आवे ते

करवाना मीषे करीने तिषचापर दया करनार पाचेज राजा जेनला एवा श्री नेमि नाथ प्रभु अमोने सुख आपनार थाओ।

शंखने धारण करनार (शखेश्वर) कृष्णे जेनी प्रार्थना करी छे, तथा जे नाथना पण नाथ छे एवा हे वामा राणीना पुत्र शखेश्वर पार्श्वनाथ स्वामी ! तमे जयवता वर्तो ए प्रमाणे जिनेश्वर थकी त्रिपदीरूप वर्णने पामेला एवा गणधरोए जेमनी स्तुति करी छे एवा तथा ज पार्श्वनाथ स्वामीना उपनामनी संख्या अन्तरिक्ष, नवपल्लव विगेरे नामोरूपे जिनतत्तु लक्षणना प्रमाण जेटली एटले एक हजार ने आठनी करेली जगत् प्रसिद्ध छे ते सुखदायी सत्पाती हु हर्ष पूर्वक स्तुति करु छु

जे सिद्धार्थराजाना पुत्र अनंतज्ञान रूपी कल्पवृक्षना नन्दनवन समान छे, ससारना तापने नाश करवामा बावनाचदन जेवा छे, जेमणे अनिदित वचनवडे विश्वने विकसित कर्यु छे, अने जेमणे पोताना (तीर्थंकरना) भवनी पूर्वेना त्रीजा भवमा अगियार लाख अेशी हजारने पाचसो मासक्षमण कर्या छे ते श्री वीरस्वामी जयवता वर्तो

भव्य प्राणीओने अर्चन करवा योग्य, कामदेवने जीतनारा, स्वयंभू तथा संसारनो नाश करनारा एवा श्री अजि नाथ सभवनाथ विगेरे तीर्थंकरो अथवा वक्ता अने कर्ता विगेरे शुभ आत्मावाळा सत्पुरुषोने सुखना कारणभूत थाओ.

प्रथम पचपरमेष्ठीने नमस्कार करीने हु आ उपदेशप्रासादनी वृत्ति तेमा वर्षना दिवस प्रमाणे त्रणसोने साठ व्याख्यानो कहेला होवाथी अब्ददिनपरिमिता नामनी कर छु आ स्थळे हु प्रथम त्रण प्रणव (ॐकार) स्थापीने पछी त्रण आकाशबीज (ह्रीं) स्थापीने अने पछी सरस्वतीबीज (ऐं)ने स्थापीने—ए रूप मत्रने नमन करीने आ शास्त्र शरु करु छु

जेम बाळकनु काळु घेलु बोलेलु वचन पण पितानी पासे शोभे छे, तेम आ मारु प्रलाप रूपी वचन पण श्रुतधरोनी पास सत्यपणाने पामशे जेम कोइ तृषातुर माणस क्षीर सागरमाथी थोडु जळ लइने पण पोतानी तृषा दूर करे छे, तेम हु घणा शास्त्रोमाथी थोडु थोडु ग्रहण करीने आ व्याख्या लखु छु, तेथी हु निद्य नहीं थाउ. आ ग्रथमा प्रथम एक एक श्लोक कहीने तेना उपर गद्यमां

एक एक दृष्टान्त आपेलुं छे; तेथी तेनी संख्या पण वर्षना दिवस प्रमाणे त्रणसो ने साठनी थयेली छे.

दरेक ग्रंथनी शरूआतमां नमस्कार[1] रूप, ग्रन्थनी वस्तुनुं प्रदर्शन[2] करवा रूप अथवा आशीर्वाद[3] रूप मंगळ विघ्नना नाश माटे तथा शिष्ट जनना आचारनुं पालन करवा माटे करवुं जोइए. कह्युं छे के—

श्रेयांसि बहुविघ्नानि, भवन्ति महतामपि ।

अश्रेयसि प्रवृत्तानां, क्वापि यान्ति विनायकाः ॥ १ ॥

भावार्थ—" महापुरुषोने पण श्रेयना कार्यमां घणा विघ्नो आवे छे, अने अशुभ कार्यमां प्रवर्तेला माणसोना विघ्नो दूर जता रहे छे. "

तेथी करीने ग्रन्थना आरंभमां विघ्नसमूहनी शान्ति करवा माटे उपर कहेलुं मंगळ शास्त्रना प्रारंभमां, मध्यमां अने अन्तमां करवाने इच्छेलुं छे. अहीं कोइ शिष्य प्रश्न करे के " स्याद्वाद धर्मना वर्णन रूप आ ग्रन्थ होवाथी समग्र ग्रन्थज मंगळ रूप छे, तो पछी शास्त्रना आरंभ, मध्य अने अन्तमां मंगळ करवानी शी जरुर छे? केमके मंगळ करवानुं काइ पण प्रयोजन रहेतुं नथी." आ प्रश्ननुं गुरुमहाराज समाधान करे छे के " हे शिष्य ! 'मंगळ करवानुं काइ पण प्रयोजन नथी' ए जे तें मंगळ नहीं करवामां हेतु (कारण) आप्यो ते हेतु असिद्ध छे. कारण के—शिष्यजनो निर्विघ्नपणे ग्रन्थ पूर्ण करी शके (अभ्यास करी शके), तेटला माटे आरंभमां मंगळ करवुं जोइए, तेज ग्रन्थ शिष्यजनोना हृदयमां सुदृढ थवा माटे मध्यमां मंगळ करवुं जोइए, अने तेज ग्रन्थ शिष्य प्रशिष्यादिक परंपराए करीने सर्वने उपकारी थवा माटे अन्त्य मंगळ करवानी जरुर छे. माटे तें मंगळ नहीं करवामां बतावेलुं कारण असिद्ध छे. ते विषे प्रशंसनीय भाष्य रूपी धान्य उत्पन्न करवामां पृथ्वी समान श्री जिनभद्रगणि महाराजे कह्युं छे के—

तं मंगलमाईए, मज्झे पज्जन्तए य सत्थस्स ।

पढम सत्थत्थाविग्घ, पार गमनाय निद्दिट्ठं ॥१॥ इत्यादि

---

१ जेमां इष्टदेवताने नमस्कार करेलो आवे. २ जेमां प्रकृत ग्रन्थनो विषय देखाडेलो आवे ते ३ जेमां आशीर्वादनुं वचन कहेलुं आवे ते

भावार्थ—"शास्त्रना प्रारम्भमां, मध्यमां अने अन्तमां मंगळ करवुं जोइए. तेमां प्रथम मंगळ शास्त्र अने तेना अर्थनो निर्विघ्न पार पामवा माटे कहेलुं छे." इत्यादि.

तेमज हे शिष्य ! शिष्टजनोनो आ मंगळ करवा रूप आचार पण अवश्य जोवामां आवे छे. शिष्ट कोण कहेवाय छे ? शास्त्र रूप सागरना पारने पामवा माटे जेओ शुभ व्यापारमां प्रवर्त्ते ते शिष्टजनो कहेवाय छे. कह्युं छे के—

शिष्टानामयमाचारो, यत्ते सत्यज्य दूषणम् ।
निरन्तर प्रवर्तन्ते, शुभ एव प्रयोजने ॥ १ ॥

भावार्थ—शिष्टजनोनो आ आचारज होय छे के तेओ दूषणनो त्याग करीने निरन्तर शुभ कार्यमांज प्रवर्ते छे.

वळी बुद्धिमान पुरुषो फळनी इच्छावाळाज होय छे, केमके प्रयोजन विना तो मार्गमां पडेली काग्डाळी मांरडीनुं उपमर्दन करवानी जेम निष्फळ प्रयत्न थाय छे, तेथी तेवी शंका टाळवा माटे, बुद्धिमान पुरुषोने आ ग्रंथना पठनपाठनमां प्रवृत्त करवा माटे तथा उपद्रवोनो नाश करवा माटे ग्रंथकार इष्ट देवताने नमस्कार करवा पूर्वक संबंध, अभिधेय अने प्रयोजनने सूचवनार प्रथम श्लोक कहे छे—

ऐन्द्रश्रेणिनतं शान्तिनाथमतिशयान्वितम् ।
नत्वोपदेशसद्माख्यं ग्रन्थ वक्ष्ये प्रबोधदम् ॥ १ ॥

शब्दार्थ—इन्द्रोना समूहरूपे वंदना करायेला अने अतिशयोथी युक्त एवा शान्तिनाथ स्वामीने नमस्कार करीने हुं प्रबोधने आपनारा आ उपदेशप्रासाद नामना ग्रन्थने कहुं छुं

विस्तरार्थ—हुं उपदेशप्रासाद नामना ग्रन्थने कहुं छुं. ए रीते क्रियापदनो संबंध छे तेमां 'उपदेश' एटले हमेशां व्याख्यान आपवाने योग्य एवा त्रणसो ने एकसठ दृष्टान्तोनुं 'सद्म' एटले स्थान (महेल-प्रासाद), ते नामनो ग्रन्थ हुं कहुं छुं ते ग्रंथ केवो छे ? तेनुं विशेषण कहे छे के 'प्रबोधदम्' एटले सम्यग् ज्ञानने आपनार-उत्पन्न करनार छे. ते ग्रंथ शुं करीने कहुं छुं ? नमस्कार करीने कहुं छुं. अर्थात् मन वचन कायावडे नमस्कार करीने कहुं छुं कोने नमस्कार करीने ? शान्तिनाथने-अचिरा माताना पुत्रने-विश्वसेन राजाना पुत्र सोळमा

तीर्थंकरने. ते शान्तिनाथ केवा छे ? चोसठ इन्द्रो, बार चक्रवर्ती, नव वासुदेव, नव प्रतिवासुदेव, नव बळदेव, तथा गणधरो, विद्याधरो अने मृगेन्द्रो (सिंह) विगेरेना समूहवडे नमस्कार करायेला छे. वळी केवा छे ? अपाय अपगम विगेरे चार[1] अथवा प्रकारांतरे चोत्रीश अतिशयोथी युक्त छे, एवा शान्तिनाथ स्वामीने प्रणाम करीने हुं उपदेशप्रासाद नामना ग्रन्थने करुं छुं आ प्रमाणे प्रथम श्लोकनो विस्तरार्थ छे.

आ प्रथम श्लोकमां 'अतिशयोथी युक्त' एवुं शान्तिनाथनुं विशेषण आप्युं छे. तेमां तेमना चोत्रीश अतिशयो सूचव्या छे. ते अतिशयो पूर्वाचार्यनी गाथावडे बतावे छे—

चउरो जम्मप्पभिई, इक्कारस कम्मसंखए जाए ।
नवदस य देवजणिए, चउत्तीसं अइसए वन्दे ॥ १ ॥

भावार्थ—"तीर्थंकरोने जन्मथी आरम्भीने चार अतिशयो, कर्मना सक्षयथी उत्पन्न थयेला अगीयार अतिशयो अने देवताओए करेला ओगणीश अतिशयो होय छे. ते चोत्रीश अतिशयवाळा भगवानने हुं वंदना करुं छुं.

ते अतिशयो आ प्रमाणे छे—

(१) तीर्थंकरनो देह सर्व लोको करतां श्रेष्ठ (लोकोत्तर) अने अद्भुत स्वरूपवान होय छे, तथा व्याधि रहित अने परसेवो तथा मेल रहित होय छे.

(२) तीर्थंकरोनो श्वासोश्वास कमलना परिमलनी जेवो सुगन्धी होय छे.

(३) जिनेश्वरोनुं मांस अने रुधिर गायना दूध जेवुं उज्वल (श्वेत) होय छे. तथा (४) भगवाननो आहार अने निहार चर्मचक्षुवाळा प्राणीओने (मनुष्यादिकने) अदृश्य होय छे, परंतु अवधि विगेरे ज्ञानवाळा पुरुषो तो जोइ शके छे. आ चारे अतिशयो भगवानने जन्मसमयथीज उत्पन्न थाय छे.

हवे ज्ञानावरणीयादिक[2] चार घातिकर्मोना क्षयथी ११ अतिशयो उत्पन्न थाय छे ते बतावे छे—

---

१ ज्ञानातिशय, वचनातिशय, पूजातिशय ने अपायापगमातिशय ए चार

२ ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अने अन्तराय आ चार घाति कर्म छे तेना क्षयथी प्राणीने केवळज्ञानादि प्रगट थाय छे

(१) भगवानना समवसरणनी भूमि मात्र एक योजन विस्तारवाळी होय छे, तोपण तेटली भूमिमां करोडो देवताओ, मनुष्यो अने तिर्यंचोनो समावेश थाय छे, अने परस्पर संकोचनी बाधा रहित सुखे बेसे छे.

(२) भगवते देशनामां कहेली पांत्रीश गुणोथी युक्त अर्ध मागधी भाषा देवताओ, मनुष्यो अने तिर्यंचोने पोतपोतानी भाषामां समजावनारी धर्मनो अवबोध करनारी थाय छे. तथा ते वाणी एक योजनना समवसरणमां रहेला सर्व प्राणीओने एक सरखी रीतेज सांभळवामां आवे छे. जो के भगवन तो एकज भाषामां उपदेश आपे छे, परंतु वरसादना जळनी जेम ते भाषा भिन्न भिन्न जीवो रूप आश्रयने पामीने ते ते जीवोनी भाषापणे परिणाम पामे छे. ते विषे कयुं छे के—

देवा दैवीं नरा नारीं, शबराश्चापि शाबरीम् ।
तिर्यञ्चोपि हि तैरश्चीं, मेनिरे भगवद्गिरम् ॥ १ ॥

भावार्थ—भगवाननी वाणीने देवताओ दैवी भाषा माने छे, मनुष्यो मानुषी भाषा माने छे, भिल्ल लोको पोतानी भाषा माने छे अने तिर्यंचो पण पोतानी (पशु पक्षीनी) भाषा बोलाय छे एम माने छे.

आवा प्रकारना भुवनाद्भुत अतिशय विना समकाळे अनेक प्राणीओनो उपकार थइ शकतो नथी. आ प्रसंगमां एक भिल्लनुं दृष्टांत छे—

सर शरस्वरार्थेन, भिल्लेन युगपद्यथा ।
सरो नत्थीति वाक्येन, प्रियास्तिस्रोऽपि बोधिता. ॥१॥

भावार्थ—सरोवर, बाण अने सारो कंठ ए त्रणे अर्थ कहेवानी इच्छावाळा कोइ भिल्ल " सरोनत्थि–सर नथी. " ए वाक्ये करीने पोतानी त्रणे स्त्रीओने समजावी दीधी ते दृष्टांत आ प्रमाणे छे.

कोइ एक भिल्ल ज्येष्ठ मासमां पोतानी त्रण स्त्रीओने साथे लइने कोइ गाम तरफ जतो हतो. मार्गमां एक स्त्रीए तेने कयुं के " हे स्वामी ! तमो सुकंठथी गायन करो, के जे सांभळवाथी मने आ मार्गनो श्रम तथा सूर्यनो ताप बहु दुःसह न थाय " बीजी स्त्रीए कयुं के " हे स्वामी ! तमे जळाशयमांथी कमळनी सुगन्धवाळुं शीतळ जळ लावी आपीने मारी तृषानुं निवारण करो. " त्रीजी बोली के

"हे पति! मने मृगनु मांस लावी आपीने मारी क्षुधानु निवारण करो." आ प्रमाणे ते त्रणे स्त्रीओनां वाक्यो सांभळीने ते भिल्ले 'सरो नत्थि' ए एकज वाक्यथी ते त्रणेने जवाब आप्यो. तेमा पहेली स्त्री एम समजी के "मारो स्वामी कहे छे के मारो 'सरो' एटले स्वर-सारो कंठ नथी; तेथी शी रीते गान करु?" बीजीए धार्यु के "सरो एटले सरोवर कोइ आटलामा नथी, एटले क्यांथी पाणी लावु?" त्रीजी समजी के "सरो एटले शर-बाण नथी, तो शी रीते मृगने मारीने तेनुं मास लावी शकाय?"

आ प्रमाणे भिल्लना एकज वाक्यथी ते त्रणे स्त्रीओ पोताना कहेवानो उत्तर सांभळीने स्वस्थ थइ; तो भगवाननी वाणी तो उपमारहित तथा वचनने अगोचर छे, एटले ते वाणीथी अनेक प्राणीओ समजे, तेमां शु आश्चर्य छे? कह्यु छे के—

नयसप्तशतीसप्तभंगीसंगीतसंगतिम् ।
शृण्वन्तो यद्गिरं भव्या, जायन्ते श्रुतपारगा. ॥ १ ॥

भावार्थ—"सात नयना सातसो भागाथी अने सप्त भंगीनी रचनाथी मिश्रित-युक्त भगवाननी वाणी सांभळीने अनेक भव्य प्राणीओ श्रुतना पारगामी थाय छे." इति द्वितीयोऽतिशयः

(३) भगवानना मस्तकनी पाछळ बार सूर्यबिंबनी कान्तिथी पण अधिक तेजस्वी अने मनुष्योने मनोहर लागे तेवु भामंडळ एटले कांतिना समूहनो उद्योत प्रसरेलो होय छे. श्री वर्धमान देशनामा कह्युं छे के—

रूवं पिच्छंताणं, अइदुल्लह जस्स होउ मा विग्धं ।
तो पिंडिऊण तेअं, कुणंति भामंडलं पिट्ठे ॥ १ ॥

भावार्थ—"भगवंतनु रूप जोनाराने तेनु अतिशय तेजस्वीपणुं होवाथी सामु जोवु अत्यत दुर्लभ थइ पडे छे, तेम न थवा माटे ते सर्व तेजनो एकत्र पिंड थइने भगवंतना मस्तकनी पाछळ रहे छे, जेथी भगवंतनु रूप जोनाराओ सुखे सुखे भगवंतनी सामु जोइ शके छे.

(४) दयाना अद्वितीय निधि समान भगवान जे जे स्थळे विहार करे

छे ते ते स्थळे सर्व दिशाओमां पचीश पचीश योजन अने उंचे नीचे साडा बार साडा बार योजन एम पांचसो[1] गाउ सुधीमां प्रथम थयेला ज्वरादिक रोगो नाश पामे छे, अने नवा रोगो उत्पन्न थता नथी.

(५) उपर कह्या प्रमाणे भगवाननी स्थितिथी पांचसो गाउ सुधीमां प्राणीओने पूर्व भवमां बांधेला अने जातिथी उत्पन्न थयेला (स्वाभाविक) वैर परस्पर बाधाकारी होता नथी.

(६) उपर कह्या प्रमाणेना पांचसो गाउ सुधीमां इतिओ (सात प्रकारना-उपद्रव), तथा धान्यादिकने नाश करनारा तीडो, सुडा अने उंदर विगेरे उत्पन्न थता नथी.

(७) उपर कही तेटली भूमिमां मारी (मरकी), दुष्ट देवतादिके करेलो उत्पात (उपद्रव) अने अकाल मृत्यु थता नथी

(८) तेटली भूमिमां अतिवृष्टि एटले उपराउपर निरंतर वरसाद थतो नथी के जेथी धान्यमात्र कोही जाय

(९) तेटला स्थळमां अनावृष्टि—सर्वथा जळनो अभाव थतो नथी के जेथी धान्यादिकनी निष्पत्ति न थाय.

(१०) ते स्थळे दुर्भिक्ष—दुकाळ पडतो नथी

(११) पोताना राज्यना लश्करनो भय (हुल्लड विगेरे) तथा बीजा राज्य साथे संग्रामादिक थवानो भय उत्पन्न थतो नथी

आ प्रमाणे कर्मक्षयजन्य ११ अतिशयो जाणवा

हवे देवताओए करेला ओगणीश अतिशयो आ प्रमाणे—

(१) प्रभु जे स्थळे विचरे त्यां आकाशमां देदीप्यमान कांतिवाळु धर्मने प्रकाश करनार धर्मचक्र फरे (आगळ चाले)

(२) आकाशमां श्वेत चामरो बने बाजु चाले.

(३) आकाशमां निर्मळ स्फटिक मणिनु रचेलु पादपीठ सहित सिंहासन चाले.

---

१ दरेक दिशामा पचास पचीश योजन एटले सो सो गाउ गणीने चार दिशाना चारसो गाउ तथा उपर अने नीचे साडा बार साडा बार योजन एटले पचास पचास गाउ गणीने सो गाउ सर्व गणीने पांचसो गाउ आ प्रमाणे आचारांग अतिशय सुधी एमज

(४) आकाशमा जगवानना मस्तक पर त्रण छत्र रहे.

(५) आकाशमा रत्नमय धर्मध्वज प्रजुनी आगळ चाले. सर्व ध्वजनी अपेक्षाए आ ध्वज अत्यंत मोटो होवाथी ते इन्द्रध्वज पण कहेवाय छे.

आ पाचे अतिशयो ज्या ज्या जगद्गुरु जगवान विहार करे त्यां त्यां आकाशमा चाल्या करे छे, अने ज्या ज्या जगवान वेसे त्यां त्या यथायोग्य उपयोगमा आवे छे. एटले के—धर्मचक्र तथा धर्मध्वज आगळना जागमा रहे छे, पादपीठ पग तळे रहे छे, सिंहासन उपर प्रजु वेसे छे, चामरो वींजाय छे, अने छत्रो मस्तक पर रहे छे.

(६) माखणनी जेवा कोमळ, सुवर्णमा नव कमळो देवो रचे छे, तेमां वे कमळ उपर तीर्थंकर जगवंत पोताना वे पग राखीने चाले छे. वाकीना सात कमळो जगवाननी पाछळ रहे छे, तेमाथी वे वे कमळो क्रमसर जगवाननी आगळ आगळ आव्या करे छे.

(७) तीर्थंकरना समवसरण फरता मणिनो, सुवर्णनो अने रूपानो एम त्रण गढ देवताओ रचे छे. तेमानो जगवाननी पासेनो पहेलो गढ (प्राकार) विचित्र प्रकारना रत्नोमय वैमानिक देवताओ वनावे छे, वीजो एटले मध्य प्राकार सुवर्णमय ज्योतिषी देवो वनावे छे, तथा त्रीजो एटले वहारनो प्राकार रूपानो जुवनपति देवताओ रचे छे.

(८) तीर्थंकर ज्यारे समवसरणमा सिंहासन पर वेसे छे, त्यारे तेनुं मुख चारे दिशामां देखाय छे. तेमा पूर्व दिशा तरफ मुख राखीने प्रजु पोतेज विराजे-छे, वाकीनी त्रण दिशामा जिनेन्द्रनाज प्रजावथी तेमना जेवीज रुपवान सिंहासन विगेरे सहित त्रण मूर्तिओ देवताओ विकुर्वे छे ते रचवानो हेतु ए छे के सर्व दिशाओमा वेठेला देवो विगेरेने प्रजु पोतेज अमारी सामे वेसीने अमने उपदेश करे छे एवो विश्वास आवे छे.

(९) ज्यां ज्या प्रजु स्थिति करे छे, ते ते स्थळे जिनेश्वरनी उपर देवताओ अशोक तरु रचे छे. ते अशोक वृक्ष ऋषजस्वामीथी आरजीने श्री पार्श्वनाथ स्वामी सुधी त्रेवीश तीर्थंकरो उपर तेमना पोताना शरीरना मानथी वार गुणो उंचो रचवामां आवे छे, अने महावीरस्वामी उपर वत्रीश धनुष उंचो रचवामा आवे छे. कह्युं छे के—

उसभस्स तिन्नि गाउय, बत्तीसधणुणि वद्धमाणस्स ।
सेसजिणाणमसोउं, शरीरउ बारसगुणो ॥ १ ॥

भावार्थ—ऋषभस्वामी उपर त्रण गाउ उंचो अशोक वृक्ष होय छे, वर्धमान (महावीर) स्वामी उपर बत्रीश धनुष उंचो होय छे, अने बाकीना जिनेश्वरो उपर तेमना शरीरथी बार गुणो उंचो होय छे.

अहीं कोइ शंका करे के—"आवश्यक चूर्णिमां श्री महावीरस्वामीना समवसरणना प्रस्तावमां कह्युं छे के—असोगवरपायवं जिणउच्चताउ बारसगुण सक्को विउव्वइत्ति—इन्द्रे जिनेश्वरनी उंचाइथी बार गणो उंचो अशोक नामनो श्रेष्ठ तरु विकुर्व्यो ने अहीं तो बत्रीश धनुष उंचो कह्यो, ते केम संभवे ?" आ प्रश्ननो उत्तर ए छे के—"आवश्यक चूर्णिमां जे बारगणुं उंचाइनुं प्रमाण कह्युं छे, ते केवळ अशोकवृक्षनुं कह्युं छे, अने अहीं जे बत्रीश धनुषनुं मान कह्युं छे, ते साल वृक्ष सहित अशोकवृक्षनुं प्रमाण कहेलुं छे. अहीं पण अशोकवृक्ष तो बारगणोज समजवो एटले महावीरस्वामीनुं शरीर उंचाइमां सात हाथ छे, तेने बारगणुं करवाथी चोराशी हाथ एटले एकवीश धनुष उंचो अशोकवृक्ष, अने तेनापर अगीयार धनुष उंचो सालवृक्ष होवाथी बन्ने मळीने बत्रीश धनुषनुं मान समजवुं. आ प्रमाणे प्रवचनसारोद्धारनी वृत्तिमां कहेलुं छे."

(१०) ज्यां ज्यां तीर्थंकर विचरे त्यां त्यां कांटाओ अधोमुख थइ जाय छे एटले मार्गमां रहेला कांटाओनी अणीओ नीची थाय छे.

(११) ज्यां ज्यां भगवंत चाले छे त्यां त्यां वृक्षो भगवानने प्रणाम करता होय तेम नीचा नमे छे

(१२) भगवान लीला सहित जे स्थळे विचरे छे, त्यां आकाशमां देवदुंदुभि वाग्या करे छे.

[१३] भगवंत ज्यां विचरे छे त्यां संवर्तक जातिनो वायु एक योजन प्रमाण पृथ्वीने शुद्ध करीने [कचरो विगेरे दूर करीने] सुगंधी, शीतळ अने मंद मंद तेमज अनुकूळ वाय छे, तेथी सर्व प्राणीने ते सुखकारी थाय छे ते विषे श्रीसमवायांगमां सूत्रमां कह्युं छे के- साउयेणं सुहफासेणं सुरभिणा मारुएणं जोयण परीमंडलं सव्वउ समंता पमज्जिज्जइ ॥

शीतळ, सुखस्पर्शवाळो, अने सुगंधयुक्त एवो पवन सर्व दिशाओमां चोतरफ एक एक योजन सुधी भूमि प्रमार्जन करे छे. "

(१४) जगद्गुरु जिनेश्वर ज्या ज्या संचार करे छे त्या त्यां चास, मोर अने पोपट विगेरे पक्षीओ प्रभुने प्रदक्षिणा दे छे.

(१५) जे स्थळे प्रभु विराजे छे, त्यां धूळी शमाववा माटे घनसारादि युक्त गंधोदकनी वृष्टि थाय छे. (मेघकुमार देवो आ वृष्टि करे छे.)

(१६) समवसरणनी भूमिमा चपक विगेरे पाच रगना पुष्पोनी जानु प्रमाण (ढींचण सुधी) वृष्टि थाय छे. अहीं कोइ शंका करे के " विकस्वर अने मनोहर पुष्पोना समूहथी व्याप्त एवी योजन प्रमाण समवसरणनी पृथ्वी उपर जीवदयामा रसिक चित्तवाळा मुनिओनु रहेवु तथा जवुं आववु शीरीते योग्य कहेवाय, केमके तेथी तो जीवनो विघात थाय. " आ शका उपर केटलाएक एवुं समाधान आपे छे के " ते पुष्पो देवोए विकुर्वेला होवाथी सचित्तज होता नथी " परंतु आ जवाब युक्त नथी. केमके ते पुष्पो मात्र विकुर्वेलाज होय छे एम नथी, परंतु जळ तथा स्थळना उपजेला पुष्पोनी पण देवो वृष्टि करे छे. ते विषे आगममा पण कह्युं छे के—

" विंटट्ठाइ वि सुरभि जलथलयं दिव्वकुसुमनीहारिं
पकिरंति समंतेणं दसध्धवण्णं कुसुमवासंति ॥ "

भावार्थ—" नीचा वींटवाळां, सुगधवाळा अने जळ स्थळमां [illegible] येला एवा पचरंगी दिव्य पुष्पोनी वृष्टि देवताओ चोतरफ विस्तारे छे "

आ प्रमाणेनो सिद्धान्तनो पाठ जोइ (सांभळीने) केटलाएक [illegible] प्र
स्वमति कल्पनाथी एवो उत्तर आपे छे के " जे स्थळे मुनिओ [illegible]
देवताओ पुष्पवृष्टि करता नथी. " आ उत्तर [illegible]
मळे बेठा होय, त्याज आगनी [illegible]
तओए नेसीज रहेवु जोइए [illegible]
आगमन पण संभवे छे. माटे [illegible] स्या-
एक योजन जेटली [illegible] विषेज

थोनुं परस्पर मर्दन थता पण तेओने कांइ पण बाधा थती नथी. तेम जानु प्रमाण पुष्पोना समूह उपर मुनिगण तथा विविध जन समूहना चालवाथी पण ते पुष्पोने कांइ पण बाधा थती नथी परंतु जाणे अमृत रसथी सिंचन कराता होय, तेम ते पुष्पो उलटा विशेष उल्लास पामता जाय छे. केमके अनुपम एवा तीर्थंकरोनो प्रभाव अचिन्त्य छे.

(१७) तीर्थंकरोना मस्तकना केश, दाढी, मूछ, तथा हाथ पगना नख वृद्धि पामता नथी. (निरंतर एकज स्थितिमां रहे छे).

(१८) तीर्थंकरोनी समीपे सर्वदा ओछामां ओछा एक करोड भवनपति विगेरे चारे निकायना देवो रहे छे.

(१९) जिनेश्वर जे स्थाने विचरता होय, त्यां निरंतर वसंत विगेरे सर्व ऋतुना मनोहर पुष्प फळादिकनी सामग्री प्रगट थाय छे, एटले ऋतुओ पण वधी अनुकूळ वर्त्ते छे.

आ प्रमाणे तीर्थंकरोना सर्वे मळीने चोत्रीश अतिशयोनुं वर्णन जाणवुं. आ अतिशयोमां कोइ ठेकाणे समवायांगनी साथे कांइ कांइ फरफार जोवामां आवे छे, ते मतान्तर जाणवुं ते मतान्तरनुं कारण तो सर्वज्ञज जाणी शके छे.

मूळ श्लोकमां 'अतिशयान्वितम्' अतिशयोए करीने युक्त, एवुं जे पद कहेलुं छे तेनी आ व्याख्या करवामां आवी. एवा अतिशयोवाळा विश्वसेन राजाना कुळमां तिलक समान अने अचिरा मातानी कुक्षि रूपी शुक्ति (छीप) ने विषे मुक्ता (मोती) समान सोळमा तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ स्वामीने नमस्कार करीनेएटले उपहासनो त्याग करवा पूर्वक मन, वचन, कायानी शुद्धिथी प्रणाम करीने अनेक शास्त्रना अनुसारे आ उपदेश प्रासाद ग्रन्थ हुं रचुं छुं.

आ शास्त्रमां संबंध वाच्य वाचक लक्षण छे. आ ग्रन्थमां जे अर्थ छे ते वाच्य छे, अने ते अर्थने कहेनारो आ ग्रन्थ ते वाचक छे. आ ग्रन्थमां व्याख्यान करवा योग्य अर्हद्धर्मना उपदेशनुं निरूपण कर्युं छे, ते आ शास्त्रनुं अभिधेय छे. तथा आ ग्रन्थनुं प्रयोजन बे प्रकारे छे. एक ग्रन्थकर्त्तानुं अने बीजुं श्रोतानुं. ते बन्नेने पण पर (प्रधान) अने अपर (गौण) एवा बबे प्रयोजन रहेला छे. तेमां ग्रन्थकर्त्ताने पर प्रयोजन मोक्षपदनी प्राप्ति थवा रूप छे अने अपर प्रयोजन

' असारमेव संसार–स्वरूपमिति चेतसि ।
विज्ञाव्य शिवदे धर्मे, यत्नं कुरुत हे जनाः ॥

भावार्थ—" हे भव्यजनो ! ' आ संसार निस्सारज छे ' एम जाणीने मोक्ष आपनार एवा धर्मने विषे यत्न करो. "

सर्व धर्मकृत्योनुं मूळ समकित छे अने ते समकित देव गुरु तत्त्वने विषे सम्यक् श्रद्धानथी प्राप्त थाय छे. अणुव्रतो के महाव्रतो, दान, जिनपूजा, क्रिया, जप, ध्यान, तप, सर्व शास्त्राभ्यास, तीर्थयात्रा अने गुणनी उपार्जना–ए सघळां समकित सहित होय तोज मोक्षने अर्थे थाय छे, तेथी प्रथम तेनो आश्रय करो."

इत्यादि गुरुमुखथी देशना सांभळीने वैराग्य पामेला महाबळ कुमारे कह्युं के–" हे भगवन्! हुं अरिहंतना कहेला मार्गने हर्ष पूर्वक सद्दहुं छुं तेथी मातापिताने पुछीने हुं आपनी पासे दीक्षा अंगिकार करीश. " आचार्ये कह्युं के " हे वत्स ! धर्मकार्यमां प्रतिबंध करीश नहीं " पछी महाबळ कुमारे घेर जइ मातापिताने प्रणाम करीने कह्युं के—" तमारी आज्ञाथी हुं धर्मघोष आचार्य पासे दीक्षा ग्रहण करीश " ते सांभळीने तेमणे महाबळ प्रत्ये कह्युं के " हे वत्स ! तुं अमने प्राणथी पण प्रिय छे तेथी तारो वियोग अमे एक क्षणमात्र पण सही शकीए तेम नथी, तेथी ए वातज तुं बोलीश नहीं. हे पुत्र ! ज्यांसुधी अमे जीवीए त्यां सुधी तो तुं घरमांज रहे. " ते सांभळीने कुमारे माताने कह्युं के " हे माता ! पहेलुं कोण मृत्यु पामशे अने पछी कोण मृत्यु पामशे ? ते कांइ जाणी शकातुं नथी, तेथी मने चारित्र लेवानी आज्ञा आपो के जेथी तमारी कुक्षिथी पामेला मनुष्य जन्मने हुं सफळ करुं. जेम पूर्वना अनन्त भवोमां थयेली अनन्त माताओ अंक विनाना मींडानी जेम निष्फळ थइ तेम तमे न थाओ , तमे तो शुभ अंक (एक बे विगेरे)नी जेम सार्थ थाओ " आ प्रमाणेना ते कुमारना आग्रहनो त्याग कराववाने असमर्थ थयेला तेना मातपिता तेना दास जेवा थइ गया.

एकदा राजाए महाबळ कुमारने स्नेह पूर्वक पोताना राज्यासन पर बेसाडी सुवर्णना, रुपाना, रत्नना अने माटीना एकसो ने आठ आठ कळशो वडे राज्याभिषेक कर्यो. पछी ते बोल्या के " हे वत्स ! कहे, हवे अमे शुं करीए ? " त्यारे कुमारे कह्युं के " हे पिता ! आपणा कोशमांथी त्रण लाख सोनैया लइने

देवबुद्धि राखवी, तथा भव (संसार) थकी बीताना आत्माने मुक्त करवाने इ-च्छनार जे मुमुक्षु पुरुषो, तेमने विषेज गुरुपणानी बुद्धि राखवी, तेमज दुर्गतिमां पडता जीवोने धारण करनार जिनेश्वरप्रणीत धर्म, तेनेज विषे धर्मपणानी श्रद्धा राखवी, ते सम्यग्दर्शन कहेवाय छे. "

जो के दर्शन शब्दवडे चक्षुथी जे जोवामां आवे ते दर्शन एम पण कहेवाय छे, परंतु आ जैनशासनमां तो सत्य देव, सत्य गुरु अने सत्य धर्मना तत्त्वनुं जे संशया दिक रहित सम्यग्ज्ञान, तेने सम्यग्दर्शन कहेलुं छे. तेवुं ज्ञान दर्शनमोहनीय क-र्मना क्षय, उपशम, के क्षयोपशमथी प्राप्त थाय छे. तेथी जिनेश्वरना दरेक वचन उ-पर दृढ विश्वासरूप विशिष्ट प्रकारना सद्भावने 'दर्शन' जाणवुं आ 'समकित' शब्दना कहेवा अर्थने दृढ करवा माटे महाबळ नामना राजकुमारनुं दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

समकित उपर महाबळ राजकुमारनुं दृष्टान्त

हस्तिनापुरमां बळ नामे राजा राज्य करतो हतो ते राजाने प्रभावती ना-मे राणी हती ते राणीए सिंहना स्वप्नथी सूचित थयेला एक शूरवीर पुत्रने ज-न्म आप्यो. तेनुं नाम महाबळ राख्युं ते कुमार अनुक्रमे युवावस्था पाम्यो. त्यारे ते-ने भोग भोगववामां समर्थ थयेलो जाणीने तेना पिताए एक दिवसे आठ राजक-न्याओ साथे परणाव्यो. अने ते आठे स्त्रीओने माटे राजाए सुवर्णना आठ महे-ल बंधावी आप्या. ते स्त्रीओने तेमना पिताओए प्रेम पूर्वक आठ क्रोड सोनैया, आठ क्रोड रुपैया, आठ मुगट, आठ जोडी कुंडळ, आठ नाटको, तथा सर्व प्रकारना रत्नमय आठ भद्रासन विगेरे घणी वस्तुओ आपी (आ हकीकत श्री भगवती सूत्रमां छे) ते आठे स्त्रीओनी साथे भोगविलास करता महाबळ कुमारे केटलोक काळ निर्गमन कर्यो.

एकदा विमलनाथ स्वामीना संतानीआ धर्मघोष नामे सूरि पांचसो मुनि-ना परिवार सहित हस्तिनापुरना उद्यानमां समवसर्या तेमनुं आगमन सांभळीने पौरलोकोनी जेम ते राजकुमार पण पोतानी सर्व समृद्धि सहित तेमने वंदना करवा माटे गयो. सूरीश्वरने वंदना करीने कुमार योग्य स्थाने बेठो ते समय मुनीश्वरे दे-शना आपी के—

" असारमेव संसार—स्वरूपमिति चेतसि ।
विज्ञाव्य शिवदे धर्मे, यत्नं कुरुत हे जनाः ॥

भावार्थ—" हे भव्यजनो ! ' आ संसार निस्सारज छे ' एम जाणीने मोक्ष आपनार एवा धर्मने विषे यत्न करो. "

सर्व धर्मकृत्योनुं मूळ समकित छे अने ते समकित देव गुरु तत्त्वने विषे सम्यक् श्रद्धानथी प्राप्त थाय छे. अणुव्रतो के महाव्रतो, दान, जिनपूजा, क्रिया, जप, ध्यान, तप, सर्व शास्त्राभ्यास, तीर्थयात्रा अने गुणनी उपार्जना—ए सघळां समकित सहित होय तोज मोक्षने अर्थे थाय छे, तेथी प्रथम तेनो आश्रय करो."

इत्यादि गुरुमुखथी देशना सांभळीने वैराग्य पामेला महाबळ कुमारे कह्युं के—" हे भगवन् ! हुं अरिहंतना कहेला मार्गने हर्ष पूर्वक सद्दहुं छुं तेथी मातापिताने पुछीने हुं आपनी पासे दीक्षा अंगिकार करीश. " आचार्ये कह्युं के " हे वत्स ! धर्मकार्यमां प्रतिबंध करीश नहीं. " पछी महाबळ कुमारे घेर जइ मातापिताने प्रणाम करीने कह्युं के—" तमारी आज्ञाथी हुं धर्मघोष आचार्य पासे दीक्षा ग्रहण करीश. " ते सांभळीने तेमणे महाबळ प्रत्ये कह्युं के " हे वत्स ! तुं अमने प्राणथी-पण प्रिय छे तेथी तारो वियोग अमे एक क्षणमात्र पण सही शकीए तेम नथी, तेथी ए वातज तुं बोलीश नहीं. हे पुत्र ! ज्यांसुधी अमे जीवीए त्यां सुधी तो तुं घरमांज रहे. " ते सांभळीने कुमारे माताने कह्युं के " हे माता ! पहेलुं कोण मृत्यु पामशे अने पछी कोण मृत्यु पामशे ? ते काइ जाणी शकातुं नथी, तेथी मने चारित्र लेवानी आज्ञा आपो के जेथी तमारी कुक्षिथी पामेला मनुष्य जन्मने हुं सफळ करूं. जेम पूर्वना अनन्त भवोमां थयेली अनन्त माताओ अंक विनाना मींडानी जेम निष्फळ थइ तेम तमे न थाओ ; तमे तो शुभ अंक (एक बे विगेरे)नी जेम सार्थ थाओ. " आ प्रमाणेना ते कुमारना आग्रहनो त्याग कराववाने असमर्थ थयेला तेना मातपिता तेना दास जेवा थइ गया.

एकदा राजाए महाबळ कुमारने स्नेह पूर्वक पोताना राज्यासन पर बेसाडी सुवर्णना, रुपाना, रत्नना अने माटीना एकसो ने आठ आठ कळशो वडे राज्याभिषेक कर्यो. पछी ते बोल्या के " हे वत्स ! कहे, हवे अमे शुं करीए ? " त्यारे कुमारे कह्युं के " हे पिता ! आपणा कोशमांथी त्रण लाख सोनैया लइने

तेपांची मारे माटे एक लाख सोनैया आपी [1] कुत्रिकापणमांथी पात्रां लावो, एक लाख सोनैया आपीने रजोहरण (ओघो) लावो, अने मात्र चार आगळ राखी बाकी-ना सर्व केश कातरी नांखवा माटे एक लाख सोनैया आपीने एक हजामने बोलावो." ते सांभळीने राजाए पण तरतज तेना कथा प्रमाणे कर्युं. पछी स्नान करी दिव्य चदननो शरीरे लेप करी, सर्व उत्तम अलंकारो धारण करी, हजार मनुष्योथी वहन कराय तेवी शिबिकामां आरूढ थइने कुमार गुरु पासे आव्यो. ते वखते तेना मातपिताए कुमारने कह्युं के "हे पुत्र! आ दुर्लभ चारित्रने ग्रहण करीने सारं तेनु पालन करवामां अत्यत यत्न करजो." एम कहीने आचार्यने प्रणाम करी तेओ पोताना नगरमां पाछा गया

पछी महाबळ कुमारे पोताना हाथे पचमुष्टि लोच करी ते गुरुना हाथे दीक्षा ग्रहण करी

त्रण गुप्ति अने पाच समितिथी युक्त एवा महाबळ मुनिए विनय पूर्वक चौद पूर्वनो अभ्यास कर्यो, विविध प्रकारनी तपस्याओ करी अने बार वर्ष सुधी अस्खलित चारित्रनु पालन करीने सर्व पापनी आलोचना करीने तथा प्रतिक्रमीने एक मासना अनशन वड काळधर्म पामी ब्रह्म नामना पाचमा देवलोकमां दश सागरोपमननी स्थिति (आयुष्य) वाळा देव थया.

चौद पूर्वी जघन्यथी पण लांतक नामना छट्ठा देवलोके जाय छे, छतां आ महाबळ मुनिने पांचमा देवलोके जवानु कह्यु, तेनु कारण कांइक पण विस्मरण विगेरे हेतुथी चौद पूर्वथी न्यून ज्ञान हशे एम समजवे छे.

त्यांथी आयुष्य क्षये चवीने ते महाबळ मुनिनो जीव वाणिज्य नामना गाममा कोइ मोटा श्रेष्ठीने घेर सुदर्शन नामे पुत्र थयो अनुक्रमे युवावस्था पाम्यो एकदा ते पुरना उद्यानमा समवसरेला श्री महावीर स्वामीना चरणकमळने वदना करवा माटे ते गयो. त्या स्वामी सर्व जीवना हितने माटे समयथी आरभीने सर्व काळना स्वरूपनु निरूपण करता हता. ते सांभळीने विस्मय पामेला सुदर्शन श्रेष्ठीए प्रभुने पूछ्यु के "हे भगवन्! काळ केटला प्रकारनो छे?" स्वामीए जवाब आप्यो के "हे सुदर्शन! काळ चार प्रकारनो छे. प्रमाणकाळ, यथायुनिर्वृत्ति-

[1] देवी दुकान, के जेमा त्रण भुवनमांनी दरेक चीज मळती हती

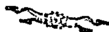
काळ, मृत्युकाळ अने अध्धाकाळ." हे स्वामी ! प्रमाणकाळ कोने कहेवो ? " प्रमाण काळ बे प्रकारनो छे. चार पहोरनो दिवस अने चार पहोरनी रात्री विगेरे." हे स्वामी ! यथायुनिवृत्ति काळ एटले शु ? " हे सुदर्शन ! नारकी जीवे तथा देवताए जे प्रमाणे आयुष्य बान्धु होय, ते प्रमाणे पूरेपूरु ते भोगवे, तेने यथायुनिवृत्ति काळ कहे छे." हे स्वामी ! मृत्युकाळ एटले शु ? " हे श्रेष्ठी ! जीव शरीरथी जूदो पडे, अथवा शरीर जीवथी जुदु पडे, ते मृत्युकाळ कहेवाय छे " हे भगवान ! अध्धाकाळ एटले शुं? " हे श्रेष्ठी ! अध्धाकाळ घणा प्रकारनो छे. समयकाळ अने आवळीका काळथी आरम्भीने उत्सर्पिणी अवसर्पिणी सुधीनो सर्व काळ अध्धा काळ कहेवाय छे." आ प्रमाणे साम्भळीने तेणे पूछ्यु के " हे भगवान ! पल्योपम अने सागरोपम जेवो मोटो काळ शी रीते पूर्ण थाय?" प्रभु बोल्या के "हे सुदर्शन! पूर्वे त पण तेवो काळ अनुभव्यो छे. पूर्व भवमा तु ब्रह्म देवलोकमां दश सागरोपमना आयुष्यवाळो देव हतो." इत्यादि तेना पूर्वभवनु वृत्तान्त प्रभुए कह्यु. ते साम्भळीने सुदर्शनने वैराग्य उत्पन्न थयो. तेथी तरतज तेणे स्वामी पासे दीक्षा ग्रहण करी.

आ प्रमाणे ते महाबळना जीव सुदर्शने बीजा भवमा दीक्षा ग्रहण करीने फरी चौद पूर्वनो अभ्यास कर्यो. अनुक्रमे सर्व कर्मनो क्षय करी केवळज्ञान प्राप्त करीने मोक्षपद पाम्यो.

" देव, गुरु अने धर्मरूप तत्त्वने विषे जेनी कामधेनु समान यथार्थ बुद्धि थाय छे तेमने सर्व समृद्धिओ प्राप्त थाय छे. तेवा सम्यग्दर्शनथी महाबल राजा मोक्ष पर्यन्तनी समृद्धि पाम्यो."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादग्रन्थस्यवृत्तौ प्रथम स्थंभे द्वितीय व्याख्यानम् ॥ २ ॥

व्याख्यान ३ जुं.



समकित पामवाना बे हेतु विषे

तीर्थंकरप्रोक्ततत्त्वेषु, रुचिः सम्यक्त्वमुच्यते ।
लभ्यते तत्स्वभावेन, गुरूपदेशतोऽथवा ॥ १ ॥

भावार्थ—" तीर्थंकरे कहेला तत्त्वोने विषे जे रुचि–श्रद्धा होवी, ते सम्यक्त्व–समकित कहेवाय छे ते समकित स्वभावथी अथवा गुरुना उपदेशथी एम बे प्रकारे प्राप्त थाय छे. "

तीर्थंकरोए नव तत्त्वो कहेला छे. तेमने विषे जे रुचि–श्रद्धा थवी, ते समकित एटले सम्यक् श्रद्धा कहेवाय छे. श्रद्धा विनाना मात्र ज्ञानथीज फळ सिद्धि थती नथी. तत्त्वज्ञो पण जो श्रद्धा रहित होय तो तेओ आत्महित लक्षण फळने पामता नथी श्रुतज्ञानना धारक छता पण अंगारमर्दक आचार्य जेवा अभव्य अने बीजा दूरभव्य प्राणीओ जगतना निष्कारण वत्सल एवा जिनेश्वराना कहेला तत्त्वो उपर श्रद्धा रहित होवाथी शास्त्रोक्त, तथा प्रकारना, आत्महितरूप फळने पाम्या नथी. एम शास्त्रमा संभळाय छे.

समकित बे रीते प्राप्त थाय छे. स्वभावथी अथवा गुरुना उपदेशथी. स्वभावथी एटले गुरु विगेरेना उपदेशनी अपेक्षा रहित स्वाभाविक क्षयोपशमथी प्राप्त थाय ते, अने उपदेश एटले गुरुए कहेला धर्मोपदेशनु श्रवण करवाथी प्राप्त थाय ते

आ अनादिकाळथी चाल्या आवता संसाररूपी सागरने विषे प्रमेको प्राणी भव्यत्वना परिपाकने लीधे पर्वतपरथी नदीना प्रवेला पथ्थरना[१] न्याये करीने अनाभोगपणाथी यथाप्रवृत्तिकरण करे छे. अध्यवसाय विशेषरूप ते यथाप्रवृत्तिकरणवडे एक आयु कर्मविना बीजा ज्ञानावरणादिक सात कर्मोने पल्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून एवा एक सागरोपम कोटाकोटीनी स्थितिवाळां करे छे अ

[१] ते पथ्थर अथडाता कुटाता गोळ थाय छे तेम

हीं ते जीवने कर्मथी उत्पन्न थयेला अत्यंत निबिड रागद्वेषना परिणामरुप कर्कश अने दुर्भेद एवी ग्रंथि प्राप्त थाय छे. आ ग्रंथि सुधी अभव्य जीवो पण अनंतीवार आवे छे अने तेने यथाप्रवृत्तिकरणवडे ग्रंथि प्रदेश पामीने अरिहंतनी विभूति जोवाथी शुभभावमां वर्तता सता श्रुतसामायिकनो लाभ थाय छे, परंतु बीजो काइपण आत्मिक लाभ थतो नथी. अने ते ग्रंथिने पामीने कोइ भव्य प्राणी परम विशुद्धिवडे ग्रंथिनो भेद करवा रुप अपूर्वकरण[1] करीने मिथ्यात्वनी स्थिति जे अंतःकोटाकोटीनी छे, तेमांथी अन्तर्मुहूर्तकाळ सुधी तेना दळियां प्रदेशथी पण न वेदवा पडे तेवुं अन्तरकरण करे छे. त्रण करणनो अनुक्रम आ प्रमाणे छे.—

जा गंठी ता पढमं, गंठीसमच्छेयओ भवे बीअं ।
अनियट्टीकरणं पुण, सम्मत्तपुरक्खडे जीवे ॥ १ ॥

भावार्थ—ग्रंथि सुधी आवे त्यारे पहेलुं करण (यथाप्रवृत्ति) होय छे, ग्रंथिनो भेद करे त्यारे बीजुं करण (अपूर्व) होय छे अने ते जीव ज्यारे समकितनी पासे आवे अर्थात् सम्यक्त्व पामवाने वखते त्रीजुं अनिवृत्ति करण प्राप्त थाय छे.

अहीं मिथ्यात्वनी स्थितिना बे विभाग थाय छे. तेमांनी पहेली अन्तर्मुहूर्त प्रमाण स्थितिने भोगवीने बीजी उपशमन करेली स्थितिमां अंतरकरणना प्रथम समये जीव सम्यक्त्व पामे छे. कह्युं छे के—

आन्तर्मौहूर्तिकं सम्यग्दर्शनं प्राप्नुवन्ति यत् ।
निसर्गहेतुकमिदं, सम्यक्श्रद्धानमुच्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—भव्यना अन्तर्मुहूर्तमां जे समकित प्राप्त थाय छे, ते सम्यक् श्रद्धावाळु निसर्ग समकित कहेवाय छे.

गुरुपदेशमालंब्य, प्रादुर्भवति देहिनाम् ।
यत्तु सम्यग्श्रद्धानं, तत्स्यादधिगमजं परम् ॥ २ ॥

---

१ आ करण पूर्वे कोइ पण वार करेलुं नहीं होवाथी तेनुं नाम अपूर्वकरण सार्थक छे.

सिंहने मारवाने कोइ पण समर्थ थयु नहीं. तेथी ते शालिक्षेत्रना रक्षणने माटे अश्वग्रीवे पोताना खंडीया सर्व राजाओने आज्ञा करीने वारा प्रमाणे एक एक राजाने ते क्षेत्रना रक्षण माटे आववानु ठराव्युं. ए प्रमाणे आवतां अन्यदा प्रजापति राजानो वारो आव्यो ते वखते त्रिपृष्ठ कुमार पिताने जतां अटकावीने पोते ते उपद्रवनु रक्षण करवा माटे मात्र एक सारथिनेज साथे राखी रथमां बेसीने त्यां गयो. पछी ते शालिक्षेत्र पासे जइने सिंहने बोलाव्यो, के तरतज ते सिंह त्रिपृष्ठनी सामे धस्यो. तेने त्रिपृष्ठे बे ओष्ठ पकडीने शुक्तिसपुटनी जेम चीरी नाख्यो. ते वखते मरवा पडेलो ते सिंह पोतानी निंदा करवा लाग्यो के—"अहो! हु सिंह छतां पण एक मनुष्य मात्रथी ज मराणो." तेने खेद पामतो जोइने त्रिपृष्ठना सारथिए तेने शांत करवा माटे मधुर वाणीवडे कह्यु के—"हे सिंह! आ कुमार वासुदेव थवाना छे, तेने तु एक रक मनुष्य जेवा न जाणीश, तु नरेन्द्रना हाथथी मरायो छे, तेथी शा माटे शोक करे छे? मनुष्य लोकमा आ त्रिपृष्ठ कुमारज एक सिंह छे, अने तु तिर्यक् योनिमा उत्पन्न थयेलो सिंह छे." आ प्रमाणेना शांतिना वाक्यो सांभळीने हर्ष पामेलो सिंह समाधि पूर्वक मरण पाम्यो.

"गौतम! ते त्रिपृष्ठ, सारथि अने सिंह ए त्रणेना जीवो भवसागरमां भ्रमण करतां करता सांप्रत काळे ते त्रिपृष्ठनो जीव ते हु थयो छुं, सिंहनो जीव ते कृषीबल थयेलो छे, अने सारथिनो जीव ते तु इन्द्रभूति (गौतम) थयो छे. पूर्व भवे तमे मधुर वाणीवडे तेने प्रसन्न कर्यो हतो, अने में तेने मार्यो हतो, ते कारणथी आ भवमा तेनो तमारापर स्नेह छे अने मारापर द्वेष छे. आ प्रमाणे आ भवनाटकमा स्नेह ने वैरनु कारण जाणी लेवु. परतु ते खेडूत शुक्लपक्षीओ थयो छे. एटले जे जीवने अर्ध पुद्गलपरावर्तन ससार बाकी रह्यो होय, ते शुक्लपक्षीओ कहेवाय छे, अने तेथी वधारे ससार जेने बाकी होय ते कृष्णपक्षीओ कहेवाय छे"

आ प्रमाणे जगत्पतिना मुखथी सांभळीने पण जीवोए समकित उपार्जन कर्यु (समकित पाम्या).

"हे गौतम! तारायी वे धर्मीमात्र समकित पामेलो ते खेडूत अर्ध पुद्गल परावर्तनी अदर मोक्षपदने पामशे. तेथी तने तेने प्रतिबोध करवा माटे में मोकल्यो

हतो." आ प्रमाणे ते खेड्तनु दृष्टांत सांभळीने इन्द्र विगेरे समकितमा सुदृढ थया. तेवी रीते हे भव्य प्राणीओ ! तमारे पण चित्तमा चिरकाळ पर्यंत समकितने स्थिर करवु.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ प्रथम स्तंभे तृतीयं व्याख्यानम् ॥३॥

व्याख्यान ४ थुं.

समकितना त्रण भेद विषे

समकितने ज्ञानचारित्र करता पण अधिक कह्यु छे ते आ प्रमाणे—

श्लाघ्यं हि चरणज्ञानवियुक्तमपि दर्शनम् ।
न पुनर्ज्ञानचारित्रे, मिथ्यात्वविषदूषिते ॥ १ ॥
ज्ञानचारित्रहीनोऽपि, श्रूयते श्रेणिकः किल ।
सम्यग्दर्शन माहात्म्यात्तीर्थकृत्त्व प्रपत्स्यते ॥ २ ॥

भावार्थ—" ज्ञान अने चारित्र विनानुं एकलु समकित पण प्रशंसाने पात्र छे, परंतु मिथ्यात्व रुपी विषथी दूषित थयेला ज्ञान ने चारित्र श्लाघ्य नथी. जुओ! श्रेणिक राजा ज्ञान अने चारित्र रहितज हता एम सांभळाय छे, परंतु सम्यक्दर्शन (समकित)ना प्रभावथी ते तीर्थंकर थवाना छे, अर्थात् तेमणे तीर्थंकर नाम कर्म बांध्युं छे "

अहीं कोइ शंका करे के " श्रेणिक राजाए त्रण प्रकारना समकितमांथी कया समकितवडे तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन, कर्यु ? " तेनो जवाब ए छे के " स-

राजा! मने आ नगरमां हमेशां मिष्टान्न भोजन तथा उपर एक महोर दक्षिणा मळे, तेवुं करावी आपो." ते सांभळीने राजाए कांइक हसीने ते प्रमाणे करावी आप्युं. पछी ते ब्राह्मण हमेशां जुदे जुदे घेर भोजन करवा लाग्यो. परंतु दक्षिणाना लोभथी करेला भोजननुं वमन करीने ते एकथी वधारे घेर जमवा जवा लाग्यो. तेथी ते थोडा काळमां कुष्ठी थयो. ते जोइने राजाए तथा तेना छोकरे तेनुं अपमान कर्युं तेथी ते कुष्ठी क्रोधायमान थयो. पछी तेणे एक बोकडो अणाव्यो अने तेने पोताना कुष्ठनो रस चोपडी चोपडीने घास विगेरे खवरावा लाग्यो. तेथी ते बोकडानुं लोही विगेरे सर्व कुष्ठमय थइ गयुं. पछी ते ब्राह्मणे एक दिवस पोताना पुत्र विगेरे कुटुंबने कह्युं के "आपणा कुळनी एवी रीत छे के ज्यारे कोइ वृद्ध थाय, त्यारे ते पोताना पुत्रादिकने एक बोकडाना मांसनुं भोजन करावीने पछी त तीर्थगमन करे छे, माटे तमे सौ आ बोकडानुं मांस खाओ, अने मने रजा आपो." ते सांभळीने ते पुत्रादिके कबूल कर्युं. एटले ते सर्वने पेला बोकडानुं मांस खवरावीने वळी कुष्ठी बनावीने ते ब्राह्मण रात्रिने समये घरमांथी नीकळी गयो. वनमां भ्रमण करता विविध प्रकारनी औषधिओना मूळ धोवाइने आवेलुं कोइ स्थानोविपानुं पाणी पीवाथी ते व्याधि रहित थइ गयो. एटले ते पाछो पोताने घेर आव्यो, अने पोताना पुत्रोने कह्युं के "तमे मारुं अपमान कर्युं, तेनुं आ फळ तमने प्राप्त थयुं अने हुं तो व्याधि रहित थइ गयो." आ सर्व वृत्तांत जाणीने पौरलोकोए ते ब्राह्मणने घणी निर्भर्त्सना (निंदा) करीने काढी मूक्यो. एटले ते राजगृह नगरे आवी दरवाजा पासे रह्यो. तेवामां अहीं अमारुं समवसरण थयुं ते वखते अमने वांदवाने उत्सुक थयेलो द्वारपाळ ते सेडुक ब्राह्मणने दरवाजा पर चोकी करवा राखीने समवसरणमां आव्यो. पाछळ ते ब्राह्मणे पुरदेवी पासे वडां, पक्वान्न विगेरे घणुं नैवेद्य पुरजनोए मूकेलुं हतुं ते कंठ सुधी ठांसी ठांसीने खाधुं. पछी अत्यंत तृषा लागवाथी पाणी पाणी करतो मृत्यु पामीने ते दरवाजानी ज पासेनी वावमां देडको थयो.

एकदा फरीथी अमारुं समवसरण अहीं थयुं. ते वखते अमने वंदन करवानी उत्कंठा वाळी पाणी भरनारी स्त्रीओना मुखथी अमारुं आगमन सांभळीने ते देडकाने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. तेथी ते देडको अमने वांदवा माटे वावमांथी बहार नीकळी मार्गमां कूदतो कूदतो आवतो हतो, तेवामां तमे पण ते रस्ते

अहीं आवता हता, एटले तमारा घोडाना पग नीचे दबाइने अमारा ध्यानमा मरण पामी सौधर्म देवलोकमा दर्दुराक नामे देवता थयो.

ते देव आजे इन्द्रे पोतानी सभामा करेली तमारा समकितनी प्रशंसा सांभळीने ते पर श्रद्धा नहीं आववाथी तमारी परीक्षा करवा माटे अहीं आव्यो. अने तेणे कुष्ठना मीषथी गो शीर्षचंदन वमे अमारी भक्ति करी. "

आ प्रमाणे ते देवनु वृत्तांत सांभळीने श्रेणिक राजाए फरीथी प्रभुने पूछ्युं के " हे भगवान ! ते देवताए आपने छींक आवी, त्यारे मरवानु शा माटे कह्यु, मने चिरकाळ जीववानु शा कारणथी कह्यु, अभयकुमारने जीव अथवा मर एम केम कह्यु अने कालसौकरिकने म मर ने म जीव एवु शा हेतुथी कह्युं ?" जिनेश्वर बोल्या के "हे राजा! ते देवे भक्तिना रागथी अमने एम कह्यु के–हे स्वामी! तमे समग्र कर्मनो क्षय करीने जन्म जरा मरण विगेरेथी रहित स्वाभाविक सुखवाळा मोक्ष पदने जल्दी पामो. तमने चिरकाळ जीववानुं एवा हेतुथी कह्युं के–तमे जीवता छो त्यां सुधी राज्यसुखने अनुभवो छो, पण मरी गया पछी घोर नरकमा जवाना छो, माटे घणो काळ जीवता रहो, एम कह्यु. तथा अभयकुमार मंत्रीने जे कह्यु ते एवा हेतुथी कह्यु के—ते जीवतो सतो अहीं सुखो भोगवे छे, अने मरण पामीने सर्वार्थसिद्ध विमानमा देव थनार छे, माटे मरो अथवा जीवो एम कह्यु. अने कालसौरिकने एवा अभिप्रायथी कह्यु के—ते अहीं जीवीने हमेशा पांचसो पाडानो वध करे छे, अने मरीने घोर नरकमा जवानो छे, माटे तेने जीववानु के मरवानु एके लाभकारी न होवाथी म मर म जीव एम कह्यु. "

आ सर्व खुलासा सांभळीने राजा आश्चर्य पामी फरीथी जिनेश्वरने वंदना करीने बोल्यो के " हे स्वामी ! मारी नरकगति न थवा माटे तेना निवारणनो उपाय बतावो. " प्रभु बोल्या के " पूर्वे मिथ्यात्वपणामा जे नारकीनु आयुष्य बांध्यु छे ते अवश्य भोगववुज पडशे,–तेनी बीजी प्रतिक्रिया छे ज नहीं. " आ प्रमाणे कह्या छतां पण श्रेणिके वधारे आग्रह करवाथी तेने बोध थवा माटे प्रभुए कह्यु के " हे राजा ! जो तु तारी कपिला नामनी दासीने हाथे मुनिने दान अपाव, अथवा हमेशा पांचसो पशुनो वध करनार कालसौकरिकने एक दिवस हिंसाकर्मथी अटकाव, तो तारे दुर्गतिमा जवु न पडे. " ते सांभळीने राजा ' आ कार्य तो मारा करवानु छे ' एम धारतो पोताना नगर तरफ चाल्यो.

मार्गमा दर्दुरांक देवे राजानी परीक्षा करवा माटे नदीमा जाळ नाखीने माछला पकडता एक मुनिनु रूप बनाव्यु, पछी ते मुनिने मत्स्यनु मांस खातो दी ठो. एटले राजाए तेने कह्यु के " हे साधु ! आ दुष्कर्म करवु मूकी दे " त्यारे ते साधु बोल्यो के " हु एकलोज आवु कर्म करु छु एम नथी, पण महावीर स्वामीना सर्व शिष्यो माग जेवाज छे. " ते सांभळी श्रेणिके तेने कह्यु के ' अरे ! तारुज आवु हीनभाग्य छे, बाकी वीरपरमात्माना शिष्यो तो गंगाना जळ जेवा पवित्र-पुण्यस्वरूप छे " एवी रीते तेनी निर्भत्सना करीने राजा नगरीमा प्रवेश करे छे तेवामा तेणे एक युवान साध्वीनु रूप जोयु ते साध्वीए हाथे पगे अलतानो रस लगाड्यो हतो, यथायोग्य सर्व अलंकारो अंगपर धारण कर्या हता नेत्रमा काजळ आंज्यु हतु, मुख तंबोळथी रंगेलु हतु अने गर्भवती हती. तेने जोइने राजाए कह्यु के " हे जैनी साध्वी ! आवु शासन विरूद्ध आचरण केम करे छे ? " त्यारे ते बोली के " हु एकलीज आवी छु एम नथी, पण सर्व साध्वीओ आवीज छे " ते सांभळीने राजाए कह्यु के " अरे पापिणी ! तारुंज आवु अभाग्य छे, के जेथी आवु विरूद्ध आचरण करे छे अने बोले छे. " एप्रमाणे तेनो तिरस्कार करीने राजा आगळ चाल्या तेवामा ते देवताए पोतानु दिव्य स्वरूप प्रगट करी राजाने प्रणाम करीने कह्यु के " हे राजा ! तने धन्य छे. इन्द्रे जे प्रमाणे तमारी प्रशंसा करी हती तेवाज तमे छो. जेम समुद्र मर्यादा न मूके तेम तमे तमारा सम्यक्त्वनी मर्यादानो त्याग कर्यो नहीं. " इत्यादि स्तुति करीने ते देव राजाने एक दैवी हार तथा बे क्षौम वस्त्र आपी अदृश्य थयो

राजाए पोताना महेलमा आवी कपिला दासीने बोलावीने कह्यु के "तु मुनिने तारा हाथे दान आप " ते बोली के " हे स्वामी ! मने एवी आज्ञा न आपो हु दान नहीं आपु. तमे हुकम करो तो हु अग्निमा पेसु, विष खाउ, पण [illegible] कार्य नहीं करु. " तेना आवा वचनो सांभळीने कालसौकरिकने बोलावी तेने कह्यु के " तु मात्र एकज दिवस पाडानो वध करवो तजी दे " ते बोल्यो के " [illegible] स्वामी ! हु जन्मथी दररोज पांचसो जीवनो वध करु छु ते हु मूकीश नहीं. मा[illegible] आयुष्य घणु गयु छे, हवे थोडु बाकी छे, तेथी तेटला माटे हवे प्राणीवधने [illegible] माटे तजु ? शी रीते मूकु ? मोटो समुद्र तरीने नाना खाबोचीआमा कोण डूबे ? [illegible] ते सांभळीने हास्य करता राजाए तेने एक मोटा अंधकूपमा नखाव्यो. व[illegible]

दिवसे प्रातःकाळमां राजा प्रभु पासे जइ तेमने वंदना करीने बोल्यो के " हे प्रभु! में कालसौकरिकने पाडाना वधथी एक दिवसने माटे अटकाव्यो छे. " त्यारे प्रभु बोल्या के " ते कालसौकरिके कुवामा रह्या रह्या माटीना पाचसो पाडा करीने तेनो वध कर्यो छे. " ते सांभळीने राजाए जिनेश्वरने कह्यु के " हे नाथ ! कृपानिधि एवा आपनुं शरण मूकीने हु कोने शरणे जाउं ? " जिनेन्द्र बोल्या के " हे वत्स ! खेद न कर. तु समकितना प्रभावथी आ भवथी त्रीजा भवे मारी जेवो पद्मनाभ नामे तीर्थंकर थवानो छे. " (आ स्थाने विस्तार घणो छे, ते उपदेशकदली नामना ग्रंथथी जाणवो.) ते साभळीने हर्ष पामी पोताना नगरमा आवी श्रेणिक राजा निरतर धर्मकृत्यो करवा लाग्यो. ते त्रण काळ जिनेश्वरनी पूजा करतो अने हमेशा जिनेश्वरनी सन्मुख एकसो आठ सुवर्णना चोखा वडे साथियो पूरतो, परतु स्वयभूरमण समुद्रना मत्स्यनु भक्षण करवाना त्याग जेटलो पण ते नियम लइ शकतो नहीं एवो विरति रहित छता पण क्षायिक समकितना बळथी ते बहोतेर वर्षना आयुष्यवाळो, सात हाथ उचो अने श्रीमहावीरनीज जेवो आवती चोवीशीमां प्रथम तीर्थंकर थशे.

" श्रेणिक राजानो जीव पहेली नरकमा चोराशी हजार वर्षनुं आयुष्य भोगवीने शुभ भाव वडे क्षायिक समकितना प्रभावथी तीर्थंकरपणाने पामशे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादग्रंथस्यवृत्तौ प्रथम स्थंभे चतुर्थ व्याख्यानम् ॥ ४ ॥

व्याख्यान ५ मुं.

समकितना सडसठ भेदमांना पहेला चार श्रद्धाना भेद पैकी परमार्थ संस्तव नामनी प्रथम श्रद्धाना स्वरूप विषे.

जीवाजीवादितत्त्वाना, सदादिसप्तभि पदैः ।
शश्वत्तच्चिन्तन चित्ते, सा श्रद्धा प्रथमा भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" जीव, अजीव विगेरे तत्त्वोनु सत् विगेरे सात पदोवडे चित्तमा निरंतर चिंतवन करवु, ते प्रथम श्रद्धा कहेवाय छे. "

जे प्राणोने धारण करे तेने जीव कहीए अने तेथी विपरीत–प्राणरहीत ते अजीव कहीए. मूळ श्लोकमा जीव अजीव आदि तत्वो एम कह्यु छे तेथी आदि शब्दवडे पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध अने मोक्ष ए सात तत्त्वो ग्रहण करवा ते तत्त्वोनु छतापणु, सख्या, क्षेत्रस्पर्श, काळ, अन्तर, भाव अने अल्पबहुत्व ए सात स्थानकोवडे निरतर मनमा चिंतन करवु, ते परमार्थ संस्तव नामनी समकितनी पहेली श्रद्धा कहेवाय छे, तेनु बीजु नाम परमरहस्यस्तव पण कहेलु छे

अंगारमर्दक आचार्य विगेरने पण परमार्थ संस्तव विगेरे तो संभवे छे, एम कोइ शका करे, तो ते शका करवापणु नथी, केमके आ श्रद्धामा केवळ श्रद्धावाळानेज अधिकारी गणेला छे अने अगारमर्दक जेवा मिथ्यात्वीने तात्त्विक श्रद्धानो बिलकुल संभवज नथी. आ पहेली श्रद्धा उपर अभयकुमारनु दृष्टान्त छे ते नीचे प्रमाणे—

अभय कुमारनु दृष्टान्त

औत्पत्त्यादिधिया सद्य, अभयो मन्त्रिणा वर. ।
तत्त्वपरिचयादाप, सर्वार्थसिद्धिक सुखम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" औत्पातकी विगेरे बुद्धिना स्थान रुप मन्त्रिवर अभयकुमार तत्त्वना परिचयथी सर्वार्थसिद्धिनु सुख पाम्यो. "

राजगृह नगरमा प्रसेनजित राजा राज्य करतो हतो. तेने श्रेणिक विगेरे सो पुत्रो हता. एकदा राजाए " राज्यने योग्य कयो कुमार छे ?" तेनी परीक्षा करवा माटे ते सो पुत्रोने एकेक खीरनो थाळ आपी साथे जमवा बेसाड्या. पछी ज्यारे तेओए जमवानु शरु कर्यु, त्यारे राजाए अत्यंत भूख्या थयेला कुतराओ तेमना तरफ छोडी मूकाव्या ते कुतराओने आवता जोताज एक श्रेणिक सिवाय बीजा सर्वे कुमारो जम्या विनाज खीरथी खरडेला (एठा) हाथे उभा थइने नाठा. श्रेणिक कुमार तो जेम जेम कुतराओ पासे आववा लाग्या, तेम तेम पोताना भाइओना थाळ तेमने आपतो आपतो पोताना थाळनी खीर खावा लाग्यो. ए प्रमाणे ते पुरेपुरु जम्यो. आ वृत्तांत जाणीने राजाए नवाणु कुमारोनी प्रशंसा करी, अने श्रेणिकनी निंदा करता सता तेने कह्यु के " तें कुतराओ साथे भोजन कर्यु तेथी तने धिक्कार छे. "

एकदा फरीथी परीक्षा करवा माटे खाजा, लाडु विगेरे करंडीआमा भरीने तेना ढाकणा बंध करी ते उपर सील मार्या. तथा माटीना कोरा घडा पाणीथी भरीने ते उपर पण सील कर्या. पछी ते करंडीआओ अने ते घडाओ कुमारोने आपीने राजाए कह्यु के " तमारे आ सील तोड्या विना करंडि-यामाथी पक्वान्न खावु अने घडाओमाथी पाणी पीवु " एम कहीने तेओने एकान्त स्थळमा राख्या. पछी सर्व कुमारोने भूख लागी, पण तेओने खावानो उपाय सूझ्यो नहीं. ते जोइने श्रेणिके करंडीआओने हलावी हलावीने तेनी वासनी सळीयोना छिद्रोमाथी ते पक्वान्ननो भूको काढ्यो काढीने तथा घडाओने लुगडा वींटीने भीना थयेला ते वस्त्रोने नीचोवी नीचोवीने सर्व कुमारोने तृप्त कर्या. ते हकीकत सांभळीने राजाए श्रेणिकनी बुद्धिथी अंतःकरणमा प्रसन्न थया छता उपरथी निंदा करी के " पक्वान्ननो भूको करीने रांकनी जेम खाधो, तेनी बुद्धि रांक जेवी जाणवी. "

एकदा राजमहेलमा अग्नि लागी, ते वखते राजाए कुमारोने आज्ञा आपी के " जेनाथी जे चीज लेवाय ते लइ ल्यो " ते सांभळीने सर्वे कुमारो मणि माणिक्य विगेरे जवाहीर लइ आव्या. अने श्रेणिके तो राजाना जयना प्रथम

चिन्ह रूप जंभा लीधी. ते सांभळीने पण राजाए श्रेणिकनी निंदा करी, अने तेनु भंभसार नाम पाड्यु

पछी राजाए श्रेणिक सिवाय बीजा सर्व कुमारोने जूदा जूदा देशो आप्या, पण श्रेणिकने काइ आप्यु नहीं तेथी अपमान पामेलो श्रेणिक गुप्त रीते राजगृह नगरमांथी नीकळी गयो. अनुक्रमे चालता चालता ते बेनातट नगरे पहों च्यो. ते नगरनी अंदर प्रवेश करी श्रेणिक कोइ भद्र नामना श्रेष्ठीनी दुकाने बेठो ते दिवसे श्रेणिकना पुण्यप्रभावथी ते श्रेष्ठीने वेपारमा घणो लाभ थयो. तेथी तेणे श्रेणिकने पूछ्यु के "हे पुण्यनिधि! आजे तमे कोना अतिथि थवाना छो?" श्रेणिके हास्य करता जवाब आप्यो के "आपनाज." ते सांभळीने श्रेष्ठीए हर्षित थइ विचार कर्यो के "आजे स्वप्नमा में मारी पुत्रीने योग्य वर जोयो हतो तेज आ जणाय छे, माटे बहु ठीक थयु." एम विचारीने श्रेष्ठी दुकान बंध करी श्रेणिकने पोतानी साथे पोताने घेर लइ गयो त्या गौरवने योग्य एवा ते श्रेणिक नी तेणे भोजनादिकवडे सारी परोणागत करी. पछी पोताना कुटुंबीओने बोला वीने श्रेष्ठीए महोत्सव सहित विधिपूर्वक पोतानी पुत्री सुनंदाने श्रेणिक साथे परणावी. श्रेणिक तेणीनी साथे प्रीति पूर्वक क्रीडा करवा लाग्यो, केटलेक काळे सुनंदा गर्भवती थइ ते वखते जिनपूजा करवी, हाथी उपर बेसवु अने अहिंसा नो पटह (अमारीपटह) वगडाववो, विगेरे तेणीने थयेला दोहदो श्रेणिके पूर्ण कर्या.

अहीं राजगृह नगरीमां प्रसेनजित राजा श्रेणिकना जवाथी तेना वियो गना दुःखवडे अत्यंत दुःखी थइने तेनी शोध करावत्रा लाग्यो अन्यदा कोइ सार्थना मुखथी 'श्रेणिक बेनातट नगरे छे' एम सांभळ्यु. तेवामा प्रसेनजित राजाने आयुष्यना अंतने करनारो महा व्याधि उत्पन्न थयो, तेथी पोतानु मृत्यु समीप जाणीने तेणे श्रेणिकने तरत बोलाववा माटे राजसेवकोने सांढणीपर बेसा डीने बेनातट तरफ मोकल्या तेमणे श्रेणिक पासे आवीने राजानी अंतस्थिति वाळी हकीकत कही. ते सांभळीने श्रेणिके सुनंदाने कह्यु के "हे प्रिया! हु मारा पिता पासे जाउ छु, तमारे तो हाल अहींज रहेवु योग्य छे, तेथी अहीं रहो अने जो तमारे आ गर्भथी पुत्र प्रसवे, तो तेनु अभय नाम राखजो." ते सां भळीने सुनंदा बोली के "ज्यारे ते पुत्र आठ वरसनो थाय, अने मने पोताना पितानु ठेकाणु पूछे त्यारे मारे शो जवाब आपवो?" ते सांभळीने श्रेणिके खमी

वडे नारवट उपर आ प्रमाणे अक्षर लख्या के—

"राजगृहे पालि गाम गोवालि धवले टोमे घर कहीया"

"राजगृह नगरमा ते गामना गोवाळ (राजा) अमे छीए अने उज्वळ टोमावाळुं (राजमहेल) अमारुं घर छे एम कहेजे."

आ विषय उपर धर्मोपदेशमाळामा नीचे प्रमाणे श्लोक छे.—

गोपालकाः पाण्डुरकुड्यवन्तो, वयं पुरे राजगृहे वसामः ।
आहूवानमंत्रप्रतिमानितीमान्, वर्णान् लिखित्वार्पयति स्मचास्यै॥१॥

भावार्थ—"गो[1]नुं पालन करनारा अने श्वेत वर्णनी भींतोवाळा राजगृहपुरमा अमे रहीए छीए. आ प्रमाणे पुत्रनुं आह्वान करवाना (बोलाववाना) मंत्रनी जेवा अक्षरो लखीने श्रेणिके तेणीने (सुनंदाने) आप्या."

पछी पियाने युक्ति प्रयुक्तिथी समजावी तेणीनी रजा लइने श्रेणिक राजगृह नगरे आव्यो, अने पिताना चरण कमळमा पडी नम्यो. तेने आवेलो जोइने राजाए हर्षना अश्रुजळ साथे सुवर्णकळशना जळवडे महोत्सव पूर्वक तेने राज्याभिषेक कर्यो. पछी राजाए तपश्चर्या अंगीकार करी अने अनुक्रमे देवलोकने पाम्यो.

श्रेणिके राजा थया पछी परीक्षा करी करीने चारसो नवाणु मंत्रीओ कर्या. पछी ते सर्वेनो उपरी इंगिताकारवडे पारका मननी वातने पण जाणे एवो मंत्री करवानी इच्छाथी तेणे परीक्षा करवा माटे पोतानी उर्मिका (वींटी) एक जळ विनाना उंडा कूवामा नाखीने आघोषणा करावी के "आ उर्मिकाने जे पुरुष कूवाने काठे रहीने पोताना हाथवडे लइ लेशे ते सर्व मंत्रीओमा अग्रेसर (मुख्य) मंत्री थशे." ते सांभळी सर्वे मंत्रीओ तथा बीजा घणा विचक्षण पुरुषो ते कूवा पासे आवीने ते मुद्रिका (वींटी) लेवानो प्रयास करवा लाग्या. पण सर्वे खेद पामी निराश थइने पाछा गया.

अहीं बेनातटमा सुनंदाए गर्भ समय पूर्ण थता एक पुत्रने जन्म आप्यो.

---

[1] पृथ्वीनुं पालन करनार राजा, बीजो अर्थ गायनुं पालन करनार गोवाळ.

तेनु अभयकुमार नाम पाडयु ते कुमार अनुक्रमे मोटो थयो, तेने निशाळे मोकल्यो. त्यां ते सर्वकळाओमा घणो निपुण थयो. एकदा तेने साथे भणनारा छोकराओ साथे कजीयो थयो. एटले ते छोकराओए अभयने 'बाप विनाना' कहीने तेनी मश्करी करी ते सांभळीने अभये अति खेदयुक्त थइ मानी पासे जइ तेने पुछ्युं के "हे माता! मारा पिता कोण छे? अने क्यां छे?" सुनंदाए कह्युं के "हे वत्स! ते हुं जाणती नथी कोइ परदेशी पुरुष मने परणीने थोडी मुदत अहीं रहीने गयेल छे. परंतु जती वखते तेणे आ भारवट उपर कांइक अक्षरो लख्या छे" ते सांभळीने अभयकुमारे भारवटपरना अक्षरो वांची पितानुं स्वरूप जाणी माताने कह्युं के "हे माता! मारा पिता तो राजगृहीनगरीना राजा छे, माटे हवे आपणे त्यां जइए." पछी भद्र श्रेष्ठीनी रजा लइने अभयकुमार पोतानी माने साथे लइ राजगृहनगरना उद्यानमां आव्यो. त्यां सुनंदाने बेसारीने अभयकुमारे गाममां प्रवेश कर्यो. पेला कुवा पासे आवतां घणा लोकोने त्यां एकठा थयेला जोइने अभये पुछ्युं के 'अहीं केम घणा लोको एकठा थया छे?' त्यारे तेओए तेने मुद्रानुं वृत्तांत कह्युं. ते सांभळीने कुमारे कह्युं के "ए वात कांइ दुष्कर नथी तरतज बनी शके तेम छे." एम कहीने तेणे कांठापर रहीने एक छाणनो पिंडो ते मुद्रिका उपर मार्यो, एटले ते मुद्रिका छाणमां चोटी गइ पछी ते छाण सुकाइ गयुं एटले ते जळ विनानो कूवो जळथी पूर्ण भरी दीधो. ते वखते पेलुं शुष्क छाण मुद्रिका साथे तरीने उपर आव्युं अभयकुमारे ते पाताने हाथे लइ लीधुं अने तेमां चोटी रहेली वींटी लइलीने राजाने मोकली. आ वृत्तान्त सांभळीने हर्ष पामेलो राजा श्रेणिक जाते कुवा पासे आवी कुमारने जोइ अत्यंत खुशी थयो. पछी राजाए कुमारने आलिंगन दइने पुछ्युं के "हे वत्स! तुं कये गामथी आवे छे? अथवा शुं तुं आज गाममां रहे छे?" कुमारे प्रणाम करीने जवाब आप्यो के "हे स्वामी! हुं बेनातट नामना पुरमांथी आजेज अहीं आव्यो छुं." राजाए पुछ्युं "ते गाममां एक धन नामे श्रेष्ठी रहे छे तेने सुनंदा नामनी पुत्री छे. तेनुं वृत्तांत तुं कांइ जाणे छे?" कुमारे कह्युं के "हा जी. तेणीए एक पुत्र प्रसव्यो छे. तेनुं नाम अभयकुमार पाडयुं छे. ते कुमार रूप गुण अने उम्मरवडे मारी जेवो ज छे हे स्वामी! मने जोवाथी तेने ज जोयो, एम जाणो. तेनी साथे मारे गाढ स्नेह छे. तेना विना हुं एक क्षण पण रही शकतो नथी." राजाए पुछ्युं के

"त्यारे तेने मूकीने तु अहीं केम आव्यो ?" कुमार बोल्यो "तेने अने तेनी माताने अहीं समीपना उद्यानमाज मूकीने हु अत्रे आव्यो छु." ते सांभळीने राजा ते कुमारनी साथे उद्यानमा गयो, अने पोतानी प्रिया सुनंदाने मळ्यो. राजाए सुनंदाने पूछ्यु के "ते वखते तने जे गर्भ हतो ते पुत्र क्यां छे ?"

सुनंदा बोली के "हे प्राणनाथ ! आ आपनी साथे आव्यो तेज ते पुत्र छे." ते सांभळी राजाए कुमारने कह्यु के "हे वत्स ! तु मारी पासे जुठुं केम बोल्यो ?" तेणे जवाब दीधो के "हु निरंतर मारी माताना हृदयमा रहुं छु, तेथी में तेवो जवाब आप्यो हतो." ते सांभळी राजाए आनंद पामी कुमारने पोताना खोळामा बेसाड्यो. पछी राजाए अति आनंद पूर्वक ध्वज तोरणथी शणगारेला राजगृहनगरमा सुनंदाने प्रवेश कराव्यो, अने अभयकुमारने चारसो नवाणु मंत्रीओमा प्रधान मंत्रीनु पद आप्यु. पछी ते बुद्धिशाळी अभयकुमारने आगळ करीने श्रेणिक राजाए घणा देशो साध्या. (पोताने तार्बे कर्या.)

एकदा श्रीमहावीर स्वामी राजगृहीना उपवनमा समवसर्या. तेमने वांदवा माटे अभयकुमार गयो. त्यां घणा देव, देवी, साधु, साध्वी विगेरेथी व्याप्त एवी भगवाननी पर्षदामा एक कृश गात्र वाळा शान्त महर्षिने जोइने कुमारे भगवानने पूछ्यु के "हे स्वामी ! आ महर्षि कोण छे ?" प्रभु बोल्या के—ए वीतभयपत्तनना राजा नीतिमान उदायन छे. ते राज्यावस्थामा मने वांदवा आव्या हता, त्यारे में तेने आ प्रमाणे धर्मोपदेश आप्यो हतो के—"सन्ध्याना रंग जेवु, पाणीना परपोटा जेवु अने दर्भना अग्र भाग उपर रहेला जळना बिंदु जेवु आ जीवित चंचळ छे. अने युवावस्था नदीना पूरनी जेवी वही जनी छे तो हे पापी जीव! तु केम बोध पामतो नथी ? अहो ! मुक्तिना जेवु सुख आ संसारमा कोइ पण स्थळे नथी. आ विषय पर अंगारदाहकनु दृष्टान्त छे ते तमे सांभळो.—

अंगारदाहकनुं दृष्टान्त

कोइ एक अंगारा (कोयला) नो वेपार करनार काष्ट बाळीने तेना कोयला पाडवा माटे एक पाणीनो भरेलो घडो लइ वनमा गयो. त्यां काम करता तृषा लागवाथी अनुक्रमे ते आखो घडो पाणी पी गयो. परंतु माथा पर सूर्यनो ताप होवाथी, पासे कोयला पाडवा करेला अग्निना तापथी तथा लाकडा कापवा-

तेनु अभयकुमार नाम पाड्युं. ते कुमार अनुक्रमे मोटो थयो, तेने निशाळे मोकल्यो. त्यां ते सर्वकळाओमा घणो निपुण थयो. एकदा तेने साथे भणनारा छोकराओ साथे कजीयो थयो एटले ते छोकराओए अभयने 'बाप विनाना' कहीने तेनी मस्करी करी ते साभळीने अभये अति खेदयुक्त थइ माती पासे जइ तेने पुछ्युं के "हे माता! मारा पिता कोण छे? अने क्या छे?" सुनदाए कह्यु के "हे वत्स! ते हु जाणती नथी. कोइ परदेशी पुरुष मने परणीने थोडी मुदत अहीं रहीने गयेल छे. परतु जती वखते तेणे आ भारवट उपर कांइक अक्षरो लख्या छे." ते साभळीने अभयकुमारे भारवटपरना अक्षरो वाची पितानु स्वरूप जाणी माताने कह्यु के "हे माता! मारा पिता तो राजगृहीनगरीना राजा छे, माटे हवे आपणे त्यां जइए." पछी भद्र श्रेष्ठीनी रजा लइने अभयकुमार पोतानी माने साथे लइ राजगृहनगरना उद्यानमा आव्यो त्या सुनदाने बेसारीने अभयकुमारे गाममा प्रवेश कर्यो. पेला कुवा पासे आवता घणा लोकोने त्या एकठा थयेला जोइ ने अभये पूछ्यु के 'अहीं केम घणा लोको एकठा थया छे?' त्यारे तेओए तमाम मुद्रानु वृत्तात कह्यु. ते साभळीने कुमारे कह्यु के "ए वात काइ दुष्कर नथी तरतज बनी शके तेम छे." एम कहीने तेणे कांठापर रहीने एक छाणनो पिंडो ते मुद्रिका उपर नाख्यो, एटले ते मुद्रिका छाणमा चोटी गइ. पछी ते छाण सुकाइ गयु एटले ते जळ विनानो कुवो जळथी पूर्ण भरी दीधो ते वखते पेलु शुष्क छाणु मुद्रिका साथे तरीने उपर आव्यु अभयकुमारे ते पोताने हाथे लइ लीधु अने तेमा चोटी रहेली वींटी उखेडीने राजाने मोकली. आ वृत्तान्त साभळीने हर्ष पामेलो राजा श्रेणिक जाते कुवा पासे आवी कुमारने जोइ अत्यत खुशी थयो. पछी राजाए कुमारने आलिंगन दइने पूछ्यु के "हे वत्स! तु कये गामथी आवे छे? अथवा शु तु आज गाममा रहे छे?" कुमारे प्रणाम करीने जवाब आप्यो के "हे स्वामी! हु बेनातट नामना पुरमाथी आजेज अहीं आव्यो छु" राजाए पूछ्यु "ते गाममा एक भद्र नामे श्रेष्ठी रहे छे. तेने सुनदा नामनी पुत्री छे. तेनु वृत्तात तु काइ जाणे छे?" कुमारे कह्यु के "हा जी तेणीए एक पुत्र प्रसव्यो छे. तेनु नाम अभयकुमार पाड्यु छे ते कुमार रूप गुण अने उम्मरवडे मारी जेवो ज छे हे स्वामी! मने जोवाथी तेने ज जोयो, एम जाणो. तेनी साथे मारे गाढ स्नेह छे. तेना विना हु एक क्षण पण रही शकतो नथी." राजाए पूछ्यु के

ना श्रमथी तेने अत्यंत तृषा लागी. तेथी पाणी विना ते मूर्ख खाटने निद्रावश थयो. निद्रामा तेने स्वप्न आव्यु. तेमां ते पोताना घरमा रहेलु सर्व जल पी गयो. पछी अनुक्रमे सरोवरोनु, कुवाओनु, नदीओनु, तथा छेवट सघळा समुद्रोनु जळ ते पी गयो. तो पण तेनी तृषा छीपी नहीं. पछी एक जीर्ण कुवामा थोडु पाणी हतु, ते लेवा माटे तेणे घासनो पूळो दोरडे बांधीने तेमां नाख्यो ते पूळो बहार काढीने तेमांथी नीकळता जळ बिन्दुने जीज वडे चाटवा लाग्यो. समुद्रना जळथी पण जनी तृषा मटी नहीं, तेनी तृषा आ पूळामांथी झरता जळकणथी शी रीते नष्ट थाय ?

आ दृष्टान्तनु तात्पर्य ए छे के-"स्वर्गादिकना अनेक सुख जोगव्या छ ता जेने तृप्ति थइ नहीं तेने अल्प आयुषवाळा मनुष्य देहना अल्प सुखथी शी रीते तृप्ति थइ शके ? जरावडे जर्जरित अंग थया छता पण ते विषय सुखथी तृप्त थतो नथी." आ प्रमाणेनी अमारी वैराग्यमय वाणी सांजळीने उदायन राजाने प्रतिबोध थवाथी तेणे तरतज दीक्षा ग्रहण करी, आ चोवीशीमा आ छेल्ला राजर्षि छे. हवे पछी कोइ पण राजा दीक्षा लेशे नहीं. आ राजर्षि आ जवमाज सर्व कर्मनो क्षय करीने मोक्ष पद पामशे.

आ प्रमाणेनी हकीकत प्रजुना मुखथी सांजळीने अजयकुमारे पोता घेर जइने श्रेणिकराजाने कह्यु के "हे स्वामी ! आपनी आज्ञाथी हु दीक्षा लेव इच्छु छु, माटे आप कृपा करीने मने चारित्र आपावो. केमके पूज्य पिता ! मोटा एयना उदयथी आप जेवा जैनधर्मी हितकारक पिता मळ्या छे, अने साक्षा जिनेश्वर श्रीमहावीर स्वामी गुरु मळ्या छे, तेथी आवा संयोगमा पण जो दुष्कर्मना मर्मनु मथन न करी शकु, तो पछी मारा जेवो बीजो कोण मूर्ख कहेवाय पुत्रना आवा युक्तियुक्त वचन सांजळीने राजाए तेने आलिंगन दइने कह्यु "हे वत्स ! ज्यारे हु क्रोधथी तने 'अरे पापी ! मारी पासेथी दूर जा, मुख बतावीश नहीं' एवा वाक्य कहु त्यारे तु व्रत ग्रहण करजे." आ प्रमाणे पिताना वचनने विनयवान अजयकुमारे अंगीकार कर्यु अने जक्ति पूर्वक ते सेवा करवा लाग्यो

एकदा आकरी शीतऋतुमा श्री महावीरस्वामी राजगृही नग गुणशील चैत्यमा समवसर्या ते वखते श्रेणिक राजा चेल्लणा राणी सहित श्र

अने सातमीमा तेत्रीश सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति होय छे, अने ते साते नरक पृथ्वीमां क्षेत्रथी उत्पन्न थयेली वेदना होय छे. पाच नरकमा क्षेत्र वेदना साथे अन्योन्यकृत वेदना होय छे, अने प्रथमनी त्रण नरकमा ते बे प्रकार उपरात त्रीजी परमाधामीकृत वेदना होय छे. " विगेरे नरकनु यथार्थ स्वरुप साभळीने राणीए आचार्यने पूछ्युं के " अहो ! आपने पण मारा जेवुज स्वप्न आव्यु छे के शुं ? " गुरुए कह्यु के " हे भद्रे ! अमने काइ स्वप्न आव्यु नथी, परंतु जिनेश्वरे कहेला आगमथी अमे तेनु सर्व स्वरूप जाणीए छीए. " राणीए पूछ्यु " हे पूज्य ! कया कर्मथी प्राणी नरके जाय ? " गुरुए कह्यु के "महा आरम्भादिक कार्यो करवाथी अने विषय सेवनादिकथी जीव नरके जाय छे. " इत्यादि उपदेश साभळीने राजाए तेमने विसर्जन कर्या.

बीजी रात्रे पेला देवताए पुष्पचूलाने स्वप्नमां स्वर्गना सुख बताव्या. ते वृत्तात राणीए राजाने कर्यो, त्यारे राजाए सर्व दर्शनीओने बोलावीने स्वर्गनु स्वरूप पूछ्यु. तेना उत्तरमा तेओ बोल्या के " मनमा चिंतवेलु सुख प्राप्त थाय तेज स्वर्ग " विगेरे तेमना जवाबोथी सतोष कारक खुलासो नहीं थवाने लीधे राजाए अन्निकापुत्र आचार्यने बोलावीने स्वर्गनु स्वरूप पूछ्यु, त्यारे गुरुए " देवताओ अखंड यौवनवाळा, जरा रहित, निरुपम सुखवाळा तथा सर्व अलंकारने धारण करनारा होय छे. पहेला देवलोकमा ३२ लाख विमान छे, बीजामा २८ लाख छे " विगेरे स्वर्गनुं यथार्थ स्वरुप कह्यु. ते साभळीने राणीए श्रद्धा पूर्वक पूछ्यु के " हे गुरु ! ते स्वर्गना सुख शी रीते प्राप्त थाय ? " गुरु बोल्या के श्रावक धर्म अथवा साधु धर्मनु सारी रीते सेवन करवाथी स्वर्गना सुख प्राप्त थाय छे. "

ते साभळीने प्रतिबोध पामेली राणीए पुष्पचूळ राजाने कह्यु के " हे नाथ! मने चारित्र लेवानी आज्ञा आपो. " त्यारे राजाए कह्यु के " हे प्रिया ! तारो वियोग एक क्षणवार पण हु सहन करी शकु तेम नथी. " तो पण राणीए घणो आग्रह कर्यो, त्यारे राजाए कह्यु के " हे प्रिया ! जो तु हमेशां अहीं रहेवानु अने मारे घेरथीज आहार ग्रहण करवानु कबुल करे, तो हु चारित्रनी संमति आपु. " ते साभळीने राणीए ते अंगीकार कर्यु. पछी राजाए मोटा उत्सव पूर्वक अन्निकापुत्र आचार्य पासे राणीने दीक्षा अपावी

केटलाक काळ पछी आचार्य श्रुतज्ञानना उपयोगथी दुष्काळ पडवानो

आ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे पृथ्वीपुर नामना नगरमां पुष्पकेतु नामे राजा हतो तेने पुष्पवती नामे राणी हती. तेणीए पुष्पचूल नामे पुत्र तथा पुष्पचूला नामे पुत्रीने युगलपणे जन्म आप्यो. ते भाइ बेन बच्चे एटलो बधो स्नेह हतो, के एक क्षणमात्रनो वियोग थता ते बन्ने मरवाने तैयार थइ जता हता. ते जोइने पुष्पकेतु राजाए विचार्युं " जो आ बन्नेने जूदे जूदे स्थाने परणावीश, तो ते बन्ने परस्परना वियोगथी मृत्यु पामशे, तेथी ते बन्नेनेज हुं परस्पर परणावुं तो ठीक." एम विचारीने राजाए मंत्रीओने तथा पौरजनोने बोलावीने प्रश्न कर्यो के "मारा अन्तःपुरमा जे रत्न उत्पन्न थाय, तेनो स्वामी कोण?" ते सांभळीने सर्व बोल्या के " हे नाथ ! आपना समग्र राज्यमा कोइ पण स्थळे उत्पन्न थयेला रत्नना आप स्वामी छो, तो पछी अन्त पुरमा उत्पन्न थयेला रत्नना तो आप स्वामी छो. तेमां शुं कहेवुं ? तेना तो आपज स्वामी छो. अने अंत.पुरमा उत्पन्न थयेला रत्ननी आप जे काइ योजना करो ते अमारे मान्य छे. " आ प्रमाणे कपट वचन वडे ते सर्वेनी संमति मेळवीने राजाए राणी तरफनो निषेध छता पण ते बन्नेना लग्न परस्पर कर्या. तेथी पुष्पवती राणी वैराग्य पामी तपस्या करीने स्वर्ग लोकमा देवता थइ.

केटलेक काळे पुष्पकेतु राजा मृत्यु पाम्यो, त्यारे पुष्पचूल राजा थयो. ते पुष्पचूलानी साथे विषय सुख भोगवतो काळ निर्गमन करवा लाग्यो. " अहो ! आ ससारमा कामांध पुरुष कार्याकार्यनो विचार करी शकतो नथी. " हवे ते पुष्पवती राणीनो जीव जे देव थयो हतो तेणे अवधिज्ञानवडे पुत्र पुत्रीनु अकार्य जोइने पूर्वनी प्रीतिना वशथी पुष्पचूलाने स्वप्नमा महा भय उत्पन्न करनारां नरको देखाड्या ते जोइने भय पामेली पुष्पचूलाए जागृत थइ ते स्वप्ननो सर्व वृत्तांत पतिने कह्यो पछी राजाए प्रात काळे बौद्ध विगेरे सर्व दर्शनीओने बोलावीने तेमने "नरको केवा होय?" एवो प्रश्न कर्यो. तेना जवाबमा कोइए गर्भावासने नरक कह्यु, कोइए केदखानाने, कोइए दारिद्र्यने अने कोइए परतंत्रपणाने नरक कह्यु. ते सर्व मत सांभळीने राणीए कह्यु के " तेवा प्रकारना नरको होता नथी. " पछी राजाए अग्निकापुत्र आचार्यने बोलावीने नरकनुं स्वरुप पूछ्यु, त्यारे सूरिए कह्यु के " हे राजा ! नरक सात छे तेमा पहेला नरकमा एक सागरोपमनी, बीजामा त्रण सागरोपमनी, त्रीजामा सातनी, चोथामा दशनी, पांचमामा सत्तरनी, छठामा बावीशनी

लाग्या. एम शुभ भावनी वृद्धि थता सर्व कर्मनो क्षय करी अंतकृत केवळी थइने तेओ तरतज मोक्षे गया.

ते वखते नजीकमां रहेला देवोए तेमनो केवळज्ञाननो महोत्सव कर्यो. त्याथी ते प्रयाग नामे तीर्थ थयुं. त्यां अन्य दर्शनीओ स्वर्ग सुख पामवाना हेतुथी करवत मूकावे छे.

पुष्पचूला साध्वी केवळीपणे पृथ्वी पर विहार करी अंते सर्व कर्मनो क्षय करी अनंत आनंद वाळा मोक्ष पदने पामी.

" आ पुष्पचूलानुं पवित्र चरित्र सांभळीने जे भव्य जीवो गुरु परिचर्या करवामां तत्पर थाय छे ते परम सुखनुं धाम जे मोक्ष तेने मेळवे छे "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादग्रंथस्यवृत्तौ प्रथम
स्थंभे षष्ठं व्याख्यानम् ॥ ६ ॥

व्याख्यान ७ मु.

व्यापन्नदर्शनीनो त्याग करवा रूप त्रीजी श्रध्धा विषे.

व्यापन्नं दर्शनं येषां, निह्नवानामसद्ग्रहैः ।
तेषां संगो न कर्तव्यस्तच्छ्रद्धानं तृतीयकम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" कदाग्रहवडे जेमनुं सम्यग्दर्शन नाश पाम्युं छे, एवा निह्नवोनो संग न करवो, ते त्रीजी श्रध्धा कहेली छे. "

असद्ग्रहथी एटले पोतानी मति कल्पनाए मानेला मत उपर कदाग्रह राखवाथी जेमनुं दर्शन एटले सर्व नय विशिष्ट वस्तुना बोधरूप समकित नष्ट थयुं छे तेवा निह्नवो समग्र वस्तुओमां यथावस्थित प्रतिपत्ति (श्रद्धा) छतां पण कोइ

समय जाणीने पोताना गच्छने बीजा देशमां मोकल्यो. अने पोते वृद्ध हावाथी त्यांज रह्या. ते वखते पुष्पचूला साध्वी निर्दोष आहार लावीने आसक्ताई अग्लानवृत्तिए गुरुनी वैयावृत्य करवा लागी अनुक्रमे शुभध्यानवडे क्षपक श्रेणी पर आरूढ थइने ते केवळज्ञान पामी. तो पण गुरुनी सेवा करती बंध पडी नहीं. उलटी गुरुनी इच्छानुसार आहार लावी आपीने तेमनी सेवा करवा लागी तेथी एक दिवस गुरुए तेने पूछ्युं के " तु मारा मननी इच्छाने हमेशा शी रीते जाणे छे ? " साध्वीए जवाब दीधो के ' हे पूज्य! जे जेनी पासे निरंतर रहे ते तेनी मनोरुचि केम न जाणे ? "

एकदा वरसाद वरसतो हतो, ते वखते तेणीए आहार आण्यो, त्यारे सूरिए पूछ्युं के " हे पुत्री ! तुं श्रुतने जाणे छे छतां आवा वरसादमां तुं आहार केम लावी ? " तेणीए कह्युं के " जे जे प्रदेशमां अचित्त अप्कायनी वृष्टि पडी हती, ते ते प्रदेशमां चालीने हुं आहार लावी छु. तेथी आ आहार अशुद्ध नथी " गुरुए पूछ्युं " तें अचित्त प्रदेश शी रीते जाण्यो ? " तेणीए कह्युं " ज्ञानवडे " सूरिए पूछ्युं के " प्रतिपाति[1] ज्ञानवडे के अप्रतिपाति[2] ज्ञान वडे ? " ते बोली के " पांचमा ज्ञानवडे (केवळज्ञानवडे). " ते सांभळीने सूरिए "अहो ! में केवळीनी आशातना करी " एम कहीने तेने मिथ्या दुष्कृत आप्युं पछी आचार्य तेमने पूछ्युं के " हुं मोक्ष पामीश के नहीं?" केवळीए कह्युं के " तमने गंगानदी उतरतां केवळज्ञान प्राप्त थशे. " ते सांभळीने सूरि गंगा नदी उतरवा माटे केटलाक लोकोनी साथे नावमां बेठा. परंतु जे बाजु ते बेसे ते बाजुए नाव नमवा लाग्युं एवी रीते दरेक बाजुए सूरि बेठा, एटले ते दरेक स्थाने नमवा लाग्युं, पछी सूरि मध्यमां बेठा त्यारे आखुं वहाण डुबवा लाग्युं (आचार्य पूर्वभवमां पोतानी स्त्रीनु अपमान कर्युं हतुं ते स्त्री व्यन्तरी थइ हती ते आ प्रमाणे सूरिने उपद्रव करती हती.) तेथी लोकोए आचार्यने उपाडीने जळमां नाख्या. ते वखते पेली व्यन्तरीए जळमां शूळी ऊंची करीने तेमां आचार्यने परोव्या. तो पण महात्मा आचार्य तो " अहो ! मारा देहना रुधिर वडे अप्कायना जीवो मरण पामे छे " एम जीवदयानी भावना करव

१ आवीने जतुं रहे ते प्रतिपाति २ आव्युं जाय नहीं ते अप्रतिपाति केवळज्ञान

तीव्र दाहज्वर उत्पन्न थयो. तेनी पीडाथी तेना शरीरथी बेसवानी के उना रहेवानी पण शक्ति रही नहीं, एक दिवस तेणे साधुओने कह्यु के " मारे माटे जलदीथी संथारो करो, जेथी हुं सुइ जउं." ते सांभळीने साधुओ संथारो करवा लाग्या. जमालिए दाहज्वरनी अधिक पीडा थवाथी तरतज साधुओने पूछ्युं के " संथारो पाथर्यो के नहीं ? " त्यारे साधुओए पथराइ रहेवा आव्यो हतो तेथी अर्धो पथरायो हतो छतां पण " हा, पाथर्यो. " एवो जवाब दीधो. ते जवाब सांभळीने वेदनाथी विह्वळ थयेलो जमालि तरतज उठीने सुवानी इच्छाथी त्यां गयो, तो संथारो अर्धो पाथरेलो जोयो. तेथी ते क्रोध पाम्यो, अने " क्रियमाणं कृत (करातु कार्य करेलु कहेवाय) " एवु सिद्धान्तनु वचन तेना स्मरणमा आव्युं. तेज वखते मिथ्यात्वनो उदय थवाथी केटलीक युक्तिओ वडे तेणे सिद्धान्तनु ते वचन असत्य छे, एम विचार्युं. ते विचारवा लाग्यो के " क्रियमाण कृत, चलमानं चलितं " इत्यादि भगवाननु वचन असत्य छे. एम आजे मने प्रत्यक्ष थयु छे. केमके आ संथारो हजु ' क्रियमाण ' एटले करातो छे, ने ' कृत ' एटले करेलो नथी. माटे सर्व वस्तु कराती होय ते करेली कहेवाय नहीं. परतु जे कार्य कर्यु होय-पूरुं थइ गयु होय तेज कर्युं कहेवाय. जेमके घट विगेरे कार्य क्रियाकाळना अंतमाज थयेलु देखाय छे. परतु शिवस्थासादि[1] काळे घटरूपी कार्य थयेलु देखातु नथी. आ वात बाळगोपाळथी आरभीने सर्वजनने प्रत्यक्ष सिद्ध छे." आ प्रमाणे विचारीने ते पोतानी कल्पित युक्तिओ सर्व साधुओने समजाववा लाग्यो. त्यारे तेना समुदाय माहेना स्थविर साधुओए तेने कह्यु के 'हे आचार्य ! क्रियमाण कृत ' विगेरे भगवानना वाक्यो सत्य ज छे. तेमा कांइ पण प्रत्यक्ष विरोध नथी. केमके एक घटादिक कार्यमा अवान्तर कारणो अने कार्यो असंख्याता होय छे. माटी लाववी, तेनु मर्दन करीने पिंड बनाववो, तेने चाकपर चडाववो, दंडथी चक्र भमाववुं, प्रथम शिव करवु. पछी स्थासक करवु, इत्यादि घटरूपी सर्व कार्यना कारणो छे. अने छेवटे दोरावडे कापीने घटने चक्रथी जूदो कर्यो त्यारे ज ते घटरूपी कार्य थयु एम तमारे मानवु छे, ते अयोग्य छे. केमके घटरूप कार्य करती वेळाए दरेक समये अन्य अन्य कार्योनो आरंभ थाय छे अने ते कार्यो निष्पन्न थाय छे. केमके कार्यना कारणनो अने निष्पत्तिनो एक ज

१ शिव अने स्थास ए घडाना पेनाळ, गोटाश विगेरे अवयव विशेष छे.

एकाद अर्थमां अन्यथा मान्यतावाळा होय छे. निह्नव एटले जिनेश्वरना वचननुं निह्नव करे—अपलाप करे ते. तेवा निह्नवोना सगनो त्याग करवो. निह्नव शब्द ना उपलक्षणथी पासत्था, कुशीलीया विगेरेना सगनो पण त्याग करवो. अन्यथा समकितनी हानी थाय छे. तेमनो त्याग करवारुप आ त्रीजी श्रध्धा कहेवाय छे. आ विषय उपर जेनुं समकित नष्ट थयुं छे एवा जमालि विगेरेना दृष्टान्तो छे, तेमांथी प्रथम जमालिनुं दृष्टांत नीचे प्रमाणे.

जमालिनुं दृष्टान्त.

कुंडपुर नामना नगरमां श्री महावीरस्वामीनी बेननो दिकरो जमालि नामे राजपुत्र रहेतो हतो. ते जमालि महावीरस्वामीनी पुत्री सुदर्शना साथे परण्यो ह तो. तेनी साथे विषय सुख भोगवतो सतो ते काळ निर्गमन करतो हतो.

एकदा विहार करता करता प्रभु ते नगरना उपवनमां समवसर्या. तेमने आवेला सांभळीने जमालि वांदवा माटे गयो. त्यां प्रभुने प्रदक्षिणा पूर्वक वंदना करीने तेणे नीचे प्रमाणे देशना सांभळी—

गृहं सुहृत्पुत्रकलत्रवर्गों, धान्यं धनं मे व्यवसायलभ्यः।
कुर्वाण इत्थं न हि वेत्ति मूढो, विमुच्य सर्वं व्रजतीह जन्तुः॥१

भावार्थ—" मनुष्य एम जाणे छे के—आ घर, मित्र, पुत्र, स्त्री, धन धान्य विगेरे सर्व मारा उद्योगनी कमाणी छे, पण ते मूर्ख समजतो नथी के आ सर्व अहीं मूकीनेज प्राणी परलोकमां एकलो जाय छे "

आ प्रमाणे देशना सांभळीने वैराग्य पामेला जमालिए पोताने घेर ज घणा आग्रहथी माता पितानी आज्ञा मेळवी अने पांचसो क्षत्रीओनी सा प्रभुपासे दीक्षा ग्रहण करी त्यारपछी हजार स्त्रीओनी साथे सुदर्शनाए पण दी क्षा लीधी. चारित्रनुं पालन करता जमालिए अगीयार अंगनो अभ्यास कर्यो अन्यदा एकला विहार करवानी प्रभु पासे आज्ञा मागी. भावि लाभ न जा वाथी प्रभु मौन रह्या, काइपण उत्तर आप्यो नहीं. तोपण जमालि पांचसो सा धुओने लइने विहार करी श्रावस्ति नगरीए गयो. त्यां तिंदुक उद्याननां कोइ क्षना चैत्यमां रह्यो. रूक्ष अन्न नीरस आहार करवाथी केटलेक काळे जमालि

" हे जिन ! मारा सिवाय बीजा बधा तमारा शिष्यो छद्मस्थपणे ज विहार करे छे, परन्तु मने तो केवळज्ञान उत्पन्न थयु छे, तेथी हु तो सर्वज्ञ अरिहत थयो छु. " ते सांभळीने गौतमस्वामी बोल्या के "हे जमालि ! तु एवु असत्य नापण न कर, केमके केवळज्ञानीनु ज्ञान तो कोइ पण ठेकाणे स्खलना पामतु नथी. जो तु केवळी हो, तो मारा प्रश्नो जवाब आप—" आ लोक शाश्वत छे के अशाश्वत छे ? अने आ सर्व जीवो नित्य छे के अनित्य छे ? " ते सांभळीने तेनो उत्तर नहीं सूझवाथी जमालिए मौन धारण कर्यु, अने नियंत्रित करेला सापनी जेम स्थिर थइ गयो. ते जोइने प्रभु बोल्या के " हे जमालि ! छद्मस्थ साधुओ पण आ प्रश्नना जवाब आपी शके छे ते आ प्रमाणे—भूत, भविष्य अने वर्त्तमाननी अपेक्षाए आ लोक नित्य छे, अने उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी काळनी अपेक्षाए आ लोक अनित्य छे. तेमज द्रव्य रुपे करीने आ जीव शाश्वत छे, अने तिर्यंच, मनुष्य, नारकी तथा देवपणाना पर्यायवडे अशाश्वत छे. "

आ प्रमाणेना भगवानना वाक्यपर ते जमालिने श्रद्धा थइ नहीं. तेथी ते पोताने अने बीजाओने पण कुयुक्तिओवडे मिथ्यात्वी करवा लाग्यो. छेवट मृत्यु समये पण ते पाप कर्मनुं प्रायश्चित्त लीधाविना तथा आलोयण प्रतिक्रमणादि कर्याविना एक मासनु अनशन करीने लातक देवलोकमा तेर सागरोपमना आयुष्यवाळो किल्बिषी देव थयो. (आ जमालिनु चरित्र भगवती सूत्रमां विस्तारथी आपेलु छे).

" श्री जिनेश्वरे कह्यु छे के—देव, तिर्यंच अने मनुष्यना भवमां पांच पांच वार उत्पन्न थइने ते जमालि फरीने समकित पामी सिद्धि सुखने पामशे. आ प्रमाणे श्री वीर प्रभुना चरित्रमां कह्यु छे. "

" आ जमालिनु चरित्र सांभळीने भव्यजीवोए नष्टदर्शनीनो संग करवो नहीं. एवो संग प्राप्त थयां छतां पण जेओ ढंक श्रावकनी जेम श्रद्धाना त्याग करता नथी, तेओ सर्व प्रकारना सुखने पामे छे. "

इत्यब्दिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ प्रथम स्तंभे सप्तम व्याख्यानम् ॥७॥

काळ छे. (कारणनो काळ जूदो अने निष्पत्तिनो काळ जूदो एम नथी) तेथी अवांतर कारणो अने कार्यो थइ रह्या पछी छेल्ले समयेज परिपूर्ण घटनो थाय छे, तेज समये ते निष्पन्न थाय छे (आ विषय उपर घणो विस्तार छे, महाभाष्यथी जाणी लेवो.) वळी हे जमालि ! तमे संथारो अर्धो जोइने संथारो कर्यो ज नथी ए प्रमाणे बोल्या, ते अयोग्य छे केमके संथारो पाथर्यो छे, एम तो तमे पण बोल्या, ते न पाथर्यो होत तो केम बोलात ? प्रथमथी जेटला आकाशप्रदेशमां संथारो पाथरवा मांड्यो तेटला मां तो ते पथराइ गयो छे. मात्र उपर पाथरवाना वस्त्रो बाकी छे. ते पथरायां पण संथारो जेटलो पथरायो तेटलो तो पाथर्यो ज छे, ते काइ हवे पाथरवानो नथी माटे विशिष्ट समयनी अपेक्षावाळा भगवानना वाक्योमां कोइ जातनो दोष

आ प्रमाणे अनेक युक्तिओथी स्थविर साधुओए जमालिने समजाव्या तो पण ते समज्यो नहीं, त्यारे तेओ तेने छोडीने वीरप्रभु पासे गया पण सुदर्शनाए तो जमालिपरना अनुरागने लीधे तेनो मत कबुल कर्यो. ते ढंक कुंभारजातिना श्रावकने घेर रही हती. त्यां ढंकने पोताना मतमां लेवा माटे समजाववा लागी, एटले ढंके तेने मिथ्यात्व पामेली जाणीने कह्युं के " तो काइ एवी वातोमां समजता नथी. " पछी एक दिवस ढंक श्रावक निभाडामांथी ठाम काढतो हतो अने तेज ठेकाणे सुदर्शना साध्वी बेठी बेठी स्वाध्याय करती हती. तेने प्रतिबोध करवा माटे ढंके अग्निनो एक अंगारो वस्त्र उपर मुकी दीधो, तेथी ते कपडानो एक छेडो बळी गयो. ते जोइने सुदर्शना बोली के–"हे श्रावक ! तें मारो कपडो बाळी नाख्यो." त्यारे ढंक "अरे ! बळतु होय ते बाळ्युं कहेवाय, एवो तो श्रीभगवाननो मत छे. तमे तेनु क्यां मानो छो ? तेथी तमारा मते तो में कपडो बाळ्यो नथी, माटे मे बाळ्यो केम कहो छो ? " आ प्रमाणेनु ढंकनु वाक्य सांभळीने विचार ते सुदर्शना बोध पामीने बोली के " हे श्रावक ! ते मने ठीक प्रतिबोध पमाड्यो हु हवे ते संबंधि मिथ्यादुष्कृत आपु छु. " एम कहीने ते जमालि पासे तेने पण बोध करवा लागी परंतु ते तो जरा पण बोध पाम्यो नहीं तेथी तेने एकलो मूकीने सुदर्शना भगवाननी पासे गइ.

एकदा जमालिए चंपा नगरीमां आवीने श्री महावीरस्वामीने कह्यु के

" हे जिन ! मारा सिवाय बीजा बधा तमारा शिष्यो छद्मस्थपणे ज विहार करे छे, परतु मने तो केवळज्ञान उत्पन्न थयु छे, तेथी हु तो सर्वज्ञ अरिहंत थयो छु." ते सांभळीने गौतमस्वामी बोल्या के "हे जमालि ! तु एवु असत्य जापण न कर, केमके केवळज्ञानीनु ज्ञान तो कोइ पण ठेकाणे स्खलना पामतु नथी. जो तु केवळी हो, तो मारा प्रश्नने जवाब आप—" आ लोक शाश्वत छे के अशाश्वत छे ? अने आ सर्व जीवो नित्य छे के अनित्य छे ? " ते सांभळीने तेनो उत्तर नहीं सूझवाथी जमालिए मौन धारण कर्यु, अने नियंत्रित करेला सापनी जेम स्थिर थइ गयो. ते जोइने प्रभु बोल्या के " हे जमालि ! छद्मस्थ साधुओ पण आ प्रश्नना जवाब आपी शके छे ते आ प्रमाणे—भूत, भविष्य अने वर्त्तमाननी अपेक्षाए आ लोक नित्य छे, अने उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी काळनी अपेक्षाए आ लोक अनित्य छे. तेमज द्रव्य रुपे करीने आ जीव शाश्वत छे, अने तिर्यंच, मनुष्य, नारकी तथा देवपणाना पर्यायवडे अशाश्वत छे. "

आ प्रमाणेना भगवानना वाक्यपर ते जमालिने श्रद्धा थइ नहीं. तेथी ते पोताने अने बीजाओने पण कुयुक्तिओवडे मिथ्यात्वी करवा लाग्यो. छेवट मृत्यु समये पण ते पाप कर्मनु प्रायश्चित्त लीधाविना तथा आलोयण प्रतिक्रमणादि कर्याविना एक मासनु अनशन करीने लांतक देवलोकमां तेर सागरोपमना आयुष्यवाळो किल्बिषी देव थयो. (आ जमालिनु चरित्र भगवती सूत्रमां विस्तारथी आपेलु छे).

" श्री जिनेश्वरे कह्यु छे के—देव, तिर्यंच अने मनुष्यना भवमां पांच पांच वार उत्पन्न थइने ते जमालि फरीने समकित पामी सिद्धि सुखने पामशे. आ प्रमाणे श्री वीर प्राकृत चरित्रमां कह्यु छे. "

" आ जमालिनु चरित्र सांभळीने भव्यजीवोए नष्टदर्शनीनो संग करवो नहीं. एवो संग प्राप्त थयां छतां पण जेओ ढंक श्रावकनी जेम श्रद्धानो त्याग करता नथी, तेओ सर्व प्रकारना सुखने पामे छे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ प्रथम स्तंभे सप्तम व्याख्यानम् ॥७॥

व्याख्यान ८ मुं.

पाखण्डिना वर्जनरूप चोथी श्रद्धा विषे

शाक्यादीना कुदृष्टीना, बौद्धानां कूटवादिनाम् ।
वर्जन क्रियते भव्यै., सा श्रद्धा स्यात्तुरीयका ॥ १ ॥

भावार्थ—"शाक्य विगेरे कुदृष्टिओ (मिथ्यात्वीओ) नु, बौधोनु अने मिथ्यात्वापीओनु वर्जन करवु, ए चोथी श्रद्धा कहेली छे."

शाक्य मतवाळा उन्मत्त जेवा थइने एवो उपदेश आपे छे के—

न मांस भक्षणे दोषो, न मद्ये न च मैथुने ।
प्रवृत्तिरेषा भूताना, निवृत्तिस्तु महाफला ॥ १ ॥

भावार्थ—" मांस भक्षण करवामा, मद्य-मदिरा पान करवामा अने विष सुख सेववामा दोष नथी. केमके प्राणीओनी एवीज प्रवृत्ति छे, परतु ते मांस भक्षण विगेरेथी निवृत्त थवामा मोटु फळ छे."

तेओ कोइ युवान स्त्रीने उद्देशीने कहे छे के- -

पिब खाद च चारुलोचने, यदतीत वरगात्रि तन्न ते ।
न हि भीरु गत निवर्तते, समुदयमात्रमिद कलेवरम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"हे सुन्दर नेत्रवाळी स्त्री ! तु यथेच्छ खा, अने पी. हे सुं गात्रवाळी ! जे आ तारी युवावस्था गइ, ते तारी नथी अर्थात् पाछी फरी तने मळवानी नथी, कमके हे भीरु स्त्री ! जे काइ गयु ते पाछु आवतु न अने आ शरीर तो मात्र माहुणा जेवु (थोडी मुदत रहेवालु) छे "

प्रथम श्लोकमा शाक्यादि ग्रहण्यु छे, ते आदि शब्दथी एकांत नयने गीकार करनारा सर्व मिथ्यादृष्टि समजवा कह्यु छे के—

जावइया वयणपहा, तावइया चेव हुति नयवाया ।
जावइया नयवाया, तावइया चेव परसमया ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेटली वचन रचना छे, ते सर्व नयवाद छे. अने जेटला नयवाद छे, तेटला मिथ्यात्वना प्रकार छे. "

तेथी शाक्य मतवाळानो तथा अन्य मिथ्यादृष्टिओनो पण संग वर्जवो वळी कुदृष्टि एटले जेमनु दर्शन (शासन) कुत्सित छे—निंद्य छे तेवा कुदृष्टि त्रणसो ने त्रेसठ प्रकारना होय छे. आगममा तेना भेद आ प्रमाणे देखाड्या छे.

असियसय किरियाणं, अकिरियवाईण होइ चुलसी उ ।
अन्नाणिय सत्तट्ठी, वेणइयाणं च बत्तीसं ॥ १ ॥

भावार्थ—" क्रियावादीना एकसो ने एंशी भेद छे, अक्रियावादीना चोराशी भेद छे. अज्ञानवादीना सडसठ भेद छे अने विनयवादीना बत्रीस भेद छे" कुल ३६३ भेद छे.

तेवा कुदृष्टिना संगनो त्याग करवो. तथा बौद्ध एटले क्षणिकवादी तेमनो तथा मिथ्याजापी—नास्तिको, तेमनो संग शुद्ध बुद्धिवाळा भव्यप्राणीओए सर्वथा प्रकारे तत्काळ वर्जवो. ते चोथी पाखंडि संग वर्जन रूप श्रद्धा जाणवी. आ हकीकतने दृढ करवा माटे इन्द्रभूति (गौतम)नु दृष्टान्त कहे छे—

इंद्रभुति [गौतमस्वामी] नु दृष्टांत

गुरुं वीरं च संप्राप्य, इन्द्रभूतिर्गणाधिपः ।
जात. कुसंगत्यागेन, सद्धर्मकथने रतः ॥ १ ॥

भावार्थ " इन्द्रभूति (गौतम) गणधर महावीरस्वामी गुरुने पामीने कुसंगनो त्याग करी सद्धर्मनी प्ररूपणा करवामा आसक्त थया "

श्रीमहावीरस्वामी केवळज्ञान पाम्या पछी अपापा नगरीना महसेन नामना उद्यानमा समवसर्या. ते गाममा सोमिल नामना ब्राह्मणने घेर यज्ञने माटे अगीयार विद्वान ब्राह्मणो मळ्या हता. तेमा इन्द्रभूति, अग्निभूति विगेरे पाच पंडितो पाचसो पाचसो शिष्यो सहित आव्या हता. बे पंडितो साडात्रणसो साडात्रणसो शिष्यो सहित आव्या हता. अने चार पंडितो त्रणसो त्रणसो शिष्यो सहित आव्या हता. ए प्रमाणे ४४०० ब्राह्मणो एकठा मळ्या हता. ते समये श्री वीरप्रभुने वांदवा माटे आकाश मार्गे आवता असंख्य सुर

आयुने जोइने तथा देवदुन्दुभिना ध्वनिने सांभळीने ते पंडितो बोल्या के "अहो! अमारा यज्ञमंत्रोना आकर्षणथी आकर्षाइने आ देवो साक्षात् अहीं आवे छे" परंतु ते देवताओने चांडाळना पाडानी जेम ते यज्ञना स्थानने तजीने प्रभुपासे जता जोया, तेथी ते सर्वे ब्राह्मणो खेद पाम्या. तेओए लोकोना मुखथी सांभळ्युं के "आ देवताओ सर्वज्ञने वांदवा जाय छे." ते सांभळीने ते सर्व ब्राह्मणोमां मुख्य इन्द्रभूति हतो, तेणे विचार कर्यो के "अहो! हुं एकज सर्वज्ञ छतां शुं बीजो पण कोइ मनुष्य पोतानुं सर्वज्ञपणुं प्रसिद्ध करे छे? कदाच कोइ धूर्त मूर्ख जनाने छेतरे. पण अहो! आ धूर्त तो देवोने पण छेतर्या जणाय छे के जेथी सरोवरने छोडी जता देडकानी जेम, सारा वृक्षने तजी जता उटोनी जेम, सूर्यना तेजने तजी जता घुवडोनी जेम अने सुगुरुने छोडी जता कुशिष्योनी जेम आ देवो यज्ञमंडपने तथा मने सर्वज्ञने पण छोडीने तेनी पासे जाय छे अथवा जेवो ए सर्वज्ञ हशे, तेवा ज आ देवो पण हशे. तोपण हुं आवा इन्द्रजाळीने सहन करी शकतो नथी. केमके आकाशमां बे सूर्य होइ शके नहीं, एक गुफामां बे केसरी सिंह रही शके नहीं अने एक म्यानमां बे तरवारो रही शके नहीं." ए प्रमाणे विचार करता ते इन्द्रभूतिए प्रभुने वांदीने पाछा आवता लोकोने जोइने पूछ्युं के "हे लोको! ते सर्वज्ञ केवो छे?" त्यारे लोकोए तेमना आठ प्रातिहार्य विगेरेनुं स्वरूप कह्युं अने बोल्या के—

यदि त्रिलोकी गणनापरा स्यात्तस्याः समाप्तिर्यदि नायुषः स्यात् ।
परेपरार्ध्यं गणितं यदि स्याद्गणेयनिःशेषगुणोऽपि स स्यात् ॥१॥

भावार्थ—"जो कदाच त्रण जगतना जीवो ते भगवानना गुणोनी गणना करवा तत्पर थाय, तेमां पण तेमना आयुष्यनी समाप्ति न होय, अने परार्धथी पण अधिक संख्याना अंक होय, तो ते भगवानना समग्र गुणोनी गणना कदाच थइ शके!"

आ प्रमाणे लोकोना मुखथी सांभळीने इन्द्रभूति विचार करवा लाग्यो के "खरेखर आ कोइ महाधूर्त जणाय छे, के जेणे सर्व लोकोने भ्रममां नांख्या छे. परंतु सूर्य जेम अंधकारने सहन न करे, अने सिंह जेम पोतानी पुंछने सहन न करे, तेम हुं तेने सहन करी शकीश नहीं. मैं मोटा मृ

कम सिंहना नाद वडे सर्व पशुओ नाशी जाय छे. ज्यांसुधी गुफामां रहेला सिंहना पूंछडाना ऊपाडानो शब्द सांभळ्यो नथी, त्यांसुधीज मदोन्मत्त हाथी काळा मेघनी जेवी गर्जना करे छे. परंतु जेम दुष्काळमां भूख्या माणसने क्याइथी अन्न मळी जाय तेम मने आजे मारा भाग्यवशात् आ वादी मळ्यो छे. माटे हवे हुं तेनी पासे जाउं. यमराजने कांइ मालवदेश दूर नथी, चक्रवर्तीने कांइ पण अजेय नथी, पंडितोने कांइ अजाण्युं नथी, अने कल्पवृक्षने कांइ पण न आपवा लायक होतुं नथी. तेथी आजे तेनी पासे जइने तेनुं पराक्रम जोइ लउं. साहित्य शास्त्र, न्याय शास्त्र, व्याकरण शास्त्र, छंदः शास्त्र अने अलंकार शास्त्र विगेरे सर्व शास्त्रोमां हुं निपुण छुं. क्या शास्त्रमां मारो प्रयास नथी ? तेथी आ वादीने हुं जीतुं, अने तेना सर्वज्ञपणाना आडंबरने दूर करूं."

पछी गर्विष्ठपणाना वचनोने बोलता ते इन्द्रभूतिए देहनी कांति वधारवाने माटे पोताना शरीरपर बार तिलको कर्या, सुवर्णनुं यज्ञोपवीत धारण कर्युं, अने उत्तम वस्त्रो पहेर्यां ए प्रमाणे महा आडंबर करीने पोताना पांचसो शिष्यो सहित चाल्यो. ते वखते तेना शिष्यो तेनी बिरुदावळी बोलवा लाग्या के "जेना कंठमां सरस्वती देवी आभूषण रुपे रही छे, जेणे सर्व पुराणो जाणेला छे, जे वादी रूपी केळने कृपाण (खड्ग) समान छे, वळी वादी रूपी अंधकारने दूर करवामां सूर्य समान, वादी रूपी घडीने तोडवामां मुद्गर समान, सर्व शास्त्रोना आधारभूत, साक्षात् परमेश्वर स्वरूप, वादी रूपी घुवडने नष्ट करवामां सूर्य समान, वादी रूपी समुद्रनुं शोषण करवामां अगस्त्य ऋषि समान, वादी रूपी पतंगीयाने भस्म करवामां दीपक समान, वादी रूपी ज्वरनो नाश करवामां धन्वन्तरी वैद्य समान, सरस्वतीनी कृपाना पात्र, अने बृहस्पति (देवगुरु) पण जेना शिष्य रूप छे, एवा हे भगवान ! तमे जय पामो " आवी रीते शिष्योना मुखथी बोलाती बिरुदावळीनुं श्रवण करतो ते गौतम आगळ चाल्यो

समवसरणनी नजीक आवतां अशोकादिक अतिशयोने जोइने तथा जातिवैरवाळा प्राणीओने वैरनो त्याग करीने एकत्र रहेला जोइने ते बोल्यो के "अहो ! आतो कोइ महाधूर्त जणाय छे " त्यारे तेना छात्रो (शिष्यो) बोल्या के "हे पूज्य गुरु ! अमे आपनी कृपावडे हमेशा अनेको वादीओनो जय करवामां समर्थ छीए, तो आ एकनो पराजय करवो, तेमां तो शुं ? अमारामांनो एकज छात्र

तेनो निग्रह करवा समर्थ छे " ते सांभळी गौतम समवसरणनी नजीक गयो. समवसरणना पहेला पगथिया उपर चढी श्री वीरप्रभुने जोताज तेने शंका (भय) उत्पन्न थइ. ते आश्चर्य पामीने विचारवा लाग्यो के " अहो ! आ ते कोण छे ? शुं सूर्य छे ? ना, सूर्यतो उष्ण किरणवाळो छे. त्यारे शु आ चन्द्र छे ? ना, तेने तो कलंक छे. त्यारे शु मेरुपर्वत छे ? ना, ते तो अत्यंत कठिन छे. त्यारे शु आ विष्णु छे ? ना, ते तो काळो छे. त्यारे शुं ब्रह्मा छे ? ना, ते तो जरावडे आतुर छे अने वळी जरा (वृद्धावस्था)थी व्याप्त छे. त्यारे शु कामदेव छे ? ना, ते तो शरीर विनानो छे. त्यारे शु महादेव छे ? ना, ते तो वक्षमा रहेला शेषनागथी भयंकर छे. परतु आतो सर्व दोषथी रहित अने समग्र गुणसमूहथी व्याप्त छे. माटे जरुर आ तो छेल्ला तीर्थंकरज होवा जोइए. सूर्यनी जेम आना सामु पण जोइ शकाय तेम नथी अने दुस्तर समुद्रनी जेम आने उल्लंघन करी शकाय तेम नथी. हवे आनी पासे मारे मारु महत्व शी रीते साचववु ? अरे ! में मूर्खाए सिंहना मुखमा हाथ नाख्यो अने वोरडीना कांटाने आलिंगन कर्यु, मारे तो एक तरफ पूरथी भरेली नदी अने वीजी तरफ वाघ ए न्यायना जेवु थयु. वळी एक खीलीने माटे आखो प्रासाद भागवा कोण इच्छे ? सुतरना तातणा माटे आखो हार कोण तोडे ? राख माटे चंदनना लाकडा कोण वाळे ? लोढा माटे समुद्रमा रहेला वहाणने कोण भागे ? पण में तो ए सघळु करनारनी जेम अविचारी कृत्य कर्यु छे. में दुर्बुद्धिए जगदिश्वरने जीतवानी इच्छा करी अने ते माटे अहीं आव्यो. परतु आ जगन्नाथे कोइ पण दिव्यप्रयोगथी मारु मन वश करी लीधु के जेथी मारी आवी बुद्धि थइ. हवे आनी पासे हु एक अक्षर पण शी रीते वोली शकु ? अने तेनी पासे पण शी रीते जइ शकु ? आ समये तो जन्मथीज आराधेला शंकर जो मारा यशनु रक्षण करे, तो वहु सारु. अथवा तो त्रण जगतने जीतनार आ प्रभुनी पासे शंकर पण शु करी शके ? ते तो अत्यारे क्याइ नाशी गया जणाय छे. परतु कोइ पण प्रकारे भाग्यना वशथी जो अहीं मारो जय थाय, तो तो हु त्रण भुवनमा पंडितशिरोमणि थाउ. "

आ प्रमाणे ते विचार करता हता, तेटलामा भगवते तेने वोलाव्या के " हे इन्द्रभूति गौतम ! तमने सुख साता वर्त्ते छे ? " ते सांभळीने गौतमे विचार्यु के " अहो ! शु आ मारु नाम पण जाणे छे ? अथवा तो त्रण

जगतमां प्रसिद्ध एवा मारा नामने कोण न जाणे ? बाळ गोपाळथी आरंजीने सर्व कोइ सूर्यने जाणेज छे, ते कोइनाथी छानो रहेतो नथी. परंतु आणे मधुर वाक्यथी बोलाव्यो तेथी हुं धारुं छुं के ते मारी साथे वाद विवाद करवा मां बीहे छे. पण हुं एवा मीठ वचनथी संतोष पामुं तेम नथी, जो ए मारा मनना संशयने दूर करे, तो हुं तेने खरा सर्वज्ञ समजुं अने त्यारेज मने आश्चर्य उत्पन्न थाय " गौतम आ प्रमाणे विचारे छे तेवामां जगवान बोल्या के " हे गौतम ! जीव छे के नहि ? ते विषे तमारा मनमां संशय छे. चारे प्रमाण थी (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान अने शब्द प्रमाणथी) जीव ग्राह्य थइ शकतो नथी, माटे जीव छे ज नहीं एवुं तमारुं मानवुं छे, पण ते असत्य छे. कारण के तमे वेदपदनो खरो अर्थ जाणता नथी, तेथीज तमने आ संशय उत्पन्न थयो छे. वेदमां कह्युं छे के—

" विज्ञानघन एतेभ्यो भूतेभ्यः समुत्थाय तान्येवानुविनश्यति न प्रेत्यसंज्ञास्ति " विज्ञान घन के० जीव आ पंच महाभूत थकी उत्पन्न थईने पाछो ते पंच महाजूतमांज विनाश पामे छे तेथी तेनी प्रेत्यके० परलोक संज्ञा नथी. " आवो अर्थ करीने तमे जीवनो अजाव सिद्ध करो छो, पण ते अर्थ अयुक्त छे. केमके विज्ञानघननो अर्थ जीव नथी, पण पांच इन्द्रिया छे. तेथी थतुं घटादि पदार्थोनुं जे ज्ञान ते घटादि पदार्थ नाश पामे सते नाश पामे छे, तेथी तेनी प्रेत्य संज्ञा नथी. (आ पदनुं सर्व युक्तिओ सहीत व्याख्यान श्री वि विशेषावश्यकथी जाणी लेवुं.) तेमज हे गौतम ! जेम दूधमां घी छे, तलमां तेल छे, काष्ठमां अग्नि छे, पुष्पमां सुगन्ध छे तथा चंद्रज्योत्स्नामां अमृत छे, तेम जी पण देहमां रहेलो छे. माटे जीव छे, एम सिद्ध थाय छे. "

इत्यादि युक्ति युक्त, जन्म मरण रहित एवा जगवाननुं वचन सांजळीने गौ तमनो संशय दूर थयो तेथी तणे पांचसो शिष्यो सहित जगवाननी पासे प्रव्रज्या अंगीकार करी. पछी प्रभुना मुखथी " उपन्नेइ वा, विगमेइ वा, धुवेइ वा " उत्पन्न थाय छे, मरे छे अने निश्चळ जाव छे ए त्रिपदीने पामीने तेमणे द्वादश गीनी रचना करी तेमां ' उपज्जए ' एटले जीवथी जीव उत्पन्न थाय छे ते न नारीथी गर्ज उत्पन्न थाय छे ते, जीवथी अजीव उत्पन्न थाय छे ते देहथी न

विगेरे उत्पन्न थाय छे ते, अजीवथी अजीव उत्पन्न थाय छे ते इंटादिकना चूर्णनी जेम अने अजीवथी जीव उत्पन्न थाय छे ते परसेवाथी जु विगेरेनी उत्पत्तिनी जेम. एवी रीते विगम–नाशमा पण चार भागा समजवा. जीवथी*जीव नाश पामे छे, जीवथी अजीव नाश पामे छे, अजीवथी जीव नाश पामे छे अने अजीवथी अजीव नाश पामे छे. ध्रुवपणामा नित्य, अछेद्य, अभेद्यादिक जीवनु स्वरूप जाणवुं.

गौतमे दीक्षा लीधानी वात सांभळीने अग्निभूति विगेरे बीजा दश पण्डितो पण अनुक्रमे भगवाननी पासे आव्या अने तेमना संशयो दूर थवाथी ते सर्वेए पण पोतपोताना शिष्यो सहित दीक्षा लीधी.

“ हे भव्य प्राणीओ ! आ गौतम गणधरनु गुणोना मंदिर जेवु अने सर्व सुखने आपनारु चरित्र सांभळो के जेथी मिथ्या दर्शननो नाश थाय अने मोक्ष सुखने प्राप्त करनारु सम्यग्दर्शन प्राप्त थाय. ”

---

* १ जीव छकाय जीवोनी उपमर्दना करे छे ते
२ जीव घटादि पदार्थोनो नाश करे छे ते
३ खड्गादिकथी अथवा सोमलादिकथी जीव मरण पामे छे ते
४ घटा साथे पथ्थर अफळावाथी घडो नाश पामे छे ते

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ प्रथम स्तंभे अष्टमं व्याख्यानम् ॥८॥

व्याख्यान ९ मुं.



समकितना त्रण लिंगमांहेना पहेला शुश्रूषा नामना लिंग विषे

शुश्रूषा भगवद्वाक्ये, रागो धर्मे जिनोदिते ।
वैयावृत्त्यं जिने साधौ, चेति लिंग त्रिधा भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—"श्री जिनेश्वरना वाक्यने विषे शुश्रूषा एटले सांभळवानी इच्छा, जिनेश्वरे कहेला धर्मने विषे राग-प्रीति अने जिनेश्वर तथा साधुओनुं वैयावृत्त्य-ए त्रण समकितना लिंग छे."

श्री अरिहंते कहेला वचनने सांभळवानी इच्छा निरंतर राखवी. केमके जिनवचन श्रवण कर्याविना कांइ पण ज्ञानादिक गुण प्राप्त थतो नथी. आगममां कह्युं छे के—

सवणेण य नाणेय, विन्नाणे पच्चक्खाणे य संजमे ।
अनिह्णए तवे चेव, वोदाणे अकिरिय निव्वाणे ॥ १ ॥

भावार्थ—"शास्त्र श्रवण करवाथी ज्ञान थाय, ज्ञानथी विज्ञान थाय, विज्ञानथी पच्चक्खाण थाय, पच्चक्खाणथी संयम थाय, संयमवडे दोष रहित तप थाय, तपथी क्रियारहितपणुं प्राप्त थाय, पूर्व कर्म निर्जरे, नवा न बांधे अने क्रिया रहित थवाथी निर्वाण-मोक्ष प्राप्त थाय"

श्रीहरिभद्र सूरिए पण तेमज कह्युं छे के—

क्षाराम्भस्त्यागतो यद्वन्मधुरोदकयोगतः ।
बीजं प्ररोहमादत्ते तद्वत्तत्त्वश्रुतेर्नरः ॥ १ ॥

भावार्थ—"जेम खारा जळना त्यागथी अने मीठा जळना योगथी बीज अंकुराने पामे छे, तेम तत्त्वज्ञानना श्रवणथी मनुष्य ज्ञानने पामे छे—ज्ञानना अंकुरा प्रगटे छे."

तथा करीने आ शुश्रूषा समकितनु प्रथम लिंग छे. तेनी उपर सुदर्शन श्रेष्ठीनु दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

सुदर्शन श्रेष्ठी तथा अर्जुन माळीनुं दृष्टान्त.

राजगृह नगरमा अर्जुन नामनो एक माळी रहेतो हतो. तेने अत्यत सुदर अने युवावस्थायी मनोहर बधुमती नामे स्त्री हती ते माळीने नगरनी बहार पचरंगी पुष्पोवाळो एक सुदर बाग हतो. ते बागनी नजीकमा एक यक्षनुं देवळ हतु तेमा हजार पलनु लोढानु मुद्गर धारण करीने उभेली मुद्गरपाणि नामना यक्षनी मूर्त्ति हती. ते यक्षनी पोताना कुळदेवतानी जेम ते माळी पोतानी स्त्री सहित नित्य अर्चा करतो हतो. एकदा महोत्सवनो दिवस होवाथी कोइ छ पुरुषो फरता फरता मुद्गरपाणि यक्षना देरामा आवी आनद करता बेठा हता. तेवामा अर्जुन माळी पोतानी स्त्री सहित सुंदर पुष्पो लइने यक्षनी पूजा करवा आव्यो. तेने आवतो जोइने पेला छए मित्रोए परस्पर विचार कर्यो के “ आ माळीनी स्त्री अति स्वरूपवान छे, माटे आ माळीने बाधी लइने तेनी समक्ष ज तेनी स्त्री साथे आपणे क्रीडा करीए. ” एम निश्चय करीने तेओ बारणानी पाछळ छूपी रीते उभा रह्या. पेलो माळी देरामा आवी पुष्प विगेरेथी यक्षनी पूजा करीने पचाग प्रणाम करवा लाग्यो. ते वखते पेला छए मित्रोए एकदम बहार आवीने तेने बाधी लीधो. पछी तेनी समक्ष तेनी स्त्री साथे विलास करवा लाग्या ते जोइने अर्जुन माळीने विचार थयो के “ मारा जीवतरने धिक्कार छे. केमके—

सहन्ते प्राणिनिर्वाढं, पितृमातृपराभवा ।
नार्यापराभवं सोढुं, तिर्यञ्चोऽपि न हि क्षमाः ॥ १ ॥

“ प्राणीओ पिताना के माताना पराभवने सहन करी शके छे, पण स्त्रीना पराभवने सहन करवामा तिर्यचो पण समर्थ नथी. ”

अहो ! मारा देखता ज आ पशु जेवा पुरुषो पशुधर्मनु आचरण करे छे. ” एम विचारतो ते अर्जुन माळी मनमा ने मनमा यक्षने उपालंभ देवा लाग्यो के–“ हे यक्ष ! खरेखर तु पथ्थरमयज देव छे, आटला काल सुधी मे तारी पूजा

करी, तेनु मने आ फळ मळ्यु." ते समये यक्षे ज्ञानथी ते सर्व जाण्यु, एटले माळीना वचनथी अत्यंत क्रोधायमान थइने तेणे तेना देहमां प्रवेश कर्यो. पछी बांधेला सर्व बंधन तोडीने लोढानो मुद्गर उपाडी तेना वडे बन्धुमती सहित छए मित्रोने चूर्ण करी नाख्या त्यारथी आरंभीने अर्जुनना शरीरमां रहेलो ते यक्ष हमेशां एक स्त्री सहित छ पुरुषोने ज्यां सुधी मारतो नहीं, त्यां सुधी तेनो क्रोध शान्त थतो नहीं. आ सर्व वृत्तांत जाणीने ते नगरना राजा श्रेणिके पटह वगडावीने सर्व पौरजनोने खबर आपी के "ज्यां सुधी ते अर्जुन सात माणसो मार्या न होय, त्यां सुधी कोइए नगर बहार नीकळवु नहीं."

आ अवसरे श्री वीर प्रभु ते नगरना उद्यानमां समवसर्या. तेमनु आगमन सुदर्शन नामना महा श्रावके सांभळ्यु, तेथी आनंद पामीने जिनेश्वरना वचनामृतने पीवानी इच्छावाळा तेणे " हुं जिनेश्वरने वांदवा जाउं छुं " एम कही मातापनी रजा मागी. ते सांभळीने तेओ बोल्या के " हे वत्स ! त्यां जतां तने उपसर्ग थशे, माटे अहींज रहीने भावथी प्रभुने वंदना कर." सुदर्शन बोल्यो " हे मात पिता ! त्रण जगतना गुरु श्री जिनेन्द्रना मुखथी उपदेशनु श्रवण कर्या विना मारे भोजन करवु पण कल्पे नहीं " ए प्रमाणे कही मात पितानी रजा लइ सुदर्शन श्रीवीर प्रभुने वांदवा चाल्यो मार्गे चालता तेणे क्रोधथी मुद्गर उंचो करीने जाणे कोप पामेलो यमराज ज होय नहीं तेम अर्जुन माळीने दूरथी आवतो जोयो एटले तरतज भय रहित सुदर्शन शेठ पोताना वस्त्रना छेडा वडे पृथ्वीनु प्रमार्जन करीने त्यां बेठो. पछी जिनेश्वरने नमस्कार करी, चार शरण अंगीकार करी, सर्व प्राणीओने खमावी, सागारी अनशन करी, उपसर्गनो नाश थया पछी ज पारीश, एवो निश्चय करीने कायोत्सर्ग कर्यो अने पंच परमेष्ठी महामंत्रनु स्मरण करवा लाग्यो. अर्जुन माळीना शरीरमां रहेलो यक्ष तेनी पासे आव्यो, पण मंत्रथी विष रहित करेला अने खीली लीधेला सर्पनी जेम ते तेनो पराभव करवा शक्तिवान थयो नहीं, तेनो रोष नष्ट थइ गयो. पछी भय पामीने पोतानो मुद्गर लइ ते यक्ष अर्जुनना शरीरमांथी नीकळी गयो. यक्षना प्रवेशथी मुक्त थयेलो अर्जुन पण कापेला वृक्षनी जेम तरत पृथ्वी पर पडी गयो. पछी थोडी वारे शुद्धिमां आवेला अर्जुने सुदर्शन श्रेष्ठीने जोइ तेने पूछ्यु के " तमे कोण छो ? अने क्यां जाओ छो ? " श्रेष्ठीए कह्यु के "

सुदर्शन नामे श्रेष्ठी छु. अने श्रीवीर प्रभुने वांदवा जाउं छुं. तु पण ते सर्वज्ञने वांदवा चाल." ते सांभळीने अर्जुन पण तेमनी साथे भगवानना समवसरणमां गयो. प्रभुने वांदीने ते बन्नेए आ प्रमाणे देशना सांभळी—

"हे भव्य प्राणीओ ! मोहथी अन्ध थयेला आ जगतमां मनुष्य जन्म, आर्य देश, उत्तम कुळ, श्रद्धालुपणुं, गुरुवचननुं श्रवण अने कृत्याकृत्यनो विवेक ए मोक्ष रूपी महेल पर चढवाना पगथियानी पंक्ति छे. ते पूर्वे करेला सुकृतना योगथीज प्रमाय छे." इत्यादि देशना सांभळीने केटलाक नियम ग्रहण करी सुदर्शन शेठ पोताने घेर गया.

अर्जुन माळीए वैराग्य उत्पन्न थवाथी पूर्वे करेला वध संबंधी पापने हणवा माटे भगवाननी पासे दीक्षा लीधी. अने ते साथेज तेणे अभिग्रह लीधो के "हे विभु ! आजथी आरंभीने मारे आपनी आज्ञाथी निरंतर षष्ठ (छठ) तप करवा वडे आत्माने भावता सता विचरवुं." स्वामीए तेने योग्य जाणीने तेम करवानी आज्ञा आपी. पछी अर्जुन मुनि छठ छठनो तप करता विचरवा लाग्या. पारणाने दिवसे गोचरी माटे ते गाममां जता त्यारे तेने जोइने लोको कहेता के "आणे मारा पिताने मारी नाख्यो छे, कोइ कहेतुं के आणे मारी माताने मारी नाखी छे" एम कोइ भाइने, कोइ बेनने अने कोइ स्त्रीने मारी नाखवानुं कही कहीने ते मुनिने गाळो देवा लाग्या, आक्रोश करवा लाग्या, मारवा लाग्या, हिलना करवा लाग्या अने निंदवा लाग्या. पण ते मुनि तेमनापर मनथी पण खेद पाम्याविना सर्व उपसर्ग सम्यग् प्रकारे सहन करवा लाग्या. एम करता कोइ वखत पारणाने दिवसे काइ आहार मळतो, तो ते भगवानने निवेदन करीने मूर्छा रहितपणे वापरता. ए प्रमाणे उदार तपकर्मवडे आत्माने भावता ते अर्जुनमाळी मुनिए काइक उणा छमास व्यतीत कर्या. पाछे अर्धा मासनी संलेखना करीने अंतकृत केवळी थइने अनन्तचतुष्टयवाळा मोक्ष पदने पाम्या.

हमेशा सात मनुष्योनो वध करनार अर्जुन माळी, वीर भगवानने पामीने, अनुपम अभिग्रहनुं पालन करी छेवट अन्तकृत केवळी थइ सिध्ध पदने पाम्यो अने सुदर्शन श्रेष्ठी पण स्वर्गना सुख पाम्यो.

"हे भव्य जीवो ! आगमनुं श्रवण करवामां जेनुं चित्त आदरवाळुं छे

एम सुदर्शन श्रेष्ठीनु आ चरित्र सांभळीने भवसागर तरवामां नौका समान धर्मनु श्रवण करवामां निरंतर यत्न करो. ”

आ संबंध अनंगप्रदशाग सूत्रमां पण कहेलो छे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ प्रथम
स्तंभे नवम व्याख्यानम् ॥९॥

व्याख्यान १० मुं.

समकितना बीजा धर्मराग रूप लिंग विषे.

पाछला व्याख्यानना प्रारंभना श्लोकमां ' रागो धर्मे जिनोदिते ' ए बीजु पद कह्यु छे. तेमां ' जिन ' एटले रागद्वेष रहित जे तीर्थंकर तेमणे कहेलो ' धर्म ' जे यतिधर्म अने श्रावक धर्म, तेने विषे ' राग ' एटले मननी अत्यंत प्रीति राखवी शुश्रूषा नामना पहेला लिंगमां श्रुतधर्मनो राग इच्छेलो छे, अने अहीं चारित्र धर्म उपरनो राग इच्छ्यो छे, एटलो ए बन्नेमां तफावत छे. आ प्रसंग उपर चिलातिपुत्रनु दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

चिलातिपुत्रनु दृष्टान्त

तीव्रेण धर्मरागेण, अघ दुष्टमपि स्फुटम् ।
चिलातिपुत्रवत्सद्य., क्षयीकुर्वन्ति देहिन. ॥ १ ॥

भावार्थ—“ प्राणीओ चिलातिपुत्रनी जेम दुष्ट पापने पण धर्म उपरना तीव्र रागवडे तत्काळ क्षय करे छे ”

क्षितिप्रतिष्ठ नगरमां यज्ञदेव नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो. ते अनित्य वा जैनधर्मनी निंदा करतो हतो ते पंडितमानी ब्राह्मणने एकदा वाद करवा मा

कोइ क्षुल्लक जैन मुनिए बोलाव्यो ते वखते तेणे शरत करी के " मने जे जीते, तेनो हु शिष्य थाउं. " वाद करता ते साधुए तेने जीती लीधो, एटले ते पराजय पामीने तेनो शिष्य थयो. एकदा शासन देवताए यज्ञदेव साधुने कह्यु के-"जेम माणस नेत्रवालो छता पण सूर्यना प्रकाश विना जोइ शकतो नथी तेम जीव ज्ञानवालो छता पण शुध्ध चारित्र विना मोक्षना सुखने जोइ शकतो नथी, माटे तमे चारित्रमा स्थिर थाओ." शासन देवीए आम कह्या छता ते ब्राह्मण होवाथी दुगंछा छोडतो नहीं. एटले के स्नान, दतधावन विगेरे न करवाथी तेने दुगच्छा उत्पन्न थती. तेनी स्त्री तेना परनी प्रीतिने छोडी शकी नहीं, तेथी तेने वश करवा माटे तेणीए कामण कर्यु. तेथी शरीरे पीडा पामता ते ब्राह्मण मुनि शुध्ध चारित्रनु पालन करीने देवता थया.

ते ब्राह्मणनी स्त्री पोताना कामणथीज पतिनु मरण थयेलु जाणीने वैराग्य उत्पन्न थवाथी, चारित्र ग्रहण करी मुनिहत्यानु पाप आलोच्या विना मरण पामीने स्वर्गे गइ.

ते ब्राह्मणदेव आयुष्य पूर्ण थये चवीने राजगृह नगरमा धना श्रेष्टीनी चिलाती नामनी दासीनी कुक्षिथी पुत्रपणे उत्पन्न थयो. लोकोमा ते चिलातिपुत्रना नामथी प्रसिध्ध थयो. तेनी स्त्री स्वर्गमांथी चवीने धना श्रेष्टीना पाच पुत्रो उपर सुसुमा नामनी पुत्री थइ. धना श्रेष्टीए ते पुत्रीने रमाडवा माटे चिलातिपुत्रनी योजना करी. एकदा चिलातिपुत्रने सुसुमा साथे असभ्य क्रीडा करतो जोइने धना शेठे तेने काढी मूक्यो. ते सिंहगुहा नामनी चोरनी पल्लीमा जइने रह्यो. पल्लीपतिए पोताना अवसान वखते तेने पोताना पुत्रपणे स्थापीने पल्लीपति बनाव्यो. त्या कामदेवना शस्त्रथी पीडा पामतो चिलातिपुत्र सुसुमानु वारंवार स्मरण करवा लाग्यो. एकदा ते पापीए सर्व चोरोने कह्यु के—" हे चोरो ! आपणे आजे राजगृह नगरमा धना शेठने घेर चोरी करवा जइए. त्याथी जे धन प्राप्त थाय ते सर्व तमारे लेवु, अने तेनी पुत्री सुसुमाने मारे लेवी." ए रीते व्यवस्था करीने रात्रिने समये ते सर्व चोरो धना शेठना घरमा पेठा. पछी धना शेठ विगेरेने अवस्वापिनी आपीने सर्व चोरो धन लइने नीकळी गया, अने चिलातिपुत्र सुसुमाने लइने नीकळ्यो. थोडी वारे श्रेष्टी जागी उठ्यो. एटले तेणे कळकळाट करीने सर्वने जगाड्या. पछी पोताना पाचे पुत्रो सहित नगरना कोटवाळ विगेरेने साथे लइने श्रेष्टी चोरोनी

पाछळ चाल्यो. सर्व चोरो तेमने पाछळ आवता जोइने भय पामी सर्व धन छोडी दइने जूदी जूदी दिशामा नाशी गया. ते धन लइने कोटवाळ विगेरे पाछा वळ्या, पण धनो शेठ तो पांचे पुत्रो सहित सुसुमानी शोध माटे आगळ चाल्यो. तेने तरवार सहित आवतो जोइने चिलातिपुत्र खड्ग वडे सुसुमानुं मस्तक कापी धड नीचे नांखी दइ मस्तक हाथमा राखीने उतावळो नासी गयो. धन श्रेष्ठी ते स्थाने आव्यो, त्यां सुसुमाने मरेली जोइने घणीवार विलाप करी पाछो वळी पोताना नगरमां आव्यो.

धन श्रेष्ठी बीजे दिवसे पुत्रो सहित श्री वीरप्रभु पासे धर्म सांभळवा गया. प्रभुए उपदेश आप्यो के—" आ जगतमा मनुष्यो ' आ मारो पिता छे, आ मारी माता छे, आ मारा बांधवो छे, आ परिजन छे, आ स्वजनो छे, अने आ द्रव्य मे उपार्जन कर्युं छे, एम माने छे पण ते सर्व यमराजने वश छे एम ते जाणता नथी." इत्यादि जिनेश्वरनी वाणी सांभळीने प्रतिबोध पामेला धन श्रेष्ठीए दीक्षा ग्रहण करी अने तीव्र तपस्या करीने स्वर्गे गया तेना पांच पुत्रोए श्राद्ध धर्म अंगीकार कर्यो.

अहीं चिलाति दासीनो पुत्र हाथमा सुसुमानु मस्तक लइने दोड्यो जतो हतो अने ते मस्तकमांथी नीकळता लोही वडे तेनु आखु शरीर रुधिरयु हतु. ते थोडे दूर गयो, तेटलामा तेणे एक मुनिने कायोत्सर्गे रहेला जोया. तेने जोइने चिलातिपुत्रे कह्यु के " हे मुनि ! मने जलदी धर्मोपदेश आपो, नहीं तो खड्ग वडे आ स्त्रीना मस्तकनी जेम तमारुं मस्तक पण हु छेदी नाखीश. " ते सांभळीने मुनिए तेने योग्य पात्र जाणीने सद्धर्मबीज ' उपशम विवेक अने संवर ' ए त्रण पद कह्या पछी तरतज नवकार मंत्र बोलता ते मुनि आकाश मार्गे उत्पती गया.

मुनिए कहेला पदोने सांभळीने ते चोरपति विचार करवा लाग्यो के " उपशमनो अर्थ शु ?" पोतेज विचार करीने मनमा बोल्यो के " उपशम एटले क्रोधनी शान्ति, ते उपशम तो मारामा क्यां छे ? बिलकुल नथी. " एम विचारीने तेणे हाथमांथी क्रोधना चिन्हभूत खड्ग नाखी दीधु. फरी विचार करता तेणे विवेक पदनो अर्थ जाण्यो के " कृत्य (करवा लायक) ने विषे प्रवृत्ति करवी अने अकृत्यने विषे निवृत्ति करवी, ते विवेक ते विवेक वडे धर्म थाय छे. तेवो

विवेक मारामा क्या छे ? केमके दुष्टताने सूचन करनारु स्त्रीनुं मस्तक तो मारा हाथमा छे." एम विचारीने तेणे स्त्रीना मस्तकनो त्याग कर्यो. पछी संवरनो अर्थ विचारता तेणे जाण्युं के "पाचे इन्द्रियो अने मननो निरोध करवो, ते सवर. ते सवर मारे स्वेछाचारीने–सर्व प्रकारे मोकळाने क्याथी होय ? न होय. त्यारे तेने माटे प्रयत्न करवो जोइए." एम विचारीने पेला मुनि ज्यां उभा हता, तेज स्थाने पोते मुनिनी ज जेम कायोत्सर्ग करीने उभो रह्यो. अने प्रतिज्ञा करी के "ज्यां सुधी मने स्त्रीहत्यानु पाप स्मरणमा आवे, त्यासुधी मारो देह हुं वोसरावु छु. अर्थात् त्यासुधी मारे कायोत्सर्ग हो."

हवे भावमुनि थयेला चिलातीपुत्रनुं शरीर रुधिरथी व्याप्त हतु, तेथी तेना गधथी असख्य कीडीओ एकठी थइ, अने तेनु शरीर चालणी जेवु करी नाख्यु. ते कीडीओ पगमा पेसीने खाती खाती मस्तके नीकळी. आ रीते अढी दिवस सुधी महा तीव्र वेदनाने सहन करता छता ते किंचित् पण ध्यानथी चलित थया नहीं. प्राते आयुष्य पूर्ण थवाथी ते महात्मा मृत्यु पामीने आठमा सहस्रार देवलोकमा देवता थया.

"हे भव्य प्राणीओ ! सद्वाक्यना अर्थने बुद्धि पूर्वक विचारीने चिलातिपुत्रे मोटा पापोनो नाश कर्यो, तेवी रीते तमे पण जो आश्रवोनो त्याग करशो, तो तमारा हाथमा ज मोक्ष लक्ष्मी क्रीडा करशे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादग्रथस्यवृत्तौ प्रथम स्थंभे दशम व्याख्यानम् ॥ १० ॥

व्याख्यान ११ मुं.

समकितना त्रीजा वैयावृत्य नामना लिंग विषे.

नवमा व्याख्यानना प्रारंभना श्लोकमा "वैयावृत्यं जिने सार्धौ, चेति लिंगं त्रिधा भवेत्" ए छेल्ला पे पादमा 'जिन' एटले रागादिक अढार

दोषनो जय करनारा देव अने तत्त्वने प्रकाश करनारा तेमज पांच प्रकारना आचार पाळवामा तत्पर 'साधु' ते गुरु. तेमा जिनेश्वरनी द्रव्य पूजा तथा भाव पूजा वडे वैयावृत्त्य करवी अने गुरुनी अशन पानादिक वडे ' वैयावृत्य ' एटले सेवा अवश्य करवी, ते प्राणीओने मोटो लाभ करनार थाय छे ए समकितनु त्रीजु लिंग जाणवु. ते उपर संप्रदायागत नदिषेणनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

नदिषेणनु दृष्टान्त

वैयावृत्यं वितन्वानः , साधूना वरभावतः ।
बध्नाति तनुमान्नन्दिषेणवत् कर्म सुन्दरम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" श्रेष्ठ भावथी साधुओनी वैयावच्च करनार प्राणी नदिषेण मुनिनी जेम शुभ कर्मने बांधे छे "

नंदि ग्रामना सोमिल नामना ब्राह्मणने सोमिला नामनी स्त्रीथी नंदिषेण नामे पुत्र उत्पन्न थयो हतो त पुत्रनी बाल्यावस्थामा ज तेना मा बाप मरण पाम्या हता. नदिषेण मस्तकना केशथी ते पगना नख सुधी कद्रूपो हतो. बिलाडानी जेम तेना नेत्रो पींजरा हता, गणेशनी जेम तेनु उदर मोटु हतु, ऊटनी जेम तेना ओष्ठ लाबा हता, अने हाथीनी जेम तेना दांत बहार नीकळेला हता. तेने दुर्भागी जाणीने तेना स्वजनोए पण नजी दीधो हतो, तेथी ते पोताना मामाने घेर जइ दासकर्म करवा लाग्यो अत्यत कद्रूपो होवाथी तेने कोइए कन्या आपी नहीं, तेथी बहु खेद पामेला तेने तेना मामाए कह्यु के " तु खेद करीश नहीं, मारे सात कन्याओ छे, तेमाथी एक कन्या हु तने आपीश " एम कहीने तेणे पोतानी पुत्रीओने अनुक्रमे नदिषेण साथे परणवानु कह्यु. त्यारे ते सर्वे बोली के " अमे झेर खाइशु, अथवा गळाफांसो खाइशु, पण नदिषेणने अंगीकार नहीं करीए." ते सांभळीने तेनो मामो निरुपाय थयो, तेथी विशेष खेद पामेलो नदिषेण तेना मामाना घरनो त्याग करी वनमा जइ भृगुपात[१] करीने मरवा तैयार थयो तेवामा तेने नजीकमा कायोत्सर्गे रहेला एक मुनिए दीठो. तेथी तेने तेम करतो अटकावीने भृगुपात करवानु कारण पूछ्यु, त्यारे तेणे मुनिने प्रणाम करीने पोतानु

१ पर्वतना उंचा शिखरपरथी पडतु मुकी मरवु ते आने भैरवजव पण कहे छे

वृत्तात कही सजळाव्युं. ते साजळीने मुनि बोल्या के " अरे मुग्ध ! निरंतर मलिन देहवाळी, जेना शरीरना बार द्वारोमाथी मळ वह्याज करे छे एवी स्त्रीओमा तु आसक्ति न राख, वळी आवुं मरण करवाथी काइ कर्मनो क्षय थवानो नथी, उलटां कर्म वृद्धि पामे छे. परतु जो तुं सुखनी आशा राखतो होय तो जीवनपर्यत चारित्र धर्मनी प्रतिपालना कर के जेथी आगामी भवे तु सुखी था. " ते सांजळीने तेणे तरतज ते मुनिनी पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी. गुरु पासे विनय पूर्वक धर्म शास्त्रोनु पठन करता ते गीतार्थ थया. अन्यदा ते नदिषेण मुनिए अभिग्रह कर्यो के 'मारे निरतर छठ तप करीने पारणाने दिवसे वृद्ध, ग्लान अने नाना साधुओनी वैयावच्च करीने पछी आंबिल करवुं. '

आ प्रमाणेनो अविच्छिन्न अभिग्रह पाळता एकदा इन्द्रे पोतानी सजामा नदिषेणनी उग्र तपस्या साथे निश्चळ अभिग्रह विषे प्रशंसा करी. ते पर अविश्वास आववाथी कोइ बे देवताओ तेनी परीक्षा करवा माटे तेनी पासे आव्या एक देवता ग्लान साधुनु रूप धारण करीने गाम बहार रह्यो, अने बीजो देव साधुने रूपे नदिषेण पासे आव्यो. ते वखते नदिषेण मुनि छठनु पारणु होवाथी पच्चक्खाण पारीने जोजन करवा बेसता हता, तेवामा पेला द्रव्यसाधुए जावसाधुने कह्युं के " अरे नदिषेण ! तारो अभिग्रह क्या गयो ? आ नगरनी बहार एक ग्लान साधु अत्यत तृषाक्रात पडेला छे, तेनु वैयावृत्त्य कर्या विना खावा केम बेसे छे ? " ते साजळीने नदिषेण मुनि पोतानु जिक्षापात्र बीजा मुनि पासे मूकीने ते ग्लान साधु माटे प्रासुक जळ लेवा नीकळ्या. पेला देवताए देवशक्तिवडे सर्व घरे पाणी अनेषणीय करी मूकेलुं होवाथी नदिषेण मुनिने घणा घेर फरवु पड्यु छेवट एक घेरथी तेने शुद्ध जळ मळ्यु, ते लइने पेला साधु साथे नदिषेण गाम बहार ग्लान साधु पासे गया. ते ग्लान साधुने अतिसारनो व्याधि थयेलो हतो, तेथी तेनु शरीर नदिषेण धोवा लाग्या, ते वखते ते देवे अत्यत दुर्गंध विकुर्वी. परंतु नंदिषेण तेथी खेद न पामता विचार करवा लाग्या के " अहो ! कर्मनी गति विचित्र छे, ते कोइने छोडतुं नथी. " एम शुद्ध जावना जावता ते ग्लान साधुने पोतानी खाध पर उपाडीने ते उपाश्रय तरफ चाल्या. मार्गमा ते ग्लान साधुए वारवार निहार करीने नदिषेणनु आखु शरीर विष्टाथी लींपी दीधु. तथापि नदिषेणे जरा पण दुगंछा न करी. अने तेने

तेवी स्थितिमां उपाश्रये लावीने विचारवा लाग्या के " अरे ! आ साधुने हुं केवी रीते रोग रहित करीश ? " एम विचारीने ते पोताना आत्मानी निंदा लाग्या. आवी रीते तेने वैयावृत्यने विषे निश्चळ जाणीने ते बन्ने देवो प्रत्यक्ष थया अने तेमने वंदना करी, क्षमा मागी, सुगंध पुष्पोदकनी वृष्टि करीने तेमनी प्रशंसा करता करता स्वर्गे गया.

नंदिषेण मुनिए ' बार हजार वर्ष सुधी तपस्या करी ' एम नेमिनाथचरित्रमां कह्यु छे, अने वसुदेव हिंडिमां पचावन हजार वर्ष सुधी तपस्या कर्यानुं कहेलुं छे.[1]

छेवट नंदिषेण मुनिए अनशन ग्रहण कर्युं, ते वखते कोइ चक्रवर्ती राजा पोताना सर्व अंतःपुर सहित तेने वांदवा आव्या. ते चक्रीनी अत्यंत स्वरूपवान स्त्रीओने जोइने पोतानी पूर्वे स्थितिनुं स्मरण थतां ते मुनिए " आ तपस्याना प्रभावथी हुं स्त्रीवल्लभ थाउं " एवुं नियाणुं कर्युं पछी ते मुनि काळधर्म पामीने सातमा महाशुक्र देवलोकमां देवता थया.

देवलोकथी च्यवीने नंदिषेणनो जीव सूर्यपुरमा अंधकवृष्णी राजानी सुभद्रा नामनी राणीथी दशमो वसुदेव नामे पुत्र थयो ते कुमार पूर्व जन्ममां करेला निदानने लीधे स्त्रीवल्लभ थयो. वसुदेव कुमार नगरमां ज्यां ज्यां फरतो, त्यां त्यां नगरनी स्त्रीओ पोताना गृहकार्यो मूकीने तेनी पाछळज भमती हती. तेथी उद्वेग पामेला पौरजनोए समुद्रविजय राजाने विज्ञप्ति पूर्वक ते वृत्तांत जाहेर कर्युं ते सांभळीने राजाए पौरजनोने सारा उत्तरथी संतोष पमाडी विदाय कर्या पछी वसुदेवने बोलावीने तेणे कह्यु के " आजथी तारे आपणा राजगढमांज क्रीडा करवी, बहार नीकळवुं नहीं " वसुदेवे ते वाक्य स्वीकार्युं

एकदा ग्रीष्मऋतुमां शिवा देवीए समुद्रविजयने विलेपन करवा माटे मोकलेलुं चंदननुं कचोळुं लइने जती दासीने जोइने वसुदेव कुमारे पूछ्युं के " दासी ! शुं लइ जाय छे ? लाव, मने आप " दासीए न आप्युं एटले वसुदेवे बळात्कारे तेनी पासेथी लइने पोताने शरीरे विलेपन कर्युं. तेथी रुष्टमान थयेली दासीए कह्यु के " आवा अटकचाळा छो, तेथीज घररूपी केदखानामां राख्या जणाय छे " ते सांभळीने वसुदेवे पूछ्युं के " ए शी रीते ? " त्यारे तेणीए पौरजनो संबंधी सर्व वृत्तान्त कही बताव्युं. ते सांभळीने पोतानुं अपमान

1 तपस्या करी एटले चारित्र पाळ्युं एम समजवुं मुनिनुं चारित्र तपोमयज होय छे

येलुं जाणी रोषथी तेज रात्रिए छानी रीते नगरीनी वहार नीकळी गया. अने पोतानी जत्रा चीरीने तेना लोही वडे दरवाजाना वारणा उपर तेणे लख्युं ; " जाइना अपमानथी वसुदेवे अहीं चितामा प्रवेश कर्यो छे. " पछी तेनी नजीकमाज एक चिता रची तेमा कोइ मडदु सळगावीने वसुदेव देशान्तर चाल्या गया.

गामे गाम फरता अनुक्रमे बोंतेर हजार विद्याधर विगेरेनी कन्याओने परण्या. एकदा शौरिपुरमा रोहिणी राजपुत्रीनो स्वयंवर थतो हतो. ते समये घणा राजाओ अने राजपुत्रो त्या आव्या हता. वसुदेव पण वामन अने कुब्जनु रूप करीने त्या आव्यो. सर्वे लोको तेने वामन रूपे देखता हता अने रोहिणी तेने मुळरूपेज देखती हती. तेथी मोहित थयेली रोहिणीए बीजा सर्वनो त्याग करीने तेना कंठमा वरमाळा आरोपण करी. ते जोइने समुद्रविजय विगेरे राजाओ क्रोध पामीने ते वामन साथे युध्द करवा तैयार थया वसुदेवे विचार्यु के 'मोटा भाइनी साथे युध्द करवु योग्य नथी.' तेथी तेणे पोताना नामथी अंकित एवु बाण समुद्रविजय तरफ नाख्यु. ते बाण लइने जोता ' वसुदेव तमने प्रणाम करे छे " एवा अक्षरो वाची समुद्रविजये जाण्यु के " आ तो मारो नानो भाइ छे. कोइ पण कारणने लीधे तेण आवुं रूप धारण कर्युं जणाय छे. " पछी युध्द बंध करी सर्वे मळ्या, परस्पर आनंद थयो. अने वसुदेवनी साथे रोहिणीने परणावी. अने तेमने लइने समुद्रविजय पोताने नगरे गया.

केटलेक काळे हाथि, सिंह, चंद्र अने समुद्र ए चार स्वप्नो वडे सूचन करेला बळरामने रोहिणीए जन्म आप्यो त्यार पछी देवकीए सात स्वप्नथी सूचन करेला वासुदेव (कृष्ण) ने जन्म आप्यो. (आ चरित्रनो विस्तार धर्मदास गणिना करेला ग्रंथथी जाणी लेवो.) आयु पूर्ण थये वसुदेव मृत्यु पामीने स्वर्गे गया.

" त्रीजा वैयावृत्य नामना लिंगने विषे दृढ निश्चयवाळा नंदिषेण मुनिवर राजाओने पण प्रशंसा करवा लायक पदवीने पामीने उत्कृष्ट मोक्ष सुखने पाम्या.

माटे हे भव्य प्राणीओ ! तमे पण वैयावृत्यपने विषे यत्नवाळा थाओ. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादग्रंथस्यवृत्तौ प्रथम
स्थंभे एकादश व्याख्यानम् ॥ ११ ॥

व्याख्यान १२ मुं.

त्रीजा विनयद्वार विषे कहे छे

अर्हत्सिध्धमुनीन्द्रेषु, धर्मचैत्यश्रुतेष्वपि ।
तथा प्रवचनाचार्योपाध्यायदर्शनेष्वपि ॥ १ ॥
पूजा प्रशंसन भक्तिरवर्णवादनाशनम् ।
आशातनापरित्याग , सम्यक्त्वे विनया दश ॥ २ ॥

भावार्थ—" अर्हत्, सिध्ध, मुनि, धर्म, चैत्य, श्रुत, प्रवचन, आचार्य, उपाध्याय अने दर्शनने विषे पूजा, प्रशंसा, भक्ति, अवर्णवादनो नाश अने आशातनानो परित्याग करवो, ए समकित सूचक दश प्रकारनो विनय छे. "

विस्तरार्थ—सुर अने असुर विगेरेनी करेली पूजाने जे अर्हे के० लायक होय, ते अर्हत् कहेवाय छे

उक्कोसं सत्तरिसय, जहन्न वीसा य दस विहरंति ।
जम्म पइ उक्कोस, वीस दस हुंति जहन्ना ॥ १ ॥

भावार्थ—" एक काळे उत्कृष्टथी एक सो ने सीत्तेर अने जघन्यथी वीश के दश तीर्थंकरो विचरे छे जन्म आश्रीने उत्कृष्टथी वीश एक काळे जन्मे छे अने जघन्यथी एक काळे दश तीर्थंकर जन्म पामे छे "

सिद्ध एटले जेओ कृतकृत्य थया छे ते. मुनि एटले मनन करवाना स्वभाववाळा, सत्य वचनना प्रकाशक. धर्म—एकथी माडीने क्षात्यादि दश प्रकारनो. चैत्यो—त्रण भुवनमा रहेला शाश्वता अने अशाश्वता जिनभुवनो. तेमां शाश्वत जिन बिंबोनी सख्या आ प्रमाणे छे.—

देवेसु कोडिसयं, कोडि बावन्न लक्ख चउणवइ।
सहसा चउआलीसं, सत्तसया सट्ठी अप्पडिहिआ ॥ १ ॥

भावार्थ—" देवलोकने विषे (वैमानिकमा) एकसो बावन करोड, चोराणुं लाख, चुमाळीश हजार, सात सो ने साठ शाश्वता जिनबिंबो छे. "

लक्खतिगं इगनवई, सहस्स विसा य तिन्नि सया य ।
जोइस वज्जिऊणं, तिरियं जिणबिंबसंख इमा ॥ २ ॥

भावार्थ—" त्रण लाख एकाणु हजार त्रणसो ने वीश शाश्वत जिनबिंबो ज्योतिषि शिवाय तिर्छा लोकमा छे. "

तेरस कोडिसयाइं, गुणनवइ कोडि सट्ठि लक्खाइं ।
भुवणवइण मज्झे, जोइसियभुवणेसु य असंखा ॥ ३ ॥

भावार्थ—" तेरसो ने नेव्याशी करोड अने साठ लाख शाश्वता जिनबिंबो भुवनपतिमा छे, अने ज्योतिषिना भुवन(विमान) मा तो असख्याता छे."

कोडि सयाइं पन्नरस, कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना ।
छत्तीसं पुण सहसाइं, असिहियाउ सव्वग्ग ॥ ४ ॥

भावार्थ—" पनरसो ने बेताळीश करोड, अठावन लाख, छत्रीश हजार अने एंशी—एटली कुल सख्या शाश्वता जिन बिंबोनी छे. (आ सख्या व्यंतरने ज्योतिषि शिवाय समजवी.) "

अशाश्वता एटले भरतचक्री विगेरेए करावेला जिनबिंबो समजवा.

श्रुत एटले द्वादशागो विगेरे सूत्रो. प्रवचन—चतुर्विध सघ. आचार्यो—गच्छाधिपतिओ. उपाध्यायो—वाचना आपनारा (मुनिओने भणावनारा). तथा

दर्शन ते जिनशासन अथवा सम्यक्त्व ए अर्हत आदि दश पदोनो पूजा, प्रशंसा, भक्ति, अवर्णवाद वर्जन तथा आशातना परित्यागवडे विनय करवो. बीजा ग्रंथो मा विनयना घणा प्रकारो बताव्या छे, परंतु अहीं तो दश प्रकारानोज स्वीकार कर्यो छे. विनय उपर भुवनतिलक मुनिनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

भुवनतिलक प्रबंध

कुसुमपुरमा धनद नामे राजा हतो तेने पद्मावती नामे राणी हती अने भुवनतिलक नामे कुमार हतो. एकदा धनद राजा मंत्रीओ सहित सभामा बेठो हतो, ते समये रत्नस्थळ नगरना राजा अमरचंद्रनो प्रधान राजानी आज्ञाथी राजसभा मा दाखल थयो. तेणे राजाने नमन करी योग्य स्थाने बेसी विज्ञप्ति करी के "हे स्वामी! अमारा राजा अमरचंद्रने यशोमती नामनी पुत्री छे. ते एकदा पुष्पोद्यानमा क्रीडा करती हती, ते वखते तेणे विद्याधरीओना मुखथी गवाता तमारा पुत्र भुवनतिलक कुमारना गुणसमूहनु श्रवण कर्यु, त्यारथी ते यशोमती तमारा कुमारनुज ध्यान करती महाकष्टे दिवसो निर्गमन करवा लागी. एकदा वियोगनी विधुरताथी कृश थयेली कुमारीने जोइने राजाए तेने कृश थवानु कारण पूछ्यु, त्यारे तेणीए पोतानो मनोगत अभिप्राय तेने निवेदन कर्यो. ते सांभळीने अमारा राजाए मने आपनी पासे तमारा पुत्र साथे तेनो लग्न संबंध करवा माटे मोकल्यो छे. माटे आप ते हकीकतनो स्वीकार करी अमने आभारी करो." आवां ते प्रधानना वचनो सांभळीने धनद राजाए कुमारनो विवाह स्वीकार्यो अने ते प्रधाननु सारु सन्मान कर्यु.

पछी शुभ दिवसे धनदराजानी आज्ञाथी मंत्री अने सामंत राजाओ सहित राजकुमार भुवनतिलके लग्नने माटे प्रमाण कर्यु. मार्गमा सिद्धपुर नामना नगर पासे आवतां कुमार एकदम आंखो बंध करी मूर्छा खाइ रथमा पडी गयो. तेने सर्वे बोलाववा लाग्या परंतु ते कुमार मुगानी जेम एक अक्षर पण बोल्यो नहीं. तेथी हिमवडे करमाइ गयेला कमळनी जेवा मुखवाळा सचिवोए पुरमांथी घणा मांत्रिकोने बोलाव्या. परंतु तेमना सर्व प्रयोगो उखर भूमिमा वृष्टिनी जेम निष्फळ थया. ते समये 'थोडे दूर कोइ केवळी सुवर्णना कमळ पत्र पर बेसीने देशना आपे छे' एम सांभळीने ते मंत्रीओ 'केवळी पासे जइ तेमने वंदना करी देशना सांभळवा

लाग्या. केवळी जगवान बोल्या के "हे जव्य प्राणीओ ! आ संसार रुपी अगाध समुद्रमा मत्स्यादिकना समूहनी जेम सत्रमथी जटकता जीवो घणा कष्टथी, पूर्ण सत्कृत्यो वके, अद्भुत मनुष्य जन्म पामे छे. ते मनुष्य जन्मने सफळ करवा माटे मोक्ष सुख रुपी वृक्षने वृद्धि करवामा मेघ समान विनय वके सिद्धादि परमेष्ठीनु आराधन करो."

इत्यादि देशना सांजळ्या पछी कतीरख नामना मुख्य मत्रीए प्रणाम पूर्वक केवळीने पूछ्यु के ' हे जगवान ! जुवनतिलक कुमारेने अणचिंती दुःखप्राप्ति थवानुं शु कारण छे ?" त्यारे केवळी बोल्या के " धातकीखंडना भरतक्षेत्रने विषे जुवनागार नामना पुरमा जेमणे पापसमूहने दूर कर्यो छे एवा कोइ सूरि पोताना गच्छ सहित पधार्या. ते सूरिनो एक वासव नामनो शिष्य महात्माओना शत्रुरूप हतो. ते निरंतर दुर्विनय रूप समुद्रमा निमग्न रहेतो हतो. एकदा तेने आचार्ये उपदेश दीधो के " हे वत्स ! विनय गुण धारण कर. कह्यु छे के—

विनयफलं शुश्रूषा, गुरुशुश्रूषाफलं श्रुतज्ञानम् ।
ज्ञानस्य फलं विरतिर्विरतिफलं चाश्रवनिरोधः ॥१॥
संवरफलं तपोवलमथ तपसो निर्जरा फलं दृष्टम् ।
तस्मात् क्रियानिवृत्तिः क्रियानिवृत्तेरयोगित्वम् ॥२॥
योगनिरोधाद्भवसन्ततिक्षय सन्ततिक्षयान्मोक्षः ।
तस्मात् कल्याणाना, सर्वेषां जाजनं विनयः ॥३॥

जावार्थ—" विनयनु फळ गुरुनी सेवा करवी ते छे, गुरु सेवानु फळ श्रुतज्ञान प्राप्त थाय ते छे, ज्ञाननु फळ विरति प्राप्त थवी ते छे, विरतिनु फळ आश्रवनो निरोध थाय ते छे, आश्रव निरोध (संवर)नु फळ तप करवाने विषे बलवान थवा रूप छे, तपनु फळ कर्मनी निर्जरा थाय ते छे, कर्म निर्जराथी क्रियानी निवृत्ति थाय छे, क्रिया रहित थवाथी अयोगिपणु प्राप्त थाय छे, योगना निरोधथी जवनी परंपरानो नाश थाय छे, अने जव परंपराना क्षयथी मोक्षनी प्राप्ति थाय छे. माटे विनय ए सर्व प्रकारना कल्याणोनुं भाजन छे."

आ प्रमाणे विनय गुणने माटे गुरुए घणो उपदेश आप्यो, परंतु ते .. शिष्यने तो ते उपदेश उलटो रुप रूप थयो. तेथी गुरुए तथा बीजा सर्वे .. ओए तेनी उपेक्षा करी एटले क्रोध युक्त थइने तेणे प्रासुक जळमां गुरुने तथा बीजा मुनिओने मारी नाखवा माटे तालपुट विष नाख्युं अने पोते नयने क्षी त्यांथी नाशी जइ कोइ अरण्यमा जइने सुतो. तेवामा दावानळ सळगवाथी ते दुष्ट साधु रौद्र ध्यानथी मृत्यु पामीने छठी नरके गयो. अहीं सूरि विगेरेने प्रा जळ पीतां शासन देवताए अटकाव्या

पेलो वासव नरकथी नीकळीने मत्स्यादिक योनिमा अवतरीने घणा जन्म जळकयो, ते वासव हालमा काइक कर्मनी लघुता थवाथी राजकुमार थयो छ हमणा पूर्वे करेला मानसिक ऋषिघात सबंधी शेष रहेला पापना उदयथी आवी दुर्दशाने पाम्यो छे. हे मत्री ! आ प्रमाणे में कहेलुं तेना पूर्व भव वृत्तांत तमे ते कुमारने कहेशो एटले ते सज्ज थइ जशे "

केवळीना वचनने अगीकार करीने मत्री विगेरे सर्व कुमारनी पासे आव्य पछी मत्रीए तेने केवळीए कहेलुं वृत्तांत साभळ्यु, के तरतज ते सज्ज थयो पछ जातिस्मरण पामेलो कुमार केवळीने वादवा आव्यो मुनिने वेदना करीने ए कर्मनो क्षय करवाने माटे तेणे तरतज दीक्षा ग्रहण करी, तेनी साथे ते मत्री विगेर पण वैराग्य पामी चारित्र अगीकार कर्युं राजकुमारी यशोमति आ वृत्त साभळीने क्षण वार मूर्छा पामी. पण पछी तरतज सज्ज थइने तेणीए पण संसा रना क्षणिक सुखथी वैराग्य पामीने मावापनी आज्ञाथी चारित्र ग्रहण कर्युं आ सर्व वृत्तांत राजसेवकोए जइने धनद राजाने निवेदन कर्युं

भुवनतिलक मुनि तीर्थंकरादिक दशे पदनो विनय करवा लाग्या ते जाइने तेना गुरु पण तेना विनय गुणनी प्रशसा करवा लाग्या तेमणे बोंते लाख पूर्व सुधी चारित्रनु प्रतिपालन कर्यु अने कुल एशी लाख पूर्वनुं आयु ष्य पूर्ण करीने अते पादपोपगम अनशन ग्रहण करी केवळज्ञान पामी अनत आन दना साम्राज्य रूप मोक्ष पदने पाम्या

" हे भव्य जीवो ! आ भुवनतिलक मुनिना दृष्टांतने श्रोत्रद्वयना कुड ळ रूप करीने (साभळीने) अर्हदादिक दश पदनो निरतर विनयसेवा करो

के जेथी शीघ्रपणे मोक्ष लक्ष्मी तमारा उत्संगमां आवीने बेसे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ प्रथम
स्तम्भे द्वादश व्याख्यानम् ॥ १२ ॥

व्याख्यान १३ मुं.

विनय प्रशंसा.

प्राप्नोति विनयाज्ज्ञानं, ज्ञानदर्शन सम्भवः ।
ततश्चरणसंपत्तिश्चान्ते मोक्षसुख लभेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" विनयथी ज्ञान प्राप्त थाय छे, ज्ञानथी दर्शन-समकित प्राप्त थाय छे, दर्शनथी चारित्र प्राप्त थाय छे, अने तेथी अंते मोक्ष सुख प्राप्त थाय छे."

श्रुतज्ञाननी इच्छावाळा पुरुषे तो विशेषे करीने गुरुजननो विनय करवो. विनय पूर्वक ग्रहण करेलु श्रुत तत्काळ सम्यग् फळने आपे छे, ते शिवाय फळ आपतु नथी. कयुं छे के—

मातंगसूनोर्वरविष्टरस्थाद्विद्या गृहीता फलति स्म शीघ्रम् ।
श्रीश्रेणिकस्येह यथा तथा स्यात्सप्रश्रयं शास्त्रमधीतमृद्ध्यै॥१॥

भावार्थ—" चांडाळना पुत्रने श्रेष्ठ सिंहासनपर बेसाडीने श्रेणिक राजाए विद्या ग्रहण करी, त्यारे तेने शीघ्रताथी विद्यानु फळ प्राप्त थयु. तेवीज रीते शास्त्र पण जो विनय पूर्वक ग्रहण कर्यु होय तोज ते सर्व प्रकारनी समृद्धिने माटे थाय छे." ते दृष्टांत आ प्रमाणे छे—

विनय प्रसंग उपर श्रेणिक राजानो प्रबंध.

राजगृह नगरमां श्रेणिक राजा राज्य करता हता. एकदा श्रीवीर प्रभुना

सुखथी सगर्भपणानी रात्री थवाने लीधे तेणे प्रसन्न थइने चेलणा राणीने कह्युं के "हे प्रिया ! बीजी राणीओ करतां वधारे सारो महेल हुं तारा माटे कराववा इच्छु छु, तो ते केवो करावुं ?" चेलणाए कह्यु के "हे स्वामी ! मारे माटे एक स्तंभवाळो प्रासाद करावो." ते सांभळीने राजाए एक स्तंभवाळो महेल कराववा अभयकुमारने आज्ञा आपी अभयकुमारे सुतारोने बोलावीने हुकम कर्यो. एटले ते सुतारो तेवा महेलने योग्य काष्ठने माटे अरण्यमां चोतरफ शोध करवा लाग्या. तेवामां तेमणे एक मोटा थडवाळु वृक्ष जोइने आनंद पामी विचार्युं के "जरूर आ वृक्ष कोइ देवताए अधिष्ठित होवु जोइए, तेथी आ वृक्षने कापतां आपणा स्वामीने काइ पण विघ्न थवु न जोइए" एम विचारीने ते विघ्न दूर करवा सारु तेओए तेना अधिष्ठायक देवने उद्देशीने तेनी आराधना माटे उपवास कर्यो, अने गंध, धूप तथा पुष्पादिकथी तेनी पूजा करीने पोताने घेर गया. आ हकीकत जाणीने ते वृक्षनो अधिष्ठायक देव पोताना स्थाननो भंग थवाथी भय पामी अभयकुमार पासे जइ बोल्यो के "हे मंत्री ! हु सर्व ऋतुना फळ पुष्पोथी सुंदर नंदन वन जेवो बाग बनावी, फरतो प्राकार करीने वचमां एक स्तंभवाळो महेल तमने करी आपीश, परंतु तमे मारा स्थानरूप पेला वृक्षने कपावशो नहीं." ते सांभळीने अभये तेनु वचन स्वीकार्युं, एटले ते अद्भुत शक्तिवाळा व्यन्तरे तत्काळ पोताना कहेवा प्रमाणे महेल बनावी दीधो ते महेलमां राजानी आज्ञाथी चेलणा देवी पद्मद्रहमां रहेली लक्ष्मीनी जेम निरंतर क्रीडा करवा लागी.

एकदा ते नगरमां रहेनारा कोइ चांडाळनी गर्भिणी स्त्रीने अकाळे केरी खावानो दोहद थवाथी तेणे पोताना पतिने केरी लावी आपवानु कह्यु. त्यारे ते चांडाळ बोल्यो के "आ ऋतुमां केरी मळे नहीं, माटे क्याथी लावु ?" स्त्रीए कह्यु के "चेलणा राणीना उद्यानमा सर्व ऋतुओना फळ पुष्प छे, माटे त्याथी लावी आपो" चांडाळे कह्यु के "ते बगीचा राजानो घणो बंदोबस्त छे, परंतु कोइक उपायथी लावीश" पछी ते चांडाळ रात्रीने वखते ते उद्यान पासे जइ तेना प्राकारनी बहार उभो रह्यो अने अवनामिनी विद्याए करीने आम्रवृक्षनी शाखा नीचे नमावीने तेना परनी केरीओ तोडी लीधी पछी उन्नामिनी विद्यावडे पाछी शाखाने हती तेम उंची करी दीधी एवी रीते करीने तेणे पोतानी स्त्रीनो दोहद पूर्ण कर्यो. आ प्रमाणे केरीओ लवाथी ते आंबो केरी विनानो थइ गयेलो

जोइने उद्यानना रक्षके ते हकीकत राजाने निवेदन करी. राजाए अभयने बोलावीने कह्यु के "जेनामा आवी शक्ति छे, ते अन्तःपुरमा पण केम प्रवेश करी न शके? माटे ते चोरने सात दिवसमा पकडी लाव. नहीं तो चोरनी प्रमाणे तारो दंड थशे." राजानी आज्ञा अंगीकार करीने अभयकुमार रात्री दिवस पुरमा अने पुर बहार चो तरफ तपास करवा माटे फरवा लाग्यो, परतु चोर हाथ आव्यो नहीं. छेवटे सातमी रात्रीने समये कोइ नटनी रमत जोवाने माटे जुगारीओ, स्त्रीलपटो, चोरो अने मासलुब्धको एकठा थया हता, त्या जइ पहोंच्यो. नटने आववानी काइक वार हती, तेथी अभये सर्व लोकोने कह्यु के–"हे जनो! ज्या सुधी नट आव्यो नथी, त्या सुधी हु एक वार्ता कहु ते तमे साभळो—

वसतपुरमा एक जीर्ण नामे निर्धन वणिक रहेतो हतो. तेने एक पुत्री हती. ते मोटी उम्मरनी थइ, तोपण तेने योग्य वर मळ्यो नही, तेथी योग्य वर मेळववा माटे ते कामदेवनी पूजा करवा लागी. एकदा ते कुमारी चोरीथी पुष्पो लेवा माटे एक उद्यानमा पेठी. तेने उद्यानना रक्षके पकडी. तेणीनु अति सुदर स्वरूप जोइने मोहित थयेला उद्यानपाळके तेणीनी कामक्रीडा माटे प्रार्थना करी. त्यारे ते कुमारिका बोली के–"हु हजु परणी नथी तेथी स्पर्श करवाने लायक नथी. कह्यु छे के

अस्पृशा गोत्रजा वर्षाधिका प्रव्रजिता तथा।
नाष्टौ गम्या. कुमारी च, मित्रराजगुरुस्त्रियः॥ १॥

भावार्थ—"अस्पृशा (चाडाल विगेरे अस्पर्श जातिनी), एक गोत्रनी, मोटी उम्मरनी, दीक्षा लीधेली, कुमारी, मित्रनी स्त्री, राजानी स्त्री अने गुरुनी स्त्री–आ आठ प्रकारनी स्त्रीओ अगम्य छे. अर्थात् पर पुरुषे तेनो स्पर्श करवो ते पण योग्य नथी."

ते साभळीने माळीए कह्यु के "ज्यारे तु परणे त्यारे जो तु प्रथम मारी पासे आववानु कबुल करे तो अत्यारे तने छोडी मूकु." ते सरत अगीकार करीने ते पोताने घेर गइ. केटलेक दिवसे ते कन्या योग्य पति साथे परणी. प्रथमनी रात्रीएज तेणीए एकातमा पोताना पतिने माळीने आपेला वचननी वात कही. ते साभळीने तेना पतिए विचार्यु के "अहो! आ स्त्री सत्यप्रतिज्ञावाळी जणाय छे." एम विचारीने तेणे तेणीने रजा आपी. एटले ते स्त्री मणि, मोती

अने सुवर्णना अलंकारो तथा उत्तम वस्त्रो पहेरीने घर बहार नीकळी - तरफ चाली. मार्गमां तेणीने चोर मळ्या. तेमणे तेणीने रोकी अने सर्व वस्त्र तथा आभरण उतारी आपवानुं कह्युं, त्यारे तेणीए पोतानुं वृत्तांत जणावीने कह्युं के " हे भाइओ ! हुं जइने हमणां पाछी आवुं छुं, ते वखते तमारा कहेवा प्रमाणे करीश, अत्यारे मने जवा द्यो. " ते सांभळीने चोरोए तेने जवा दीधी. आगळ जतां एक क्षुधावंत दुर्बळ थयेला राक्षसे तेने दीठी एटले रोकी. तेने पण चोरनी पेठे सत्य वृत्तांत कही पाछा आववानुं वचन आपीने माळी पासे गइ. माळीने कह्युं के " में तने प्रथम वचन आप्युं हतुं, ते प्रमाणे हुं आजे विवाहित थयाथी तारी पासे आवी छुं. " ते सांभळीने माळीए विचार्युं के " अहो ! आ केवी सत्य प्रतिज्ञावाळी छे ? " एम विचारीने तेणे तेने पोतानी बेन समान कही वस्त्र विगेरेथी सन्मान करीने रजा दीधी पछी पाछी आवतां तेणीए राक्षस पासे आवी तेना पूछवाथी माळीए बेन तरीके गणी वस्त्रो आप्यानी सर्व वात कही ते सांभळीने राक्षसे " अहो ! शुं हुं माळी करतां पण अधम छुं ? " एम विचारीने तेणीने मुक्त करी. त्यांथी आगळ चालतां तेणीनी राह जोइने बेठेला चोरो पासे ते आवी. चोरोना पूछवाथी तेणीए माळी तथा राक्षस साथे बनेली हकीकत कही बतावी ते सांभळीने " अहो ! शुं आपणे ते बन्ने करतां अधम थइशुं ? " एम विचारीने तेओए पण बेन तरीके गणी तेणीने सन्मान पूर्वक रजा आपी. पछी तेणीए घेर आवीने सर्व हकीकत पोताना पतिने कही. ते सांभळीने ते पण आनंद पाम्यो. अने तेनी साथे सुखनो अनुभव करवा लाग्यो "

आ प्रमाणे कथा कहीने अभय मंत्रीए सर्वने पूछ्युं के " हे लोको ! कहो ! ते स्त्रीनो पति, चोर, राक्षस अने माळी ए चारमां दुष्कर काम कोणे कर्युं?" अभयकुमारना प्रश्नना उत्तरमां जेओ स्त्रीना इर्ष्यालु हता तेओ बोल्या के " हे मंत्री ! नवी परणेली पोतानी खुबसुरत युवान स्त्रीने माळी पासे जवानी रजा आपी, ते तेणीना पतिए बहु दुष्कर काम कर्युं " जेओ क्षुधातुर हता तेओ बोल्या के " राक्षस भूख्यो हतो, छतां तेणीने जवा दीधी, माटे राक्षसे घणुं दुष्कर काम कर्युं " लंपट पुरुषोए कह्युं के "एवी स्वरूपवान स्त्रीने एमने एम पाछी

सेवा दीधी ते माळीए बहु दुष्कर काम कर्युं." छेवट आम्र फळ चोरनार चांडाळे
ला चोरनी प्रशंसा करी. ते सांभळीने अभयमंत्रीए तरतज ते चांडाळने
पकड्यो. पछी तेने दबावीने केरी चोर्या संबंधी पूछता ते चांडाळे स्त्रीनो दोहद
पूर्ण करवा माटे विद्यानी सहाय वडे करीओ लीधानु कबुल कर्युं. ते चांडाळने
राजा पासे लइ जइने अभयकुमारे तेनुं सर्व वृत्तान्त कह्युं, एटले राजाए तेनो वध
करवानो हुकम कर्यो त्यारे अभयकुमारे कह्युं के "हे स्वामी! आनी पासेथी
प्रथम अपूर्व एवी बन्ने विद्याओ तो ग्रहण करो, पछी जेम योग्य लागे तेम करजो.
केमके—

बालादपि हितं ग्राह्यममेध्यादपि काञ्चनम् ।
नीचादप्युत्तमा विद्या, स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि ॥ १ ॥

भावार्थ—"बाळक थकी पण हित वचन ग्रहण करवु, अशुचिमांथी पण कांचन लइ लेवु, नीच माणस पासेथी पण उत्तम विद्या होय तो ग्रहण करवी, अने नीचा कुळमांथी पण स्त्रीरत्न ग्रहण करवुं." आ प्रमाणे नितिशास्त्रनुं कथन छे.

अभयकुमारना आ प्रमाणेना कहेवाथी श्रेणिक राजाए सिंहासन पर बेठा बेठा ते चांडाळने पोतानी सन्मुख नीचे बेसाडीने तेनी पासेथी अवनामिनी अने उन्नामिनी ए बे विद्या शीखवा मांडी. परतु घणीवार ते विद्या बोलतां छतां पण राजाना हृदयमां पेठी नहीं. त्यारे राजाए क्रोध पामीने कह्युं के "अरे चांडाळ! मने विद्या आपवामां पण तुं खोटाइ करे छे?" एम कहीने तिरस्कार करवा लाग्या. ते जोइ अभयकुमारे कह्युं के "हे स्वामी! जो विद्या ग्रहण करवी होय तो एने सिंहासन पर बेसाडीने आप हाथ जोडी पृथ्वी उपर तेनी सन्मुख बेसो, तो विद्या आवडशे." ते सांभळीने राजाए तेम कर्युं के तरतज जाणे हृदयमां लखेली होय, एम ते बन्ने विद्या दृढ थइ गइ. पछी विद्यागुरु थवाथी ते चांडाळने अभये राजा पासेथी मुक्त कराव्यो.

"आ कथा उपरथी विनयज सर्वत्र फळदायी छे एम समजीने विनय

पूर्वक श्रुतनुं अध्ययन विगेरे करवुं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादग्रंथस्यटीकायां प्रथम
स्थंभे त्रयोदश व्याख्यानम् ॥ १३ ॥

व्याख्यान १४ मुं.



अविनयना फळ विषे

अन्वयथी विनयनुं स्वरूप कहीने हवे व्यतिरेकथी तेनुं व्याख्यान करे छे.

प्रकृत्या दुर्विनीतात्मा, गुरूक्ते प्रतिकूलधीः ।
संसारसागरे मग्नो, विनेय कूलवालकः ॥ १ ॥

भावार्थ—" प्रकृतिथी ज अविनयवाळ (उध्धत) अने गुरुना वचनथी विपरीत वर्तनार कूलवालक साधु संसार सागरमां डुब्यो " तेनुं दृष्टांत आ प्रमाणे—

कूलवालकनुं दृष्टान्त

कोइ एक आचार्यने एक अविनयी शिष्य हतो. तेने आचार्य तारुना करे के शिखामण आपे, तो तेना पर गुस्से थतो. एकदा आचार्य ते शिष्यने स हने उज्जयंत (गीरनार) गिरिनी यात्रा करवा गया त्यां ते शिष्य यात्राळु स्त्री ओनी उपर कुदृष्टि करवा लाग्यो, ते जोइने गुरुए तेने निवार्यो, तेथी ते गुरुना पर कोपायमान थयो एटले यात्रा करीने पाछा वळता गुरुनी पाछळ रहीने ते दुष्ट शिष्ये गुरुना चूरे चूरा करवाना हेतुथी एक मोटो पथरो गबडाव्यो. पण ते पथ्थर गुरुना बे पग वच्चे थइने नीकळी गयो. आवा तेना दुष्ट कृत्यथी गुरुए तेने शाप आप्यो के " हे दुरात्मा ! तुं स्त्रीथी विनाश पामीश " ते सांभ ळीने तेणे विचार कर्यो के " ज्यां वीनकुंन स्त्रीओज न होय, त्यां रहुं के जेथी

गुरुनो शाप मिथ्या थाय. " पछी ते साधु कोइ नदीने सामे काठे वस्ति विनाना जागमा जइ आतापना लेवा लाग्यो. तेना उग्र तपना प्रभावथी ते नदी तेना तरफ वहेती बंध थइने बीजी तरफ वहेवा लागी, तेथी ते साधुनु कूलवालुक एवु नाम लोकोए पाड्यु.

राजगृह नगरीना राजा श्रेणिके देवताए आपेला दिव्य कुंडळनी जोडी, अढार चक्र (सेर) नो हार, अने दिव्य वस्त्रो सहित सेचनक हाथी पण पोताना पुत्र हल्ल विहल्लने आप्यो. तेथी गुस्से थयेला कूणिके कांइक प्रपच करीने पोताना पिता श्रेणिकने काष्ठना पांजरामा नाख्यो. केटलेक दिवसे राजा परलोकमां गये सते कूणिक नवी चपा नामनी पुरी वसावीने तेमा काल, महाकाल विगेरे पोताना दश भाइओ सहित रह्यो. अन्यदा पोतानी राणी पद्मावतीना दररोजना आग्रहथी कूणिके हल्ल विहल्ल पासे हार विगेरे चारे वस्तुओ मागी तेथी बुद्धिमान एवा ते बन्ने भाइओ " आ मागणी अनर्थनु मूळ छे " एम विचारीने पोतानी सारभूत सर्व चीजो लइने रात्रिए छुपी रीते त्यांथी नीकळी पोताना मातामह चेटक राजा पासे विशाळा नगरीए जइने रह्या. कूणिकने तेनी खबर थतां तेणे दूत मोकलीने चेटक राजाने कहेवराव्युं के " हल्ल विहल्लने अमने पाछा सोंपो " तेना जवाबमा चेटक राजाए कह्यु के " शरणे आवेला दोहित्रोने हु शी रीते तमने सोंपु. ? " दूते आवीने कूणिक राजाने ते वात करी. एटले कूणिक अत्यत क्रोध पामीने त्रण करोड सुभटोना सैन्य सहित तथा पोतानी सरखा बळवान काळ महाकाळ विगेरे दशे भाइओ सहित चेटक राजा तरफ चाल्यो. चेटक राजा पण पोताना सामत अढार राजाओ सहित कूणिकनी सामे आव्यो. परस्पर युद्ध प्रवर्त्युं. पहेला दिवसना युद्धमाज चेटक राजाए देवताए आपेला अमोघ बाण वडे काळकुमारने यमराजना स्थानमा पहोंचाड्यो. एटले बन्ने लश्करो युद्धथी विराम पाम्या. ए प्रमाणे दश दिवसे कूणिकना दशे भाइओने चेटक राजाए मारी नाख्या. चेटक राजाने दररोज एक ज बाण मुकवानो नियम हतो. पोताना दशे भाइओने मरायेला जोइने शोकसागरमा निमग्न थयेला कूणिके चेटक राजाने दुर्जय मानी अट्ठम तप वडे सौधर्मेन्द्र अने चमरेन्द्रनु आराधन कर्यु. एटले ते बन्ने इन्द्रोए आवीने कूणिकने कह्यु के " चेटक राजा जैन धर्मी होवाथी अमारो साधर्मी छे, माटे तेने अमे मारी शकशु नहीं,

परंतु तारा देहनी रक्षा करशु." पछी चमरेन्द्रे तेने महा शिलाकंटक अने रथ मुशळ नामना बे संग्राम आप्या. अर्थात् ते बे प्रकारना युद्ध शिखव्यां. तेमांना पहेला संग्राममा शत्रुना सैन्यमा एक कांकरो नाख्यो होय, तो ते मोटी शिला जेवो थइने शत्रुनो नाश करतो अने एक कांकरो नाख्यो होय, तो ते शस्त्र रुप थइने नाश करतो. ते संग्राम करवा वडे कृणिके एक दिवसे चेडाराजाना चोराशी लाख सुभटो नो विनाश कर्यो. बीजे दिवसे छन्नु लाख योद्धानो विनाश कर्यो. तेथी त्रास पामीने त्रीजे दिवसे चेडाराजाए श्रावक धर्ममा दृढ, निरंतर छट्ठ तप करनार अने महा पराक्रमी एवा नाग सारथीना पौत्र वरुण नामना पोताना सेनापतिने कह्यु के "हे वीर! आजे तो तु युद्ध करवा सज्ज था" स्वामीनु वचन अंगीकार करीने वरुण सेनापति कृणिकना सैन्य साथे लडाइमा उतर्यो. भवितव्यताने योगे कृणिकना सेनापतिए वरुणने बाणवडे मर्म स्थानमा वींध्यो, एटले वरुणे पोतानो रथ बे त्रण पगला पाछो हठावीने तीव्र बाणवडे ते सेनापतिने हणी नांख्यो. पछी तरतज ते वरुण युद्धभूमिमांथी नीकळीने दूर जइ दर्भनो संथारो करी ते पर बेसीने आलोचना प्रतिक्रमण करी समाधि पूर्वक मरण पामीने अरुणाभ नामना विमानमा चार पल्योपमना आयुष्यवाळो देवता थयो. त्यांथी चवीने ते वरुणनो जीव महाविदेहमा उत्पन्न थइ मोक्ष पदने पामशे (वरुणनु सविस्तर चरित्र भगवती सूत्रथी जाणी लेवु)

वरुणना गया पछी चेटक राजाए कृणिकना पर बाण मूक्यु, परंतु कृणिक ना शरीर फरतु इन्द्रे वज्रनु कवच करेलु हतु, तेथी ते बाण तेने अथडाइने भूमि पर पड्यु. चेडाराजाने एकज बाण मुकवानी प्रतिज्ञा होवाथी तेणे बीजु बाण मूक्यु नहीं. बीजे दिवसे पाछु तेणे बाण मूक्यु, तो ते पण निष्फळ गयु. तेथी चेडा राजाए पोताना अमोघ बाणथी पण कृणिकने अजेय जाणीने पाछा वळी विशाला नगरीमा प्रवेश करी दरवाजा बंध कराव्या. एटले कृणिके ते नगरी फरतो घेरो घाल्यो

हवे रात्रीना समये हल्ल अने विहल्ल सेचनक हाथीपर आरुढ थइ नगर बहार नीकळी गुप्त रीते कृणिकना सैन्यमां प्रवेश करी तेना सैन्यने हणवा लाग्या ए प्रमाणे हमेशा पोताना सैन्यने घणु हणानु जोइने कृणिके पोताना सैन्य फरती

खाइ खोदावी तेमा गुप्त रीते खेरना अगारा नंखाव्या, ते वातनी हल्ल विहल्लने खबर नहोती, तेथी तेओ हमेशना नियम प्रमाणे सेचनकपर आरूढ थइने रात्रे कूणिकना सैन्य पासे आव्या. त्या खाइनी नजीक आवता हाथीए विभगज्ञानथी बळता अगारावाळी गुप्त खाइ जाणीने ' आ हल्ल विहल्ल विनाश न पामो ' एवा हेतुथी ते आगळ एक पगलु पण चाल्यो नहीं. एटले ते बन्ने भाइओ तेने अकुशवडे प्रहार करीने बोल्या के " हे दुष्ट हाथी ! आजे तु प्रतिकूळ वर्तणुक करे छे, ते तने योग्य नथी. " ते साभळीने ते बन्नेने पोतानी पीठपरथी भूमिपर उतारी दइने ते हाथी खाइमा पड्यो. तेनी अदर रहेली अग्निना तापथी बळी मरीने ते हस्ती पहेला स्वर्गमा देवता थयो. ए प्रमाणे हस्तीने मृत्यु पामेलो जोइने बन्ने भाइओ खेदयुक्त थइ विचार करवा लाग्या के " अहो ! आपणे आ पशुथी पण अधन्य छीये के जेथी एना जेटलु पण आपणे जाणी शक्या नहीं. एतो खेर, पण आपणे आ भयकर पापथी शी रीते छूटशु ? " ए रीते विचार करतां ते बन्नेने वैराग्य उत्पन्न थयो. तेथी तरतज शासनदेवीए तेमने उपाडीने श्रीवीरप्रभु पासे मूक्या. एटले ते बन्नेए भगवतनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे तपस्या करीने ते बन्ने भाइओ सर्वार्थसिद्ध विमानमां देवता थया.

अहीं कूणिक राजाए मनमा एवी प्रतिज्ञा करी के "जो हु मारा तीक्ष्ण बाणोवडे विशालानगरीने खोदी न नाखु, तो मारे अग्निमा प्रवेश करवो. "आवी कठण प्रतिज्ञा कर्या छता पण ते विशालानगरी जीती शक्यो नहीं, तेथी ते अति खेदयुक्त थयो.

—आ समये गुरुनी आज्ञानो भग करनार कूलवालक मुनि के जे नदीने कांठे आतापना लेतो हतो, तेनापर कोप पामेली शासनदेवी आकाशमां रहीने कूणिक प्रत्ये बोली के " जो मागधिका नामनी गणिका कूलवालक मुनिने चारित्र भ्रष्ट करीने लावे, तो तेनी सहायथी अशोकचंद्र (कूणिक) राजा विशालानगरीने जीती शके, ते विना ते नगरी जीती शकाशे नहीं. " ते साभळीने राजाए मागधिका गणिकाने बोलावीने सत्कार पूर्वक कूलवालकने भ्रष्ट करीने लाववानु कह्यु. ते वात अगीकार करीने कपटथी श्राविकानो वेष लइ मागधिका

नदी तीरे रहेला ते मुनि पासे गइ. मुनिने वंदना करीने ते बोली के "हे मुनि राज ! स्थाने स्थाने चैत्योने तथा मुनिओने वंदना करीने मारे भोजन करवानो नियम छे, आजे आपने अहीं रहेला जाणीने हुं वंदना करवा आवी छुं, माटे हे मुनिराज ! कृपा करीने निर्दोष भात पाणी ग्रहण करी मने कृतार्थ करो." एम कहीने तेणीए नेपाळाना चूर्णथी मिश्रित करेला सुंदर मोदक तेने वहोराव्या ते खावाथी तेने तरतज अतिसारनो व्याधि थयो. तेथी तेणीए बीजी नानी नानी गणिकाओ पासे तनी वैयावच्च करावी के जेथी ते मुनि थोडी मुदतमाज चारित्रथी भ्रष्ट थइ तेने आधीन थइ गया पछी तेने लइने ते गणिका कूणिक पासे आवी. कूणिके कुलवालकने कह्यु के "आ विशालानगरी जीती शकाय तेम करो" कूणिकनुं वचन अंगीकार करीने ते विशालानगरीमां गयो त्यां सर्वत्र भ्रमण करतां एक स्थाने तेणे मुनिसुव्रत स्वामीनो स्तूप जोइ विचार्युं के "आ स्तूपना प्रभावथी आ पुरीने कोट जीती शकातुं नथी. तेथी आनोज भंग करवा माटे प्रथम उपाय करवो जोइए " एम विचारीने गाममां फरवा लाग्यो तेने जोइने पौरलोकोए तेने पूछ्युं के " हे मुनि ! आ नगरीनो उपद्रव क्यारे दूर थशे ? " तेणे कह्युं के " आ स्तूपने तमे पाडी नाखशो, त्यारे तमारो उपद्रव दूर थशे " ते सांभळीने लोको ते स्तूपने पाडवा लाग्या एटले तेमने विश्वास उत्पन्न कराववा माटे ते दुष्ट साधुए कूणिकने कहीने तेनुं सैन्य बे कोश दूर हठाव्युं. ते जोइने पौरजनोने मुनिना वाक्यपर विश्वास आव्यो तेथी तेओए कूर्मशिला पर्यंत सर्व खोदी नाख्युं, अने कूणिके घेरो घाल्या पछी बार वर्षे लोकोए पुरना दरवाजा उघाड्या, केमके कूणिक तो कपटथी दूर गयेलो हतो

दरवाजा उघड्याना खबर सांभळी कूणिक राजाए आवीने नगरीपर छापो मारी नगरीनो भंग कर्यो, ते वखते पण महान युद्ध थयुं कूणिकने चेटक राजाना युद्ध जेवुं युद्ध आ अवसर्पिणीमां थयुं नथी आ लडाइमां एक दर एक करोड ने एंशी लाख सुभटो हणाया, तेमां दश हजार सुभटो मरीने एकज माछलीना उदरमां उत्पन्न थया, एक देवलोकमां गयो, एक उत्तम कुळमां उत्पन्न थयो, अने बीजा सर्वे नरक गतिमां तथा तिर्यंचगतिमां उत्पन्न थया.

पछी चेटक राजा नगरी बहार नीकळ्या, ते वखते कूणिके तेमने कह्युं के "हे पूज्य मातामह ! मने आज्ञा आपो. हुं आपनो पुत्र छुं. हुं शुं करुं ?" चेटके

जवाव आप्यो के "हे दौहित्र (दीकरीना पुत्र)! एक क्षणवार उभो रहे. हु हमणां आ वावमा स्नान करीने आवु छुं." एम कहीने चेटक राजा वावमां जइ लोढानी पुतळी कंठे बांधी समाधिमां तत्पर थइ वावमा पड्या. तेज वखते धरणेन्द्रे तेमने झीली लीधा, अने ते पोताना भुवनमा (पाताळमां) लइ गया. त्यां चेटक राजा अनशनवडे काळधर्म पामीने सहस्रार देवलोकमा इन्द्रना सामानिक देवता थया.

पछी चेटक राजानो दौहित्र सुज्येष्ठानो पुत्र सत्यकि विद्याधर हतो, ते त्या आवीने समग्र नगरीना लोकोने नीलवंत पर्वत उपर लइ गयो. पछी कूणिक राजा पण पोतानी प्रतिज्ञा पूर्ण करीने पोतानी राजधानीमां आव्यो.

कूलवालक पण देवगुरुनी आशातना करवाथी अने मागधिका गणिकाना सगथी अनेक पापकर्मो करीने दुर्गतिमां गयो.

"हे भव्य प्राणीओ! जो तमारे मोक्ष सुखनी इच्छा होय तो आ कूलवालक साधुनु अति दुरन्त चरित्र सांभळीने महा विषम विष समान गुरु महाराजनी आशातनानो त्याग करजो."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ प्रथम
स्तंभे चतुर्दश व्याख्यानम् ॥ १४ ॥

व्याख्यान १५ मुं.

चोथा त्रण शुद्धि नामना द्वार विषे.

मनोवाक्कायसंशुद्धिः, सम्यक्त्वशोधनी भवेत् ।
तत्रादौ मनसः शुद्धिः, सत्य जिनमतं मुनेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" मन, वचन अने कायानी जे शुद्धि, ते सम्यक्त्वने शोधन (शुद्ध) करनारी थाय छे तेमां प्रथम मननी शुद्धि करवी, एटले जिनमतने सत्य मानवो "

' जिनमत ' एटले जिनेश्वरे सर्वपेन समग्र पदार्थोना भावने प्रगट करनार द्वादशांगी रूप शास्त्र. तेने सत्य मानवु, अने बीजा सर्व लौकिक परतीर्थीना शास्त्रो—दर्शनो असार छे एम मानवु. तेनु नाम मनः शुद्धि कहेवाय छे.

मन शुद्धि उपर जयसेनानु दृष्टान्त.

उज्जयिनी नगरीमां संग्रामशूर नामे राजा राज्य करतो हतो. ते नगरीमां वृषभ नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो तेने जयसेना नामनी स्त्री हती. ते समकितवंत तथा पतिव्रता हती. ते मोटी उम्मरनी थइ तो पण तेने काइ संतान थयु नहीं. तेथी तेणीए एकदा पोताना पतिने कह्यु के—" हे स्वामिन्! संततिने माटे तमे फरी विवाह करो, केमके पुत्र विना आपणु कुळ शोभतु नथी. कह्यु छे के—

यत्र नो स्वजनसंगतिरुच्चै–र्यत्र नो लघुलघूनि शिशूनि।
यत्र नास्ति गुणगौरवचिन्ता हन्त तान्यपि गृहाण्यगृहाणि ॥१॥

भावार्थ—" जेने घेर स्वजनो एकठा थइने बेसता नथी अर्थात् स्वजनोनी संगति नथी, जे घरमां नाना नाना बाळको क्रीडा करता नथी अने जे घरमां गुणना गौरवपणानु चिंतवन थतु नथी, तेवा घरो घरनी गणत्रीमां नथी. "

ते सांभळीने श्रेष्ठी बोल्यो के—" हे प्रिया! तु कहेछे ते सत्य छे, परंतु मारा चित्तमां विषयसुखनी बिलकुल अभिलाषा नथी. " ते बोली—हे" स्वामी! विषय सुखने माटे न परणवु ते तो ठीक छे, पण संतानने माटे फरी परणवामां काइ खोटु नथी " ते सांभळीने श्रेष्ठी काइ बोल्यो नहीं, मौन रह्यो. तेथी जयसेनाए जाते तपास करीने कोइ श्रेष्ठीनी गुणसुंदरी नामनी कन्यानु मागु करी तेनी साथे पोताना पतिने परणाव्यो पछी धीरे धीरे जयसेना घरनो सर्व कार्यभार गुणसुंदरीने सोंपीने धर्मआराधनमां तत्पर थइ केटलेक काळे गुणसुंदरीने एक पुत्र थयो.

करी अर्थात् तेमां प्रवेश कराव्यो. पछी ते वेताली बोली—"हे योगी! जे काम होय ते कहे." योगी बोल्यो—"हे महाविद्या! जयसेनाने मारी नांख." ते सांभळीने ते विद्या योगीनुं वचन अंगीकार करी जयसेना पासे गइ, पण त्यां तो सम्यक् प्रकारे निश्चळ चित्ते कायोत्सर्गमां स्थित थयेली जयसेनाने तेणे जोइ एटले ते वेताळी धर्मना महिमाथी द्वेष रहित थइने जयसेनाने प्रदक्षिणा करी पाछी वळी स्मशानमां गइ. तेने विकराळ स्वरूपे आवती जोइने ते योगी त्यांथी नाशी गयो. बीजे दिवसे पण तेज रीते योगीए फरीथी वेताली विद्याने मोकली. ते वखते पण ते विद्या जयसेनाने कांइ पण करी शकी नहीं, अने अट्टहास्य करती पाछी आवी. एम त्रण वार मोकली, ने त्रण वार ते पाछी आवी. चोथी वार पोतानाज मरणना भयथी योगीए कह्युं के—"हे देवी! बेमां जे दुष्ट होय, तेने जल्दी मारीने आव." ते सांभळीने देवी जयसेना पासे गइ, पण तेने देव गुरुनी भक्तिमां तत्पर जोइने त्यांथी पाछी वळी. तेवामां घर बहार कायचिंता माटे नीकळेली प्रमादी गुणसुंदरीने तेणे दीठी. एटले तेनेज खड्गवडे मारीने देवी स्मशानमां आवी, योगीनी रजा लइ स्वस्थाने गइ. थोडीवार पछी जयसेना कायोत्सर्ग पारीने बहार नीकळी, त्यां गुणसुंदरीने मरेली जोइने ते विचारमां पडी के—"अहो! पूर्वना कोइ अशुभ कर्मना उदयथी मारे माथे आ कलंक आवशे." एम विचारीने ते उपद्रवनी शांति माटे तेणे फरीथी कायोत्सर्ग कर्यो. प्रातःकाळे गुणसुंदरीनी मा वसुश्री रात्रीमां शुं थयुं, तेनी खबर लेवा उत्सुक थइ सती गुणसुंदरीने घेर आवी त्यां गुणसुंदरीनेज मरेली जोइने तेणीए पोकार करी राजाने जाहेर कर्युं के—"हे राजा! मारी पुत्रीने तेनी शोक्य जयसेनाए शोक्यपणाना द्वेषथी मारी नाखी छे" ते सांभळीने राजाए क्रोध पामीने जयसेनाने पोतानी पासे बोलावीने पूछ्युं. जयसेना कांइ पण बोली नहीं, तेवामां शासनदेवीनी प्रेरणाथी पेलो योगीज नगरमां भमतो भमतो अकस्मात् राजसभामां आव्यो. अने पोतानुं भयंकर रूप प्रगट करी बोल्यो के "निर्दोष जयसेनाने मूकीने दुष्ट गुणसुंदरीने में महाविद्या पासे हणावी छे" एम कहीने ते संबंधी सर्व वृत्तांत राजाने कही बताव्युं ते वखते शासनदेवताए पण जयसेना उपर पुष्पवृष्टि करी राजाए "वसुश्रीज दुष्ट छे" एम निश्चय थवाथी तेने गाम बहार काढी मूकी.

पछी राजाए जयसेनाने पूछ्युं के—"हे गुणीयल बेन! जगतमां कयो धर्म

श्रेष्ठ छे ? ते तुं कहे. " जयसेना बोली के—" स्याद्वादथी युक्त एवा जैनधर्म विना बीजा सर्व धर्मो एकांतवादी अने घणा दोष युक्त होवाथी आराधवा योग्य नथी. " फरी राजाए पूछ्यु के— " हे शीलवती ! गंगा, प्रयाग विगेरे तीर्थोमा कयु तीर्थ संसारतारक छे ? " जयसेना बोली—" हे राजा ! लोकमा अमसठ तीर्थो कहेवाय छे, पण ते सर्वे आत्मधर्मने पुष्टि आपनारा नथी. तीर्थ तो मात्र एक सिध्धाचळज छे. केमके ते गिरि पर कार्तिक शुदि पूर्णिमाए श्री रूषभदेवना पुत्रो द्राविम अने वालिखील्ल मुनि दश करोम साधुओ सहित मुक्ति पाम्या छे. फागण शुदि दशमने दिवसे नमि अने विनमि नामना मुनि बे करोम साधुओ सहित सिध्धि पदने पाम्या छे फागण शुदि आठमने दिवसे श्री ऋषभदेव स्वामी नवाणु पूर्व वखत ते गिरिपर आव्या छे. श्रीशांतिनाथ स्वामीए तेनापर चातुर्मास कर्यु हतु. ते वखते मुनि वेषे तथा श्रावक वेषे मळीने सतर करोम मनुष्यो सिध्धि पाम्या हतां, बीजा तीर्थंकर श्री अजितनाथ स्वामीना हाथथी दीक्षित थयेला पंचाणु हजार साधुओ ते पर्वतपर चातुर्मास रह्या हता. तेमांथी कार्तिक शुदि पूर्णिमाने दिवसे दश हजार साधुओ केवळ ज्ञान पामी मोक्षे गया हता. आसो शुदि पूर्णिमाए पांच पामवो वीश करोम साधुओ सहित सिध्ध थया हता. फागण शुदि तेरसने दिवसे शांब अने प्रद्युम्न कुमार साडा त्रण करोम साधुओ सहित मुक्ति पदने पाम्या छे. श्रीकालस मुनि एकहजार साधुओ सहित, श्रीसुभद्रा मुनि सातसो मुनिओ सहित, श्रीरामचंद्र पाच करोम मुनि सहित, श्रीरामना भाइ भरत त्रण करोम मुनि सहित तथा श्रीवसुदेवनी बोंतेर हजार स्त्रीओमाथी पात्रीश हजार स्त्रीओ तेज सिध्धगिरिपर सिध्धि पदने पामी छे, बीजी साडत्रीश हजार स्त्रीओ बीजे स्थाने सिध्धि पदने पामी छे. तथा देवकी अने रोहिणी नामनी वसुदेवनी स्त्रीओ तो आगामी काळे तीर्थंकर थवानी छे. सुकोशल मुनि वाघणना करेला उपसर्गथी काळधर्म पामीने मगुलगिरि (सिध्धाचळनी एक टुंक) पर सिध्ध थया छे. इत्यादि अनत साधुओ ते गिरिपर सिध्धिपद पाम्या छे, अने पामशे.

चैत्र शुदि पूर्णिमाने दिवसे ते गिरिपर श्रीपुमरीक गणधर पांच करोम मुनिओ सहित सिद्ध थया छे. माटे हे राजा ! एकवार श्री शत्रुजयने जोवाथी (यात्रा करवाथी) सर्व तीर्थोनी यात्रानु फळ प्राप्त थाय छे. " आ प्रमाणे सा-

भळीने राजा विगेरे सर्व लोकोए श्री जैनधर्मनो तथा श्री सिध्धाचळ तीर्थनो स्वीकार कर्यो—तेनेज मानवा लाग्या.

पछी राजाए जयसेनाने मोटा उत्सव पूर्वक तेने घेर मोकली. केट लेक काळे जयसेनाए प्रव्रज्या ग्रहण करी, अनुक्रमे तपस्या करीने सिद्धि पदने पामी.

" स्याद्वाद धर्मना विचारमांज चित्त राखनारी तथा मिथ्यादर्शनपर किंचित् पण राग नहीं राखनारी जयसेना मननी शुद्धिथी अनुक्रमे अनंत सुखवालु मोक्षपद पामी. तेज प्रमाणे हे भव्य प्राणीओ ! तमे पण मनःशुध्धिने दृढ करो जेथी तमने पण कल्याण परंपरा प्राप्त थाय. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादग्रंथस्यवृत्तौ प्रथम स्थंभे पंचदश व्याख्यानम् ॥ १५ ॥

॥ प्रथमः स्तंभ समाप्तः ॥

श्री उपदेश प्रासाद.

स्तंभ बीजो.

व्याख्यान १६ मुं.

मन.शुद्धि विषे (जारी)

मनःशुद्धिमबिभ्राणा, ये तपस्यन्ति मुक्तये ।
हित्वा नावं भुजाभ्यां ते, तितीर्षन्ति महार्णवम् ॥ १ ॥
तदवश्यं मनःशुद्धिः , कर्तव्या सिद्धिमिच्छता ।
बह्वारम्भेऽपि शुद्धेन, मनसा मोक्षमाप्नुते ॥ २ ॥

भावार्थ—" मनशुद्धि राख्या शिवाय जे मनुष्यो मुक्तिने माटे तपस्या करे छे तेओ वहाणनो त्याग करीने बे हाथवडे महा समुद्रने तरवा इच्छे छे, अर्थात् समुद्र तरवामा वहाणनीज जरूर छे ते स्थाने अहीं मनशुद्धि छे. तेथी मोक्षनी इच्छावाळा मनुष्ये अवश्य मनशुद्धि करवी. केमके बहु आरंभी छता पण जो मननी शुद्धि राखी होय तो ते मोक्षने पामे छे."

आ प्रसग उपर आनद श्रावकनो अधिकार छे ते नीचे प्रमाणे—

आनंद श्रावकनु दृष्टान्त

राजगृही नगरीमा आनंद नामे एक कुटुंबी रहेतो हतो ते एकदा गुणशील नामना चैत्यमां श्रीवीरप्रभुनु पधारवु साजळीने पोताना स्वजनो सहित पगे चालतो केवळीना पण ईश एवा जगत्प्रभुनी पासे गयो. प्रभुने वदना कातकरीने अने मतनु स्थापन करनारी वाणी साजळवाथी ते प्रतिबोध पाम्यो तेथी तेणे समकित सहित देशविरति ग्रहण करी. तेमा प्रथम द्विविध त्रिविधे करीने स्थूल जीवहिंसादिक पाच अणुव्रत ग्रहण कर्या. तेमा चोथा व्रतमा पोतानी स्त्री शिवायनी

अन्य सर्व स्त्रीओनो त्याग कर्यो. पांचमा व्रतमां पोतानी इच्छानुसार
(परिग्रहनुं) प्रमाण कर्युं के—रोकड धनमां चार क्रोड सोनामहोरो निधान
चार क्रोड व्याजे फेरववामां अने चार क्रोड वेपारमां राखवी, तेथी
राखवुं नहीं. दश हजार गायोनुं एक गोकुळ कहेवाय छे, एवा चार गोकुळ
हजार गाडां, खेतीने माटे पांचसो हळ अने रमवा माटे चार वाहन राख्यां,
वधारेनो त्याग कर्यो. छठा दिग्व्रतनुं वर्णन आगळ व्रतना अधिकारमां
सातमा व्रतमां अनंतकाय, अभक्ष्य अने पन्नर कर्मादाननो त्याग कर्यो. दा
जेठीमधना काष्ठ शिवाय बीजानो त्याग कर्यो. मर्दन माटे शतपाक अने सहस्र
पाक तेल विना बीजा तेलनो त्याग कर्यो. उद्वर्तन (पीठी)ने माटे घउं
उपलेपना पिष्ट शिवाय बीजानो त्याग कर्यो. स्नानने माटे उष्ण जळना आठ
माटीना घडाथी वधारे जळनो त्याग कर्यो. पहेरवामां उपरनुं अने नीचेनुं ए
बे वस्त्रो शिवाय बीजानो त्याग कर्यो. विलेपनमां चंदन, अगरु, कपूर अने कुं
विगेरे शिवाय बीजानो त्याग कर्यो. पुष्पोमां पुंडरीक कमळ तथा मालतीनां पु
शिवाय बीजानो त्याग कर्यो. अलंकारमां नामांकित मुद्रिका (वींटी) त
कानना बे कुंडलो शिवाय बाकीनो त्याग कर्यो. धूपमां अगरु अने तुरुष्क (लोबा
शिवाय बीजानो त्याग कर्यो. पेय (पीवा लायक) आहारमां मग चणा वि
तळीने करेल अथवा घीमां तळेला चोखाथी बनावेलामां आवेल प्रवाही पद
शिवाय बीजानो त्याग कर्यो. पक्वान्नमां घेबर अने स्वादनां खाजां, भातमां कम
शाळीना चोखा, विदळमां मग अडद अने चणा, घीमां शरदऋतुमां थ
गायनुं घी, शाकमां मीठी डोडी ने पलवल, मधुर पदार्थमां पल्यंक, अन्नमां व
फळमां क्षीरामलक (मीठां आमळां), जळमां आकाशथी पडेलुं पाण
मुखवासमां जायफळ, लविंग, एलायची कक्कोल अने कपूर ए पांच वस्
मिश्रित तंबोळ–एटली चीजो वापरवी, ते शिवाय बीजानो त्याग कर्यो.

आ प्रमाणे तेणे जिनेश्वर पासे बारे व्रत ग्रहण कर्यां. (बाकीना व्र
स्वरूप आगळ कहेवामां आवशे). पछी नवतत्त्वनुं स्वरूप जाणीने ते आनंद श्र
के पोताने घेर आवी पोतानी शिवानंदा नामनी स्त्रीने कह्युं के " हे प्रिया
आजे जैन धर्म अंगीकार कर्यो छे, तुं पण प्रभु पासे जइने ते उत्तम धर्मनो
कार कर. " ते सांभळीने शिवानंदा तरत ज पोतानी सखीओ सहित प्रभु

गाड. जिनेन्द्रने वंदना करी देशना श्रवण करीने तेणे पण श्रद्धा पूर्वक श्रावक धर्म अंगीकार कर्यो.

आ प्रमाणे देशविरति धर्म पाळवामा तत्पर एवा ते दंपतीए चौद वर्ष व्यतीत कर्या. एकदा मध्य रात्रिए जागृत थयेल आनंद श्रावक धर्मचिंतवन करवा लाग्यो के " अहो मारु आयुष्य रागद्वेषमा-प्रमादमा घणु व्यतित थइ गयु. कह्यु छे के—

लोकः पृच्छति मे वार्ता, शरीरे कुशलं तव ।
कुतः कुशलमस्माकमायुर्याति दिने दिने ॥ १ ॥

" लोक मने वात पूछे छे के तमारं शरीर कुशळ छे ? परंतु शरीर ते कुशळ क्याथी होय ? केमके दिवसे दिवसे आयुष्य तो घटे छे. "

माटे हवे हु प्रमाद दूर करीने श्रावकनी प्रतिमानो अंगीकार करी यथाशक्ति तेनु पालन करु. " एम विचारीने प्रातःकाळे पोताना कुटुंबने तथा ज्ञातिवर्गने बोलावी तेमने भोजन वस्त्रादिवडे संतोष पमाडीने मोटा पुत्रने भार सोंपी पोते प्रतिमानु वहन करवा तत्पर थयो.

प्रथम छ आगार रहित तथा शंका कांक्षादि पाच अतिचार रहित सम्यक्त्व नामनी पहेली प्रतिमा एक मास सुधी धारण करी. पछी पूर्वनी (प्रथम पडिमानी) क्रिया सहित बार व्रतना पालन रूप बीजी प्रतिमा बे मास सुधी धारण करी. पछी पूर्वनी क्रिया सहित सामायिक नामनी त्रीजी प्रतिमा त्रण मास सुधी वहन करी. पछी पूर्वनी क्रिया सहित चार मास सुधी चार पर्वणीए[1] पौषध करवा रूप पौषध नामनी चोथी प्रतिमानु वहन कर्यु. पछी पाच मास सुधी ते चारे पर्वणीना पोषधमां रात्रिना चारे प्रहर कायोत्सर्गे रही कायोत्सर्ग नामनी पाचमी प्रतिमा वहन करी. पछी छ मास सुधी अतिचार दोष रहित ब्रह्मचर्यनु पालन करवा रूप छठी प्रतिमा वहन करी. पछी सात मास सुधी सातमी सचित्तनु वर्जन करवा रूप प्रतिमा धारण करी. पछी आठ मास सुधी पोते समग्र आरंभ न करवा रूप आठमी आरंभत्याग नामनी प्रतिमा धारण करी. पछी

[1] अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा ने अमावास्या —आ चार पर्वणी तेमा अष्टमी चतुर्दशी बे बे होवाथी कुल दिवस ६ गणवा

सेवकद्वारा पण काइ आरंज न कराववा रूप नवमी प्रतिमा नव मास सुधी करी पछी पोताने निमित्ते करेलु जोजन न करवा रूप दशमी प्रतिमा दश सुधी वहन करी. पछी छेल्ली अगियारमी प्रतिमा वहन करी तेनु स्वरूप

खुरमुंमो लोएण वा, रयहरणं उवग्गहं च घेत्तूण ।
समणब्नूये विहरइ, धम्मं काएण फासंतो ॥ १ ॥

" अस्त्रायी मुमन करावीने अथवा लोच करीने रजोहरण तथा दिक ग्रहण करी कायावमे धर्मनु पालन करतो मनो साधुनी जेम विचरे, कुटुंबमां 'प्रतिमाप्रपन्नस्य श्रावकस्य जिक्षा देहि' एम बोली जिक्षा मागे."

ए रीते अगियारमी प्रतिमा अगियार मास सुधी वहन करी. अ अगियारे प्रतिमामा पाउली पाउली प्रतिमाओ जेळी करवानीज समजवी अ ने सर्व अतिचार पण लगाड्या विना पाळवानी समजवी. अगियारे प्रतिमा वह करता पाच वर्ष अने पाच मास[१] व्यतीत थया ते प्रमाणे करता आनंद श्रावकनु बाह्यथी शरीर अने अतरथी मन अति कृश थया. ते जोइने तेणे श शरण पूर्वक अनशन ग्रहण कर्यु ते अवसरे तेनी मनशुध्धि विशेष थवाथ तेने अवधिज्ञान उत्पन्न थयु

तेवा समयमा ते गामनी बहार उद्यानमा श्री वीरस्वामी समवसर्या. श्री वीरप्रभुने वदना करी तेमनी आज्ञा लइने गौतम गणधर गोचरी माटे गाममां आव्या. त्याथी निर्दोष आहार लइने पाछा वळतां घणा लोकोना मुखथी आनंद श्रावकना अनशननु वृत्तात साभळीने गौतम स्वामी तेने शाता पूछवा गया. पोता नी पासे गणधर महाराजाने आवेला जोइने जक्तिजावथी आनद श्रावके तेमना चरणकमळमा प्रणाम करीने पूछ्यु के" हे पूज्य ! श्रावकने पण अवधि ज्ञान थाय खरु ?" गौतम स्वामी बोल्या के " उचाथ श्रावकने थाय " ते साजळीने आनंद बोल्यो के " हे जगवान ! मने तेवु ज्ञान थयु छे. तेथी हु उचे सौधर्म देवलो सुधी, नीचे लोलुक नरकावासा सुधी, तिरछु लवण समुद्रने विषे त्रण दिशा (पूर्व पश्चिम ने दक्षिण दिशामा) पाचसो योजन अने उत्तर दिशामां क्षुद्र हि मावळ सुधी सर्व वस्तुओ जोउ छु " ते साजळीने गणधर बोल्या के " ए

१ अगियार प्रतिमाना काळनो सरवाळो गणता पाच वर्षने छ मास थायछे.

ायु अवधिज्ञान गृहस्थीने संभवतु नथी, माटे तु मिथ्या दुष्कृत आप." आनंदे कह्यु के "हे जगवान्! असत्य बोलवानो मिथ्या दुष्कृत अपाय छे, माटे आपे आपतो जोइए." ते सांजळीने गौतम गणधर शंका पाम्या. एटले तेमणे प्रजु पासे जइने तेनुं स्वरूप पूछ्युं. प्रजुए तेज प्रमाणे कह्यु. एटले गौतम गणधरे आनंद पासे आवीने मिथ्या दुष्कृत आप्युं.

पछी आयुष्य पूर्ण थये आनंद श्रावक पंच नमस्कारनुं स्मरण करतो मृत्यु पामीने सौधर्म कल्पमा अरुणाज नामना विमानमां चार पल्योपमना आयुष्यवाळो देव थयो. त्याथी चवीने महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थइ मोक्षपदने पामशे.

आ चरित्र उपासक दशांग सूत्रमा तथा आनंद सुंदर (वर्धमान देशना) मां सविस्तर कहेलु छे, त्याथी जाणी लेवुं.

"हे श्रावको! आ आनंद श्रावकनु चरित्र श्रवण करीने आनंदमां तत्पर थइ मनशुद्धि करवामा निरंतर आदरवाळा थाओ."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वितीयस्तंभे षोडश व्याख्यानम् ॥ १६ ॥

व्याख्यान १७ मुं.



वचन शुद्धि विषे.

जीवाजीवादितत्त्वानां, प्ररूपकं सदागमम् ।
तद्विपरीत वदेन्नाथ, सा शुद्धिर्मध्यगा जवेत् ॥ १ ॥

जावार्थ—"जीव अजीव विगेरे तत्त्वोनी प्ररूपणा करनार आगममां तेनु जे स्वरूप कहेलु होय ते प्रमाणेज कहेवुं, तेथी विपरीत कहेवु नहीं, तेनु नाम

वचनशुद्धि कहेवाय छे. "

सद्दानेन गृहारम्भो, विवेकेन गुणव्रजः ।
दर्शनं मोक्षसौख्यांग, वचःशुद्ध्यैव लक्ष्यते ॥ २ ॥

भावार्थ—" गृहस्थाश्रम रुडा दानवडे ओळखाय छे, गुणनो विवेकवडे ओळखाय छे, अने मोक्षसुखना अंगभूत दर्शन (समकित) वचनशुद्धिथीज ओळखाय छे, अर्थात् दान, विवेक अने वचनशुद्धिवडेज गृहस्थपणु, गुणसमूह अने समकित होवानी खात्री थइ शके छे "

आ प्रसंग उपर संप्रदायागत कालिकसूरिनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

कालिकाचार्यनु दृष्टान्त

" दत्त राजाना मामा कालिकसूरिनी पेठे महा पुरुषो संकटमां पण असत्य बोलता नथी चंदननी सुगंध तेने पथ्थरपर घसवाथीज जणाय छे अने शेलडीनो (शेरडीनो) अति मधुर रस तेने पीलवाथीज नीकळे छे. "

तुरमणि नामनी पुरीमां कालिक नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो तेने भद्रा नामनी बहेन हती. तेने दत्त नामे पुत्र हतो कालिक द्विजे केटलेक काळे गुरु पासे धर्मोपदेशनु श्रवण करी वैराग्यथी चारित्र ग्रहण कर्यु तेथी कोइना अंकुश विना दत्त अति उद्धत थइ गयो, साते व्यसनमां आसक्त थयो. केटलेक काळे ते दत्त त्यांना जितशत्रु राजानो सेवक बन्यो. सेवा करतां राजा तेनापर प्रसन्न थयो, तेथी तेने अनुक्रमे प्रधान बनाव्यो पछी धीरे धीरे सर्व राजवर्गने पोतानो करीने राजाने पदभ्रष्ट करी दत्त पोते राजा थयो. ते परलोकथी जय पाम्या विनाज आश्रवना कार्योमां द्रव्यनो व्यय करवा लाग्यो मोटा मोटा यज्ञो करी घणा जीवोनी हिंसा करवा लाग्यो, अने तेमां हणाता पशुओने जोइने ते अति हर्ष पामवा लाग्यो

अहीं कालिक मुनि बहुश्रुत थवाथी गुरुए तेने सूरिपद आप्युं. अन्यदा विहार करता करता कालिकाचार्य तुरमणि पुरीना उद्यानमां आव्या. तेमनु आगमन जाणीने दुष्ट दत्त राजा पोतानी माताना आग्रहथी तेमने वांदवा गयो. मामाने वंदना करीने दत्त तेमनी सन्मुख बेठो. पछी तेणे सूरिने प्रश्न कर्यो के "हे

मा ! यज्ञ करवाथी शुं फळ प्राप्त थाय ?" तेना उत्तरमा गुरुए जीवदया रूप धर्मनो उपदेश कर्यो. त्यारे फरीथी दत्त बोल्यो के " हे पूज्य ! हुं धर्म विषे प्रश्न करतो नथी, हुं तो यज्ञनुं फळ पूछुं छुं. " आ प्रमाणे दत्ते वारंवार पूछवाथी गुरु बोल्या के " हे दत्त ! तुं जाणतो नथी के यज्ञनु फळ नरकगमनज छे, अने तेथी तारी पण नरकेज गति थवानी छे. केमके लौकिक शास्त्रमा पण कहेलुं छे के—

अस्थिन वसति रुद्रश्च, मांसे चास्ति जनार्दनः ।
शुक्रे वसति ब्रह्मा च, तस्मान्मांसं न भक्षयेत् ॥ १ ॥
तिलसर्षपमात्रं तु, मासं यो भक्षयेन्नर. ।
स नरो वर्तते नरके, यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ २ ॥

भावार्थ—" प्राणीओना हाडकामा महादेव वसे छे, मांसमा जनार्दन (विष्णु) वसे छे, अने वीर्यमा ब्रह्मा वसे छे, माटे मांसनुं भक्षण करवु नहीं. जे मनुष्य तल अने सर्षवना दाणा जेटलुं पण मांस खाय छे ते मनुष्य ज्यांसुधी आकाशमा सूर्य चन्द्रनी हयाती छे त्यांसुधी नरकमा रहे छे. "

वळी हे दत्त राजा ! तु आजथी सातमे दिवसे कुंभिपाकनी वेदना भोगवीने नरके जइश. " ते सांभळीने क्रोध पामेला दत्ते पूछ्युं के " तेनी खात्री शी ?" सूरि बोल्या—" तारा मृत्युना समय पहेलां तारा मुखने विषे मनुष्यनी विष्टा पेसशे. " दत्ते क्रोधथी पूछ्युं—" हे मामा ! त्यारे तमारी शी गति थशे ?" गुरु बोल्या—" हुं स्वर्गे जइश. " ते सांभळीने दत्त राजा खड्गथी गुरुने हणवा इच्छतो सतो विचारवा लाग्यो के " जो हुं सात दिवसथी वधारे जीवीश तो पछी जरुर आने मारी नाखीश. " एम विचारीने सूरिने सात दिवस सुधी नहीं जवा देवा माटे सखत चोकीपहेरामा राखीने पोते पोताना महेलमा जइने भरायो. पछी तेणे सूरिनुं वचन अन्यथा करवा माटे एक करोड सुभटोने पोतानी फरता राख्या, अने राजमहेल तथा राजमार्गने अत्यंत साफ करावीने कोइ पण जग्याए किंचित् पण अशुचि न रहे तेवो पाको बंदोबस्त कर्यो. तेवी रीते तेणे छ दिवस महेलमांज रहीने निर्गमन कर्या. सातमे दिवसे तेने भ्रांति थवाथी तेणे सात दिवस

पूरा थइ गया एम धार्युं तेथी आज आठमो दिवस छे एम धारी अश्व पर आरूढ थइने हर्ष पूर्वक ते राजमार्गमा नीकळ्यो. ते समये एक माळी पुष्पनो करंडीयो लइने राजमार्गे जतो हतो तेने भेरी विगेरेना शब्द साजळवाथी अकस्मात् झाडानी अत्यंत बाधा थइ आवी. लोको घणा होवाथी बीजे जइ शक्यो नहीं. तेथी राजमार्गमाज तेणे युक्ति पूर्वक मळोत्सर्ग करी लीधो, अने तेना पर पुष्पोनो ढगलो करीने ते आगळ चाल्यो गयो, तेवामा दत्त राजा त्याथी नीकळ्या तेना घोडानो पग पेला पुष्पना ढगला पर पड्यो. एटले तेमाथी विष्टा उछळीने तेनो छांटो राजाना मुखमा पेठो. तेथी आचार्यना कहेला वचन पर विश्वास आववाथी राजाए पोताना सेवकोने पूछ्युं के "आजे केटलामो दिवस थयो ?" त्यारे तेओए कह्यु के "आज सातमो दिवस थयो." ते साजळीने राजा कखवाणो थइ पाछो फर्यो.

दत्त राजा ज्यारे सूरिपर क्रोध करीने राजमहेलमा आवी छ दिवस एकातमां रह्यो हतो ते अवसरे सर्व राजवर्ग दत्तथी विरुध्ध थइने जितशत्रु राजाने राज्य गादी पर बेसारवानी युक्ति शोधता हता तेथी सातमे दिवसे दत्त बहार नीकळ्यो के तरतज तेओए जितशत्रु राजाने बंधनथी मुक्त करीने महेलमा दाखल कर्यो. पछी दत्त ज्यारे मुखमा विष्टा पेसवाथी पाछो फरी राजमहेल पासे आव्यो त्यारे ते राजवर्गे दत्तने एकाएक बाधी लइने जितशत्रुने स्वाधीन कर्यो. तेने जोइने हर्ष पामेला जितशत्रु राजाए तेने कुंभीपाकमा नाखीने पकाव्यो. तेनी महा पीडानो अनुभव करतो दत्त मृत्यु पामीने नरकनो अतिथि थयो. कालिकसूरि आयुष्यनो क्षय थये काळधर्म पामीने स्वर्गना अलंकारभूत थया.

" आ कालिकाचार्यनु दृष्टांत साजळीने सर्व प्राणीओए मृत्युना भयने पण दूर तजी दइने सत्य वचनज बोलवुं. केमके वचनशुध्धिथी आ लोकमा राजादिकथी सन्मान मळे छे, अने परलोकमा स्वर्गना सुख मळे छे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वितीयस्तंभस्य सप्तदशं व्याख्यानम्

प्रधान स्थान रूप आ विशुद्ध समकित छे एम जाणवु."

इत्यादि धर्मोपदेश सांभळीने वज्रकर्ण राजा प्रतिबोध पाम्यो. तेथी तेणे गुरु पासे समकित मूळ बार व्रत अंगीकार कर्या. तेमां विशेषे करीने जिनेश्वर तथा मुनिराज सिवाय बीजा कोइने न नमवानो नियम ग्रहण कर्यो. पछी ते पोताना नगरमां गयो. घेर आव्या पछी तेने विचार थयो के—" हुं अवन्ति नगरीना सिंहरथ राजानो सेवक छु, तेथी तेने मारे अवश्य प्रणाम करवा पडशे ने तेम करवाथी मारा नियमनो भंग थशे." एम विचारीने तेणे पोताना हाथनी एक अंगुठी करावी, तेमां मुनिसुव्रत स्वामीनी सूक्ष्म प्रतिमा करावी. पछी ज्यारे सिंहरथ पासे जाय त्यारे ते अंगुठीने सन्मुख राखीने प्रणाम करवा लाग्यो, एटले ते मन वडे जिनेश्वरनेज प्रणाम करतो हतो, अने बहारथी (देखावमां) सिंहरथ राजाने प्रणाम करतो देखातो हतो.

एकदा कोइ खळ पुरुषे ते वृत्तांत सिंहरथ राजाने निवेदन कर्यो. ते सांभळीने राजाए विचार्यु के—" अहो ! वज्रकर्ण केवो कृतघ्नी छे ? के ते मारु राज्य भोगवे छे, छतां मने प्रणाम मात्र पण करतो नथी. तेथी ते दुष्टनो दम करवो, एज न्याय छे." एम विचारीने तेणे संग्रामने माटे रणभंभा वगडावी.

आ समये कोइ पुरुषे वज्रकर्ण पासे जइ कह्यु के "हे साधर्मी वज्रकर्ण राजा ! तमने जेम रुचे तेम करो. सिंहरथ राजा तमारापर चडी आवे छे." वज्रकर्णे पूछ्यु के " तु कोण छे ? अने क्यां रहे छे ? " ते बोल्यो " हे देव ! हु कुन्दिनपुरनो रहीश वृश्चिक नामनो श्रावक छु. एकदा हु घणा करीयाणां लइने उज्जयिनी[1] नगरीमां गयो हतो त्यां एक दिवस वसन्तोत्सवमां अनंगलता नामनी गणिकाने जोइने हु तेनापर मोहित थयो, तेथी तेणीने में मारु सर्व धन आपी दीधु, अने तेणीनी साथे हु विषयसुख भोगववा लाग्यो. एकदा ते गणिकाए सिंहरथराजानी राणीना आभूषणो जोइने पोताना आभूषणोनी निंदा करी रोता रोता मने कह्यु के " जो तु खरो मारो प्रियतम हो, तो राणीना आभूषणो मने लावी आप " ते सांभळीने तेणीनु वचन अंगीकार करी हु रात्रीने समये चोरी करवा माटे राजमहेलमां दाखल थयो. ते वखते राजा तथा राणी वातो करतां हता. तेमां राणीए राजाने पूछ्यु के "हे स्वामी ! आजे तमारा मुखपर चिंता होय एमज-

---

[1] अवन्ति अने उज्जयनी बन्ने एकार्थक छे

त्यारे लक्ष्मण एक उंचा वृक्षपर चढीने चोतरफ जोवा लाग्यो. तेवामां एक
तेना जोवामां आव्यो. ते पुरुषने बोलावता तेणे आवीने लक्ष्मणने प्रणाम
पछी ते पुरुषने लइने लक्ष्मण मोटा भाइ पासे गया. रामे ते पुरुषने ते प्रकार
छयु, त्यारे ते बोल्यो के " हे स्वामी ! सांभळो

दशपुर नामना नगरमां वज्रकर्ण नामे महा पराक्रमी राजा छे. ते
गुण संपन्न छतां चकनी जेम मृगया (शिकार)ना व्यसनथी दूषित
हतो. एकदा ते केटलाक लुब्धको (पारधीओ)ने लइने वनमां गयो.
त्यां तेणे एक सगर्भा हरिणीने शरवडे वींधी. तेथी तेणीना ..
गर्भ नीकळीने पृथ्वीपर पड्या ते गर्भने धरोळीनी कापेली पुछडीनी जेम
जोइने ते वज्रकर्णना हृदयमां दया आवी तेथी ते पोताना आत्मानी निंदा
लाग्यो के " अहो ! में नरके जवा योग्य पाप उपार्जन कर्युं " इत्यादि ..
आत्माने निंदता ते राजा निर्दयपणानो त्याग करीने वनमां आमतेम भ्रमण
रतो हतो, तेवामां तेणे एक शिलातलपर बेठेला शांत अने दांत एवा कोइ मुनिने
ठा. तेमने प्रणाम करीने राजाए पूछ्युं के " हे महात्मा ! आ अरण्यमां रहा
तमे शुं करो छो ? " मुनिए जवाब आप्यो के " हुं आत्महित करुं छुं. "
सांभळीने राजाए कह्युं के " हे स्वामी ! मने पण आत्महित थाय, तेवो रस्त
बतावो. " त्यारे मुनि बोल्या के " हे राजा ! सम्यग्दर्शन पूर्वक हिंसादि
त्याग करवो, तेज आत्महित छे तेमां सम्यक्त्वनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे—

देवो जिणंदो गयरागदोसो, गुरु वि चारित्तरहस्स कोसो ।
जीवाइ तत्ताण य सद्दहाणं, सम्मत्तमेवं भणियं पहाणं ॥१॥
जस्सारिहंते मुणिसत्तमेसु, मोत्तुं न नामेइ सिरो परस्स ।
निव्वाणसुक्खाण निहाणठाणं, तस्सेव सम्मत्तमिणं विसुद्धं ॥२

भावार्थ—" रागद्वेष रहित श्रीजिनेश्वरने देव, चारित्ररहस्यना निधि सम
साधुओ ते गुरु, अने जीवादिक नव तत्त्वोनुं शुद्ध स्वरूप ते धर्म—तेनी जे सदह
राखवी ते सर्वमां मुख्य एवं समकित कहेवाय छे अरिहंत अने उत्तम साधुओ
मूकीने बीजा कोइने जे मनुष्य मस्तक नमावतो नथी, तेनेज निर्वाणसुख

धान स्थान रुप आ विशुद्ध समकित छे एम जाणवु. "

इत्यादि धर्मोपदेश सांभळीने वज्रकर्ण राजा प्रतिबोध पाम्यो. तेथी तेणे र पासे समकित मूळ बार व्रत अंगीकार कर्या तेमां विशेष करीने जिनेश्वर तथा निराज सिवाय बीजा कोइने न नमवानो नियम ग्रहण कर्यो. पछी ते पोताना गरमां गयो. घेर आव्या पछी तेने विचार थयो के—" हुं अवन्ति नगरीना सिंहरथ राजानो सेवक छु, तेथी तेने मारे अवश्य प्रणाम करवा पडशे ने तेम रवाथी मारा नियमनो भंग थशे " एम विचारीने तेणे पोताना हाथनी एक गुठी करावी, तेमां मुनिसुव्रत स्वामीनी सूक्ष्म प्रतिमा करावी. पछी ज्यारे सिंहरथ पासे जाय त्यारे ते अंगुठीने सन्मुख राखीने प्रणाम करवा लाग्यो, एटले मन वडे जिनेश्वरनेज प्रणाम करतो हतो, अने बहारथी (देखावमां) सिंहरथ राजाने प्रणाम करतो देखातो हतो.

एकदा कोइ खळ पुरुषे ते वृत्तांत सिंहरथ राजाने निवेदन कर्यो. ते सांभळीने राजाए विचार्यु के—" अहो ! वज्रकर्ण केवो कृतघ्नी छे ? के ते मारु राज्य भोगवे छे, छता मने प्रणाम मात्र पण करतो नथी. तेथी ते दुष्टनो दंड करवो, एज न्याय छे. " एम विचारीने तेणे संग्रामने माटे रणभंभा वगडावी.

आ समये कोइ पुरुषे वज्रकर्ण पासे जइ कह्यु के "हे साधर्मी वज्रकर्ण राजा ! तमने जेम रुचे तेम करो. सिंहरथ राजा तमारापर चडी आवे छे. " वज्रकर्णे पूछयु के " तु कोण छे ? अने क्यां रहे छे ? " ते बोल्यो " हे देव ! हु कुण्डिनपुरनो रहीश वृश्चिक नामनो श्रावक छु. एकदा हु घणा करीयाणा लइने उज्जयिनी[1] नगरीमां गयो हतो. त्यां एक दिवस वसन्तोत्सवमां अनंगलता नामनी गणिकाने जोइने हु तेनापर मोहित थयो, तेथी तेणीने में मारु सर्व धन आपी दीधु, अने तेणीनो साथे हु विषयसुख भोगववा लाग्यो. एकदा ते गणिकाए सिंहरथराजानी राणीना आभूषणो जोइने पोताना आभूषणोनी निंदा करी रोता रोता मने कह्यु के " जो तु खरो मारो प्रियतम हो, तो राणीना आभूषणो मने लावी आप " ते सांभळीने तेणीनु वचन अंगीकार करी हु रात्रीने समये चोरी करवा माटे राजमहेलमां दाखल थयो. ते वखते राजा तथा राणी वातो करता हता. तेमां राणीए राजाने पूछयु के "हे स्वामी ! आजे तमारा मुखपर चिंता होय एमज-

१ अवन्ति अने उज्जयनी बन्ने एकार्थक छे

णाय छे, तो तमारे शी चिंता छे ? " राजाए जवाब आप्यो के—" हे मित्र ! तत्काळे वज्रकर्ण मारा खड्गथी मृत्यु पामशे, त्यारेज मारी चिंता दूर थशे " वी तेनी वाणी सांभळी तमारा जैनधर्मना दृढपणाने जाणीने चोरीने तथा ने वेश्याने ने तरतज तमने कहेवा माटे आव्यो छुं. माटे हे वज्रकर्ण राजा ! हवे तमने योग्य लागे तेम करो. " ते सांभळीने वज्रकर्ण राजाए ते श्रावकनो सारो सत्कार करीने तेने विदाय कर्यो अने पोते किल्ला बहारना पराओने त्यागीने सर्वने किल्लामां लइ द्वार बंध करीने रह्या. प्रात काळ थता सिंहरथ राजाए आवीने ते नगरने घेरो घाल्यो अने वज्रकर्ण पासे दूत मोकल्यो. ते दूते आवीने वज्रकर्णने कह्यु के " हे वज्रकर्ण ! ते वींटी पहेर्याविना अमारा स्वामी पासे आवी तेने प्रणाम करीने पछी तेथी राज्य भोगव. नहींतो तारो नाश थशे. " ते सांभळीने वज्रकर्णे कह्यु के " हे दूत ! तारा राजाने कहे के—मारे राज्यनु काइ पण प्रयोजन नथी परंतु मने धर्मद्वार आप के जेथी हु बीजे स्थाने जइने मारा नियमनु पालन करुं. " ते सांभळीने दूते जइने सिंहरथने कह्यु, तेथी सिंहरथ क्रोध युक्त थइने ते पुर रुंधी रह्यो छे माटे हे रामचंद्र ! आ देश उजड थवानु ए कारण छे. "

ते सर्व वृत्तांत सांभळीने रामे लक्ष्मणने कह्यु के " हे वत्स ! आपणे त्यां जइने आश्चर्य जोइए, तथा वज्रकर्णनु साधर्मीवात्सल्य करीए (तेने सहाय करीए) " एम कहीने राम, लक्ष्मण तथा सीता दशपुर तरफ चाल्या. त्यां राम अने सीताने पुर बहार राखी लक्ष्मण एकलो गाममां गयो. वज्रकर्णे लक्ष्मणने भोजननु निमंत्रण कर्यु. त्यारे लक्ष्मणे कह्यु के मारा मोटा भाइ तेमनी स्त्री सहित गाम बहार देवकुळमां रहेला छे. " ते सांभळीने वज्रकर्णे तेमने पण तेडावी त्रणेने आदर पूर्वक भोजन कराव्यु पछी रामना कहेवाथी लक्ष्मणे सिंहरथ राजा पासे जइने कह्यु के " हे राजा ! मने रामचंद्रे तमारी पासे मोकल्यो छे. ते तमने कहेवरावे छे के—तमे वज्रकर्ण साथे युद्ध न करो " सिंहरथ बोल्या के " भरत राजानी आज्ञा मस्तके चढावु छु, पण काइ रामनी आज्ञा मानतो नथी. " त्यारे लक्ष्मणे कह्यु के " तो युद्ध माटे तैयार था " ते सांभळीने क्रोध पामी सिंहरथ हस्तीपर आरुढ थइ संग्राम करवा तैयार थयो तेने एक क्षणवारमां नीचे पाडीने लक्ष्मणे पृथ्वीपर पाडी नाखी बांधी लीधो त्यारे ते बोल्यो के " में अज्ञानपणाथी आपनु अपमान कर्यु छे, आप मारा स्वामी छो, तेथी जेम आपनी

होय तेम करो." ते सांभळीने लक्ष्मणे वज्रकर्णने उज्जयिनीनो राजा करी सिंहरथने तेनो सेवक बनावी मुक्त कर्यो. पछी सर्वे पोतपोताने स्थाने गया. वज्रकर्ण बीजा नियमनु यथास्थित पालन करी सर्व जीवोने खमावी स्वर्गे गयो. त्यांथी चवीने मोक्षपदने पामशे.

"हे भव्य जीवो! आ वज्रकर्ण राजानु चरित्र सांभळी कायशुद्धि धरनारे जिनेन्द्र सिवाय बीजा कोइने नमन करवु नहीं. जेथी करीने तमने जल्दीथी मुक्तिरूपी स्त्री आलिंगन करशे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ प्रथमस्तम्भेऽष्टादशं व्याख्यानम्

व्याख्यान १९ मुं.



समकितनां पांच दूषणो विषे

शङ्काकाङ्क्षा विचिकित्सा, मिथ्यादृष्टिप्रशंसनम् ।
तत्संस्तवश्च पञ्चापि, सम्यक्त्वं दूषयन्त्यमी ॥ १ ॥

भावार्थ—"शंका, आकांक्षा, विचिकित्सा, मिथ्यादृष्टिनी प्रशंसा अने तेनो संस्तव (परिचय विगेरे), ए पांच समकितने दूषित करनारा (अतिचार) छे"

श्री अरिहंते प्ररूपेला धर्मने विषे संदेहनी बुद्धि राखवी, ते शंका कहेवाय छे. ते देश थकी अने सर्व थकी एम बे प्रकारनी छे. देशथी शंका एटले जिनेश्वर प्ररूपित सर्व पदार्थोमां श्रद्धा राखे, पण अमुक एक बे ठेकाणे शंका करे. जेमके जीव छे, ते वात तो खरी पण ते सर्वगत हशे के असर्वगत? सप्रदेशी हशे के अप्रदेशी? विगेरे एकाद अंशमां शंका करवी ते देशथी शंका कहेवाय

छे. अने सर्वथी शंका एटले तीर्थंकर भाषित सर्व पदार्थोमां शंका करे ते. आ बे प्रकारनी शंका सम्यक्त्वने दूषण रूप छे.

शंकापर बे बाळकनुं दृष्टान्त.

कोइ ग्राममां कोइ एक स्त्रीने बे पुत्रो हता तेमां एक पुत्र पोतानी शोक्यनो हतो अने एक पोतानो हतो. ते बन्ने छोकरा एक दिवस निशाळेथी घेर आव्या तेमने ते स्त्रीए माषपेया (अडदनी राबडी) खावा आपी ते खातां खातां तेमां काळा फोतरा विगेरे जोइने पेलो शोक्यनो छोकरो विचार करवा लाग्यो के " आ राबडीमां माखीओ छे मारी माता ओरमान होवाथी तेणीए मने मक्षिका नांखीने आपी जणाय छे. " आ प्रमाणे शंका राखवाथी तेने वमन थयुं तेज रीते हमेशा शंका थवाथी हमेशा वमन थता तेने ऊर्ध्ववातनो महा व्याधि थयो, तेथी ते छेवट मृत्यु पाम्यो अने बीजा पुत्रे तो एवो विचार कर्यो के " मारी माता मने मक्षिकावाळुं भोजन आपेज नहीं. " एम निःशंकपणे खावाथी ते सारो रह्यो. आ दृष्टान्तथी कोइ पण बाबतमां शंका न करवी शंकानो त्याग करवो. आ विषय उपर बीजुं दृष्टांत कहे छे—

तिष्यगुप्त निह्नवनुं दृष्टान्त

श्री महावीर स्वामीने केवलज्ञान उत्पन्न थया पछी सोळ वर्षे बीजो तिष्यगुप्त नामे निह्नव थयो तेनुं वृत्तांत आ प्रमाणे छे—

राजगृही नगरीना गुणशील नामना चैत्यमां एकदा चौद पूर्वधारी वसु नामना आचार्य पधार्या तेमने तिष्यगुप्त नामे एक शिष्य हतो एकदा आत्मप्रवाद नामना पूर्वनो अभ्यास करता तेना वांचवामां आ प्रमाणे सूत्रालापक आव्यो के— " एगे भंते जीवप्पएसे जीवे त्ति वत्तव्वं सिया ? नो इणट्ठे समट्ठे, एवं दो तिन्नि संखिज्जा असंखिज्जा वा एगपएसूणे वि जीवे ? नो जीवे त्ति वत्तव्वं । कहं ? जम्हा कसिणे पडिपुण्णे लोगागासपएसतुल्ले जीवे जीवे त्ति वत्तव्वं सिया इत्यादि— " हे भगवान ! जीवना एक प्रदेशमां जीव वक्तव्यता थइ शके ?" प्रभु कहे " ना, ए अर्थ समर्थ-योग्य नथी " आ रीते " बे प्रदेशमां, त्रण प्रदेशमां, संख्याता प्रदेशमां, असंख्याता प्रदेशमां, छेवट एक प्रदेशे ऊणा एवा सर्व प्रदेशमां

जीव कहेवाय के नहीं ?" प्रभु कहे—"ना ए अर्थ पण समर्थ नथी. अर्थात् ते जीव कहेवाय नहीं." त्यारे जीव क्यारे कहेवाय ? प्रभु कहे छे के "परिपूर्ण लोकाकाशना प्रदेश जेटला प्रदेश एकेक जीवना छे, ते समग्र प्रदेशने 'जीव' कहीए, इत्यादि." आ प्रमाणे जाणता तिष्यगुप्तने एवी शंका थइ के—"जीवना एक छेल्ला प्रदेशमा ज जीव संज्ञा रहेली जणाय छे, बाकीना सर्व प्रदेशमा जीव संज्ञा नथी एवु आ सूत्र स्पष्ट बतावे छे." आवा पोताना मतने ते बीजाओ पासे पण कहेवा लाग्यो. ते जाणीने गुरुए मित्र रूप थइ तेने कह्यु के, "हे शिष्य ! जो तु जीवना एक बे विगेरे प्रदेशोमा जीवपणु नथी स्वीकारतो, अने मात्र एक छेल्लाज प्रदेशमा जीवपणु माने छे, तो छेल्ला प्रदेशमा पण जीवपणु सिद्ध थशे नहीं. केमके सर्वनु प्रदेशपणु तो सरखुज छे. तेथी जेम रेतीना हजारो कणीयामां तेल नथी, तो ते तेल एक छेल्ला कणीयामा पण शी रीते आवे ? माटे तारा मानवा प्रमाणे तो जीवनो अभावज सिद्ध थशे. ते अभाव तो तु मानतो नथी तेथी तेवो अर्थ तारे पण इष्ट नथी." शिष्ये प्रश्न कर्यो के "हे गुरु ! आपे जे आ युक्ति कही, तेथी तो आगमने बाध आवे छे. केमके हमणाज आवेला सूत्रमा एक बे विगेरे प्रदेशमा जीवनो निषेध करीने छेल्लाज प्रदेशमा जीवपणु कहेलु छे तो आप जगद्गुरु जिनेश्वरे कहेला सूत्रनो केम निषेध करो छो ?" गुरु बोल्या के "हे शिष्य ! जो तु सूत्रने प्रमाण मानतो हो तो सांभळ, तेमाज कह्यु छे के 'परिपूर्ण लोकाकाश प्रदेश तुल्य जीवमा जीव संज्ञा छे.' तेथी श्रुतने प्रमाण माननाराए तो आमा नवी कुयुक्तिओ करवीज न जोइए. सर्व समुदाय रूप जीवना प्रदेशो जीव छे. जेम ततुना समुदायनेज पट कहीए छीए. पण एक बे विगेरे तंतुमा समस्त पट रहेलो नथी. माटे तारी शंकानु स्थान रहेतु नथी" ए प्रमाणे गुरुए समजाव्या छतां पण ते तिष्यगुप्त समज्यो नहीं. त्यारे तेने गुरुए गच्छ बहार कर्यो.

पछी ते तिष्यगुप्त विहार करता एकदा आमलकल्पा नामनी नगरीमां गयो. त्या गामनी बहार उद्यानमां रह्यो. त्या मित्रश्री नामनो एक श्रावक रहेतो हतो. तेणे तेने निह्नव जाणीने प्रतिबोध करवाना हेतुथी तेनी पासे जइ निमंत्रण आप्यु के "आजे आहार लेवा माटे तमारे जातेज मारे घेर आववु." ते अंगीकार करीने तिष्यगुप्त मित्रश्रीने घेर गयो. मित्रश्रीए तेने बहुमान पूर्वक आसन पर बेसाडी तेनी सन्मुख घणा उत्साह अने आडंबरथी उत्तम प्रकारना अ-

नेक लाडु, खाद्य, अन्न, पान, व्यंजन, वस्त्र विगेरेनो समूह थयो. पछी ते छेड्यो एक एक अवयव लइने तेना पात्रमा मुक्यो. एटले के पकवान, शाक एक एक कणीयो आप्यो दाळ, कढी, जळ विगेरेनु एकेक बिंदु आप्यु, अने वस्त्रोमांथी एक एक छेडो तंतु काढीने आप्यो. पछी ते श्रावके तेने नमस्कार करी अने पोताना सर्व बधुजनोने कयु के "तमे सर्व आ साधुने वंदना करो. में आजे तेने परिपूर्ण प्रतिलाभ्या छे. हु आजे मारा आत्माने धन्य अने पुण्यवान मानु छु. केमके गुरु पोतेज मारे घेर पधार्या छे" ते सांभळीने तिष्यगुप्त बोल्यो के "हे श्रावक! आवो एक एक कण आपीने त आजे मारी हांसी करी छे, ते तें योग्य कर्यु नथी" श्रावक बोल्यो के, "हे पूज्य! तमारोज आ मत छे, ते सत्यज होय, तो आ लाडु तथा भात विगेरेना छेल्ला अवयवथी आपनी तृप्ति थवी जोइए अने आ एक छेल्ला वस्त्रतंतु शीतनु रक्षण करनारो थयो जोइए, जो तेम न थाय, तो आपे कहेलु सर्व जुठु पडशे." ते सांभळीने प्रतिबोध पामेलो तिष्य गुप्त बोल्यो के, "हे श्रावक! तें मने सारो बोध आप्यो श्रीवीर भगवानना वाक्यमा पडेली शंका अत्यारे दूर थइ" पछी ते श्रावके भक्ति पूर्वक सारी रीते तेमने प्रतिलाभ्या. तिष्यगुप्त गुरु पासे जइ आलोयण प्रतिक्रमण करी श्रीजिनेश्वरनी आज्ञानुसार विचरवा लाग्यो. गुरुना चरणमा वर्तता सम्यग् मार्गने पामीने तेनु प्रतिपालन करी ते स्वर्ग गयो.

"हे भव्य प्राणीओ! आ तिष्यगुप्तनु चरित्र सांभळीने श्रीजिनेश्वरना वचनमां किंचित् पण शंका करवी नहीं. केमके शंका सद्बुद्धिने मलीन करे छे"

अहीं निह्नवनो प्रसंग आववाथी सर्व निह्नवो क्यारे क्यारे थया ते बतावे छे.

निह्नवोनी नोंध

१ श्री महावीर स्वामीना केवळ ज्ञान पछी चौद वर्ष जमालि नामे निह्नव थयो २ सोळ वर्षे तिष्यगुप्त थयो ३ बसे चौद वर्ष अव्यक्त नामे निह्नव थयो ४ बसें वीश वर्ष शून्यवादी थयो ५ बसें अठावीश वर्षे एक समये बे उपयोग कहेनार गंगदत्त थयो ६ पांचसो चुमाळीश वर्षे नोजीवनु स्थापन करनार रोहगुप्त थयो ७ पांचसो चोराशी वर्षे गोष्ठामाहिल थयो ८ बसाने न

नव वर्षे सहस्रमल्ल नामे दिगंबर मतने स्थापन करनार सर्वविसवादी थयो. ए. बे-
वडे प्रतिमानु खंडन करनार लुंकामति उत्पन्न थयो. *

आ प्रमाणे एकएक वाक्यना उथ्थापनार पण निह्नव गणायेला होवाथी जिनेश्वर जगवंते कहेला सूक्ष्म बादर स्वरूपमा किंचित् पण शंका न करवी. केमके एक अर्थमा पण संदिग्धपणु थवाथी ते कथक सर्वज्ञपणाना प्रत्ययने योग्य रहेता नथी अने तेथी तेनी मिथ्या कल्पना करनारने मिथ्यादर्शन प्राप्त थाय छे अने ते भवभ्रमणना हेतुजूत छे. वळी

यत्रापि मतिदौर्बल्यादिभिर्मोहवशात् क्वचित् ।
संशयो जवति तत्राप्रतिहतेयमर्गला ॥ १ ॥

जावार्थ—" तीर्थंकरना जे वचनने विषे मतिनी दुर्बळतादिक कोइ पण हेतुथी अथवा कोइ ठेकाणे मोहना वशथी संशय थाय छे ते समकित द्वारनी अप्रतिहत अर्गलारूप छे. " आ विषे सिद्धांतमा कह्युं छे के—

कत्थय मइदुव्वल्लेण, तव्विहायरिय विरहउ वावि ।
नेयगहणत्तणेण य, नाणावरणोदयेण च ॥ १ ॥
हेऊदाहरणसंजवे य, सइ सुट्ठु जं न बुज्झिज्जा ।
सव्वणुमयमवितह, तहावि त चिंतए मइमं ॥ २ ॥

जावार्थ— " कोइ ठेकाणे मतिनी दुर्बळताथी (मंदताथी), तथाविध आचार्यना अजावथी, ज्ञेयनु ग्रहणपणु यथार्थ न थवाथी अने ज्ञानावरणीय कर्मना उदयथी हेतु, उदाहरण विगेरेनो संजव छता पण सूत्रनु यथार्थ ग्रहण थइ न शके—बराबर समजवामां न आवे तोपण मतिमान पुरुषे एवुंज चिंतववुं के —सर्वज्ञनु वचन अवितथ—निर्दोषज छे. "

केटलाएक पदार्थो मात्र आगमगम्यज होय छे. एटले ते पदार्थो आपणी

* आ सम्बा विगेरेमां प्रतिनी अशुद्धिने लीधे भूलनो संभव छ तेथी अन्यत्र यथार्थ होय ते प्रमाण गणवा योग्य छे

जेवा प्राकृत जनोना प्रमाणनी परीक्षाने अगोचर छे, परन्तु ते पदार्थो आप्त कहेला होवाथी संदेह करवाने योग्य नथी. इति शंका दूषणाधिकार.

इत्युपदेशप्रासादे द्वितीयस्तंभे एको-
नविंशतितम व्याख्यानम्

व्याख्यान २० मु.



हवे आकांक्षा दोषने स्पष्ट करे छे—

देशतः सर्वतो वाप्यभिलाषः परदर्शने ।
स आकांक्षाभिधो दोषः, सम्यक्त्वे गदितो जिनैः ॥१

भावार्थ—"देशथी अथवा सर्वथी अन्यदर्शननो जे अभिलाष ते सम्यक्त्वमा आकांक्षा नामनो दोष जिनेश्वरोए कहेलो छे."

कोइ दर्शनमां काइक पण जीवदया विगेरेनो विषय सारो जोइने ते दर्शनी अभिलाषा थाय, ते आकांक्षा कहेवाय छे तेमा देशथी आकांक्षा एटले कोइ एक ज दर्शननी अभिलाषा अने सर्वथी आकांक्षा एटले सर्व पाखंडी धर्मोनी अभिलाषा जेम बौद्ध धर्म सारो छे तेमा काइ पण कष्ट करवानु कहेलु नथी तेम कपिल अने द्विजादिकना धर्ममा पण अहीं विषयसुखो भोगवनार परभवमां पण सुख पामे छे, माटे ए धर्मो पण सारा छे आ प्रमाणेना विचारोथी एकांत सुख आपनार जैन दर्शनने दूषित करे छे आनो भावार्थ जितशत्रु राजा ने तेना मंत्रीना दृष्टांतथी जाणवो

जितशत्रु राजा ने तेना मंत्रीनी कथा

सर्व प्रकारना कल्याणना स्थानभूत वसंतपुर नामे नगर छे त्यां जितशत्रु

नामे राजा राज्य करे छे. तेने मतिसागर नामे मंत्री छे. एकदा राजाए चंद्रमाना किरण जेवा श्वेत बे अश्वो जोइने प्रसन्न थइ तेना मालिकने तेनुं मूल्य आपी खरीद कर्या. पछी तेनी परीक्षा करवा माटे मंत्री सहीत बन्ने अश्व पर स्वार थइ मंडलिभ्रमादि गति कराववा लाग्या. तेवामा वनमां रहेला लोकोए त्रास पमाड्या सता ते अश्वो कुशिष्यनी जेम विपरीत शिक्षा पामेला होवाथी पवननी गतिनी जेवी गति करीने तेमने कोइ मोटा भयंकर जंगलमां लइ गया. त्यां श्रम अने क्षुधाथी पीडा पामेला राजा अने मंत्रीए वनना फळो खाइने घणा दिवसो निर्गमन कर्या. केटलाक दिवसो गया पछी तेमनुं सैन्य के जे तेमने शोधतुं शोधतुं पाछळ आवतुं हतुं ते तेमने मळ्युं. एटले सैन्य साथे राजा तथा मंत्री पोताना पुरमां गया. राजा जाते मूर्ख होवाथी तेणे रसोइयाओने कह्युं के " मारे माटे सर्व जातना पकवान तथा शाक विगेरे तैयार कर, कारण के हुं घणा दिवसथी भूख्यो छुं. " रसोइआओए पण राजानी आज्ञा प्रमाणे जूदा जूदा सर्व जातिना पकवान विगेरे बनावीने राजानी पासे मूक्या. राजा पण क्षुधाथी पिडित थयेलो हतो तेथी जेम वडवाग्नि समुद्रना जळनुं पान करता तृप्ति न पामे, तेम राक्षसनी जेम सर्व आहार करता पण तृप्ति पाम्यो नहीं. छेवट घणो आहार करवाथी तेना पेटमां शूळ उत्पन्न थयुं अने तेनी व्यथाथी तेज रात्रीए ते मृत्यु पाम्यो. पेला मंत्रीए तो घेर जइने थोडुं थोडुं पथ्य भोजन करवा मांड्युं अने साथे वमन तथा विरेचन पण लेवा लाग्यो. एटले भोजन पर अति आकांक्षा राख्या सिवाय पथ्य भोजन करवाथी ते सुखी थयो

आ दृष्टांतनो सारांश ए छे के—राजा अने मंत्रीने स्थाने जीवो छे, तेमां केटलाक राजा जेवा जीवो काइक तपस्या विगेरे बाह्य गुणो जोइने जूदा जूदा दर्शननी आकांक्षा करे छे. तेओ राजानी जेम तृप्ति पाम्या विना ज मृत्यु पामीने दुर्गतिना भाजन थाय छे अने जेओ स्याद्वाद—अनेकांत धर्ममां निश्चळ रहे छे, तेओ मंत्रीनी जेम सुखी थाय छे. इति आकांक्षायां नृपमंत्रीप्रबंध.

आ प्रसंग उपर बीजुं पण दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

सर्व देवनी भक्ति करनार श्रीधर श्रावकनुं दृष्टांत

गुणदोषापरिज्ञानात्, सर्वदेवेषु भक्तिमान् ।

यः स्यात् श्रीधरवत्पूर्वं, स तु नैवाप्नुते सुखम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" गुणदोष जाण्याविना जे मनुष्य सर्व देवोने विषे स्थापे श्रीधरनी जेम भक्तिमान थाय छे, ते परिणामे सुख पामता नथी."

गजपुरमां श्रीधर नामे एक वणिक रहेतो हतो. ते स्वभावथीज हतो. तेणे एकदा एक मुनि पासे जैन धर्मनुं श्रवण कर्यु, त्यारथी ते हंमेशा जिनेश्वरनी त्रिकाळ पूजा करवा लाग्यो. एकदा श्री प्रभु पासे धूप दहन अभिग्रह कर्यो के " आ धूप ज्यां सुधी बळे त्यां सुधी मारे निश्चळ रहेवुं, खसवुं नहीं. दैवयोगे त्यां एक सर्प नीकळ्या तथापि श्रीधर निश्चळ परन्तु सर्प तेनी पासे आवी रमतो जाय छे, तेटलामां ते श्रीधरना सत्त्वथी मान थयेली देवीए ते दुष्ट सर्पने दूर करीने तेना मस्तकनो मणि लइ श्री आप्यो. ते मणिना प्रभावथी श्रीधरना घरमां ऋद्धिथी लतानी जेम लक्ष्मी पामवा लागी.

एकदा तेना कुटुंबमां कोइ प्रकारनो व्याधि आववाथी कोइए तेने कह्युं के " गोत्र देवीनी पूजा करवाथी गोत्रमां कुशळता रहे छे " ते सांभळीने क्षणिक श्रीधरे गोत्रदेवीनी पूजा करी. दैवयोगे व्याधि निवृत्त थयो अन्यदा एक वखत तेने पोताने काइ व्याधि उत्पन्न थयो, त्यारे कोइना कहेवाथी तेणे यक्षनी पूजा करी. ए प्रमाणे लोकोना कहेवाथी शांतिना लाभने माटे तेमज भावि रोगनी निवृत्ति माटे ते हमेशां अन्य अन्य देवोनी पूजा करवा लाग्यो ' भावुक जनो सत्संगथी गुण अने असत्संगथी दोषने पामे छे. ' कह्युं छे के—

एके केचिद्यतिकरगतास्तुंबिका पात्रलीला
गायन्त्यन्ये सरसमधुरं शुद्धवंशे विलग्ना ॥
अन्ये केचिद् ग्रथितसुगुणा दुस्तरं तारयन्ते
तेषां मध्ये ज्वलितहृदया रक्तमन्ये पिबन्ति ॥ १ ॥

भावार्थ—" तुंबडां तो बधाए एकज जातिनां होय छे परंतु तेमां आएक तुंबडां के जेओ यति—मुनिना हाथमां आवे छे ते पात्रनी शोभाने मेळवे, केटलाएक (गवैया पासे जवाथी) शुद्ध वांसनी साथे जोडाइने सरस

मधुर गायन करे छे, केटलाएक सारा दोरडाथी गुथाइने दुस्तर एवा समुद्रथी तर्योने तारे छे अने तेमानाज केटलाएक तुनका (कापालीकना हाथमा जवाथी) दलित (दुष्ट) छे हृदय—मध्य भाग जेनो एवा थइने लोहीनुं पान करे छे अर्थात् ते कार्यमा कामे लागे छे. "

एकदा ते श्रीधरना घरमा प्रवेश करीने चोर लोकोए तेनु सर्व धन चोरी लीधु. तेथी ते श्रीधर अत्यंत खेद पामवा लाग्यो अनुक्रमे तेनी एवी स्थिति थइ के घरमा काइपण वस्तु न रही अने भोजननो पण संदेह थइ पड्यो. कष्ट अत्यंत दु:खी थवाथी तेणे अष्टम करीने सर्व देवनी आराधना करी. त्रीजे दिवसे देवताओ बोल्या के " अरे ! तें शा माटे अमारु स्मरण कर्यु ? " श्रीधर बोल्यो के " मने समृद्धि आपो. " त्यारे तेओ बोल्या के " तारी कुळदेवी पासे जा. ते आपशे. " एटले श्रीधर कुळदेवी पासे जइ अष्टम करीने बेठो. त्रीजे दिवसे ते पण समृद्धि मागवाथी बोली के " हे दुष्ट ! मारी पासेथी जलदी जतो था, तु तारा घर आगळ जे देवोनी पूजा करे छे ते तने आपशे, तेमनी पासे जा " ते साभळीने श्रीधरे गृहदेवोनी आराधना करी. त्यारे अदर अदर हसीने तेओ बोलवा लाग्या गणपतिए चण्डिका देवीने कह्यु के " हे चण्डिका ! तारा भक्तने मनवाछित आप. " चण्डिका बोली " तेने तो पेलो यक्ष मनवाछित आपशे, केमके गुरुओने तेने तेणे ऊचा आसन पर बेसाड्यो छे अने वळी मारा पहेला ते हमेशा ते यक्षनीज पूजा करे छे. " त्यारे यक्ष बोल्यो के " एनु मनवाछित शासनदेवता आपशे. " आ प्रमाणे सर्वे देवोए तेनु हास्य करीने उपेक्षा करी. त्यारे ते शासनदेवीनी आराधना करवा लाग्यो शासनदेवी बोली के " हे मूर्ख ! त आ बधु शु कर्यु ? घणी भूल करी, हवे विकथा अने हास्यमा तत्पर एवा कुदेवोने मूकीने जे देवना पण देव छे, जेना आठे कर्मो क्षीण थया छे अने जे कृपानाज अवताररूप छे एवा त्रिकाळज्ञानी सर्वज्ञनी अर्चा कर के जेथी बन्ने भवमा सुख संपत्ति प्राप्त थाय छे." ते साभळीने श्रीधरे ते प्रमाणे करवा माड्यु. पछी तेने आकांक्षा रहित दृढ निश्चयवाळो जाणीने शासनदेवीए करीथी मणि आप्यो. तेथी पाछो समृद्धिवान थयो अने परभवमा आसन्नसिद्ध थयो. अर्थात् थोडा काळमा सिद्धिपदने पाम्यो

" हे भव्य जीवो ! शास्त्रनिंद्य एवा आकांक्षा दोषनु सेवन करनार म-

नुष्य श्रीधरनी जेम हास्यनु पात्र थाय छे. माटे जिनशासनने जाणनाराए ए दो सेववो नहीं "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वितीय-
स्तम्भे विंशतितम व्याख्यानम् ॥ २० ॥

व्याख्यान २१ मु



त्रीजा विचिकित्सा दोष विषे

देशत सर्वतो वापि, कृतक्रियाफल प्रति ।
क्रियते हृदि सन्देहो, विचिकित्साभिध. सक ॥ १ ॥

भावार्थ—" करेली धर्मक्रियाना फळ प्रत्ये देशथी अथवा सर्वथी मनमां सदेह करवो, ते विचिकित्सा नामनो दोष कहेवाय छे. "

करेली खेती विगेरे लौकिकक्रियाना फळनी जेम सामायिक विगेरे धर्म क्रिया कर्यानु फळ मने प्राप्त थशे के नहीं ? एवी जे शका करवी, ते विचिकित्सा कहेवाय छ.

अहीं कोइने शका थाय के. " शका नामनो जे पहेलो दोष कह्यो तेमां अने आ विचिकित्सामा शो फेर छे ? " तेनो जवाब ए छे के, शका तो द्रव्य गुण पर्याय रुप सर्व पदार्थमा प्रवर्ते छे, अर्थात् धर्मास्तिकायादि द्रव्योमां, तेना गुणोमा अने पर्यायमा नाना प्रकारनी उद्भवे छे, अने आ विचिकित्सा तो मात्र करेली क्रियामात्र प्रवर्ते छे, एटले शका अने विचिकित्साना विषयो जुदा जुदाज छे " अथवा बीजी रीते विचिकित्सा एटले मुनिनु मनथी मलिन शरीर जोइने तेनी जुगुप्सा—निंदा करवी ते जेमके ' आ मुनिजनो प्रासुक जळथी शरीरनु प्रक्षालन (स्नान) करता होय तो तेमां शो दोष लागे ? ' एम धारी तेमनी जुगुप्सा करवी

ते पण विचिकित्सा कहेवाय छे. आ विचिकित्सा पण श्री जिनेश्वर प्ररुपित धर्म पर अनास्ता (अश्रध्दा) रुप होवाथी समकितने दूषित करनार छे. आ संबधमा दुर्गंधा राणीनो प्रबंध जाणवो.

दुर्गंधा राणीनु दृष्टान्त

एकदा राजगृहीनो राजा श्रेणिक उद्यानमा समवसरेला श्री वीरप्रभुने वांदवा माटे सैन्य सहित जतो हतो. मार्गमा दुर्गंध सहन न थवाथी वस्त्रना छेडा-वडे नासिका बंध करीने चालता सैनिकोने जोइने राजाए पोताना कोइ सेवकने तेम करवानु कारण पूछ्युं. त्यारे ते बोल्यो के " हे स्वामी! अहीं मार्गमा तरतनी जन्मेली एक बाळीका पडी छे, तेना शरीरमाथी अत्यत दुर्गंध छूटे छे. " ते सांभळीने राजा " ए तो पुद्गलनो परिणाम छे " एम कही, ते बाळीकाने जोइ समवसरण-मा गयो. श्री वीरस्वामीने प्रणाम करी देशना सांभळी अवसर जोइने राजाए ते दुर्गंधी बाळीकानो पूर्व भव पूछ्यो. भगवान बोल्या के " अहीं नजीक रहेला शा-लि नामना गामडामा धनमित्र नाम श्रेष्ठी रहेतो हतो. तेने धनश्री नामनी एक पुत्री हती एकदा ग्रीष्म ऋतुमा श्रेष्ठीए तेना विवाहनो प्रारंभ कर्यो. तेवामा कोइ मुनि-ओ गोचरीने माटे तेने घेर आव्या. तेमने वहोरावबा माटे श्रेष्ठीए पुत्रीने आज्ञा करी. एटले ते मुनिने वहोरावबा गइ. परतु कदिपण स्नान विलेपनादिक वडे शरी-रनी सुश्रूषा नहीं करनारा ते महात्माओना वस्त्रोमाथी अने शरीरमांथी स्वेद तथा मळ विगेरेनी दुर्गंध आववाथी ते धनश्रीए पोतानु मुख मरड्यु. विवाहनो उत्सव होवाथी सर्व अंगे अलंकारोथी शणगारायेली, मनोहर सुगंधी अंगरागथी विले-पन करायेली तथा युवावस्थाना उदयथी मत्त थयेली ते धनश्रीए विचार कर्यो के " अहो ! निर्दोष जैनमार्गमा रहेला आ साधुओ जो कदाच प्रासुक जळथी पण स्नान करता होय, तो तेमा शो दोष ?" ए प्रमाणे तेणीए जुगुप्सा करी. पछी केटलेक काळे ते जुगुप्सा रूप पाप कर्मनी आलोचना कर्या विना मरण पामी. ते अहीं राजगृहीमा ज एक गणिकाना उदरमां पुत्रीपणे उत्पन्न थइ. ते पो-ताना दुष्कर्मने लीधे गर्भमा रही हती पण माताने अत्यत असुख उत्पन्न करवा लागी. तेथी ते गर्भथी उद्वेग पामीने ते गणिकाए गर्भपातने माटे घणा आपधो कर्या. परंतु तेणीनु आयुष्य दृढ होवाथी गर्भपात थयो नहीं. छेवट समय पूर्ण थ-ये ते पुत्रीने गणीकाए प्रसवी. जन्मथीज तेनी दुर्गंध दुःसह होवाने लीधे तेने ग-

णिकाए विष्टानी जम तजी दीधी तने तमे मार्गमां दीठी " शाप ए दा

आ प्रमाणेनी तेनी पूर्व हकीकत सांजळीने श्रेणिक राजाए " तेनी शी गति थशे?" एम प्रज्ञुने पुछ्युं, त्यारे जगवान बोल्या के "हे राजन् थाए पूर्व करेली मुनिनी जुगुप्सारूप अशुज कर्मनुं फळ समग्र जोगवी हवे ते मुनिने आपेला दानना जोग रूप फळने जोगववानी छे. तेथी ते कस्तूरी अने कर्पूर करता पण अधिक सुगन्धि थइ गयु छे हे राजा ! ते वर्षनी थशे, त्यारे तारी पट्टराणी थशे तेनी निशानी ए छे के—तमे धर्म गंजे रमशो, तेमा एवी शरत थशे के 'जे जीते ते हारनारना पृष्ठ पर चढे पछी ते रमतमां तु हारीश, त्यारे तारा पृष्ठ पर ते डुर्गंधा चडशे "ते सर्व हकीकत सांजळीने श्रेणिक राजा आश्चर्य पामी प्रज्ञुने वंदना करी पोताने स्थाने गयो.

अहीं डुर्गंधाने जोइने श्रेणिक राजा समवसरण तरफ गया, त्यारे पछी तेणीनुं शरीर सुगंधमय थइ गयुं हतुं. तेवामा त्याथी कोइ गोवाळनी स्त्री नीकळी तेणीए ते बाळकीने जोइने लइ लीधी अने पोते संतति विनानी होवाथी तेणीने पुत्री तरीके पाळीपोषीने मोटी कन्या करी

एकदा कौमुदी उत्सव आवता नगरीना सर्व लोको नगरनी बहार उद्यानमां क्रीडा करवा गया हता ते वखते स्त्रीओनी क्रीडा जोवा माटे श्रेणिक राजा पण अभयकुमारने साथे लइने गया. त्या ते डुर्गंधा पण पोतानी माता साथे उत्सव जोवा आवी. तेनी सुंदर देहलता एवी हती के—

> श्यामा यौवनशालिनी सुवचना सौजाग्यजाग्योदया ।
> कर्णान्तायतलोचना कृशकटी प्रागल्ज्यगर्वान्विता ॥
> रम्या बालमरालमन्थरगतिर्मत्तेजकुंजस्तनी ।
> बिंबोष्ठी परिपूर्णचन्द्रवदना जृंगालिनीलालका ॥ १ ॥

जावार्थ—" ते सुंदर स्त्री युवावस्थाथी सुशोजित हती, तेनुं वचन मिष्ट हतुं, ते सौजाग्यरूप जाग्यना उदयवाळी देखाती हती, तेणीना लोचन कर्ण पर्यंत दीर्घ हता, तेणीनो कटिप्रदेश सिंह जेवो कृश हतो, ते प्रगल्जपणाना गर्वथी युक्त जणाती हती, तेणीनी सुंदर चाल राजहंसना बाळक जेवी मंद

ते पण विशि, तेना स्तन मदोन्मत्त हाथीना कुंभस्थळ जेवा पुष्ट हता, तेना ओष्ठ पर अनारना फळ जेवा रक्त हता, तेनुं मुख पूर्णिमाना चंद्र जेवुं कांतिमान हतुं अने तेणीना केश भ्रमरनी श्रेणी जेवा श्याम वर्णना हता.

आवी मनोहर स्वरूपवान ते गोपपुत्रीने जोइने श्रेणिक राजा तेणीना रूपथी मोहित थइ कामातुर थया. तेथी राजाए अभयने पण खबर न पडे तेम पोतानी मुद्रिका (वींटी) तेणीना वस्त्रने छेडे बांधी दीधी. थोडी वारे राजाए पोताना हाथ सामे दृष्टि नाखी अभय कुमारने कह्युं के "मारी मुद्रिका अहीं पडी गइ, ते कोइ लइ गयुं जणाय छे, माटे ते चोरने शोधी मारी पासे लाव." ते सांभळीने सरळताथी अभयकुमारे पितानुं वचन अंगीकार करी त्यांना सर्व दरवाजा बंध करावी एक दरवाजेथी सर्व मनुष्योने एक पछी एक तपासी लइने बहार काढवा मांड्या. सर्व स्त्रीओना हाथ तथा वस्त्रना छेडा विगेरे तपासतां तपासतां पेली गोपपुत्रीनी ओढणीना छेडेथी ते मुद्रिका निकळी. ते लइ अभयकुमारे तेणीने पूछ्युं के "तें आ राजानी वींटी शी रीते लीधी?" त्यारे तेणीए काने हाथ मूकीने कह्युं के "हुं काइ पण जाणती नथी." तेणीना वचनपरथी तथा तेणीना इंगित (आकार) परथी अभयकुमारे तेणीने निर्दोष धारीने विचार्युं के "आ गोपपुत्री चोर नथी, परंतु आनापर आसक्त थयेला पितानुंज आ कर्तव्य छे." एम विचारीने अभयकुमार तेणीने राजा पासे लइ गया. अने राजाने कह्युं के "हे स्वामी! आणे आपना चित्तने चोर्युं छे, मुद्रिका चोरी नथी, माटे मुद्रिकानी वात करवी नकामी छे." राजाए ते वात कबूल करी. पछी तेणीना मातापिताने कहीने तेणीनी साथे राजाए विवाह कर्यो अने तेने पट्टराणी बनावी.

एकदा राजा तथा दुर्गंधा पासे रमवा लाग्या, तेमां हारनारना पृष्ठ पर जीतनार चडे एवी शरत करी. तेमां राजा हार्यो. तेथी राणी राजाना पृष्ठ पर शंका रहित आरूढ थइ. कह्युं छे के—

कुलं स्वकृत्यैरकुलप्रसूतः, सन्मानितोऽपि प्रकटीकरोति ।
श्रीश्रेणिकांसे निदधे यदंघ्रिर्दुर्गन्धया पण्यवधूद्भवत्वात् ॥१॥

भावार्थ—"नीच कुळमां उत्पन्न थयेलो मनुष्य राजादिकथी मान

पाम्यो होय, तोपण ते पोताना कृत्योए करीने पोतानु नीच कुळ प्रगट करे जुओ ! दुर्गन्धा वेश्यानी पुत्री होवाथी तेणीए श्रेणिक राजाना स्कन्ध पर पग धारण कर्या. ”

ते वखते राजाने श्रीवीर प्रभुनुं वचन याद आववाथी हसवु राणीए तत्काल राजाना पृष्ठपरथी उतरी जईने अकस्मात हास्य थवानुं पूछ्युं. त्यारे राजाए तेणीना पूर्व जन्मथी आरम्भीने हास्य पर्यंतनु सर्व भगवानना कथा प्रमाणे कही संभळाव्यु ते सांभळीने तेणीए वैराग्य पामी आनी रजा लइ श्री वीरप्रभु पासे दीक्षा ग्रहण करी.

“ आ श्रेणिक राजानी राणी दुर्गंधानु चरित्र सांभळीने जीवोए मुनिओनी जुगुप्सा कदापि पण चित्तमा धारण करवी नही. ”

इत्यब्ददिन परिमितो पदेशप्रासादवृत्तौ द्वितीयस्थंभ एकविंशतितम व्याख्यानम्

व्याख्यान २२ मुं.

मिथ्यात्वीनी प्रशसा नामना चोथा दूषण विषे

अतीतानागता ये च, सन्ति वा येऽन्यलिङ्गिन ।
तेषा प्रशंसन शंसाभिधो दोषश्चतुर्थक ॥ १ ॥

भावार्थ—“ जे अन्य लिंगीओ थइ गया, थवाना छे, अने वर्त काळे हयात छे, तेओनी प्रशसा करवी, ते मिथ्यात्वीनी प्रशसा नामनु चोथु मकीतनु दूषण जाणवु ”

आ दोष पण सर्वथी अने देशथी एम बे प्रकारनो छे. तेमा स

नो सत्य छे, एम मानीने सर्वनी प्रशंसा करवी ते सर्वथी प्रशंसा दोष जाणवो. अने बौद्धनु अमुक वचन अथवा सांख्यनुं अमुक वचन वधारे श्रेष्ठ छे एम कही एकाद मतनी प्रशंसा करवी ते देशथी प्रशंसा दोष जाणवो. ए बन्ने प्रकारना सम्यक्त्वना दोषनो त्याग करवो. आ विषयपर महानिशीथ सूत्रमां सुमति नागिलनु दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

सुमति नागिलनु दृष्टांत

मगध देशमां कुशस्थळ नामना नगरमां जीवाजीवादिक तत्त्वोने जाणनारा सुमति अने नागिल नामना बे धनाढ्य भाइओ रहेता हता केटलेक काळे कोइ पापकर्मना उदयथी तेओ निर्धन थया, त्यारे ते बन्नेए परस्पर विचार कर्यो के " आपणे द्रव्य रहित थया छीए तेथी धन उपार्जन करवा माटे परदेश जइए. " एम विचारीने तेओ शुभ दिवसे नीकळ्या. मार्गे चालता एक दिवस तेमणे एक श्रावक साथे पांच साधुओने जता जोया. सारो संघात मळ्यो जाणीने तेओ तेमनी साथे चाल्या. केटलेक दिवसे ते साधुओनी चेष्टा तथा वाणी उपरथी तेमने कुशीलीया जाणीने नागिले सुमतिने कह्युं के " आपणे आ साधुओ साथे चालवुं योग्य नथी, केमके में श्रीनेमिनाथना मुखथी एक वार एम सांभळ्युं हतुं के ' एवंविहे अणगाररूवे भवंति, ते कुसीले, ते दिठ्ठिए वि निरक्खिउं न कप्पंति—एवा प्रकारना साधुना वेषधारी होय छे, तेओने कुसीलीया जाणवा, तेओ दृष्टिथी पण जोवा योग्य नथी.' माटे हे भाइ! आपणे आ कुदृष्टि (मिथ्यादृष्टि)ओने छोडीने आगळ जइए. " ते सांभळीने सुमतिए कह्युं के " हे नागिल ! तुं वक्रदृष्टिए दोष जोनारो देखाय छे, माटे आ साधुओ साथे वातो करवी तथा गमन विगेरे करवुं ते मने तो योग्य लागे छे. " नागिले जवाब आप्यो के " हे भाइ! हुं मनथी पण साधुना दोषने ग्रहण करतो नथी, परंतु में भगवान तीर्थंकरनी पासे कुशीलीयाने नहीं जोवानो निश्चय कर्यो छे. " सुमति बोल्यो " जेवो तुं बुद्धिविनानो छे, तेवो ते तीर्थंकर पण हशे, के जेणे तने आवो निषेध कर्यो. " ए प्रमाणे बोलता सुमतिना मुखने नागिले पोताना हाथवडे बंध कर्युं अने कह्युं के " हे बंधु! अनंत संसारना कारणरूप वाक्य तुं न बोल. तीर्थंकरनी आशातना तुं न कर. आ साधुओमां बाळतपस्वी पण जणाय छे, केमके तेओ अनेक गुप्त विषया-

दि दोषोथी दूषित छे, माटे हु तो तेमनो संग मूकीने जाउ छु." सुमति ने के "हु तो मरणांत थता सुधी पण एमनो संग छोडवानो नथी " ते सांभळीने नागिल एकलो जतो रह्यो. पछी सुमतिए ते साधुओ पासे दीक्षा ग्रहण करी ते पांच साधुओमांथी चार साधुओ तो अनेक भवमा परिभ्रमण करी छेवट मो क्षपदने पामशे. अने पांचमो तो अभव्य होवाथी अनंत संसार भटकशे.

श्री गौतम गणधरे जिनेश्वरने पूछ्यु के "हे भगवान ! सुमति भ व्य छे के अभव्य ? " भगवान बोल्या "हे गौतम ! सुमतिनो जीव भव्य छे." गौतमे पूछ्यु "त्यारे ते हाल कई गतिमां छे ? " भगवान बोल्या के "हे गौतम कुशीलीयानी प्रशंसा तथा जिनेश्वरनी आशातना करवाथी ते परमाधार्मिक दे वपणे उत्पन्न थयो छे " गौतमे पूछ्यु "हे भगवान ! आगळ उपर तेनु शु थ शे ?" प्रभु बोल्या "हे गौतम ! तेणे अनंत संसार उपार्जन कर्यो छे तेथी अन तकाळ भटकशे तोपण हु संक्षेपथी कहु छु ते सांभळ —लवण समुद्रमां जे स्थाने गंगा अने सिंधु ए बे मोटी नदीओ प्रवेश करे छे. ते स्थानथी दक्षिण दिशामां जंबूद्वीपनी जगतीनी वेदिकाथी पचावन योजन दूर साडाबार योजन ना विस्तारवाळो अने साडा छ योजन उंचो हस्तिना कुंभस्थळने आकारे एक द्वीप छे ते द्वीपमा काजळ (मेस), कोलसा, मेघ अने भ्रमरनी कांतिने तिरस्कार करे तेवी कांतिवाळी, भयंकर व्याधिने आकारे गुमताळीश गुफाओ छे ते गुफाओमा जळचारी मनुष्यो वसे छे तेओ मद्य पानवाळा मद्यपान करनारा, मांस भक्षण करनारा, मसोना उना जेवी कांतिवाळा, अति दुर्गंधी शरीरवाळा होय छे. तेओ अमोलीकना नामे ओळखाय छे तेओना अंडनी गोळीने च मरी गायना पुछना केशथी गुथीने कान साथे बांधी वेपारीओ समुद्रमा प्रवेश करे छे तेना प्रभावथी तमने कोईपण जळजतुओ उपद्रव करी शकता नथी अने समुद्रमाथी रत्नादिक लईने ते वेपारीओ कुशळ क्षेम बहार आवे छे " ते सांभळीने गौतम स्वामीए पूछ्यु के "हे भगवान ! ते वेपारीओ केवा उपाय थी ते अमोलीकओ ले छे ? " प्रभु बोल्या के "हे गौतम ! लवण समुद्रमा रत्न नामनो द्वीप छे तेमा रत्नना वेपारीओ रहे छे तेओ समुद्रनी समीपे जे स्थान घटीने आकारे वज्रशिलाना संपुट (जे घंट) होय छे, त्या आवीने ते संपुट

उत्तारी तेमा चार महाविकृतिओ (मद्य, मांस, मध ने माखण) भरे छे. पछी जे स्थाने ते अंगगोळीआ रहे छे, ते ठेकाणे तेओ मद्य मांस विगेरे लइने आवे छे. तेओने दूरथीज आवता जोइने ते अंगगोळीआ तेमने हणवा माटे दोडे छे. एटले ते वेपारीओ पगले पगले तेमने खावा माटे मद्य मांसादिकथी भरेला पात्रो मूकता मूकता एकदम नासवा मांडे छे. ते अंगगोळीया पण तेमनी पाछळ मार्गमा पडेला मद्य मांसना पात्रोमाथी मांसादि खाता खाता दोडे छे. छेवटे वज्रशिलाना संपुटो पासे आवता तेमां रहेला मद्यमांसादिक खावा माटे तेनी अंदर तेओ पेसे छे, एटले ते वेपारीओ पोताने स्थाने जाय छे. तेनी अंदर मद्यमांस खाता तेओ पांच, छ, सात, आठ, के दश दिवसो व्यतीत करे छे, तेटलामां ते वेपारीओ बखतर पहेरी खड्ग, भाला विगेरे शस्त्रो धारण करी ते वज्रशिलाना संपुटो पासे आवी सात आठ मंडळ करीने ते संपुटोने घेरी ले छे. पछी तेओए प्रथम जे संपुटोने उघाड्या हता, तेने ढांकी दे छे. तेमाथी जो कदाच एक पण अंगगोळीओ नीकळी जाय तो ते सर्वेने मारी नाखे एवो ते बळवान होय छे. पछी ते वेपारीओ यंत्रवडे ते वज्रनी घंटीमा तेमने दळे छे. परंतु ते अत्यंत बळवान होवाथी एक वर्ष महा वेदना पामीने मरण पामे छे. तेमने दळता तेमना शरीरना अवयवो चूर्ण (लोट)नी जेम बहार नीकळता जाय छे. तेमाथी ते वेपारीओ तेना अंडनी गोळीओ शोधी ले छे पछी ते गोळीओनो उपर कह्या प्रमाणे उपयोग करी तेओ समुद्रमांथी रत्नो ग्रहण करे छे. हे गौतम ! ते सुमतिनो जीव परमाधार्मिकना भवथी चवीने ते अंगगोळिक मनुष्य थशे. त्याथी फरीने परमाधार्मिक थशे, पाछो अंगगोळिक थशे. ए रीते सातभव कर्या पछी अनुक्रमे मत्स्य, वृक्ष, पक्षी, स्त्री, छट्ठी नरके नारकी अने कुष्टी मनुष्य एवा भवोमां अनंतकाळ सुधी परिभ्रमण करीने छेवटे कर्मनो क्षय थये चक्रवर्ती पद पामी प्रव्रज्या ग्रहण करीने मुक्तिए जशे. पेलो नागिल तो तेज भवमा नेमीश्वर तीर्थंकर पासे दीक्षा लइने मुक्तिपद पाम्यो छे. " (आ प्रबंध विस्तारथी महानिशीथना चोथा अध्ययनमाथी जोइ लेवो.)

" आ सुमतिनु दृष्टांत सांभळीने भव्य प्राणीओए कुशीलीयानी प्रशंसानो निरंतर त्याग करवो. केमके तेथी ते दुर्गतिने पाम्यो छे अने शुष्क

समकितथी सुशोभित एवो नागिल तेज भवे सारी सगतिने पाम्यो छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वितीय-
स्तंभे द्वाविंशतितमं व्याख्यानम् ॥ २२ ॥

व्याख्यान २३ मु.



पांचमा मिथ्यादृष्टि संस्तव नामना दूषण विषे.

मिथ्यात्विभिः सहालापो, गोष्ठी परिचयस्तथा ।
दोषोऽयं संस्तवो नाम, सम्यक्त्वं दूषयत्यसौ ॥ १ ॥

भावार्थ—" मिथ्यात्वीओनी साथे वातचीत, गोष्ठी तथा परिचय करवो ते संस्तव नामनो दोष कहेवाय छे ए दोष समकितने दूषित करे छे."

मिथ्यात्वीओनी साथे परिचय करवाथी समकितमां दोष लागे छे. तेमनी क्रीयाओ सांभळवाथी तथा जोवाथी स्याद्वाद मतने नहीं जाणनार मंदबुद्धिवाळा पुरुषने समकितथी भ्रष्ट थवानो संभव रहे छे, परंतु स्याद्वादना संपूर्ण स्वरूपना ज्ञानवाळाने ते दोष लागतो नथी केमके केटलाएक समकितवंतो मिथ्यात्वीओनो परिचय छतां पण गुणनेज ग्रहण करे छे, अने पोताना समकितने उलटा स्फुटतर-अति निर्मळ करे छे. ते उपर धनपाळ कविनु दृष्टांत छे, ते नीचे प्रमाणे—

धनपाळ कविनु दृष्टान्त

धारा नगरीमां लक्ष्मीधर नामे एक ब्राह्मण हतो. तेने धनपाळ अने शोभन नामे बे पुत्रो हता ते ब्राह्मणना घरमां कोइ स्थळे निधि दाटेलो हतो तेनी जरुर पडतां घणी जग्याए शोधतां पण हाथ लाग्यो नहीं. आखा घरमां चोतरफ

दाटी नाख्युं, पण ते निधि देखायो नहीं, तेथी लक्ष्मीधर चिंतातुर थइ गयो. एकदा स्वपर शास्त्रमा प्रवीण श्री जिनेश्वर सूरि धारानगरीमा पधार्या. तेमने लक्ष्मीधरे निधान विषे प्रश्न कर्यो. त्यारे सूरि बोल्या के—" जो तु तारा बे पुत्रोमाथी एक पुत्र अमने आपे, तो तने निधान बतावीए. " ते सूरिना वचनने लक्ष्मीधरे कबूल कर्युं एटले आचार्य महाराजे अहिवलय चक्रने अनुसारे जोइने अमुक स्थाने निधि छे, एम कह्यु त्या खोदवाथी लक्ष्मीधरने ते निधि हाथ लाग्यो. परतु ते कबुलात प्रमाणे पुत्र आपी शक्यो नहीं. पछी केटलेक काळे पोतानो मरण समय नजीक आव्यो, त्यारे तेणे सूरि पासे करेली प्रतिज्ञा स्मरणमा आववाथी खेद युक्त थइ बन्ने पुत्रोने ते प्रतिज्ञा जणावी. ते साभळीने नानो शोभन बोल्यो, " हे पिता ! हु तमने ऋणथी मुक्त करीश. " तेथी लक्ष्मीधरे सतोष पामी पोतानो देह छोडी दीधो. पछी शोभने पोताना स्वजनोने पूछ्या विनाज गुरु पासे जइने दीक्षा ग्रहण करी.

अहीं धारा नगरीमा धनपाळनु बहु मान होवाथी तेनाथी जय पामीने गुरुए मालव देशमा विहार करवो छोडी दीधा, अने साधुओने पण निषेध कर्यो. गुरुनी साथे रहीने शोभन मुनि पण महा विद्वान थया. एकदा शोभनमुनि गोचरी माटे गया हता, ते वखते तेमनु चित्त जिनेश्वरनी स्तुति रचवामा व्यग्र हतु. तेथी कोइ श्रावकने घेरथी आहार लइने जरेलु पात्र झोळीमा मूकवाने बदले पासे पडेलुं पाषाणनु पात्र मूकी गुरु पासे आव्या. आहारने समये झोळीमा पथ्थरनु पात्र जोइने शोभन मुनिनी स्पर्धा करनारा बीजा मुनिओ तेनी हासी करता बोल्या के, " अहो ! आजे शोभनने तो मोटा लाभनो उदय थयो. " गुरुए शोभनने ते विषे पूछ्युं, त्यारे तेणे बनेली हकीकत कहीने पोते करेलां जिनस्तुतिना काव्यो कही बताव्या. ते साभळी गुरु बहुज प्रसन्न थया.

एकदा गुरुए शोभनने कह्यु के, " हे वत्स ! तु धारा नगरीए जइने जैनधर्मना द्वेषी तारा भाइ धनपाळने प्रतिबोध कर. " गुरुनी आज्ञा अंगीकार करीने शोभन मुनि अवंतीए गया. नगरमा पेसता ज धनपाळ सामो मळ्यो. तेणे मुनिने जोइ हास्यथी पूछ्यु के, " गर्दभदन्त भदन्त नमस्ते–हे गधेडाना सरखा दांतवाळा भगवत ! तमने नमस्कार छे. " ते सांभळीने मुनि बोल्या के " मर्कटकास्य वयस्य सुख ते–माकडाना जेवा मुखवाळा हे भाइ!

तु सुची छे ? " आ प्रमाणे मुनिना वचननी चतुराइथी 'मारो पराजय थयो' एम विचारतो धनपाळ बोल्यो के, " कस्य गृहे वसति तव साधो–हे साधु ! तमे क्यां उतरवाना छो ? " मुनिए जवाब आप्यो के, " यस्य रुचिर्यमतिस्य तत्र– जेनी अमने रहेवानी इच्छा होय तेने घेर अमारे रहेवु छे. " ते सांभळीने मुनिने विद्वान जाणी धनपाळ पोताने घेर तेमने तेडी गयो. पछी धनपाळ भोजन करवा बेसनो हतो, तेवामां मुनिनु स्मरण थवाथी तणे मुनिने वहोरवा माटे बोलाव्या ते ज दिवस धनपाळने मारी नाखवाना हेतुथी तेना कोइ शत्रुए तेना भोजनना मोदकमां विष नाखेलु हतु ते मोदक लइने धनपाळ मुनिने वहोरावत्रा लाग्यो ते जोइ मुनि बोल्या के, " आ मोदक अमारे कल्पे नहीं. " धनपाळ बोल्यो, " केम ! शु आमां झेर छे ? " मुनि बोल्या, " हा, एमा झेर ज छे " ते सांभळीने धनपाळे तपास करी, तो तेमां कोइ शत्रुए झेर नाखेलु जणायु. तेथी आश्चर्य पामीने पोताना जीवने बचावनार मुनिने तणे पूछ्यु के " हे मुनि ! आ मोदकमां झेर छे, तेनी तमने शी खबर पडी ? " मुनि बोल्या के—हे धनपाळ !

> दृष्ट्वान्नं सविषं चकोरविहगो धत्ते विरागं दृशो—
> हंसः कूजति सारिका च वमति क्रोशत्यजस्रं शुकः ।
> विष्टां मुञ्चति मर्कटः परभृतः प्राप्नोति मृत्युं क्षणात्
> क्रौञ्चो माद्यति हर्षवांश्च नकुलः प्रीतिं च धत्ते द्विकः ॥१॥

भावार्थ—" विषवाळु अन्न जोइने चकोर पक्षी नेत्रमा विराग धारण करे छे (नेत्र मीचे छे), हंस शब्द करे छे, सारिका वमन करवा लागे छे, पोपट वारंवार आक्रोश करे छे, वानर विष्टा करे छे, कोयल क्षणवारमां मृत्यु पामे छे, क्रौंच पक्षी खुशी थइने नाचे छे, नोळीयो हर्ष पामे छे, अने कागडो प्रसन्न थाय छे. "

आवा चिन्हो थता होवाथी मे आ पांजरामा रहेला पोपटना आक्रोश वडे तेमां विष छे एम धार्यु " ते सांभळीने विस्मय पामता धनपाळे मुनिने वासेल दही लावी ने आपवा मांड्यु त्यारे साधु बोल्या के " आ दहीं त्रण दिवसनु होवाथी अमारे कल्पे नही. " धनपाळे पूछ्यु के, " शु आ दहींमा जीवडा

पडी गया छे ?" मुनिए हा कहीने तेनी खात्री माटे तेमा अळतानो रस नाखी जीवो देखाड्या. पछी धनपाळे मुनिने निर्दोष आहार आप्यो. मुनिना गया पछी धनपाळ भोजन करवा बेठो. भोजन करीने ते मुनि पासे गयो. वातो करतां धनपाळ बोल्यो के "हे मुनि! तमने जोइने मने मारो भाइ वारवार याद आवे छे." मुनि बोल्या के "हे वयस्य! तारी पासे (आ हु) तारो भाइज बेठेलो छे." एम कहीने तेनी प्रतीतिने माटे पूर्वावस्थानी केटलीएक निशानीओ कही बतावी. ते सांभळीने खात्री थवाथी धनपाळ अति आनंद पाम्यो. पछी शोभन मुनि केटलाक दिवस त्यां रही धनपाळने निश्चळ श्रावक बनावी अन्यत्र विहार करी गया.

धनपाळ पंडित भोजराजानी सभामा पांचसो पंडीतोमा मुख्य थयो. एकदा भोज राजा पांचसो पंडीतोने साथे लइने शीकार करवा वनमा गयो. त्यां राजाए एक बाणथी एक हरणने मार्यु तेथी बीजा सर्वे पशुओ चारे बाजु नासवा लाग्या. ते जोइने राजाए कविने पूछ्यु के—

किं कारणं तु कविराज मृगाश्च एते,
व्योम्न्युत्पतन्ति विलिखन्ति भुवं वराहाः ।

"हे कविराज! आ मृगलाओ आकाशमा कूदे छे, अने आ भुंडो (वराहो) पृथ्वीने खोदे छे तेनु शु कारण ?"

एक कविए जवाबमा कह्यु के—

देव त्वदस्त्रचकिता. श्रयितुं प्रयान्ति
एके मृगांकमृगमादिवराहमन्ये ॥ १ ॥

"हे स्वामी! आपना शस्त्रथी भय पामीने आ मृगो चन्द्रमा रहेला मृगनो आश्रय लेवा माटे उंचे कूदे छे, अने आ वराहो (भुंडो) आदि वराहनो आश्रय लेवा माटे पाताळमा जवा इच्छे छे."

पछी राजाए धनपाळ पंडितने कह्यु के "तु मारी मृगयानु वर्णन कर." त्यारे धनपाळ बोल्यो के—

रसातलं यातु यदत्र पौरुषं, कुनीतिरेषाऽशरणो ह्यदोषवान् ।
निहन्यते यद्बलिनातिदुर्बलो, हा हा महाकष्टमराजकं जगत्॥१॥

भावार्थ—" आ वराह एम कहे छे के—हे राजा ! तारं पुरुषार्थ रसातळमां जाओ आ मत्स्य अनिति छे, केमके शरण रहित अने निर्दोष एवा दुर्बळ प्राणी बळवानवडे हणाय छे अहो महा संकट छे, के आ जगत् राजा विनानुं (नधणीयातुं) छे "

पदे पदे सन्ति भटा रणोत्कटा, न तेषु हिंसारस एष पूर्यते।
धिगीदृशं ते नृपते कुविक्रमं, कृपाश्रये यः कृपणे मृगे मयि॥२॥

भावार्थ—" अने आ मृगो एम कहे छे के—हे राजा ! संग्राममां शूरवीर एवा योध्धाओ आ दुनियामां पगले पगले (ठेकाणे ठेकाणे) छे. तोपण तेओने विषे आ तारो हिंसारस पूरो थतो नथी ? के जेथी दयाना स्थानरूप एवा मारे विषे तुं निर्दय थाय छे ? माटे आवा तारा निंद्य पराक्रमने धिक्कार छे "

आ प्रमाणे धनपाळे करेलुं वर्णन सांभळीने राजाए क्रोधयुक्त दृष्टिथी धनपाळने कह्युं के—" अरे धनपाळ ! आ तुं शुं बोले छे ? " त्यारे धनपाळ फरीथी बोल्यो के—" हे स्वामी !

वैरिणोऽपि हि मुच्यन्ते, प्राणान्ते तृणभक्षणात् ।
तृणाहाराः सदैवैते, हन्यन्ते पशवः कथम् ॥ १ ॥

भावार्थ—' ज्यारे प्राण नाशनो वखत आवे, त्यारे शत्रुओ जो तृणनुं भक्षण करे—मुखमां तृण ले तो ते शत्रुओ छतां पण तेमने मूकी देवामां आवे छे, तो पछी आ निरपराधी पशुओ तो निरंतर तृणनोज आहार करनारा छे तेमने शी रीते हणी शकाय ? "

ते सांभळीने राजाना हृदयमां दया उत्पन्न थइ तेथी तेणे पोतानुं धनुष तथा बाण भांगी नाखीने शिकार न करवानी प्रतिज्ञा करी. वनथी पाछा फरीने नगर तरफ जतां राजाए कणवेन सरोवर ते जोइने राजाना कहेवाथी एक कविए ते सरोवरनुं वर्णन कर्युं के—

हंसैर्युक्तः प्रशस्तैस्तरलितकमलैः प्राप्तरंगैस्तरंगै-
र्नीरैरन्तर्गभीरैश्चटुलबककुलग्रासलीनैश्च मीनैः ।
पालीरूढद्रुमालीतलसुतशयितस्त्रीप्रणीतैश्च गीतै-
र्भाति प्रक्रीडनाद्भिः क्षितिप तव चलच्चक्रवाकस्तटाकः ॥

भावार्थ—" प्रशस्त हंसोए करीने, चपळ कमळोए करीने, रंगने प्राप्त थयेला तरंगोए करीने, गंभीर जळवडे करीने, चंचळ बगलाना समूहना कवळ रूप थता मत्स्यो वडे करीने, पाळ उपर उगेला वृक्षोतळे सुवाडेला बाळकोने हींचकावती स्त्रीओना मनोहर गीतोवडे करीने तथा बीजी अनेक क्रीडाओए करीने युक्त अने चक्रवाक पक्षीओना मिथुन जेमां रहेला छे एवुं आ सरोवर अत्यंत शोभा आपे छे. "

पछी राजानी आज्ञाथी धनपाळ बोल्यो के—" हे राजा !

एषा तटाकमिषतो वरदानशाला,
मत्स्यादयो रसवतीप्रगुणा बभूव ।
पात्राणि यत्र बकसारसचक्रवाका.,
पुण्यं कियद्भवति तत्र वयं न विद्मः ॥

भावार्थ—" आ सरोवरना मीषथी श्रेष्ठ दानशाळा छे, तेमां मत्स्य विगेरे जळजंतुओ रूपी पुष्कळ भोजन तैयार छे, तेमां पात्र रूपे (खानारा) बगला, सारस अने चक्रवाक विगेरे पक्षीओ छे, तो आने विषे पुण्य केटलुं थतुं हशे, ते अमे जाणता नथी. "

ते सांभळीने राजाए क्रोधयुक्त दृष्टिथी धनपाळ सामुं जोयुं. पछी सरोवरथी नगर तरफ जता मार्गमां राजानो यज्ञमंडप आव्यो. ते मंडपमां एक थांभले केटलाएक पशुओ बांधेला हता ते पशुओनो पोकार सांभळीने राजाए कविओने पूछ्युं के—" आ पशुओ शुं कहे छे ? " त्यारे कोइ एक कवि बोल्यो के— " हे राजा ! आ पशुओ कहे छे के—

उपदेशप्रासाद भाषांतर—स्तंभ ७ मो.

अस्मान् घ्नन्तु पदे पदे बलिकृते दग्धाश्च जग्धैस्तृणै-
रस्मत्कुक्षिरक्ष दक्षमनुजैर्नामोच्यते पश्चिति ।
जानीमो न कलत्रभेदविकला सत्क्षुत्पिपासा वय
तेनास्मानय देव देवसदन प्रार्थ्यामहे स्वामिति ॥ १ ॥

भावार्थ—" अमने पगले पगले बलिदानने माटे हणो, केमके अमे तृण भक्षणथी बळी रह्या छीए, अमारी कुक्षि भराती नथी, अमाने डाह्या माणस पण पशु कहीने बोलावे छे, अमे क्षुधा तृषाथी आकुळ थइने स्त्री, माता विगेरे नो भेद पण जाणता नथी तथी हे स्वामी ! अमने देवलोकमा लइ जाओ, एवी अमारी तमने प्रार्थना छे "

पछी राजानी आज्ञाथी धनपाल बोल्यो के—

नाहं स्वर्गफलोपभोगतृषितो नाभ्यर्थितस्त्व मया
संतुष्टस्तृणभक्षणेन सतत साधो न युक्त तव ।
स्वर्गं यान्ति यदि त्वया विनिहता यज्ञे ध्रुव प्राणिनो
यज्ञ किं न करोषि मातृपितृभि पुत्रैस्तथा बान्धवै ॥ १ ॥

भावार्थ—" आ पशुओ कहे छे के ' हे राजा ! मने स्वर्गना भोग भोगववानी तृष्णा नथी, तेमज तेने माटे म तमारी पासे प्रार्थना पण करी नथी, हु तो निरंतर तृणना भक्षणथी संतुष्ट छु माटे तमारे मने हणवो योग्य नथी जो कदाच तमारा यज्ञ माटे हणेला प्राणीओ अवश्य स्वर्ग जता होय, तो तम माता, पिता, पुत्रो अने बाधवो वडे यज्ञ केम करता नथी ?,"

आ प्रमाणे सांभळीने राजाए क्रोधथी धनपालने कह्यु के " अरे ! आ तु शु बोले छे ? " त्यारे फरी धनपाळ नि शकपणे बोल्यो क " हे स्वामी ! हु सत्य कहु छु केमके—

यूप कृत्वा पशून् हत्वा, कृत्वा रुधिरकर्दमम् ।
यद्येव गम्यते स्वर्गे, नरके केन गम्यते ॥

भावार्थ—" हे राजा ! यज्ञस्तंभ रोपीने, पशुओनो वध करीने तथा रुधिरनो कीचड करीने जो कदाच स्वर्गे जवातु होय, तो पछी नरके कोण जशे ? "

हे राजा ! मांसमा लुब्ध थयेला आ राक्षस जेवा ब्राह्मणोए तमने आवा यज्ञनी प्रशंसा करीने कुमार्गे दोर्या छे. आवा पशु वध करवामा कदी पण धर्म होय ज नहीं , केवळ महा पापज होय छे. शास्त्रमा पण खरा यज्ञनु स्वरूप तो एवुंज बताव्यु छे के—

सत्यं यूपं तपो ह्यग्निः, कर्माणि समिधो मम ।
अहिंसामाहुतिं दद्यादेवं यज्ञ सतां मत. ॥ ३ ॥

भावार्थ—" सत्यरूपी यज्ञस्तंभ करीने तप रुपी अग्नि सळगावीने तेमां कर्मरुपी समिध् (लाकडा) नाखी अहिंसारूपी आहुति देवी. ए खरो यज्ञ सत्पुरुषोए मानेलो छे. "

स्वर्गः कर्तृक्रियाद्रव्यविनाशे यदि यज्विनाम् ।
तदा दावाग्निदग्धाना, फल स्याद्भूरि भूरुहाम् ॥ ४ ॥

भावार्थ—" जो कदाच यज्ञकर्त्तानी क्रियाना अने द्रव्यना विनाशने विषे यज्ञाचार्यने स्वर्ग प्राप्ति थती होय तो दावानळथी बळेला वृक्षोने घणु फळ मळवु जोइए. "

निहतस्य पशोर्यज्ञे, स्वर्गप्राप्तिर्यदीष्यते ।
स्वपिता यजमानेन, किं तु तस्मान्न हन्यते ॥ ५ ॥

भावार्थ—" जो कदाच यज्ञमा हणेला पशुने स्वर्ग प्राप्ति थाय छे, तेटला माटे ते इच्छवामा आवतो होय तो ते यज्ञमा यजमान पोतानाज पिताने केम हणतो नथी. "

आ प्रमाणे यज्ञनी निंदा सांभळीने राजाए धनपाळ सामु वक्र दृष्टिथी जोइ तेना आखा कुटुंबनो निग्रह करवा विचार कर्यो. ते अभिप्राय धनपाळे जाण्यो. तो पण तेणे पोतानो सत्य बोलवानो नियम छोड्यो नहीं.

आगळ चालतां राजा कोइ शिवालयमां गयो. त्यां एक धनपाळ सि
बीजा सर्वेए महादेवने नमस्कार कर्या त्यारे राजाए धनपाळने पूछ्युं के 'हे क
पाळ ! तुं आ महादेवने केम नमस्कार करतो नथी ? त्यारे तेणे निःशंकपणे ज
वाब आप्यो के—

जिनेन्द्रचन्द्रप्रणिपातलालस, मया शिरोऽन्यस्य न नाम नाम्यते।
गजेन्द्रगल्लस्थलदानलालस, शुनीमुखे नालिकुलं निलीयते ॥१॥

भावार्थ—" हे राजा ! जिनेंद्ररूपी चंद्रने नमस्कार करवामां लालसा
वाळुं मारुं मस्तक हुं बीजा कोइ पासे नमावतो नथी. कारण के मदोन्मत्त हस्तीना
गंडस्थळमांथी झरतां मदमां लालसा वाळो भ्रमरनो समूह कदापि कुतरीना मुख
मांथी नीकळती लाळमां लीन थतो नथी। "

ते सांभळीने राजा तेना पर विशेष क्रोध युक्त थयो. आगळ चालतां ते
सर्वे पुरना द्वार पासे आव्या त्यां राजाए आखा शरीरे कंपती एक डोशीने एक
बाळकीना हस्तनुं अवलंबन करीने सन्मुख आवती जोइ. तेथी तेणे पंडितो
ने पूछ्युं के " आ वृद्धा हाथ अने मस्तक केम धुणावे छे ? " त्यारे एक पंडि
बोल्यो के—

करकम्पावइ सीर धुणे, बुड्ढी काइं कहेइ ।
हकारता यमभडा, ननकार करेइ ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे राजा आप कहो छो के—आ वृद्धा हाथ कंपावे छे, अ
ने शीर धुणावे छे, ते शुं कहे छे ? (तेनो उत्तर) ते तेने हकारता एवा यमना
दूतोने 'ना, ना, हुं नहीं आवुं ' एम कहे छे "

ते वखते त्रीजो कोइ पंडित बोल्यो के—

जरायष्टिप्रहारेण, कुब्जीभूता हि वामना ।
गततारुण्यमाणिक्य, निरीक्षते पदे पदे ॥ १ ॥

भावार्थ—" वृद्धावस्थारूपी लाकडीना प्रहारथी

आ वामन-स्त्री पोताना चाल्या गयेला युवावस्था रुपी माणिक्यने पगले पगले शोधे छे."

ते सांभळीने राजाए धनपाळने कह्युं के—"हे वक्रमतिवाळा धनपाळ! आ वृद्धा स्त्री आ बालिकाने शुं पूछे छे?" त्यारे राजानो क्रोध शान्त करवा माटे धनपाळ बोल्यो के—"हे स्वामी! आ बालिका प्रत्ये आ वृद्धा तेना प्रश्नोना उत्तर कहे छे:—

किं नन्दी किं मुरारि किमु रतिरमणः किं नलः किं कुबेरः,
किं वा विद्याधरोऽसौ किमुत सुरपतिः किं विधुः किं विधाता।
नायं नायं न चायं न खलु न हि न वा नापि नासौ न चैष
क्रीडां कर्तुं प्रवृत्तः स्वयमिह हि हले भूपतिर्भोजदेवः॥ १॥

भावार्थ—"कोईने बालिका पूछे छे के—'हे हले! शुं आ महादेव छे? शुं विष्णु छे? शुं कामदेव छे? शुं नळ राजा छे? शुं कुबेर छे? शुं ए विद्याधर छे? शुं इन्द्र छे? शुं चन्द्र छे? के शुं ते ब्रह्मा छे?' कोई कहे छे के—ए नहीं, ए नहीं, ए नहीं, नक्की नहीं, ना, ना, ना, ना, तेओमांथी तो आ कोइज नथी, (केमके तेओ सर्वे तो कलंकवाळा छे[1]) परंतु आतो क्रीडा करवा प्रवर्तेला भूपति भोजदेव छे."

आ काव्य सांभळीने भोज राजा प्रसन्न थयो, अने तेणे धनपाळने कह्युं के—"हे पंडित, हुं प्रसन्न थयो छुं माटे वरदान माग" ते सांभळीने धनपाळ बोल्यो के—"हे स्वामी! जो आप प्रसन्न थया हो, तो मारी लीधेली वस्तु मने पाछी आपो." राजाए कह्युं के—"मैं तो तारं कांइ लीधुं नथी." धनपाळ बोल्यो—"हे नाथ! तमे शिकारमां हरिणीनो वध कर्यो, ते वखते मारुं काव्य

1 नंदी शब्दे आ नंदराजा छे? ना, ते तो महालोभी हतो आ तो उदार छे. मुरारी के० कृष्ण छे? ना ते तो काळा हता, आ उज्वळ छे रतिना स्वामी कामदेव छे? ना, ते तो अंग विनानो छे, आ शुभ देहवाळा छे नळ राजा छे? ना, ते तो जुगारी हतो, आतो व्यसन रहित छे कुबेर छे? नहीं, ते तो पराधिन छे, आ स्वाधिन छे. विद्याधर छे? ना ते तो आकाशमां फरे छे, आ तो जमीन पर विचरे छे. सुरपति के० इंद्र छे? ना ते तो श्रापित छे आ श्राप रहित छे विधु के० चंद्र छे? ना ते तो कलंकी छे, आ निष्कलंक छे. ब्रह्मा छे? ना ते तो वृद्ध छे, आ युवान छे

सांभळीने तमने क्रोध थतां मारी एक आंख लेवानुं तमे धार्युं हतुं, अने वर्णन थवते बीजी आंख लेवानुं धार्युं हतुं, त्यार पछी सर्व कुटुंबनो निग्रह धार्युं हतुं, माटे भावथी ग्रहण करेला मारा बे नेत्रो मने पाछा आपो. ते सांभळीने राजाए प्रसन्न थइ धनपाळने क्रोड द्रव्य आप्युं अने कह्युं के—" तुं श्रावक थवाथी सर्वज्ञपुत्र थयो छे ते न्याययुक्त छे "

एकदा धनपाळनुं चित्त व्यग्र जोइने भोजराजाए तेनुं कारण पूछ्युं, त्यारे ते बोल्यो के " हुं हालमां युगादीशनुं चरित्र रचुं छुं, तेथी मनमां व्यग्रता रहे छे. " पछी ते चरित्र पूर्ण थयुं त्यारे राजाए तेनुं श्रवण करवा मांड्युं. तेनो अद्भुत रस सांभळतां राजाए विचार्युं के " आनो अर्थरूप रस भूमिपर न पडो. " एम धारीने ते पुस्तकनी नीचे एक मोटो सुवर्णनो थाळ राखाव्यो एवी रीते ते चरित्रना रसनुं पान करतां ते राजाने रात दिवसनी पण खबर पडी नहीं. ते चरित्र पूर्ण सांभळ्या पछी राजाए धनपाळने कह्युं के "हे पंडित ! जो तुं आ प्रथम विनीता नगरीने स्थाने अवन्ती नगरी, भरतचक्रीने स्थाने मारुं नाम अने आदीश्वरने स्थाने महादेवनुं नाम स्थापन करे, तो आ ग्रंथ सुवर्ण अने सुगन्धी जेवं अति श्रेष्ठ थाय. अने जो तुं तेम करे, तो हुं तने एक करोड सोनामहोर आपुं. ते सांभळीने धनपाळ बोल्यो के—

मेरुसर्षपयोर्हंसकाकयो खरताक्ष्यर्योः ।
अस्त्यन्तरमनन्त्यादेरयोध्यादेश्च भूपते ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे राजा ! मेरु पर्वत अने सरसवना कणमां, हंस अने कागडामां तथा गधेडा अने गरुडमां जेटलुं अन्तर छे, तेटलुं अंतर (अनुक्रमे) अवंति, तुं अने महादेव तथा अयोध्या, भरत अने आदीश्वरमां छे. "

ते सांभळीने अति क्रोधयुक्त थइ राजा बोल्यो के " अरे धनपाळ ! आवा वचन बोलतां तारी जिह्वाना सहस्र कटका केम न थया ? " ते सांभळी धनपाळ निःशंकपणे बोल्यो के—

हे दोमुहय निरक्खर, लोहमइय नाराय किंत्ति भणिमो ।
गुंजा हि समं कणय, तुलंत्र न गओसि पायाल ॥ १ ॥

भावार्थ—"बे मुखवाळा,[1] निरक्षर[2] अने लोहमतिवाळा[3] हे नाराच (आजवुं) असे ते तने केटलु कहींये? तें चणोठीनी साथे सुवर्णने तोळ्यु! न करता तुं पातालमा केम न गयु?"

आ प्रमाणे पोतानी निंदा सांभळीने राजाए अति क्रोधथी ते ग्रंथने बाळी नाख्यो.

धनपाळ राजाना भयथी अने ग्रंथना नाशथी उद्वेग पामी शोक सहित घर आव्यो. त्या तेनी तिलकमजरी नामनी पुत्रीए पूछ्युं के "हे पिता! तमे आज शोकातुर केम छो?" त्यारे पंडिते तेणीने सर्व वृत्तान्त कह्यु. पुत्री बोली "हे पिता! फिकर करो नहीं. मारे मुखे ते आखो ग्रंथ छे, आप लखी ल्यो." ते सांभळीने हर्ष पामी पंडीते ते ग्रंथ लखी लीधो, अने पुत्रीना नामनी याद-गिरिमाटे तेणे ते ग्रंथनु नाम तिलकमंजरी राख्यु. पछी राजाना भयथी धनपाळ पोताना कुटुंब सहित अन्य ग्रामे जइने रह्यो.

एकदा भोजराजानी सभामा कोइ पंडिते आवी सर्व विद्वानोनो पराजय कर्यो. तेथी खेद पामीने राजाए जाते जइ धनपाळने मनावी आदर सत्कार पूर्वक पोतानी नगरीमा आण्यो. धनपाळने आवेलो सांभळताज ते विदेशी पंडित भय पामीने रात्रीने समये गुप्त रीते नाशी गयो. लोकमां जैनधर्मनी घणी प्रशंसा थइ. धनपाळ राजानी पासे सुखेथी रह्यो अने धर्मनु आराधन करी अंते स्वर्गे गयो.

"द्रव्यथी मिथ्यात्वीओनो परिचय छता पण भावथी पापसंगना नाशनी स्पृहावाळा धनपाळे सर्व दोष रहित समकितने दृढ धारण कर्यु तेवी रीते सर्व जीवोए करवु."

१ आजवाने बे छागडा, राजाने वाल्दु कोइक अने चालतु काम ए बे मुख २ आजवुं अने राजा बन्ने निरक्षर एटले मर्ख. ३ आजवाने लोह—लोढाना मति—डार्या, राजाने लोह—लोभनी मति—बुद्धि. वाणिनो अत्यन्त लोभ.

॥ इत्युपदेशप्रासादे द्वितीयस्तंभे त्रयोविंशतितम
व्याख्यानम् ॥ २३ ॥

छठ्ठो प्रभावक संबंधी अधिकार

(पहेला प्रवचन प्रभावक विषे).

कालोचितं विजानाति, यो जिनोदितमागमम् ।
स प्रावचनिको ज्ञेयस्तीर्थं शुभे प्रवर्तक ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे मुनि जिनप्ररूपित आगमनी समयने अनुसारे प्र-
रूपणा करी जाणे, तथा तीर्थने शुभ मार्गे प्रवर्तावे, ते प्रवचन प्रभावक क-
हेवाय छे. "

काळ एटले सुषमा दुःषमादिक[1] समयने विषे यथायोग्य जिनभणित सि-
द्धांतने गौतमादिकनी जेम जे सूरि जाणे ते तीर्थ एटले चतुर्विध संघने शुभ मा-
र्गमां (धर्म मार्गमां) प्रवर्तावी शके तेने प्रवचन प्रभावक जाणवो. तेनो भावार्थ
वज्रस्वामीना चरित्रथी समजी शकाय तेम छे ते आ प्रमाणे—

वज्रस्वामीनु दृष्टान्त

यः पालनस्थः श्रुतमध्यगीष्ट, षाण्मासिको यश्चरिताभिलाषी ।
त्रिवार्षिकः संघममानयच्च , श्रीवज्रनेता न कथं नमस्य ॥१॥

भावार्थ—" जेणे पारणामां सुता सुता श्रुतनो अभ्यास कर्यो, जे छ
मासनी उमरे चारित्र लेवाना अभिलाषी थया, अने त्रण वर्षनी वये जेणे संघ-
मान आप्यु, ते वज्रस्वामी केम नमस्कार करवा लायक न होय ? "

तुंबवन गामना रहीश धनगिरि नामना श्रेष्ठीए पोतानी सुनंदा नामनी
गर्भवती स्त्रीने मूकीने दीक्षा ग्रहण करी. पछी समय आवतां सुनंदाए पु-
त्र प्रसव्यो. प्रसव समयेज माता पासे रहेली स्त्रीओना मुखथी पितानी दीक्षा

---

[1] चोथा आरो विगेरे.

वात सांभळीने तेने जाति स्मरण थयुं. तेथी माताने उद्वेग पमाडवा माटे ते निरंतर रडवा लाग्यो तेना रडवाथी अत्यत खेद पामेली सुनंदाए कायर थइने विचार्यु के " जो आना पिता अहीं आवे, तो आ बाळक तेने आपीने हुं सुखे रहुं. " तेवा समयमा धनगिरि सहित सिंहगुरु ते गामे पधार्या. मध्याह्न समये धनगिरिए आहार लेवा जवा माटे गुरुनी आज्ञा मागी. त्यारे गुरुए कर्युं के— "आजे तने जे काइ सचित्त क अचित्त मळे ते विना विचार्ये तारे ग्रहण करवु." धनगिरि गाममा जइ गोचरी माटे फरता अनुक्रमे सुनंदाने घेर जइ चड्या. ते पोताना पतिने जोइने बोली के—" हे पूज्य ! आ तमारा पुत्रने तमे लइ जाओ." एम कहीने तेणीए ते बाळकने साधुना पात्रमा मूक्यो. एटले तेणीने धर्मलाभ आपीने धनगिरि गुरु पासे लइ आव्या. दूरथी वज्र जेवा भारवाळी झोळी लइने आवता जोइने गुरुए ते झोळीमाथी बाळकने काढीने पोताना उत्संगमां लइ तेनु वज्रकुमार नाम राख्यु पछी गुरुए ते बाळकने साध्वीना उपाश्रयमां सोंप्यो. त्यां पाळणु बांधीने श्राविकाओ तेनु पालण पोषण करवा लागी. ते बाळक पालणामा सुतो सुतो साध्वीओ श्रुतनो अभ्यास करती हती तेनु श्रवण करवाथीज अगीयार अग शीखी गयो. अनुक्रमे ते त्रण वर्षनो थयो त्यारे तेना पिता तथा गुरु विहारना क्रमे फरीथी त्या आव्या. ते अवसरे वज्रकुमारनी माता सुनन्दाए आवीने मुनि पासे पोतानो पुत्र माग्यो पण तेमणे पाछो आप्यो नहीं. एटले सुनदाए राजा पासे फरीयाद करी. त्यारे राजाए ठराव कर्यो के—" ते बाळकनो पिता तथा तेनी माता तेने सभानी समक्ष बोलावे, तेमा जेनी पासे ते जाय, तेने ते पुत्र स्वाधीन करवो. " पछी वज्रकुमारने सभामां बोलाव्यो, तेनी एक बाजुए थोडे दूर तेना पिताने अने बीजी बाजुए तेनी माताने बेसाड्या. पछी हाथमा द्राक्ष, साकर, रमकडा विगेरे राखीने तेने बतावती सुनंदा बोली के— "हे पुत्र ! अहीं आव, अहीं आव, आ ले. " ए सांभळीने लोभ पमाडती माताने जोइ वज्र कुमारे विचार्यु के—" माता ए तीर्थ रूप छे. परंतु ते आ भवमां ज सुख आपी शके छे, अने गुरु तो दरेक भवमा सुख आपे छे. " एम विचारीने ते तेनी पासे न गयो. पछी तेना पिताए पोतानो ओघो (रजोहरण) बतावीने कयु के—" आ ले " एटले ते दोडीने त्या गयो अने पितानो ओघो लीधो. तेथी ते पुत्र तेमने आपवानो निश्चय थयो. एटले सुनंदाए पण

वैराग्य पामीने दीक्षा लीधी. वज्र कुमारे पण आठ वर्षनी वये चारित्र अंगीकार कर्यु.

एकदा विहार करता मार्गमां सर्व साधुओ सहित वज्रस्वामीनी परीक्षा करवा माटे तेना पूर्वभवनो मित्र के जे देवता थयो हतो तेणे जळनी वृष्टि करी. निरंतर वरसाद पडवाथी सर्व साधुओ वृक्ष नीचे उभा रही स्वाध्याय ध्यान करवा लाग्या. पछी ते देवे मोटो सार्थ विकुर्वीने त्यां आवी पडाव नाख्यो. अने आहारने माटे मुनिओ पासे विनंति करवा गयो त्यारे गुरु बोल्या के " बीजा कोइने आ वखते आहारनी इच्छा नथी परंतु आ वज्रमुनि बाळक छे, माटे तेने लइ जाओ. " ए प्रमाणे गुरुनी आज्ञा थता वज्रमुनि ते सार्थवाहनी साथे आहार लेवा गया. ते देव घेबर विकुर्वीने मुनिने आपवा लाग्यो त्यारे मुनिए तेनी सामे जोयुं. तो तेनी अनिमेष दृष्टिथी तेने देवता धारी आहार लीधो नहीं ते जोइने प्रसन्न थइ ते देव बोल्यो के " हे मुनि ! हुं तमारो पूर्व भवनो मित्र देवता छु. तमारा चारित्रनी परीक्षा करवा माटे आव्यो छु. पण तमारं चारित्र चलित करवा मारी शक्ति नथी. माटे हुं तमारापर प्रसन्न थयो छु तेथी तमे काइपण वरदान मागो. " ते सांभळीने वज्रमुनिए कह्यु के " मारे काइपण इच्छा नथी. " ते सांभळीने अधिक प्रसन्न थयेला ते देवे तेमने वैक्रियलब्धि आपी फरीथी बीजी वार परीक्षा करीने आकाशगामिनी विद्या आपी. एवी रीते वज्रमुनिने अनेक लब्धिओ प्राप्त थइ

अनुक्रमे वज्रमुनि आठ वर्षना थया, त्यारे एक वखते गुरु बहिर्भूमिए गया हता अने बीजा मुनिओ गोचरी माटे गया हता. ते वखते वज्रमुनि सर्व साधुओनी उपधी पासे लइ तेओ जे जे सूत्र जाणता हता तेनी तेने उद्देशीने वाचना आपवा लाग्या बहिर्भूमिथी आवेला गुरुए ते मधु साभळ्यु तेथी तेने महा विद्वान जाणीने समग्र शास्त्रनो अभ्यास कराव्यो. पछी तेने योग्य जाणीने सूरिपद आप्यु ते वज्रस्वामीनी वाणीथी प्रतिबोध पामीने पाचसे मुनिओ तेमना परिवारमा थया अने बीजा पण अनेक भव्य मनुष्योए व्रत ग्रहण कर्या

पाटलीपुरमा धनश्रेष्ठीने रुक्मिणी नामे पुत्री हती तेणीए साध्वीओना मुखथी वज्रस्वामीना गुणोनी प्रशसा सांभळीने " आ भवमा मारे वज्रकुमारनेज पति करवो, ते सिवाय बीजा कोइने वरवु नहीं " एवी प्रतिज्ञा करी एकदा व-

ज्रस्वामी पाटलीपुर पधार्या. ते खबर सांजळीने धनश्रेष्ठी एक करोड द्रव्य सहित रुक्मिणीने लइ गुरु पासे जइ तेमने वंदना करीने बोल्यो के "हे सूरि! आ करोड द्रव्य सहित तमे आ मारी पुत्रीने ग्रहण करो (परणो) नहीं तो ते मरण पामशे" वज्रस्वामी बोल्या के "अमे साधुओ मलमलिन गात्रवाळी स्त्रीओनी इच्छा करता नथी." इत्यादि वचनो वडे रुक्मिणीने धर्मोपदेश आप्यो. जेथी तेणीए वैराग्य पामीने तरतज तेमनी पासे दीक्षा लीधी.

एकदा बार वर्षी दुष्काळ पडवाथी समग्र संघ अत्यंत व्याकुळ थयो. ते जोइने वज्रस्वामी समग्र संघने एक कपडापर बेसाडीने आकाशगामिनी विद्याना बळथी सुभिक्षा पुरी (सुकाळवाळी नगरी) ए लइ गया. त्यां रहीने दिवसो निर्गमन करता पर्युषण पर्व आव्या. ते वखते ते नगरीनो राजा बौद्ध होवाथी तेणे जिनालयने माटे पुष्प आपवानो निषेध कर्यो. तेथी ते वात सघे मळीने वज्रस्वामीने कही. एटले सूरि आकाशगामिनी विद्यावडे माहेश्वरी पुरीए गया. त्यां पोताना पितानो मित्र एक माळी हतो, तेने पर्युषणना उत्सवनी वात कहीने पुष्पोनी मागणी करी. तेणे एकवीश करोड पुष्पो एकठा करीने आप्या. ते लइने सूरि हिमवान पर्वतपर गया. त्यां लक्ष्मी देवीए मोटु कमळ आप्यु ते लइ त्यांथी हुताशन यक्षना वनमां आवता तेणे घणा पुष्पो आप्या. ते सर्व पुष्पो लइ पूर्वभवना मित्र जृंभक देवे रचेला विमानमां बेसीने सूरि आकाश मार्गे सुभिक्षा पुरीमां आव्या. पछी ते पुष्पोघ्रो महा महोत्सव कर्यो. जिनधर्मनी प्रभावना थइ. ते जोइ आश्चर्य पामेलो बौद्ध राजा पण श्रावक थयो

एकदा वज्रस्वामीना शरीरमा कफनो व्याधि थयो. तेथी भोजन कर्या पछी खावा माटे एक सूठनो ककडो तेमणे कानपर राखी मूक्यो. परंतु भोजन कर्या पछी ते खावानु भूली गया. ते ककडो प्रतिक्रमण समये कानपरथी पृथ्वी पर पड्यो. ते जोइने "आवा असंभवित प्रमाद थवाथी हवे मृत्यु समय नजीक छे" एम निश्चय करी सूरिए पोताना शिष्य वज्रसेनने सूरिपदे स्थापन कर्या अने पोते रथावर्त गिरिपर जइ अनशन ग्रहण करीने स्वर्गे गया

श्री वज्रसेनसूरि विहार करता सोपारकपुरे गया त्यां जिनदत्त नामे एक श्रावक रहेतो हतो. त्यां दुकाळने लीधे धान्य एटलु बधु मोंघु हतु के—ते चार माणसोने माटे पण एक लाख द्रव्यनो भोजन खर्च थतो हतो. ते श्रेष्ठीए एक लक्ष-

द्रव्यनी हानिथी चमावी हती तेमा विष नाखी खाइ जइने तेणे मरवानो निश्चय कर्यो हतो. तेज समये सूरि तेनेज घेर गोचरी माटे गया. गुरुने वंदना करीने श्रेष्ठी बोल्यो के " हे गुरु ! आजे एक लक्षद्रव्यनु आटलु धान्य मळ्युं छे तेथी ते रां धी तेमा विष नाखी ते अन्नतु भक्षण करीने कुटुंब सहित मृत्यु पामवानो में विचार कर्यो छे, कारणके आवा दुष्काळमा जीववा करता मरवु सारु छे. " ते सांभळी गुरु बोल्या के " हे श्रेष्ठी ! काले पुष्कळ धान्य आ नगरीमा आवशे. अने दुष्काळनो नाश थशे माटे तु मरण पामवानो विचार करीश नहीं." गुरुना कहेवा प्रमाणे बीजेज दिवसे चारे तरफथी पुष्कळ धान्य आव्यु. सर्वत्र सुकाळ थयो. ते जोइने श्रेष्ठीए वैराग्य पामी गुरु पासे दीक्षा लीधी. वज्रसेन सूरि पण चार गणनु स्थापन करीने जिनशासनना प्रभावक थया. (आ चरित्र वधारे विस्तारथी आवश्यक निर्युक्तिनी मोटी टीकामा आपेलं छे त्यांथी जाणी लेवु.)

" आ श्री वज्रस्वामीना रम्य चरित्रने हृदयरुपी कमलमा भ्रमरनी जेम धारण करीने समग्र सद्गुणोना सारभूत सिध्धान्तना पाठने विषे भव्य मनुष्योए निरतर प्रयास करवो "

॥ इत्युपदेशप्रासादे द्वितीयस्तंभे चतुर्विंशतितम व्याख्यानम् ॥ २४ ॥

व्याख्यान २५ मु.

बीजा धर्मकथक नामना प्रभावक विषे

व्याख्यानावसरे लब्धि, य प्रयुज्योपदेशक ।
स धर्मकथको नामा, द्वितीयोऽपि प्रभावक ॥ १ ॥

भावार्थ—" व्याख्यानने अवसरे जे मुनि लब्धिनो उपयोग करी उपदेश आपे छे, ते धर्मकथक नामना बीजा प्रभावक कहेवाय छे. "

व्याख्यानमा लब्धि एटले अनुयोगने समये पोतानी शक्ति प्रगट करीने हेतु, युक्ति अने दृष्टान्तोवडे बीजाने जे प्रतिबोध करे छे तेज सूरि धर्मकथा कहेवाने योग्य छे. परतु जे सूरि घरमा रहेला दीवानी जेम मात्र पोतानेज प्रकाश करे छे ते धर्मकथक थइ शकता नथी. आ प्रसग उपर सर्वज्ञसूरिनु दृष्टात छे ते आ प्रमाणे—

सर्वज्ञसूरिनुं दृष्टान्त

श्रीपुरमां श्रीपति नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो. ते समकितने धारण करनारो हतो. तेने कमळ नामे एक पुत्र हतो. ते धर्मथी पराङमुख अने साते व्यसनमा तत्पर हतो. देव गुरुनु दर्शनमात्र पण ते करतो नहीं. तेने एकदा तेना पिताए उपदेश आप्यो के—

बोहत्तरीकलापंडिया वि पुरिसा अपंडिया चेव ।
सव्वकलाण वि पवरं जे धम्मकलं न याणंति ॥ १ ॥

भावार्थ—' जे पुरुषो सर्व कळाओमा प्रधान एवी धर्मकळाने जाणता नथी तेओ बहोंतेर कळाओमा पंडित होय तो पण तेमने अपंडित (मूर्ख)ज जाणवा. "

ते सांभळीने कमळ बोल्यो के—" हे पिता ! जीव क्या छे ? स्वर्ग क्या छे ? अने मोक्ष पण क्या छे ? ते सर्व आकाशने आलिंगन करवा जेवु अने ससलाना शींगडा जेवु केवळ असत्यज छे. तप, संयम विगेरे क्रियाओनी तमे प्रशसा करो छो, पण ते तो केवळ अज्ञानी मनुष्योने छेतरवा माटे ज कहेल छे " इत्यादि कहीने कमळ गाममा फरवा चाल्यो गयो.

एकदा ते नगरमा शकर नामना सूरि आव्या. तेनी पासे श्रेष्ठी कमळने लइने गयो. श्रेष्ठीए गुरुने वंदना करी कमळने बोध आपवा कह्युं. त्यारे गुरुए कमळने कह्यु—" अमे धर्मोपदेश आपीये छीये. तेमां तारे वच्चे बोलवुं नहीं, आमतेम जोवु नहीं, मात्र अमारा सन्मुख जोइने एक चित्ते श्रवण करवु " एम कहीने गुरुए धर्मकथा कहेवा माडी. प्राते कमळने पूछ्युं के—" हे वत्स !

तु काइ समज्यो ? तें काइ जाणयु के नहीं ? " ते बोल्यो—" हे पूज्य ! में का जाणयु, अने काइक न पण जाणयुं केमके तमे बोलता हता, ते वखत कंठनी घंटडी ऊंची नीची थती हती, तेने में एक सो ने आठ वार तो गणी, पण केटलाएक गमडम वाळा शब्दो तमे शीघ्रताथी बोल्या, ते वखते ते घंटडी केटली वार ऊंची नीची थइ, तेनी संख्या हु करी शक्यो नथी " ते सांभळीने सर्व सभाजनो हसवा लाग्या के—" अहो ! आ श्रोता बहु रूडो जणाय छे ! " गुरुए पण तेने अयोग्य धारीने तेनी उपेक्षा करी.

वळी कोइ एक दिवसे बीजा सूरि त्यां आव्या. तेनी पासे श्रेष्ठीए कमळनु सर्व वृत्तांत कही तेने कोइ पण रस्ते धर्म पमाडवा विनंति करी त्यारे सूरिए कमळने बोलावीने कयु के—" हे वत्स ! तु नीचे दृष्टि राखीने अमारो उपदेश एक चित्तथी श्रवण करजे. " एम कहीने तेमणे व्याख्यान आपवा मांडयु अंते कमळने " शु समज्यो ? " एम पूछयु, त्यारे ते बोल्यो के—" हे पूज्य ! आ बिलमांथी कीडीओ जती आवती हती तेनी संख्या में एक सोने आठ सुधी गणी " ए रीते हास्यवाळु वचन सांभळीने बीजा श्रावकोए तेने काढी मूक्यो

पछी कोइ दिवसे उपदेशनी लब्धिवाळा सर्वज्ञ नामना सूरि ते नगरमां पधार्या. तेमने पण श्रेष्ठीए कमळनु वृत्तांत कही तेने प्रतिबोध करवा विनंति करी ते सांभळीने सूरिए कमळने बोलाव्यो. एटले ते आवीने सूरि पासे बेठा गुरुए विचार्यु के " आने साम (मीठा लागे तेवा) वचनथी बोध करवो जोइए. " एम विचारी गुरुए तेने पूछयु के—" हे वत्स ! तु काइ कामशास्त्र जाणे छे ? " कमळे कयु के—" हे गुरु ! हु शु जाणु ? आप तेनो कांइ सार होय, ते कहो " गुरु बोल्या के—" हे कमळ ! सांभळ, स्त्रीओ चार प्रकारनी होय छे. पद्मिनी, हस्तिनी, चित्रणी अने शंखिनी. तेमा पद्मिनी सर्वमा उत्तम कहेवाय छे अने पछी बीजी तेथी उतरती, त्रीजी तेथी उतरती अने चोथी सर्वथी कनिष्ट छ. तेमा पद्मिनी स्त्रीनु लक्षण आ प्रमाणे छे.—

व्रजति मृदु सलील राजहंसीव तन्वी,
त्रिवलीवलितमध्या हंसवाणी सुवेषा ।
मृदु शुचि लघु भुंक्ते मानिनी गाढलज्जा,

धवलकुसुमवासोवल्लभा पद्मिनी स्यात् ॥ १ ॥

भावार्थ—" पद्मिनी स्त्री राजहंसनी जेम मंद मंद लीला सहित गमन करे छे, तेणीना कृश उदर उपर त्रिवळी पमेली होय छे, तेणीनी वाणी हंस जेवी मधुर होय छे, तेनो वेष सुंदर होय छे, ते शुद्ध अने कोमळ अन्ननो अल्प आहार करे छे, मानवाळी अने अति लज्जावाळी होय छे, तथा तेणीने श्वेत पुष्पनी जेवां वस्त्रो वधारे प्रिय होय छे. "

आ प्रमाणे गुरुना मुखथी सांभळी " आ सूरि महा पंडित जणाय छे " एम विचारतो कमळ पोताने घेर गयो. पछी बीजे दिवसे ते पोतानी मेळेज गुरु पासे आवीने बेठो. त्यारे गुरुए चित्रणीनुं लक्षण कह्युं के " हे कमळ ! चित्रणी स्त्रीनु काममंदिर (गुह्य भाग) गोळाकार होय छे, वळी ते द्वार कोमळ अने अंदर जळथी आर्द्र होय छे, तथा तेना उपर रोम घणा होय छे. तेणीनी दृष्टि चपळ होय छे, ते बाह्य संभोगमां (हास्य क्रीडादि करवामां) वधारे आसक्त होय छे, ते मधुर वचन वडे पतिने आनंद आपनारी होय छे, तथा तेणीने नवी नवी वस्तुओ बहु गमे छे " ए प्रमाणे सांभळीने कमळ घेर गयो. त्रीजे दिवसे आव्यो, त्यारे गुरुए शंखिनीनु स्वरूप कह्युं चोथे दिवसे हस्तिनीनु वर्णन कर्युं. पछी पांचमे दिवसे गुरुए कह्युं के " हे कमळ ! स्त्रीओनां कया कया अंगने विषे कये कये दिवसे काम रहे छे, ते सांभळ—

अंगुष्ठे पदगुल्फजानुजघने नाभौ च वक्षस्थले,
कक्षाकंठकपोलदंतवसने नेत्रेऽलके मूर्धनि ।
शुक्लाशुक्लविभागतो मृगदृशामंगेष्वनंगस्थिति—
मूर्ध्वाधोगमनेन वामपदगाः पक्षद्वये लक्षयेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" पगनो अंगुठो, फणो, घुंटी, जानु, जघन, नाभि, वक्षस्थळ (स्तन), कक्षा (काख), कंठ, गाल, दांत, ओष्ठ, नेत्र, कपाळ अने मस्तक—ए पंदर अंगमां स्त्रीओने पडवे तिथिए अनुक्रमे काम रहे छे. तेमां शुक्ल पक्षने पडवे अंगुठे काम होय छे, त्यांथी चडतो पुनमे मस्तके आवे छे अने कृष्ण पक्षना पडवे मस्तके होय छे त्यांथी उतरतो अमासने दिवसे अंगुठे आवे छे. "

आ प्रमाणे जाणीने जो स्त्रीना कामवाळा स्थाने मर्दन कर्युं होय, तो ते स्त्री तत्काल वश थाय छे. वश थयेली स्त्रीनुं लक्षण आ प्रमाणे छे. "वश थवाने इच्छती स्त्री पोतानां नेत्रने नमावे छे, पुरुषना हृदयपर पडे छे, तथा भ्रकुटीने वक्र करती शोभाने उत्पन्न करे छे अने सयोग थवाथी लज्जानो त्याग करे छे." आ प्रमाणेनी वातमां रस पडवाथी कमळ हमेशां सूरिनी पासे आववा लाग्यो अने कोइ वखत शृंगारनुं, कोइ वार इन्द्रजाळनुं, कोइ वार बीजुं वर्णन सांभळीने गुरुपर रागी थयो एम करता मासकल्प पूर्ण थयो, त्यारे विहार करती वेळाए सूरिए तेने कह्युं के "हे कमळ! हवे अमे विहार करीए छीए तेथी अमारा समागमना स्मरण माटे तुं कांइक नियम ग्रहण कर" ते सांभळीने हास्यपर प्रीतिवाळो कमळ हांसी करतो बोल्यो के "हे पुज्य! मारे पण नियमो छे, ते आप सांभळो—मारी इच्छाथी कोइ वखत मरवुं नहीं, पक्वान्नमां नळीयां इट विगेरे खावां नहीं, दूधमां थोरनुं दूध पीवुं नहीं, आखुं नाळियेर मुखमां नाखवुं नहीं, पारकुं धन लइने पाछुं आपवुं नहीं, स्वयंभूरमण समुद्रने पेले पार जवुं नहीं, तथा चांभाळनी स्त्री साथे विषय सेवन करवुं नहीं विगेरे घणा नियमो मारे छे." ते सांभळीने गुरु बोल्या के "अरे कमळ! अमारी साथे पण हास्य करवाथी अनेक भव उपार्जन थाय छे. जेम सोनी सुवर्णना वारंवार भांगीने कुंडळ विगेरे जूदा जूदा आकार घडे छे, तेम गुरुनी आशातना पण जीवने तिर्यंच पणुं, नारकीपणुं, अप्कायपणुं, पृथ्वीकायपणुं विगेरे अनेक दुःखवाळा स्थानो आपे छे, माटे अत्यारे हास्यनो वखत नथी, तेथी कांइ पण नियम ल्यो" ते सांभळीने कमळ जरा लज्जा पामीने बोल्यो के—"मारा पाडोशमां एक वृद्ध कुंभार रहे छे, तेना माथानी टाल जोया पछी मारे हमेशां खावुं, ते विना मारे खावुं नहीं. ए नियम आपो" गुरुए तेवा नियमथी पण तेने लाभ थवानो जाणीने तेने ते नियम आप्यो. पछी तेने बराबर पाळवानुं कहीने गुरुए अन्यत्र विहार कर्यो कमळ लोकलज्जाथी पण लीधेला नियमनुं पालन करवा लाग्यो.

एकदा कमळ राजद्वार गयो हतो त्यां कामने प्रसंगे वधारे रोकावुं पडवाथी मध्याह्न थइ गयो, जमवानुं घणुं मोडुं थयुं. पछी घेर आवीने ते जमवा बेसे छे, तेटलामां तेनी माताए तेने नियम याद आप्यो एटले ते दिवसे तेणे कुंभारनी टाल जोइ नहोती, तेथी जम्या विना एकदम तेने घेर जइ खबर काढी,

कुंभार गाम बहार माटी लेवा गयो हतो. तेथी कमळ गाम बहार गयो दूरथी एक खाडामां वांको रहीने माटी खोदता ते कुभारना माथानी टाल । ' जोइ जोड ' एम बोलतो कमळ मुठी वाळीने घर तरफ दोड्यो. ते ते कुभारने माटी खोदता सोनामहोरनो निधि प्राप्त थयो हतो. तेथी ना ' जोइ जोइ ' एवा शब्दो सांभळीने " ते आ निधि जोइ गयो छे, जो ते राजाने कहेशे, तो राजा सर्व निधि लइ जशे. " एवी शका थवाथी रे बूम मारीने कमळने कह्युं के " अव्या कमळ ! अहीं आव, अर्धो भाग . " ते माभळता छता पण कमळ तो ' जोइ जोड ' एम बोलवा लाग्यो. कुंभारे कह्यु के " अव्या ! आम आव, आ बधुं तुज लइ जा. पण ताणीने बोल न कर. " ते सांभळीने कमळने काइक शंका थवाथी ते तेनी पासे तो निधि जोयो. एटले कमळे ते लइने तेमांथी थोडुं धन कुंभारने आपी । कर्यो. पछी ते सर्व धन घेर लावीने तेणे विचार कर्यो के " अहो ! पर जैनधर्मज श्रेष्ठ छे के जे धर्मना हासीथी राखेला अल्प नियमवडे मने आवो मोटो लाभ मळ्यो. माटे जो दृढ श्रद्धाथी ते धर्म पाळ्यो होय टलो बधो लाभ थाय ? " एम विचारीने तेणे शुध्ध हृदयथी गुरु ाजने आमंत्रण करी श्रावकना बार व्रत तेमनी पासे ग्रहण कर्यां अने ते तुं आराधन करीने स्वर्गे गयो.

" सर्वज्ञ सूरिए नास्तिक एवा कमळने पण शास्त्रनी युक्तिओथी धर्म-दृढ कर्यो. आवा श्रेष्ठ आचार्योज भव्य पुरुषोनी जडता दूर करवामा समर्थ । छे "

॥ इत्युपदेशप्रासादे द्वितीयस्तंभे पंचविंशतितम व्याख्यानम् ॥ २५ ॥

व्याख्यान २८ मुं.

उपदेशलब्धि उपर नंदिषेण मुनिनुं दृष्टान्त

कोइ गाममां एक ब्राह्मण रहेतो हतो. धनना गर्वथी कुबेरनी पण स्पर्धा करे तेटलुं तेनी पासे धन हतुं. एकदा तेणे यज्ञनो आरम्भ कर्यो. तेमां एक लाख ब्राह्मणने भोजन कराववानुं हतुं. ते काममां सहायनी जरुर होवाथी एक गरीब जैनब्राह्मणने कह्युं के "तुं मने आ कार्यमां सहाय कर. ब्राह्मणनुं भोजन थइ रह्या पछी जे कांइ घी, अन्न विगेरे वधशे ते हुं तने तारी महेनत बदल आपीश." एवी शरत करीने ते जैन ब्राह्मणने ते कार्यमां सहायक कर्यो. अनुक्रमे लाख ब्राह्मणोनुं भोजन थइ रह्युं, त्यारे तेणे ते जैन ब्राह्मणने वधेला चोखा, घी विगेरे आप्युं. ते लइने ते गरीब ब्राह्मणे विचार कर्यो के "आ वस्तु न्यायोपार्जित छे, शुद्धमान छे अने प्रासुक छे तेथी कोइ सत्पात्रने आनुं दान करुं, तो ते घणा फळने आपनारुं थाय. शास्त्रमां कृपालु परमात्माए कह्युं छे के—नायागयाणं कप्पणिज्जाणं अन्नपाणाइदव्वाणं देसकालसद्धासक्कारकमजुयं पराए भत्तीए आयाणुग्गहबुद्धीए संजयाणं अतिहिसंविभागो मुक्खफलो—न्यायथी[1] उपार्जन करेल अने कल्पनीय एवा अन्न पाणी विगेरे द्रव्यो उत्कृष्ट भक्तिथी आत्माना अनुग्रहनी बुद्धिए जो संयम धारी साधुने अतिथिसंविभाग करी आप्या होय, तो ते मोक्षनुं फळ आपनार थाय छे." एम विचारी तेणे दया तथा ब्रह्मचर्यादिकने धारण करनारा केटलाएक गुणी साधर्मीओने भोजन माटे निमंत्रणा करी. भोजनने समये कोइ महाव्रतधारी मुनि मासक्षपणने पारणे त्यां आव्या. ते जोइने ब्राह्मणे अति आदरसत्कारपूर्वक ते अन्नजळ विगेरे मुनिने वहोराव्युं. तेणे विचार्युं के "आ श्रावको करतां पण यतिरूपपात्र अति उत्तम छे. कह्युं छे के—

मिथ्यादृष्टिसहस्रेषु, वरमेको ह्यणुव्रती ।
अणुव्रतीसहस्रेषु, वरमेको महाव्रती ॥ १ ॥

---

१ अहीं चोभंगीउं न्यायागत द्रव्य न्यायमां वापरवुं, न्यायागत द्रव्य अन्यायमां वापरवुं, अन्यायागत द्रव्यने न्यायमां वापरवुं अने अन्यायागत द्रव्य अन्यायमां वापरवुं आमां प्रथम भांगो विशुद्ध छे.

महाव्रतिसहस्रेषु, वरमेको हि तात्त्विक.।
तात्त्विकेन समं पात्रं, न भूतं न भविष्यति ॥ २ ॥

भावार्थ—" हजार मिथ्यादृष्टि करतां एक अणुव्रती श्रावक श्रेष्ठ छे, हजार अणुव्रतीओ करता एक महाव्रती साधु श्रेष्ठ छे, हजार महाव्रतीओ करतां एक तत्त्ववेत्ता मुनि वधारे सारो छे. तत्त्ववेत्ताना जेवुं सत्पात्र आ जगतमा कोइ हतु नहीं, छे नहीं अने थशे पण नहीं."

पछी ते ब्राम्हण केटलेक काळे आयुष्य पूर्ण थता मरीने सुपात्रदानना महिमाथी पहेला देवलोकमां देवता थयो. त्यांथी आयुष्यने क्षये चवीने राजगृही नगरीमा श्रेणिक राजानो नंदिषेण नामनो पुत्र थयो. ते युवावस्था पाम्यो, त्यारे राजाए तेने पाचसो राजकन्याओ परणावी. ते स्त्रीओ साथे दोगुदक देवनी जेम मनोहर भोगविलासरूप सुखसागरमा ते मग्न रहेवा लाग्यो.

हवे पेलो लाख ब्राह्मणने भोजन करावनारो ब्राम्हण के जेणे पापानुबंधी पुण्य उपार्जन कर्यु हतु, ते तेवा प्रकारनुं विवेक रहित दान करवाथी घणा भवोमा अल्प अल्प भोगादिक सुख भोगवीने कोइएक अरण्यमां हस्ती थयो. तेनुं नाम सेचनक पड्युं. ते नाम थवानु कारण ए हतु के—आ हाथीनो पिता जे हाथी हतो, तेणे एवुं धार्यु हतु के ' मारो पुत्र कोइ हाथी थशे, तो ते मनेज मारीने आ हाथणीओना टोळानो स्वामी थशे. ' तेथी ते हाथी पोतानी हाथणीओथी जो कोइ हाथी (नर)ने जन्म आपती, तो ते बच्चाने ते मारी नांखतो हतो. एकदा एक हाथणीने प्रसूतिनो समय आव्यो. त्यारे तेणीए पोताना बच्चांने पण मारी नाखशे एवा भयथी ते हाथीने छेतरीने एक तापसना आश्रममां जइ त्या एक हाथी (नर)ने जन्म आप्यो. तेने तापसना कुमारोए उछेरी मोटो कर्यो. ते कुमारोनी सगतिथी ते हाथी (बालक) पण पोतानी सूढमां पाणी लइने वृक्षोने सींचतो हतो. तेथी तेनु नाम तापसोए सेचनक पाड्यु हतु.

एकदा ते सेचनक हाथी फरतो हतो. तेवामा तेणे पेलो हाथणीओना यूथनो स्वामी हाथी के जे पोतानो पिता थतो हतो, तेने जोयो. तेनी साथे युद्ध करता ते सेचनके तेने मारी नांख्यो, अने पोते यूथनो स्वामी थयो. पछी तेणे पोतानी माताना प्रपंच जाणीने नवो हाथी उत्पन्न न थवा देवा माटे ते तापसोनो

आश्रम भांगी नांख्यो. तेथी खेद पामेला तापसोए तेनुं वैर लेवा माटे श्रेणिक रा जा पासे जइने ते सेचनकनी प्रशंसा करी " हे राजा !

चत्वारिंशत्समधिकचतु:शतसुलक्षणः ।
स द्वीपो भद्रजातीयः ससांगं सुप्रतिष्ठितः ॥१॥

भावार्थ—" चारसो ने चालीश शुभ लक्षणोथी युक्त अने साते अं गोमां सुप्रतिष्ठित एवो एक भद्र जातिनो हाथी अरण्यमा फरे छे. "

ते हाथी आपना राज्यमा शोभे तेवो छे. " ते सांभळीने श्रेणिक राजाए माणसो मोकली केटलाएक उपायो वडे तेने पकडाव्यो. पछी ते सेचनकने अनु क्रमे पट्ट हाथी बनाव्यो तेथी राज्यने योग्य एवा आहार वस्त्रो विगेरेथी पोषण करातो ते सुखी थयो. एक दिवसे पेला तापसो नगरीमा आव्या त्यारे तेओए सेचनकनी पासे जइने कह्यु के " अमारा आश्रमने भांगी नाखवानु आ फळ तने मल्यु छे " ते वचनथी मर्मस्थानमा वींधायेलो ते हाथी आलान स्तंभ उखेडी नांखी वनमां जइ फरीथी ते तापसोनो आश्रम भांगी नाखी अत्यंत तोफान करवा लाग्यो. राजाए घणो प्रयास कर्यो पण कोइ ते हाथीने पकडी शक्यु नहीं. तेथी राजाए नगरमां पटह वगडाव्यो के " आ दुर्दम हाथीने कोइ पण शक्तिमान होय, ते पकडो. " ते सांभळीने राजानी आज्ञा लइ नंदि षेण कुमारे तेने ' अप्पा चेव दमेअव्वो—आत्मानुज दमन करवु जोइए ' इत्यादि वाक्योथी जाग्रत कर्यो ते कुमारने जोइने सेचनके विचार्यु के " आ कुमार मारो कोइ वखतनो संबंधी लागे छे " एम तर्क वितर्क करता तेने जाति स्मरणज्ञान थयु, एटले ते तरत ज शांत थइ नंदिषेणनी पासे आवीने ऊभो रह्यो तेणे तेने आलानस्तंभे लइ जइने बांध्यो आ हकीकत जोइ श्रेणिकादि विस्मय पाम्या

अन्यदा श्री महावीर स्वामी वैभारगिरि पर समवसर्या. तेमने वंदन करवा माटे श्रेणिकराजा, अभयकुमार, नंदिषेण विगेरे गया प्रभुना मुखथी देशनानु श्रवण करी पछी राजाए प्रभुने पूछ्यु के—" हे स्वामी ! सेचनक हाथी नंदिषेण कुमारथी केम शांत थयो ? " त्यारे प्रभुए नंदिषेणना सुपात्रदाननो तथा हाथीना जीवे करावेला लक्ष ब्राह्मणना भोजननो सर्व वृत्तांत कही संभळाव्यो. फरीथी

राजाए तेमनी भविष्यनी गति पूछी, त्यारे भगवान बोल्या के—" हे राजा ! न्यायथी प्राप्त करेला द्रव्यनुं सुपात्रे दान करवाथी नंदिषेण कुमार अनेक दिव्य भोग भोगवी चारित्र ग्रहण करी स्वर्गमा जइने अनुक्रमे मोक्षपद पामशे, अने आ हाथीनो जीव पूर्वे पात्र अपात्रनो विचार कर्या विना दान करवाथी थोडा भोग पाम्यो छे. परतु हवे ते मरीने पहेली नरकमा जशे. " ते सांभळी नंदिषेण कुमारे प्रतिबोध पामी श्रावकधर्म अंगिकार कर्यो.

अन्यदा नंदिषेण चारित्र लेवा तैयार थयो. ते वखते शासनदेवीए तेने कह्यु के " हजु तारे भोग कर्म घणा बाकी रह्या छे, माटे हाल दीक्षा लइश न-हीं. " एम निषेध कर्या छता पण नंदिषेणे दीक्षा ग्रहण करी. जिनेश्वरे पण तेने निषेध कर्यो. तो पण तेणे पोतानो आग्रह मूक्यो नहीं, अने हर्षपूर्वक चारित्रनो स्वीकार करी उग्र तपस्या करतो ते प्रभुनी साथे विहार करवा लाग्यो. अनुक्र-मे नंदिषेण मुनि अनेक सूत्रार्थना जाण थया.

केटलेककाळे भोगावळी कर्मनो उदय थवाथी नंदिषेण मुनिने कामविकार उत्पन्न थवा लाग्यो—भोगनी इच्छा थवा लागी. तेने रोकवा माटे तेणे घणी उग्र तपस्या करवा मांडी, आतापना लेवा मांडी, तोपण इन्द्रियोनो विकार शान्त पा-म्यो नहीं. तेथी चारित्रनुं रक्षण करवाना हेतुथी पर्वतपर चढीने झंपापात करवानो तेणे विचार कर्यो. पछी जेवा ते पडवा जाय छे तेवा शासनदेवीए तेने उपाडी लीधा. अने कह्यु के " शा माटे फोकट मरवा धारो छो ? भोग भोगव्या विना म-रण थवानु नथी. " एम कहीने देवी अदृश्य थइ. पछी एक दिवसे ते मुनिए छ-ठना पारणाने माटे गाममा फरता अजाणता एक गणिकाना घरमां पेसीने धर्म-लाभ आप्यो. ते सांभळीने वेश्या हसती हसती बोलीके " हे साधु ! अमारे धर्मलाभनुं काइ काम नथी, अहींतो अर्थलाभ जोइए छीए. " ते सांभळीने 'आ स्त्री मारी मश्करी करे छे ' एम विचारी अभिमानथी मुनिए उपरथी एक तृण खेंचीने लब्धिवडे दश करोड रत्ननी वृष्टि करी. ते जोइने आश्चर्य पामेली वेश्या तेना चरणकमळने भ्रमरीनी जेम वळगी पडीने बोली के " हे प्राणनाथ ! अनाथ अने तमारापर अनुरक्त थयेली एवी मने तजवाने तमे योग्य नथी. " इत्यादि अ-नेक प्रार्थनाना वाक्यो सांभळीने देवीए कहेला भोगकर्मनु स्मरण करी तेना वच-नोथी रक्त थइ ते वेश्याने अंगीकार करी. परन्तु ते वखते तेणे एवो अभिग्रह

लीधो के " अहीं आवता नटवीट पुरुषोने धर्मोपदेश आपीने तेमांथी दश जणने प्रतिबोध पमाडी तेमने दीक्षा लेवा मोकल्या पछी मारे भोजन कर(वुं)" पछी मुनिवेषनो त्याग करी वेश्या साथे कामक्रीडा करता सता त्यां रह(वा लाग्या) अने हंमेशा दश माणसोने प्रतिबोध करी दीक्षाग्रहण करवा माटे प्रभु पासे मोकलवा लाग्या एवी रीते बार वर्ष व्यतीत थया पछी एक दिवस तेणे नव(ने) प्रतिबोध पमाड्यो, पण दशमो एक सोनी कोइ रीते प्रतिबोध पाम्यो नहीं. भोजन समय वीती गयो. वेश्याए बे वखत रसोइ करी, ते पण ठरी गइ. तेणी वारंवा(र) भोजन माटे बोलाववा लागी. त्यारे ते बोल्या के " हजु दशमो माणस बोध पाम्यो नथी." ते सांभळी वेश्या हसीने बोली के " हे स्वामी ! त्यारे दशमा तम(े) ज थाओ ! " ते सांभळीने नंदिषेण तरतज भोगकर्म क्षीण थवाथी उठ्या अने वेश्याए घणा मोहक वाक्योथी आग्रह कर्या छतां तेणीनी किंचित् पण दरकार कर्या विना तेने तृणनी जेम छोडी दइने जिनेश्वर पासे जइ फरीथी दीक्षा ग्रहण करी, अने पोताना दुष्कर्मनी आलोचना करीने नंदिषेण मुनि अनुक्रमे स्वर्गे गया

" हे भव्य जीवो ! जेओ आगम वाक्यनी युक्ति वडे भवाभिनंदी जीवोने पण प्रतिबोध पमाडे छे, तेओ नंदिषेण मुनिनी जेम दिव्य भोगो भोगवी अनुक्रमे सिद्धिपदने पामे छे "

॥ इत्युपदेशप्रासादे द्वितीयस्तंभे षड्विंशतितम
व्याख्यानम् ॥ २६ ॥

व्याख्यान २७ मुं.

त्रीजा वादी प्रभावक विषे

बलात्प्रमाणमन्यानां, सिद्धान्तानां बलेन वा ।
यः स्यात् परमतोच्छेदी, स वादीति प्रभावकः ॥ १

भावार्थ—" जे (सूरि) प्रमाण ग्रन्थोना बळथी अथवा सिध्धान्तना बळथी पर मतनो उच्छेद करे छे, ते वादी प्रभावक कहेवाय छे,

चार्वाकोऽध्यक्षमेकं सुगतकणभुजौ सानुमानं सशाब्दं
तद्वैतं पारमार्षः सहितमुपमया तत्रयं चाक्षपादः ।
अर्थापत्त्या प्रभाकृद्वदति तदखिलं मन्यते भट्ट एतत्
साभावं द्वे प्रमाणे जिनपतिगदिते स्पष्टतोऽस्पष्टतश्च॥१॥

भावार्थ—" चार्वाक (नास्तिक) मात्र एक प्रत्यक्ष ज प्रमाण माने छे. बौद्ध प्रत्यक्ष तथा अनुमान ए बे प्रमाण माने छे. कणाद मतवाळा प्रत्यक्ष, अनुमान अने शब्द ए त्रण प्रमाण माने छे परम आर्ष अक्षपाद (न्याय) मतवाळा ते त्रण सहित उपमा साथे चार प्रमाण माने छे. प्रभाकर मतवाळा अर्थापत्ति सहित पाच प्रमाण माने छे भट्ट मतवाळा ते पांचेनी साथे अभाव सहित छ प्रमाण माने छे अने जैन मतवाळा तो स्पष्ट तथा अस्पष्ट ए बे ज प्रमाण माने छे. (स्पष्ट एटले प्रत्यक्ष अने अस्पष्ट एटले परोक्ष—बीजा सर्व प्रमाणो तेमा अंतर्गत थाय छे.)

ते प्रमाणो जेमा वर्णव्या छे, तेवा ग्रन्थोने आधारे जे परवादीने जीते छे, ते वादी प्रभावक कहेवाय छे. तेनो भावार्थ मल्लवादी सूरिना चरित्रथी जाणवो.

मल्लवादी प्रबंध

भृगुकच्छ (भरूच) नगरमा राजानी समक्ष वाद थता बौध साधु बुद्धानंदे जीवानंदसूरिने वितंडावाद वडे जीती लीधा. तेथी लज्जा पामीने सूरि महाराज वल्लभीपुरे गया. त्या पोतानी बहेन दुर्लभदेवीने तेना अजीतयशा, यक्ष अने मल्ल नामना त्रणे पुत्रो सहित प्रतिबोध पमाडीने दीक्षा आपी पछी ते त्रणेने गुरुए नयचक्रवाल ग्रथ विना बीजा सर्व शास्त्रो भणाव्या त्रणेमा मल्लमुनि विशेष बुद्धिमान थया.

एकदा " ज्ञानप्रवाद नामना पाचमा पूर्वमाथी उद्धरेल, बार आरावाळो दरेक आराना आरंभमा अने प्राते चैत्यपूजादिक महोत्सव करीने वाचवा लायक अने देवताधिष्ठित एवो द्वादशार नयचक्र नामनो ग्रथ ज्ञानभंडारमा छे, ते कोइने

देखाडवो नहीं " एम पोतानी बहेन[१] साध्वीने जलामण करीने गुरु महाराजे अन्यत्र विहार कर्यो. एकदा मल्लमुनिए पोतानी माताथी गजु ने पुस्तक कौतकथी लइने उघाडी प्रथम पत्रमां प्रथम आर्या आ प्रमाणे वांची

" विधिनियमजङ्गवृत्तिव्यतिरिक्तत्वादनर्थकमवोचत् ।
जैनादन्यच्छासनमनृतं जवतीति वैधर्म्यम् ॥ १ ॥ "

आ प्रथम आर्या मल्लमुनिए वांची, के तरतज ते पुस्तक शासनदेवीए हरी लीधु. ते जोइ मल्लमुनिए अति खेद सहित पोतानी माताने तथा सघने ते हकीकत यथास्थित कही बतावी. तेओए तेने घणो उपालंज आप्यो. पछी मल्लमुनिए ते ग्रथनी प्राप्ति थाय त्या सुधी छए विकृतिनु प्रत्याख्यान कर्यु, अने केवल वालनु पारणु करीने छठ्ठ तप करवा लाग्या. चतुर्मासना पारणाने दिवसे सघे अत्यत आग्रह करीने तेने विकृति ग्रहण करावी पछी श्रीसघे आराधेली श्रुतदेवीए मल्लसाधुनी परीक्षा करवा माटे रात्रीए आवीने तेने कह्यु के—' के मिष्ट' ?'–'कइ चीज स्वादीष्ट छे " मुनिए जवाब आप्यो के—' वल्लाः—वाल'

त्यार पछी छ मासे फरीथी शासन देवीए पछ्यु के—' के न ? '—कोण नहीं ? (कइ वस्तु मिष्ट नथी ?) त्यारे मुनिए कह्यु के—' गुडघृते न '—' गोळ अने घी (मीठा) नथी. ' आवो प्रत्युत्तर साजळीने तेनी धारणाशक्तिथी तुष्टमान थयेली देवीए ' वरदान माग ' एम कह्यु, त्यारे तेणे ' नयचक्र पुस्तक आपो ' ए वरदान माग्यु एटले देवीए तेने ते पुस्तक[२] आप्यु. तेथी ते मल्लमुनि अधिक शोजा पाम्या त्यार पछी केटलेक काळे गुरु महाराज विहारना क्रमे पाछा त्या पधार्या अने मल्लने सूरि पदे स्थापन कर्या श्री मल्लसूरिए चोवीश हजार श्लोक प्रमाण पद्म चरित्र रच्यु

त्यार पछी मल्लसूरि भृगुकच्छमा आव्या. त्यां शिलादित्य राजानी समक्ष बौद्ध साधु बुद्धानद साथे तेमने वाद थयो तेमा मल्लाचार्य नयचकना अजिप्राय

१ पोतानी बहेन साध्वी समक्ष मल्लसाधुने कह्यु. एवु प्रभावक चरित्रमां छे.

२ देवीए ते पुस्तक तेने आप्यु नहीं पण कह्यु के ' ए ग्रंथ प्रगट थवाथी, द्वेषी देवताओ उपद्रव करशे, तेथी एकज श्लोकथी तमे आखा शास्त्रनो अर्थ जाणशो ' एम कही शासन देवता अदृश्य थइ गइ. तेथी दश हजार श्लोक प्रमाण नयचक्र ग्रथ नवीन कर्यो. एवु प्रभावक चरित्रमा कह्यु छे.

ने अनुसारे छ मास सुधी अविच्छिन्न वाग्धाराए पूर्व पक्ष कर्यो. ते पूर्व पक्षने धारण करवामा अशक्त एवो बुध्धानद पोताना मकाने नासी गयो, अने वादीना पूर्वपक्षने संभारी संभारीने खडीवडे लखवा माड्यो, पण विस्मरण थवाथी लखी शक्यो नहीं. तेथी अत्यत खेद पामता ते बुध्धानदनुं हृदय फाटी गयुं, अने तत्काळ ते मृत्यु पाम्यो. प्रातःकाळे शासनदेवीए ते वृत्तात मल्लसूरिने जणावी तेना पर पुष्पवृष्टि करी. पछी राजाए मल्लसूरिने 'वादीमदभजक' एवु बिरुद आपी सर्व बौध्धोने पोताना देशमाथी काढी मूक्या, अने पोते जैनी थयो. त्यार पछी बौध्ध लोको फरीथी आ देशमा आव्याज नथी.

आ प्रबध राजशेखर सूरिकृत ग्रथमा नीचे प्रमाणे छे—

खेटक (खेडा) पुरमा देवादित्य नामना ब्राह्मणने एक विधवा पुत्री[१] हती तेणे कोइ गुरु पासेथी सूर्यनो मत्र पामीने तेनो जाप कर्यो. तेथी सूर्ये आवीने तेणीनी उपर मोह पामी तेनी साथे भोग कर्यो. ते दिव्य शक्तिथी तेणी गर्भवती थइ. गर्भनी वात जाणीने तेना पिताए तेने ठपको आप्यो, त्यारे तेणीए यथार्थ वृत्तात कह्यो. ते साभळीने तेना पिताए लज्जाथी ते पुत्रीने वल्लभीपुरे मोकली. त्या तेणीए पुत्र तथा पुत्री युग्म रूपे प्रसव्या. तेओ योग्य वयना थया त्यारे पुत्र लेखशाळामा भणवा गयो. त्या निशाळना छोकराओ नबापो (पिता विनानो) कहीने तेनी मश्करी करवा लाग्या. तेथी तेणे तेनी माताने पूछ्यु के ' मारा पिता कोण छे ? ' तेना जवाबमा माताए कह्यु के ' हु जाणती नथी. ' ते साभळीने ते पुत्र खेदयुक्त थइ मरवा तैयार थयो. ते वखते सूर्ये साक्षात् प्रगट थइने कह्यु के " हे वत्स ! हु तारो पिता छु. तारो जे कोइ पराभव करे, तेने तारे काकरावती मारवो. ते काकरो तेने मारीने पाछो तारी पासे आवशे. " त्यारपछी ते पुत्रे केटलाक बाळकोने अने बीजा माणसोने हण्या. ते जाणी वल्लभीपुरना राजाए तेनी तर्जना करी, तेथी ते राजाने पण मारीने पोते शिलादित्य नामे राजा थयो. अनुक्रमे ते जैनधर्मी थयो, अने तेणे शत्रुंजयगिरि उपर उद्धार कर्यो.

ते शिलादित्ये पोतानी बेनने भृगुकच्छना राजा साथे परणावी. तेणीने मल्ल नामनो पुत्र थयो.

---

१ कोइ प्रथमा छ विधवा कहा छे

एकदा वल्लभीपुरमां देशत्यागनी प्रतिज्ञा पूर्वक राजानी समक्ष वाद थतां दैवयोगे बौध्धोए जैनोनो पराजय कर्यो तेथी जैन मुनिओ परदेशमां गया, अने राजा बौध्ध धर्मी थयो ते राजानी बेने पोताना पतिना मरणथी वैराग्य पामीने पोताना मल्ल पुत्र सहीत दीक्षा ग्रहण करी ते मल्ल मुनिए महा प्रयासे नयचक्र ग्रंथ पामीने बौध्धोनो पराजय कर्यो. तेथी तेओने देशपार करी जैनो पाछा देशमां आव्या, अने शिलादित्य राजाने पण पाछो जैन धर्ममां दृढ कर्यो.

"हे भव्य प्राणीओ! जिनशासनना प्रभावनी उन्नति करवाथी पवित्र था करनार मल्लवादीनु चरित्र सांभळीने काव्यादिकनी विचित्र लब्धिवडे जिन शासननी उन्नति करवा तत्पर थवु."

॥ इत्युपदेशप्रासादे द्वितीयस्तंभे सप्तविंशतितम व्याख्यानम् ॥ २७ ॥

व्याख्यान २८ मु

वादी प्रभावक देवसूरिनु दृष्टान्त

तर्ककर्कशवाक्येन, बुध्धिशालिमहात्मना ।
जेतव्या वादिन सद्य , शासनोन्नतिहेतवे ॥ १ ॥

भावार्थ—"बुध्धिशाळी महात्माए शासननी उन्नतिने माटे तर्क (न्याय) शास्त्रना कर्कश (दुर्जय) वाक्योवडे करीने तत्काळ वादीनो पराजय करवो"

आ श्लोकनो भावार्थ नीचेना दृष्टांतवडे जाणवो

श्री पाटणमां सिध्धराज राज्य करतो हतो ते वखते तेनी सभामां कुमुदचंद्र नामे दिगंबर आचार्य आव्या. राजाए पोताना मातामहनो (माताना पि

तानो) गुरु होवाथी सत्कार पूर्वक रहेवा माटे मकान आप्यु. पछी वाद करवा माटे राजाए हेमचन्द्र सूरिने पूछ्युं, त्यारे तेओ बोल्या के ' वादीनी वित्राने तोडनारा अने वादरुप हाथीमा सिंहसमान श्री देवसूरिने बोलावो. " ते सांभळीने राजाए पोताना सेवको मोकली श्री देवसूरिने तेडाव्या. राजाना आग्रहथी सूरिए सरस्वतीनी आराधना करी त्यारे देवीए प्रत्यक्ष थइ कह्यु के " वादी वेताळ[1] शांतिसूरिए करेली उत्तराध्ययन सूत्रनी वृत्तिमा दिगंबरना मत खंडनने प्रसंगे बतावेला चोराशी विकल्पोनो विस्तार करवाथी दिगंबराचार्यनु मुख बंध थशे. " एम कहीने देवी अदृश्य थइ. पछी सूरिए ते दिगंबराचार्यनी कया शास्त्रमा कुशळता छे ते जाणवा रत्नप्रभाव नामना पोताना मुख्य शिष्यने तेनी पासे गुप्त रीते मोकल्यो ते रात्रीने समये गुप्त वेषे देवनी जेम त्या गयो. तेने कुमुदचंद्रे पूछ्यु के " तु कोण छे ? " तेणे कह्यु " हु देव छुं " कुमुदचंद्रे पछ्युं "देव कोण ? " तेणे कह्यु " हु. " कुमुदचंद्रे पूछ्यु " हु कोण ? " तेणे कह्यु " तुं श्वान. " कुमुदचंद्रे पूछ्यु " श्वान कोण ? " तेणे कह्यु " तु. " कुमुदचंद्रे पूछ्युं " तु कोण ? " तेणे कह्यु " हु देव. " एवी रीते चक्रभ्रमण[1] वादवडे पोताने देव अने तेने श्वान स्थापित करीने ते शिष्य पोताने उपाश्रये गया. आ प्रमाणे चक्रदोष प्रगट करवाथी खेद पामेला दिगंबराचार्ये श्वेतांबरना कोइ साधु आवी मारी निंदा करी गया, एम जाणी देवसूरिपर एक श्लोक लखी मोकल्यो के—

हहो श्वेतपटा. किमेष विकटाटोपोक्तिसटकितैः
संसारावटकोटरेऽतिविकटे मुग्धो जनः पात्यते ।
तत्त्वातत्त्वविचारणासु यदि वा हेवाकलेशस्तदा
सत्यं कौमुदचन्द्रमंघ्रियुगलं रात्रिन्दिवं ध्यायत ॥ १ ॥

भावार्थ—" अरे श्वेतांबरो ! खोटा आडंबरवाळा वाक्योना प्रपंच करीने तमे आ मुग्ध लोकोने अति विकट एवा संसाररूपी अंधकूपना कोटरमां केम नाखो छो ? जो कदाच तमारी तत्त्व अने अतत्त्वना विचारमा लेश पण इच्छा थती होय, तो तमे साचेसाचु रात्री दिवस मुकुदचन्द्रना चरणयुग्मनु ध्यान धरो "

१ आवु तेमन बिरुद मळेलु हतु.

१ कस्त्व ? अहं देव । देव को ? अहं । अहं क ? त्वं श्वा । श्वा क ? त्वं । त्वं क ? अहं देव । आ प्रमाणे चक्रभ्रमणवाद समजवो.

दिगंबराचार्ये मोकलेलो आ श्लोक जोइने बुद्धिना वैभवथी चाणाक्यने पण नहीं गणनारा—तेनाथी पण वधे तेवा देवसूरिना शिष्य माणिक्य मुनि नामना पंडिते नीचेनो श्लोक कर्यो

कः कंठीरवकंठकेसरसटाभारं स्पृशत्यंघ्रिणा
कः कुन्तेन शितेन नेत्रकुहरे कण्डूयनं कांक्षति ।
कः सन्नह्यति पन्नगेश्वरशिरोरत्नावतंसश्रिये
यः श्वेतांबरशासनस्य कुरुते वन्द्यस्य निन्दामिमाम् ॥१॥

भावार्थ—" एवो कयो पुरुष छे के जे सिंहना कंठनी केशवाळीना समूहने पगवडे स्पर्श करे ? एवो कयो पुरुष छे के जे तीक्ष्ण भालावडे नेत्रना गोखलानी खरज मटाडवा इच्छे ? अने एवो कयो पुरुष छे के जे शेषनागना मस्तकनो मणि लइ अलंकार करवा तैयार थाय ? तेवो पुरुष तेज छे के जे श्वेतांबरना पूज्य शासननी आवी निंदा करे ? "

पछी रत्नाकर नामना साधुए पण एक श्लोक लख्यो.—

नग्नैर्निरुद्धा युवतीजनस्य, यन्मुक्तिरत्नं प्रकटं हि तत्त्वम् ।
तत्किं वृथा कर्कशतर्ककेलौ, तवाभिलाषोऽयमनर्थमूलम् ॥२॥

भावार्थ—" अहो नग्न लोकोए स्त्रीओनुं मुक्तिरूपी रत्न बंध कर्युं तेज तेमणे पोतानुं तत्त्व प्रगट कर्युं छे तो हवे शामाटे कठिन एवा तर्क शास्त्रनी क्रीडामां तुं फोगट अभिलाषा करे छे ? तेनी तारी अभिलाषा तारा अनर्थनुज मूळ छे, एम समज "

आ बन्ने श्लोक तेओए उपहास पूर्वक दिगंबराचार्य पासे मोकल्या

राजानी राणी दिगंबरना पक्षमां हती, तेथी तेणीए सभ्यजनोने आग्रह पूर्वक दिगंबरनो जय थाय तेम करवानुं कहीं राख्युं हतुं पछी कुमुदचंद्रे पोताना वादनो विषय लखीने आ प्रमाणे मोकल्यो

केवलि हुओ न भुंजइ, चीवरसहिअस्स नत्थि निव्वाण ।
इत्थी हुवा न सिज्झई, इयमय कुमुदचंदस्स ॥ १ ॥

भावार्थ—" तीर्थंकर केवळ ज्ञान पाम्या पछी आहार करे नहीं, वस्त्र धारण करनारनो मोक्ष थाय नहीं, अने स्त्री वेदे कोइ सिद्धि पामे नहीं, एवो कुमुदचंद्र दिगंबरनो मत छे."

ते श्लोकपर श्वेतांबरोए जवाब आप्यो के—

केवलि हुओ वि भुंजइ, चीवरसहिअस्स अत्थि निव्वाणं।
इत्थी हुवा वि सिज्झई, इयमयं सियवयस्स[1] ॥ १ ॥

भावार्थ—" तीर्थंकर केवळी थया पछी पण आहार करे छे. वस्त्र धारण करनारनो मोक्ष थाय छे, अने स्त्री वेदे पण सिद्धि पदने पामे छे, एवो श्वेतांबरोनो मत छे. अथवा देवसूरिनो आ मत छे."

पछी निर्णयने माटे मुकरर करेला दिवसे सिद्धराजनी सभामां छए दर्शनना पंडितो सभ्य तरीके बेठा. ते वखते कुमुदचंद्र वादी वाजतेगाजते राजसभामां आव्यो, अने राजाए मानपूर्वक आपेला उंचा सिंहासनपर चडीने बेठो. श्री देवसूरि पण श्री हेमचंद्राचार्य सहित राजसभामां आवी एकज सिंहासनपर बन्ने बेठा. बाल्यावस्थाथी काइक मुक्त थयेला एवा श्री हेमचंद्रसूरिने जोइने वृद्धावस्थाए पहोंचेला दिगंबराचार्य मश्करीमां बोल्यो के " पीतं तक्रं भवता—तें छाश पीधी." ते सांभळीने हेमाचार्य तरतज बोल्यो के " अरे जडमति! आवुं असमंजस भाषण केम करे छे? 'श्वेतं तक्रं, पीता हरिद्रा' छाश तो श्वेत—धोळी होय, अने पीत (पीळी) तो हळदर होय. (अहीं दिगंबरे पीत शब्द पीवाना अर्थमां लीधो हतो, तेनी मश्करी करवा माटे हेमाचार्य पीत शब्दनो पीळो अर्थ करीने बोल्या.) ते सांभळीने दिगंबराचार्य लज्जा पामी नीचुं जोयुं. पछी दिगंबरे पूछयुं के " तमारा बेमां वादी कोण छे? " त्यारे देवसूरि तेनो तीरस्कार करवा माटे बोल्या के " तमारो पराजय करवा माटे आ हेमचंद्र प्रतिवादी थशे." दिगंबराचार्य बोल्या के " आ बाळकनी साथे मारे वृद्धने शो वाद करवो? " ते सांभळीने हेमाचार्य बोल्या के " हे कुमुदचंद्र! मोटो तो हुं छुं, अने तुं बाळक छे. केमके हजु सुधी ते कटीए दोरो पण बांध्यो नथी, अने लुगडां

[1] आ चोथा पदने बदले मयमेयं देवसूरिण एवुं पद पण कोइ प्रतमां छे.

व्याख्यान २९ मु.

वादने योग्य पुरुषना लक्षण विषे

नयन्यासप्रमाणानि, प्रोक्तानि यानि शासने ।
तानि तथैव जानाति, स वादे कुशली भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" शासनने विषे जे नय, निक्षेप अने प्रमाणो कहेला छे, ते सर्व यथार्थ रीते जे जाणे, ते वाद करवामा कुशळ होय छे. " आ सबधमा वृद्धवादीसूरिनु दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

वृद्धवादीसूरिनुं दृष्टान्त

विद्याधर गच्छमा श्री पादलिप्तसूरिनी परंपरामा स्कंदिलाचार्य पासे मुकुंद नामना एक वृद्ध ब्राह्मणे दीक्षा लीधी. ते वृद्ध मुनि रात्रे मोटे स्वरे पाठ गोखता हता. तेने गुरुए कह्यु के—" हे वत्स ! रात्रे उंचे स्वरे भणवु योग्य नथी. " प छी दिवसे ते वृद्ध साधु उंचे स्वरे गोखता हता, ते साभळीने श्रावको हसता ह सता बोल्या के—" आ वृद्ध साधु भणीने शु साबेलु नवपल्लवित करशे ? " ते साभळीने खेद पामेला वृद्ध मुनिए विद्या प्राप्तिने माटे सरस्वती देवी पासे बेसी एकवीश उपवास कर्या. तेथी तुष्टमान थयेली ब्राह्मी देवीए कह्यु के " हे मुनि ! हुं तमारापर तुष्टमान थइ छु, तेथी वरदान आपु छु के तमे सर्व विद्यासिद्ध थशो. " ते वरदानथी आनद पामेला वृद्ध मुनिए चौटामां जइ एक साबेलु जमीनपर उभु राखी तेने प्रासुक जळ वडे सिंचवा माड्यु. अने—

अस्मादृशा अपि जडा, भारति त्वत्प्रसादतः ।
भवेयुर्वादिन प्राज्ञा, मुशल पुष्प्यता तदा ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे सरस्वती देवी ! अमारा जेवा जड मनुष्यो पण तारा प्रसादथी विद्वान वादी थइ जाय छे, माटे आ मुशळ (साबेलु) पण पुष्पित "

ए श्लोक बोलीने ते मुशळने पत्र, पुष्प अने फळ वाळुं (नव पल्लवित) कर्युं. तेनो आवो चमत्कार जोइने गरुडना नामथी सर्पनी जेम वादी लोको तेनुं नाम सांभळताज नाशी जवा लाग्या. गुरुए तेने योग्य जाणीने सूरिपद आप्युं.

ए समयमा देवर्षि नामना ब्राह्मणनी देवश्री नामनी स्त्रीथी उत्पन्न थयेलो सिद्धसेन नामनो पंडित ब्राह्मण विक्रमराजानो घणो मानीतो हतो. ते मिथ्यात्वी होवाथी पोतानी बुद्धिना अतिशयपणाने लीधे आखा जगतने तृण समान मानतो हतो. कह्युं छे के—

वृश्चिको विषमात्रेणाप्यूर्ध्वं वहति कंटकम् ।
विषभारसहस्रेऽपि, वासुकिर्नैव गर्वितः ॥ १ ॥

भावार्थ—" वींछी थोडा विषथी पण गर्व पामीने पोतानो आंकडो ऊंचो राखे छे, परंतु वासुकि नाग (तेनी दाढमा) हजार भार विष छतां पण गर्व करतो नथी. "

ए सिद्धसेने एवी प्रतिज्ञा करी हती के–" मने कोइ वादमा जीते तेनो हुं शिष्य थइ जाउं. " एकदा वृद्धवादीनी कीर्ति सांभळीने तेने नहीं सहन करतो सिद्धसेन पालखीमा बेसी अनेक छात्रो सहित भृगुपुर (भरुच) तरफ तेमनी सामे चाल्यो. मार्गमाज तेने वृद्धवादी मळ्या. परस्पर वातो करता सिद्धसेने कह्यु के—" वाद करो. " वृद्धवादी बोल्या के—" बहु सारु, परंतु अहीं कोइ सभ्य (मध्यस्थ) नथी, तेथी मध्यस्थ विना जय पराजयनी शी खात्री थाय ? " ते सांभळीने गर्वथी उद्धत थयेलो सिद्धसेन बोल्यो के—" आ गोवाळ लोकोज मध्यस्थ थाओ. " गुरुए ते वात मंजुर करी. गोवाळोने मध्यास्थ राखी कह्युं के--" हे सिद्धसेन ! प्रथम तुं ज वाद शरु कर. " त्यारे ते सिद्धसेन तर्क शास्त्रनी अवच्छेदकावच्छिन्न प्रसंगवाळी शब्दोथी कठोर लागे तेवी संस्कृत वाणी ऊंचे स्वरे बोलवा लाग्यो. ते बहु वखत सुधी बोल्यो, एटले गोवाळीयाओए कह्यु के—" अरे ! आ तो वाचाळ जणाय छे, काइ समजतो ज नथी; केवळ भेंसनी जेम बराडा मारीने कानज फोडी नाखे छे. माटे आ तो मूर्खज छे. तेथी हे वृद्ध ! तमे काइ कानने सारं लागे तेवु बोलो. " ते सांभळीने अवसरने जाणनारा सूरि नाटकने योग्य संगीतने अनुसारे गण, छंद, ताल

पूर्वक ऊंचे स्वरे ताळोटा देता बोल्या के—

न वि मारिई न वि चोरिइ, परदारागमण निवारिइ ।
थोवा थोव दाइइं, तउ सग्गि टगाटग जाइयइ ॥ १ ॥
गेहु गोरस गोरडी, गज गुणिअण ने गान ;
छ गग्गा जो इहां मीळे, तो सग्गहशुं काम ॥ २ ॥
चूडो चमरी चुंदडी, चोली चरणो चीर ।
छहु चच्चे सोहे सदा, सोहव तणुं सरीर ॥ ३ ॥

भावार्थ—" कोइ प्राणीने मारवो नहीं, कोइनुं धन चोरवुं नहीं, परस्त्री प्रत्ये गमन करवुं नहीं अने थोडामाथी थोडुं पण दान आपवुं, तेथी तरतज स्वर्गे जवाय छे. गेंहम (घर), गोरस (दुध, दहीं विगेरे), गोरडी (स्त्री), गज (हाथी), गुणीजननी गोष्टि अने गान (गानतान) ए छ गकार जो अहींज मळे तो पछी स्वर्गनु शु काम छे ? चूडो, चमरी (केश), चुंदडी, चोळी, चरणो (घाघरो) अने चीर ए छ चकारवडे सौभाग्यवती स्त्रीओनु शरीर सदा शोभे छे. "

आ प्रमाणे सूरि बोलता हता, ते वखते तेमना शब्दनी साथे ते गोवाळीया पण गायन करता सता नाचवा कुदवा लाग्या अने बोल्या के " आ सूरिए आ ब्राह्मणने हराव्यो " आ प्रमाणे पोतानी निंदा साभळीने सिद्धसेने सूरिने कह्यु के " हे पूज्य ! मने दीक्षा आपो. " सूरि बोल्या के " हजु आपणे वाद माटे राजसभामां जइए. " एम कहीने तेओ राजसभामा गया त्या पण अवसरना जाण सूरिए सिद्धसेननो पराजय कर्यो तेथी सत्य प्रतिज्ञावाळा सिद्धसेने सूरिपासे दीक्षा ग्रहण करी. पछी अनुक्रमे ते जैनशास्त्रमा प्रवीण थया, त्यारे तेने सिद्धसेन दिवाकर एवु विरुद आपी गुरुए तेने पोतानु स्थान आप्युं अर्थात् सूरिपदे स्थापन कर्या

भव्य प्राणीओरुपी कमळने प्रबोध पमाडता सूर्य जेवा वादीन्द्र सिद्धसेनसूरि अवंती नगरीमा आव्या. तेमने सर्वज्ञपुत्र कहेवाता साभळी तेमनी परीक्षा करवा माटे विक्रमार्क राजाए तेमने मनथीज नमस्कार कर्यो. ते जाणीने सू-

रिए तेने ऊंचे स्वरे धर्मलाभ आप्यो, त्यारे राजाए कह्यु के "हे सूरीन्द्र! नहीं नमस्कार करनारा अमने पण धर्मलाभ केम आप्यो?" सूरी बोल्या के "हे राजा! आ धर्मलाभरूप आशीर्वाद क्रोम चिंतामणि करतां पण अधिक दुर्लभ छे. तेवो आशीर्वाद मनथी नमन करता एवा तमने अमे आप्यो छे. केमके—

[1]दीर्घायुर्भव वर्ण्यते यदि पुनस्तन्नारकाणामपि
सन्तानाय च पुत्रवान् यदि पुनस्तत्कुर्कुटानामपि।
तस्मात्सर्वसुखप्रदोऽस्तु भवतां श्रीधर्मलाभः श्रिये ॥१॥

भावार्थ—" हे राजा! तुं दीर्घ आयुष्यवाळो था, एवो आशीर्वाद आपीए तो दीर्घ आयुष्य तो नारकी जीवोने पण छे, सन्ताननने माटे पुत्रवान् था एवो आशीर्वाद आपीए तो कुकडाओने पण घणा बच्चा होय छे, * * * माटे सर्व प्रकारना सुख आपनार धर्मलाभरूपी आशीर्वाद तमारी लक्ष्मीने माटे हो."

ऊंचा हाथ करीने धर्मलाभरूप आशीष आपता सूरिना उपर संतुष्ट थयेला राजाए तेने कोटी द्रव्य आप्युं. परंतु निःस्पृही होवाथी तेमणे ते द्रव्य लीधुं नहीं, एटले राजाए श्रावकोने आप्युं, तेमणे जीर्णोद्धारादिकमा ते द्रव्यनो व्यय कर्यो.

एकदा सूरि विहार करता चितोडगढ गया. त्या एक स्तंभ हतो. तेनी अंदर पूर्वनी आम्नायवाळा पुस्तको गुप्त राखेला हता. तेने जळ, अग्नि, शस्त्र, विगेरेथी अजेय एवी औषधीओथी लिप्त करेलो जोइने सूरिए ते सर्व औषधिओ गंधवडे ओळखीने तेनी प्रतिस्पर्धि औषधिओवडे मिश्रित जळ छांटी ते स्तंभ कमळनी जेम विकसित कर्यो (खोल्यो). पछी तेमाथी एक पुस्तक लइ तेनु प्रथम पानु वांच्यु, तो तेमा सरसव विद्या अने सुवर्ण विद्या ए बे विद्याओ जोइ. पहेली विद्यानो चमत्कार एवो हतो के ते मंत्रवडे मंत्रेला जेटला सरसवना दाणा जळाशयमा नाखे, तेटला घोडेस्वारो तेमाथी नीकळीने शत्रुना सैन्यनो पराजय करी पाछा अदृश्य थइ जाय. बीजी विद्या एवी हती के, ते मंत्रवडे मंत्रित करेला चूर्णना योगथी कोटी सुवर्ण उत्पन्न थाय पछी आगळ बीजु पानु

[1] आ श्लोकनु त्रीजु पद अमारी पासेना मुळ प्रतोमा नथी

वाचवा जाय छे, तेवामां देवीए सूरिने निषेध करी हाथमांथी पुस्तक लइ ली
अने ते स्तंभ पण हतो तेम पाछो मळी गयो.

त्यांथी विहार करीने सूरि कुमारपुरे आव्या. त्यांना राजा देवपाळे सूरिने नमन करीने कह्युं के " हे गुरु ! मारा सीमाडाना राजाओ मारुं राज्य लेवाने इच्छे छे, माटे जो आप कांइ कृपा करो, तो मारुं राज्य स्थिर थाय. " ते सांभळीने गुरुए सरसव विद्याना बळे शत्रुना सैन्यनो पराभव कर्यो, तेथी देवपाळ राजा जैनधर्मी थइ आचार्यनो एकांत भक्त थयो. पछी राजाना आग्रहथी सूरि हमेशां सुखासनमां बेसी बंदीजनोथी स्तुति करातां राजसभामां जवा लाग्या. आ प्रमाणेना तमना प्रमादनी वात सांभळीने तेमना गुरु वृद्धवादी वेष बदलीने त्यां आव्या. ते वखते सिद्धसेन सूरि राजसभामां जवा माटे नीकळ्या हता तेना सुखासनना एक दंडने वृद्धवादीए पोताना स्कंध उपर लइ लीधो. ते वखते अस्त व्यस्त चालता ते वृद्धने जोइने गर्विष्ठ सूरि बोल्या के—" हे वृद्ध !

भूरिभारभराक्रान्ते, स्कन्धोऽयं तव बाधति ।

नावार्थ—" घणा नार उपाडवाथी तारा स्कंधने बाधा थाय छे ? " ते सांभळीने वृद्धवादी बोल्या के—" हे सूरि !

न तथा बाधते स्कन्धो, बाधति बाधते यथा ॥ १ ॥

जेवो तमारो बाधति प्रयोग बाधा करे छे तेवो मारो स्कंध मने बाधा करतो नथी " (आथी वृद्धवादीए एवो जवाब आप्यो के " हे सूरि ! तमे बाधति ए अशुद्ध प्रयोग बोल्या ते मने घणो बाधा करे छे, केमके बाधते बोलवुं जोइए.)

ते सांभळीने सूरिने शंका थइ के—" जरूर मारा गुरु विना बीजो कोइ मारी भूल काढे तेवो नथी. " एम विचारीने ते तरतज सुखासनमांथी उतरी गुरुना पगमां पड्या पछी पोताना प्रमादनी आलोचना लइ राजानी रजा मागीने पोताना गुरु साथे त्यांथी विहार कर्यो

केटलेक काळे वृद्धवादी स्वर्गे गया पछी एकदा ' मगदयाए ' इत्यादि प्राकृत आपाना सूत्रो नणता लोकोए मश्करी करी, तेथी लज्जा पामीने तथा बा

व्यावस्थाथीज संस्कृतनो अभ्यास होवाथी अने कांइक कर्मना वशथी पण गर्व
थेला सिद्धसेन सूरिए सघनी समक्ष कह्युं के " हुं सघनी अनुमतिथी प्राकृत
ाषामां रचायेला सिद्धान्तोने संस्कृत जाषामां करुं. " ते सांजळीने सघे यथार्थ
रूप कही बताव्युं के—

वालस्त्रीमन्दमूर्खाणां, नृणां चारित्रकाङ्क्षिणाम् ।
अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञैः , सिद्धान्तः प्राकृतः कृतः ॥

जावार्थ—" चारित्रनी इच्छावाळा एवा बाळ, स्त्री, मन्द अने मूर्ख म-
ष्योना उपकारने माटे तत्त्वज्ञ पुरुषोए सिद्धान्तने प्राकृत जाषामां कर्या छे. "

अने बुद्धिमानोने माटे तो चौद पूर्व संस्कृत जाषामांज रचायेला अमे सा-
ळ्या छे. माटे हे सूरि ! तमे श्री जिनेश्वर विगेरेनी मोटी आशातना करी, तेने
ाटे तमारे मोटुं प्रायश्चित्त करवुं पमशे. " ते सांजळी सूरिए सघनी आज्ञाथी
ानुवेषपणे गोपवी अवधूतनो वेष धारण कर्यो, अने संयम सहित मौनव्रत धारण
री माणसो ओळखी शके नहीं तेम विचरवा लाग्या. एवी रीते सात वर्ष व्य-
ीत थया, त्यारे सूरि उज्जयिनी गया. त्यां महाकाळेश्वर महादेवना देरामां रह्या
हादेवने प्रणाम के वंदना कर्याविना तेनी उपर पग राखीने बेठा. ते जोइने तेना
ूजारीए सूरिने पग उठावी नमन करवा कह्युं, पण ते मौनधारी सूरि काइ बोल्या
नहीं अने तेनुं कहेलुं सांजळ्युं पण नहीं. एटले पूजारीए राजाने जाहेर कर्युं.
तेथी आश्चर्य पामीने राजाए त्यां आवी अवधूतने कह्युं के " अरे ! तमे महेश्वरने
केम वांदता नथी ? " सूरिए जवाब आप्यो के " जेम कोइ ज्वरार्दित मनुष्य मो-
दक पचाववा समर्थ होतो नथी तेम आ देव मारी स्तुतिने सहन करवा समर्थ
नथी. " ते सांजळीने राजाए कह्युं के " हे जटिल ! एवुं असंजवित वचन केम
बोलो छो ? तमे स्तुति करो, अमे जोइए छीये, के आ देव शी रीते सहन करी
शकता नथी ? " पछी सूरि बोल्या—

स्वयंभुवं भूतसहस्रनेत्रमनेकमेकाक्षरभावलिङ्गम् ।
अव्यक्तमव्याहतविश्वलोकमनादिमध्यान्तमपुण्यपापम् ॥१॥

जावार्थ—" पोतानी मेळे ज्ञानने प्रगट करनारा, ज्ञानरूपी हजारो

नेत्रने धारण करनारा, अनेक गुणवान, अद्वितीय अने अविनाशी ज्ञानलिंगने धारण करनारा, अव्यक्त, समस्त विश्वना जीवोने व्याप्त नहीं करनारा, आदि मध्य अने अन्त रहित तथा पुण्य पाप रहित एवा देवने नमस्कार हो."

इत्यादि काव्योवडे सूरिए श्री महावीरस्वामीनी बत्रीश बत्रीशीवडे स्तुति करी. पछी मोटा महिमावाळा श्री पार्श्वनाथस्वामीनी स्तुति करी. तेमां कल्याण मंदिर नामना स्तोत्रनु अगीयारमु काव्य बोलतां ते शिवलिंग फाट्यु अने तेनी अंदरथी वीजळीनी जेवी कांतिवाळु श्री अवंतिपार्श्वनाथनु बिंब प्रगट थयुं. ते जोइने विस्मय पामेला विक्रम राजाए सूरिने पूछ्यु के "हे स्वामी ! आ देव कोणे निर्माण कर्या छे ?" सूरि बोल्या "आ अवन्ति नगरीमां भद्रश्रेष्ठीनी भद्रा नामनी स्त्रीथी उत्पन्न थयेलो अवंतीसुकुमाल नामे पुत्र हतो. ते युवावस्था पाम्यो, त्यारे तेना मातपिताए तेने बत्रीश स्त्रीओ परणावी ते सर्वनी साथे काम विलास करतो ते काळ निर्गमन करतो हतो एकदा ते गवाक्षमां बेठो हतो, त्यां आर्यसुहस्ती सूरिना मुखथी नलिनीगुल्म विमानना वर्णनवाळु अध्ययन सांभळी ने तेने जातिस्मरण थयु एटले तेणे सूरि पासे जइने पुछ्यु के "हे स्वामी ! शु तमे नलिनीगुल्मविमानथी अहीं आव्या छो ?" गुरु बोल्या "ना, परन्तु तेनु स्वरूप अमे श्री सर्वज्ञना कहेला वचन (शास्त्र)परथी जाणीए छीए" तेणे पूछ्युं के "हे गुरु ! ते विमान शी रीते प्राप्त थाय ?" गुरुए कह्यु—चारित्रथी प्राप्त थाय. ते सांभळीने तरतज तेणे दीक्षा ग्रहण करी. पछी हमेशा तपस्या करवाने अशक्त होवाथी तेणे गुरुनी आज्ञा लइ स्मशानमां जइ अनशन ग्रहण कर्युं ते समये तेना पूर्वभवनी अपमानित स्त्री के जे शीयाळणी थइ हती ते पोताना बच्चा सहित त्यां आवी, अने पूर्वना वरने लीधे ते मुनिना शरीरने चावीजवा लागी त्रण प्रहरमां तेनु आखु शरीर तेणीए भक्षण कर्यु एटले चोथा प्रहरमां ते मुनि शुभ ध्यानने योगे मृत्यु पामी नलिनीगुल्म विमानमां उत्पन्न थया. प्रातःकाळे ते सर्व वृत्तांत जाणीने वैराग्यथी तेनी माता भद्राए अवंतीसुकमाळनी एक गर्भिणी स्त्रीने मूकीने बाकीनी एकत्रीश स्त्रीओ साथे दीक्षा करी. योग्य काळे ते गर्भिणी स्त्रीने पुत्र प्रसव थयो ते पुत्रे पोताना पिताना मृत्युस्थाने आ प्रासाद कराबी तेमां आ पार्श्वनाथ स्वामीनु बिंब स्थापन कर्यु हतु अनुक्रमे केटलेककाळे ब्राह्मणोए आ बिंब उपर शिवलिंग स्थापन कर्युं. तेथी हे राजा ! ते शिव अमारी

करेली स्तुतिने केम सहन करी शके ? " ते वृत्तांत सांजळीने राजा घणोज प्रसन्न थयो, अने ते जिननी पूजा माटे तेणे सो गाम आप्या. पछी विक्रमराजा सूरिनी प्रशंसा करता बोल्या के " हे गुरु ! तमारा जेवा महर्षि दुनियामां क्याथी होय ? जाग्येज कोइक होय. केमके—

अहयो बहवः सन्ति, भेकभक्षणदक्षिणा. ।
एकः स एव शेषः स्यात्, धरित्रीधरणक्षमः ॥ १ ॥

जावार्थ—" देडकानुं जक्षण करवामां प्रवीण एवा सर्पो तो दुनियामां घणा होय छे, पण पृथ्वीने धारण करवामां समर्थ एवो शेषनाग तो ते एकज छे. "

इत्यादि गुरुनी स्तुति करीने राजा पोताने स्थाने गयो. आ प्रमाणे श्री जैन शासननी घणीज उन्नति थवाथी श्री संघ सूरि पर प्रसन्न थयो. तेथी सूरिनी आलोयणना बाकी रहेला पांचे वर्षो माफ करीने तेने पाछा सूरिपदे स्थापन कर्या.

एकदा कुवादी रुपी अंधकारनो नाश करवामां सूर्य समान सूरि ओंकार पुरे गया. त्यांना श्रावकोए तेमने विज्ञप्ति करी के " हे स्वामी ! अहीं मिथ्यात्वीओनुं घणुं जोर होवाथी तेओ जैनचैत्य करवा देता नथी. " ते सांजळीने सूरि चार श्लोक (नवा) हाथमां लइ विक्रम राजाना सजास्थानमां गया अने द्वारपाळना हाथमां एक श्लोक आपी ते राजाने आपवा कह्युं. एटले तेणे जइने राजाने ते श्लोक आप्यो, ते आ प्रमाणे हतो.

भिक्षुर्दिदृक्षुरायातस्तिष्ठति द्वारवारितः ।
हस्तन्यस्तचतुःश्लोकः, किं वागच्छति गच्छति ॥ १ ॥

जावार्थ—" कोइ जिक्षु आपने मळवा आव्यो छे, ते द्वारपाळना अटकाववाथी द्वारे उजो छे, तेना हाथमां चार श्लोक छे, ते सजामां आवे के जाय ? "

ते वांची राजाए जवाबमां एक श्लोक लखी मोकल्यो के—

दीयते दशलक्षाणि, शासनानि चतुर्दश ।
हस्तन्यस्तचतुः श्लोक, यद्वागच्छतु गच्छतु ॥ १ ॥

भावार्थ—"जेना हाथमा चार श्लोक छे तेमने दश लाख रुपिया अने चौद गाम आपवामा आवे छे, हवे जो आववु होय तो आवो, अने जवु होय तो जाओ."

ते वांचीने सूरि सभामा गया, अने राजाए आपेला आसनपर सन्मुख बेठा. पछी सूरि चारे दिशाए रहीने एक एक श्लोक बोल्या, अने राजा दरेक श्लोके एक एक दिशा बदलीने बेठो, एटले चार श्लोके करीने चारे दिशामा तेणे मुख कर्युं. ते श्लोको आ प्रमाणे—

अपूर्वेय धनुर्विद्या, भवता शिक्षिता कुतः ।
मार्गणौघ समभ्येति, गुणो याति दिगन्तरम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"हे राजा ! तमे आवी अपूर्व धनुर्विद्या क्याथी शीख्या ? के जेथी [1]मार्गणनो समूह समीपे आवे छे, अने गुण दिगन्तमा जाय छे."

सरस्वती स्थिता वक्त्रे, लक्ष्मी करसरोरुहे ।
कीर्तिः किं कुपिता राजन्, येन देशान्तरं गता ॥ २ ॥

भावार्थ—"हे राजा ! सरस्वती तो तमारा मुखमा रही छे, अने लक्ष्मी हस्तकमळमा रही छे, परंतु कीर्ति तमारा पर कोपायमान केम थई ? के जेथी ते देशांतरमा गई."

सर्वदा सर्वदोऽसीति, मिथ्या त्वं स्तूयसे बुधैः ।
नारयो लेभिरे पृष्ठ, न वक्षः परयोषितः ॥ ३ ॥

"हे राजा ! तमे सर्वदा सर्वस्व दान करो छो, एवी तमारी प्रशंसा पंडित लोको करे छे, ते खोटी छे केमके तमारा शत्रुने तमे तमारी पीठ आपता नथी, अने परस्त्रीने वक्षःस्थळ आपता नथी, माटे तमे सर्वस्व दान करनार क्या थया ?"

1 मार्गण एटले बाणनो समूह समीप आवे अने गुण-धनुषनी दोरी दिशाना अंतरमां जाय, ते विरोध थयो तेना परिहारमां मार्गण-मागणना समूह पासे आवे, अने दयादिक गुणो अर्थात् गुणोनी कीर्ति दिगन्तमा जाय

कीर्तिस्ते जातजाड्येव, चतुरंभोधिमज्जनात् ।
आतपाय धरानाथ, गता मार्तंममंडलम् ॥ ४ ॥

"हे राजा ! तमारी कीर्ति चार समुद्रमा मग्न थवाथी तेने जाणे टाढ लागी गइ होय, तेम ते आतप लेवा माटे सूर्यमंमळ तरफ गइ छे. अर्थात् समुद्र पर्यंत विस्तरेली तमारी कीर्ति स्वर्ग लोकमा पण गवाय छ "

ते चारे श्लोके चारे दिशामा फरेलो राजा तुष्टमान थइने बोल्यो के "हे सूरि ! आ चारे दिशामा फरीने में मारु चारे दिशानुं राज्य तमने आपी दीधु छे, ते तमे ग्रहण करो " सूरि बोल्या " हे राजा ! अमारे निर्ग्रंथने राज्यनुं शु प्रयोजन छे ? काइज नथी. " राजाए पूछ्यु " त्यारे तमारी शी इच्छा छे ? " सूरि बोल्या " ॐकारपुरमा महादेवना प्रासादथी उचो चार द्वारनो प्रासाद करावीने तेमा श्री पार्श्वनाथना बिंबने स्थापन करो. " ते सांजळीने राजाए तेवी रीते करावी आप्यु.

पछी सूरि विचरता विचरता दक्षिण दिशामा गया. त्या प्रतिष्ठानपुर (पठ)मा पोताना आयुषनो अंत जाणीने अनशन ग्रहण करी स्वर्ग निवास कर्यो. सूरिना मृत्यु समाचार चितोमगढ पहोंचामवा माटे त्याना संघे एक हुशियार ब्राह्मणने मोकल्यो. ते ब्राह्मण चितोमगढमा आवीने गाममा टेल नाखतो अर्धो श्लोक बोलवा लाग्यो.

" इदानीं वादिखद्योता, द्योतन्ते दक्षिणापथे " ।

" हालमा वादोरूपी पतगीयाओ दक्षिण देशमां प्रकाश करे छे "

ते बे पद सांजळीने सिद्धसेन दिवाकरनी बेन सरस्वती सूरिना मरणनो निश्चय करी बोली के—

नूनमस्तंगतो वादि, सिध्दसेनो दिवाकरः ॥ १ ॥

" अहो ! नक्की वादी सिध्दसेन दिवाकर (सूर्य) अस्त पाम्यो छे, एम आ ब्राह्मणना बे पदथी सिद्ध थाय छे. "

पछी ब्राह्मणे सर्व वृत्तात यथार्थ कही संजळाव्यो. ते सांजळीने सर्व संघ पणो शोकातुर थयो.

"जेम सिंहनो शब्द सांभळीने मोटा हस्तीओ पण पोतानो मद तज दे छे, तेम वृद्धवादी अने सिद्धसेन दिवाकरनो शब्द सांभळीने न्यायशास्त्रमां प्रवीण वादीओ पण गर्वनो त्याग करे छे."

॥ इत्युपदेशप्रासादे द्वितीयस्तंभे एकोनत्रिंशत्तमं व्याख्यानम् ॥ २९ ॥

व्याख्यान ३० मुं.

निमित्त शास्त्रना जाण चोथा प्रभावक विषे

योऽष्टाङ्गनिमित्तानि, शासनोन्नतिहेतवे ।
प्रोच्यते प्रयुज्यमानश्चतुर्थोऽय प्रभावक ॥ १ ॥

भावार्थ—"जे मुनि अष्टांग निमित्तनो शासननी उन्नतिने माटे उपयोग करे छे, ते चोथो प्रभावक कहेवाय छे." आ प्रसंग उपर भद्रबाहु स्वामीनु दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

भद्रबाहु स्वामीनु दृष्टांत

दक्षिण देशमां प्रतिष्ठानपुरने विषे भद्रबाहु अने वराहमिहर नामना बे पंडित भाइओए यशोभद्र सूरिनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे मोटा भद्रबाहुए चौद पूर्वनो अभ्यास कर्यो, तेथी तेने योग्य जाणीने गुरुए सूरिपद आप्युं. तेमणे दशवैकालिक, आवश्यक विगेरे दश सूत्रोपर निर्युक्ति रची. एकदा वराहमिहरे ज्ञाननी गर्वतायी मोटा भाइ पासे सूरिपदनी मागणी करी. त्यारे मोटा भाइए कह्यु के—"हे भाइ ! तु विद्वान छो खरो, परंतु अभिमानी होवाथी तने सूरिपद आपवु योग्य नथी" ते वाक्य वराहने गम्यु नहीं, तेथी तेणे साधुनो वेष छोडी दइ फरीथी ब्राह्मणनो वेष अंगीकार कर्यो

पछी लोकोमां प्रसिद्धि पामवा माटे ते एवी वातो करवा लाग्यो के—" हु बाल्यावस्थाथी ज निरंतर [1]लग्नना विचारमा रहेतो हतो. एकदा गाम बहार एक शिला पर में सिंह लग्न आळेख्यु. पछी ते लग्नने एमनु एम रहेवा दइने हु घेर आवी सुतो. तेवामा मने स्मरण थयु के ते सिंह लग्न भूंसवु भूली गयो छुं, तेथी हु ते लग्न भूसवा माटे त्या गयो. तो ते लग्ननी उपर में सिंहने बेठेलो जोयो. तो पण तेनाथी भय पाम्या विना तेनी नीचे हाथ नाखीने में ते लग्न भूसी नाख्यु, एटले ते लग्नना स्वामी सूर्ये मारी हिंमतथी प्रत्यक्ष थइने मने कह्यु के—" हे वत्स ! हु तारापर प्रसन्न थयो छु माटे तुं वरदान माग. " में कह्यु—" जो तमे प्रसन्न थया हो तो मने तमारा विमानमां बेसाडीने बधु ज्योतिश्चक्र बतावो. " तेथी मने तेणे विमानमा बेसाडीने सर्व ग्रह नक्षत्रो विगेरेनी गति, मान विगेरे बताव्यु. ते जाणीने हु कृतार्थ थयो छु. हवे हु लोकोना उपकार माटेज फर्या करु छु. " आ प्रमाणेनी ते ब्राह्मणनी हकीकत लोकोद्वारा राजाना सांभळवामां आवी, तेथी तेणे वराहने राज्यपुरोहित बनाव्यो.

वराह गर्वने लीधे श्वेतांबरो पर द्वेष राखी तेमनी निरंतर निंदा करतो हतो ते निंदा सहन नहीं करनारा केटलाएक श्रावक भक्तोए भद्रबाहु स्वामी पासे जइ तेमने ते नगरे लावी मोटा उत्सव पूर्वक प्रवेश कराव्यो. तेमनु आगमन सांभळीने वराहने घणो खेद थयो. थोडा दिवस पछी राजाने घेर पुत्रजन्म थयो. तेनी जन्मपत्रिका वराहे करीने तेनुं सो वर्षनु आयुष्य नक्की कर्युं, तथा बीजा पण केटलाएक शुभ योगोनुं वर्णन कर्युं. ते सांभळीने राजा प्रसन्न थयो. त्यारे वराह बोल्यो के—" हे स्वामी ! आपने घेर पुत्रप्रसवनो हर्ष देखाडवा माटे गामना सौ लोको आवी गया, पण इर्ष्यालु भद्रबाहु श्वेतांबर आव्या नथी, माटे ते हर्ष विनाना भद्रबाहुने देशनीकालनो दण्ड करवो जोइए. " ते सांभळीने राजाए पोताना मंत्रीने सूरिपासे नहीं आववानुं कारण जाणवा माटे मोकल्यो. मंत्रीए सूरिने पूछ्यु, त्यारे सूरि बोल्या के—" बे वखत जवा आववानो क्लेश शा माटे करवो जोइए, केमके सातमे दिवसे ते पुत्र बिलाडीना मुखथी मरण पामशे. " ते वात मंत्रीए जइने राजाने कही. ते

1 ज्योतिष शास्त्रनु मुहूर्त

सांभळीने राजाए पुत्रना बचाव माटे आखा गामनी बिलाडीओ गामबहार काढी मूकावी. सातमे दिवसे ते बाळकने तेनी धाव माता बारणामां बेठी बेठी धवरावती हती, तेवामां अकस्मात् बारणानी अर्गला जेने बिलाडी कहे छे ते बाळकना मस्तक पर पडी, अने तरतज ते मरण पाम्यो. तेथी राजाए वराहनो तिरस्कार कर्यो. पछी गुरुने राजाए पूछ्यु के—" हे स्वामी ! तमे तेनु सात दिवसनुं आयुष्य शी रीते जाण्यु ? वळी तमे बिलाडीना मुखथी मरणनु कह्यु हतु, तेवी रीते न थयु, तेनु कारण शुं ? " गुरुए जवाब आप्यो के—" बिलाडीना मुखथी ज तेनु मरण थयु छे ते अर्गलाना अग्रभाग उपर बिलाडीनु चित्र छे, ते जोइ खात्री करो. आयुष्यनी बाबतमा अमे पूर्वनी आम्नायने अनुसारे लग्न लइने शास्त्रानुसार निश्चय कर्यो हतो, अने वराहे तो पुत्रजन्म थया पछी ज्यारे दासीए उचा पीठ पर चडीने घंट वगाड्यो त्यारे पुत्रजन्म थयो एम जाणी लग्न लीधु हतु तेथी तेना लग्नमा फरक पड्यो छे " ते सांभळीने वराहने घणो खेद थयो एटले ते सर्व पुस्तकोने जळमा बाळी देवा तैयार थयो सूरिए तेनो निषेध करीने कह्यु के—" हे भाइ ! ए सर्व शास्त्रो सर्वज्ञ प्रणीत होवाथी शुद्ध ज छे

अमन्त्रमक्षरं नास्ति, नास्ति मूलमनौषधम् ।
अनाथा पृथ्वी नास्ति, आम्नाया खलु दुर्लभा ॥ १ ॥

" मत्र विनानो एके अक्षर नथी, औषध विनानु एक पण मूळीयु नथी अने नाथ विनानी जरा पण पृथ्वी नथी, परतु तेनी आम्नाय प्राप्त थवी दुर्लभ छे "

इत्यादिक समजावीने सूरिए तेने शांत कर्यो. पछी एक दिवसे राजाए सूरिने तथा ब्राह्मणने पूछ्यु के " आजे नवीन शु थशे ? ते कहो " त्यारे वराह बोल्यो के " आजे सायकाळे अमुक स्थाने अकस्मात् जलवृष्टि थशे, अने मुकरर करेला मडळमा एक बावन पळनो मत्स्य आकाशमाथी पडशे. " पछी गुरु बोल्या के " ते वात खरी, पण एकावन पळनो मत्स्य पडशे अने ते मडळनी बहार पूर्व दिशामा पडशे " सायकाळे गुरुना कह्या प्रमाणे थयु तेथी राजाए जैन धर्म अगीकार कर्यो, वराहे खेद पामीने तापसी दीक्षा लीधी, अने अज्ञान कष्ट

करीने आयुष्य क्षये मरण पामी व्यंतर थयो. पूर्वनो द्वेष सांजरता तेणे साधुओने उपद्रव करवा विचार्युं, पण तेमनापर तेनी शक्ति चाली शकी नहीं, तेथी ते दुष्टे श्रावकोमा रोगो उत्पन्न करवा मांड्या. श्रावकोए गुरुने विज्ञप्ति करी, त्यारे गुरुए उपसर्गमात्रनो नाश करनार उपसर्गहर स्तोत्र बनावीने श्रावकोने तेनो हमेशा पाठ करवा कह्युं. तेथी ते व्यंतर श्रावकोने पण काइ करी शक्यो नहीं. ते ' उवसग्गहर ' स्तोत्र हजु पण पाठ करवाथी उपद्रवोनो नाश करे छे. अनुक्रमे अनेक नव्य जीवोने प्रतिबोध करी नद्रबाहु स्वामी स्वर्गे गया.

" नद्रबाहु स्वामीए शुन्न निमित्तना बळथी राजाने जैनधर्मी कर्यो, तेवी रीते बीजाओए पण शासननी उन्नतिने माटे यथा शक्ति प्रयास करवो "

इत्युपदेशप्रासादे द्वितीयस्तंने त्रिंशत्तम
व्याख्यानम् ॥ ३० ॥

॥ इति द्वितीयस्तम्न. ॥

श्री उपदेश प्रासादे

॥ तृतीयस्तंभः ॥

व्याख्यान ३१ मु.

पाचमा तपस्वी प्रभावक विषे

विविधाभिस्तपस्याभिर्जैनधर्मप्रकाशक ।

विज्ञेय पञ्चमो भव्यै. , स तपस्वी प्रभावक ॥ १ ॥

अर्थ—" जे विविध प्रकारनी तपस्याए करीने जैन धर्मनो प्रकाश करे ते तपस्वीने भव्य प्राणीओए पाचमो प्रभावक जाणवो." आ प्रसग उपर काष्ठ मुनिनु दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

काष्ठमुनिनु दृष्टान्त

राजगृह नगरमा काष्ठ नामे श्रेष्ठी रहेतो हतो तेने वज्रा नामे कुलटा स्त्री हती ते स्त्रीथी उत्पन्न थयेलो देवप्रिय नामनो तेने एक पुत्र हतो ते लेखशाळामा अभ्यास करतो हतो ते श्रेष्ठीने घेर पुत्रनी जेम पालन करेला पोपट, मेना अने कुकडो ए त्रण पक्षीओ हता एक ब्राह्मणना पुत्रने घरनी संभाळ करवा राखेलो हतो. एकदा श्रेष्ठी पोताना घरनो कार्यभार पोतानी स्त्रीने तथा मेनाने सोपीने लक्ष्मी मेळववा माटे परदेश गयो पाछळ ते ब्राह्मणपुत्र युवावस्था पाम्यो, त्यारे वज्रा तेनी साथे विषय सुख भोगववा लागी. एकदा ते वज्राने विषयासक्त जोइने मेनाए पोपटने कह्यु के ' पापकर्ममा तत्पर थयेला आ धणीने आपणे निवारवी जोइए. त्यारे पोपट बोल्यो के—

उपदेशो हि मूर्खाणा, प्रकोपाय न शान्तये ।
पय.पानं भुजगाना, केवलं विषवर्धनम् ॥ १ ॥

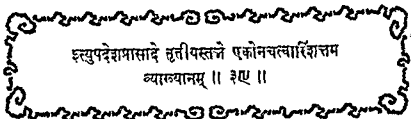
भावार्थ—" मूर्खने उपदेश आपनो, ए तेने कोप उत्पन्न करवा माटे थाय छे, पण शांतिने माटे थतो नथी. जुओ ! सर्पने जे दूधपान कराववुं, ते केवळ विषनी वृद्धिने माटे ज थाय छे. "

माटे हे प्रिया ! हमणा तेमने उपदेश आपवानो समय नथी. " ते सांभळीने मेना बोली के " सत्य बोलवाथी जो कदाच मारु अकाळे मृत्यु थाय, तो ते श्रेष्ठ छे, पण आ पितातूल्य श्रेष्ठिना घरमा अकार्य थतु जोवुं, ते श्रेष्ठ नथी ; हु ते जोइ शकती नथी. " आ प्रमाणे ते मेनाने बोलती सांभळीने वज्राए क्रोधथी ते मेनाने पकडी अग्निमा नाखी दीधी. ते जोइ पोपट तो मौन ज धारी रह्यो.

एकदा ते वज्राने घेर वे मुनि भिक्षाने माटे आव्या. तेमांथी वृद्ध मुनिए लघुमुनिने कह्यु के ' आ कूकडानु मस्तक माजर सहित जे खाय, ते राजा थाय. " ते वचन पेला ब्राह्मणपुत्रे भींतनी आथे ऊभा रहीने सांभळ्यु पछी तेणे वज्राने कह्यु के ' आ कूकडानु मस्तक माजर सहित राधीने मने खावा आप. ' ते सांभळीने वज्राए प्रथम ना कही, पण तेना वधारे आग्रहथी तेणीए तेम करवानुं स्विकार्युं. पछी ते कूकडाने मारीने तेने पकाववा माटे अग्निपर मूक्यो. ते वखते ते ब्राह्मणपुत्र स्नान करवा गयो, तेवामा वज्राना पुत्रे लेखशाळामाथी घेर आवी खावानु माग्यु. एटले वज्राए तेना जारनु कहेलु भूली जवाथी पेला कूकडानु मस्तक तेने खावा आप्यु. ते खाइने ते शाळामा गयो. थोडीवारे पेलो ब्राह्मण स्नान करीने घरे आवी खावा बेठो. ते वखते कूकडाना मस्तक विनानु केवळ शरीरनु मांस जोइने ते बाबत तेणे वज्राने पूछ्यु. एटले तेणीए कह्यु के ' मारा पुत्रने भूलथी आप्यु छे. ' ते सांभळी क्रोधथी ब्राह्मण बोल्यो के ' जो तारा छोकराने मारीने तेना पेटमाथी कूकडानु मस्तक मने खावा आपीश तो आपणी प्रीतिनो भंग नहीं थाय, नहीं तो हु तारी साथे प्रीति राखीश नहीं.' ते सांभळीने वज्राए तेम करवानु स्वीकार्युं. (कामी पुरुषो शु शु अकार्य स्विकारता नथी !) ते वात ते पुत्रनी धात्री (धाव माता)ए सांभळी. तेथी ते लेखशाळामाथी पधार्यो ज पुत्रने

स्थाने गया.

" श्री प्रज्ञुने विषे ज्ञक्तियुक्त चित्तवाळो जीर्णश्रेष्ठी बारमा स्वर्गनु सुख ज्ञोगवीने अनुक्रमे शिवपद (मोक्ष)ने पामशे. "



व्याख्यान ४० मु

पांचमा तीर्थसेवारूप समकितना ज्ञूषण विषे

तीर्थानां सतत सेवा, सग सविज्ञचेतसाम् ।
कथिता तीर्थसेवा सा, पचम बोधिज्ञूषणम् ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—" निरतर तीर्थोनी सेवा करवी, तथा सविज्ञ छे चित्त जेनु एवा मुनिओनो संग करवो, ने तीर्थसेवा नामनु पाचमु समकितनु ज्ञूषण कहेलु छे "

जेनाथी ससाररूपी सागर तरी शकाय छे ते तीर्थ कहेवाय छे श्री शत्रुंजय, अष्टापद विगेरे तीर्थो छे तेनी निरतर (अश्रातपणे) सेवा एटले यात्रा करवी सविज्ञचित्तवाळा साधुओनो ससर्ग करवो कह्यु छे के—

साधूना दर्शन पुण्य, तीर्थज्ञूता हि साधव. ।
तीर्थं फलति कालेन, साधवस्तु पदे पदे ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—" साधुओनु दर्शन पुण्यरूप छे, केमके साधुओ जगमतीर्थरूप छे. स्थावर तीर्थ तो काळे करीने फळदायक थाय छे, पण जगम तीर्थ साधुओ तो पगले पगले फळदायी थाय छे. "

आ प्रमाणे सत्तीर्थनी सेवा मोटो गुण उत्पन्न करे छे, परंतु अप्रशस्त तीर्थनी सेवा काइपण गुणकारक थती नथी. ते उपर एक दृष्टांत कहे छे—

लौकिक तीर्थसेवापर तुंबडीनो दृष्टांत

न श्लाघ्यतीर्थैरमलीभवन्ति, जीवा दुरन्तैर्दुरितैः प्रलिप्ताः ।
मीष्टा सुतीर्थे स्नपितापि मातुर्वाग्भिस्तनूजेन न तुंबिकासीत्॥१॥

भावार्थ—" दुरन्त पापोथी लिप्त थयेला जीवो प्रशस्त तीर्थो करवाथी पण निर्मळ थता नथी. माताना वचनथी पुत्रे सुतीर्थमा स्नान कराव्युं तोपण तुंबडी (कडवी तुवडी) मीठी थइ नहीं. "

विष्णुस्थळ नगरमां गोमती नामे एक सार्थवाहनी स्त्री परम श्राविका हती. तेने गोविंद नामनो पुत्र हतो. ते गाढ मिथ्यात्वी हतो. माताए तेने जैन धर्म पमाडवा माटे घणो घणो प्रतिबोध कर्यो, पण तेणे मिथ्यात्वनो त्याग कर्यो नहीं. एकदा गोविंद तीर्थयात्रा करवाने जवा तैयार थयो. त्यारे तेने तेनी माताए कह्युं के " हे वत्स ! गंगा, गोदावरी, त्रिवेणीसंगम, प्रयाग, विगेरे लौकिक तीर्थमां जळ, दर्भ अने माटी विगेरे वडे स्नान करवाथी हिंसा, असत्य, चोरी, विगेरेथी बंधायेला पापोनो नाश थतो नथी. " आ प्रमाणे अनेक रीते उपदेश आप्या छतां ते पुत्रे पोतानो आग्रह मूक्यो नहीं, त्यारे तेने बोध करवा माटे एक कडवी तुवडी आपीने कह्युं के " हे पुत्र ! सर्व तीर्थोमां तारी साथेज विधि पूर्वक आ तुवडीने पण स्नान करावजे. आटलुं मारु वचन तारे अवश्य करवु." ते सांभळीने मातानु वचन अंगीकार करी पोतानी इच्छा प्रमाणे गोविंद तीर्थ यात्रा करवा नीकळयो अने घणा तीर्थोमां माताना कह्या प्रमाणे तुवडीने पण पोतानीज जेम स्नानादिक कराव्युं. अने पोते केटलेक ठेकाणे मुंडन करावी हाथ उपर घणी छापो मरावी पोताना नगरमा पाछो आव्यो. पछी पोताने घेर आवी माताने विनय पूर्वक वंदन करी तुंबडीनु वृत्तांत कहीने ते माताने आपी. भोजन वखते गोविंद जमवा बेठो, त्यारे माताए पेली कडवी तुवडीनुं शाक करीने तेने पीरस्यु. गोविंदे ते शाक लेशमात्र चाख्यु के तरतज ते बोल्यो के ' अरे ! आ तो शाक कडवुं झेर जेवुं छे, ते खाइ शकाय तेवुं नथी. ' त्यारे माता बोली के " हे पुत्र ! जे तुवडीने तें सर्व तीर्थोमां स्नानादिक कराव्यु छे, ते तुवडीना शाकमां कडवाश क्यांथी ? " गोविंद बो-

ह्यो—' हे माता ! जळमा नवरावचाथी तेनी अंतरनी कमवाश शी रीते जाय ?'' माताए कयु " हे वत्स ! ज्यारे आनो कड दोष पण गयो नहीं, त्यारे हिंसा, मृषावाद, चोरी, मैथुन विगेरेथी आत्माने लागेल पाप समूह मात्र स्नान करवाथी शी रीते जाय ? " आ प्रमाणेनु मातानु वचन सत्य मानीने गोविंद माता साथे गुरु पासे जइ श्रावक धर्म अंगीकार कर्यो. पछी ते गोविंद शत्रुंजय तीर्थपर सिद्धि सुखने पाम्यो

आ प्रसंग उपर बीजो पण एक प्रबंध छे ते नीचे प्रमाणे—

सुतीर्थनी यात्रा पर त्रिविक्रमनी कथा

श्रावस्ती नगरीमा त्रिविक्रम नामे राजा हतो ते एकदा अरण्यमा गयो हतो. त्या एक पक्षीने तेना माळामां रहीने विरस शब्द करतु सांभळीने अपशुकन थयु जाणी राजाए तेने बाण वडे प्रहार कर्यो. एटले तरतज ते पक्षी पृथ्वी पर पडी तरफडीया मारवा लाग्यु ते जोइने राजाने तेना पर बहु अनुकंपा आवी. तेथी ते पश्चात्ताप करतो त्याथी आगळ चाल्यो थोडे दूर जता एक महामुनिने जोइ तेमने नमन करीने राजा तेमनी पासे बेठा. त वखते मुनिए तेने अहिंसा धर्मनो उपदेश कर्यो ते सांभळीने राजाए विचार्यु के " अहो ! में जे हिंसा कर्म कर्यु ते कोइना जाणवामा नहोतु, तोपण आ मुनिए जाणी लीधु. तो ते पापनो नाश करवा माटे आवा ज्ञानी मुनिनी पासे दीक्षा ग्रहण करु " एम विचारीने तृणनी जेम राज्यनो त्याग करी राजाए त मुनि पासे दीक्षा लीधी. अनुक्रमे उग्र तपस्या, करवाथी ते राजर्षिने तेजोलेश्या उत्पन्न थइ. पछी ते पृथ्वी पर यथेष्ट विहार करवा लाग्या.

पेलो पक्षी मरण पामीने भिल्ल थयो एकदा ते राजर्षिने विहार करता देखीने ते भिल्ले पूर्वना वैरने लीधे तेना पर क्रोधयुक्त थइ यष्टि वडे प्रहार कर्यो तेथी राजर्षिए पोताना मुनिपणाने भूली जइने तेजोलेश्या वडे ते भिल्लने बाळी दीधो. ते मृत्यु पामीने कोइ वनमां सिंह थयो त्या पण एकदा ते राजर्षिने जोइ ते सिंह पूछडु उछाळतो तेनी सामे धस्यो ते वखते पण मुनिए तेजोलेश्याथी तेने बाळी नाख्यो. त्याथी मरीने ते सिंह हाथी थयो ते हाथी एकदा ते मुनिने जोइ तेनी सामे दोड्यो तेने पण मुनिए बाळी नाख्यो पछी ते हाथी वन

सांढ थयो, तेने पण मुनिए बाळी दीधो त्यांथी ते सांढ सर्प थइ मुनिने करडवा दोड्यो. ते वखते पण मुनिए तेने हण्यो. त्यार पछी ते सर्प ब्राह्मण थयो. ते मुनिनी घणी निंदा करवा लाग्यो. अनुक्रमे तेने पण मुनिए बाळी भस्म कर्यो 'अहो ! निर्विवेकीने सबर क्याथी होय ? '

आ प्रमाणे ते मुनिए ममता रहित छतां सात हत्याओ करी. योगीश्वर थइने पण आवा पाप कर्मो कर्या. ' अहो ! कर्मनी गति केवी विचित्र छे ? ' पछी ते ब्राह्मण यथाप्रवृत्तिकरणने लीधे शुभ कर्मना उदयथी वाराणसी पुरीमा महाबाहु नाम राजा थयो. ते राजा एकदा पोताना महेलनी बारीमा उभो हतो ते वखते कोइ मुनिने जता जोइने इहापोह करवाथी तेने जातिस्मरण उत्पन्न थतां तेणे पोताना साते भवो जोया. एटले ' अहो ! ते मुनिने हु पापनु कारण थयो.' एम विचारी ते मुनिनी शोधने माटे तेणे अर्धो श्लोक करी ते श्लोक पूरो करनारने लाख सोनामहोर आपवानी उद्घोषणा करावी. ते अर्धो श्लोक आ प्रमाणे—

" विहग· शबर. सिंहो, द्वीपी संढः फणी द्विजः । "

आ अर्धा श्लोकने पूर्ण करवा माटे सर्व जनो निरतर हालता चालता पण गोख्या करता हता. परतु कोइए ते श्लोक पूर्ण कर्यो नहीं. अन्यदा तेज राजर्षि फरता फरता वाराणसी नगरी पासे आव्या. त्या गाम बहार कोइ एक गोवाळना मुखथी तेणे ते अर्धा श्लोक सांभळ्यो. एटले क्षणवार विचार करीने मुनिए आ प्रमाणे उत्तरार्ध पूर्ण कर्यु के—

" येनामी निहताः कोपात्, स कथं भविता हहा ॥ "

ते उत्तरार्ध सांभळीने कोइ गोवाळे राजा पासे जइ ते श्लोक पूर्ण करी आप्यो अने ' आ समस्या में पूर्ण करी. ' एम धृष्टताथी तेणे राजाने कह्यु. ते सांभळीने राजाए विस्मित थइ तेने दबावीने पूछ्यु त्यारे तेणे ते मुनिनुं नाम लइ सत्य वात कही पछी राजा ते मुनि पासे गयो अने तेमने खमाव्या. साते भवनी वात राजाए तेमने निवेदन करी. एटले मुनिए पण राजाने खमाव्यो. ए रीते ते बन्नेए परस्पर पोतपोताना अपराधनी निंदा गर्हा करता प्रीतिथी चिरकाळ सुधी वातो करी.

ए समयमां ते नगरीए कोइ केवळज्ञानी मुनि पधार्या. तेमने वंदना करीने ते बन्नेए पोतपोताना पापनी आलोयणा मागी. त्यारे केवळी बोल्या के 'तमारु पाप शत्रुंजय तीर्थे गया विना उग्र तपोथी पण नाश पामे तेम नथी.' ते सांभळीने राजाए दीक्षा लीधी. पछी ते बन्ने जणा शत्रुंजयादिक तीर्थोनी यात्रा करी आवर्षो संयमनु प्रतिपालन करी हत्यादिक पापनो नाश करीने शत्रुंजय तीर्थे सिद्धि पदने पाम्या.

" आ प्रमाणे समकितना ठेल्ला भूषण—तीर्थसेवानी प्रशंसा सांभळीने हे भव्य जीवो ! कुविकल्पना समूहनो त्याग करीने सुतीर्थनी सेवा करो. "

इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे चत्वारिंशत्तम व्याख्यानम् ॥ ४० ॥

व्याख्यान ४१ मुं.

समकितना पांच लक्षणमाना पहेला शम नामना लक्षण विषे.

शमै शाम्यति क्रोधादीन्नपकारे महत्यपि ।
लक्ष्यते तेन सम्यक्त्व, तदाद्यं लक्षण भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे मोटा अपकार करनार उपर पण शमभाव राखीने क्रोधादिकने शांत करे, तेनामा शम नामनु पहेलु लक्षण कहीए. तेनाथी समकित ओळखाय छे. अर्थात् एवो शम जेनामा होय ते समकितवंत छे एम जाणी शकाय छे. "

आ प्रसंग उपर कुरुघट मुनिनो प्रबंध छे ते नीचे प्रमाणे—

कुरगडु मुनिनी कथा

विशाला नगरीमां कोइक आचार्यना शिष्य मासक्षपणने पारणे एक

क्षुल्लक साधुनी साथे स्थंडिल जता हता. मार्गमां प्रमादने लीधे ते तपस्वीना पग तळे एक नानी देडकी आववाथी मरी गइ. ते जोइने क्षुल्लक साधु ते वखते कांइ पण न बोलतां मौन रह्या. प्रतिक्रमण वखते ते तपस्वीए ते पापनी आलोयण लीधी नहीं. त्यारे तेने क्षुल्लक साधुए याद आप्यु के " हे तपस्वी ! तमे पेलुं पाप त्रिकरण शुद्धि पूर्वक केम आलोचता नथी ? " ते सांभळीने ते तपस्वीए विचार्युं के "आ दुष्ट बुद्धिवाळो क्षुल्लक साधु सर्व साधु समक्ष मारुं वगोणु करे छे माटे तेने हुं हणुं." एम विचारीने तपस्वी मुनि तेने मारवा दोड्या. क्रोधथी अन्ध थयेला ते तपस्वीने वचमां थांभलो आववाथी तेनी साथे ते जोरथी अथडाया, एटले तरतज मूर्छा खाइने मृत्यु पाम्या. क्रोधने लीधे व्रतनी विराधना करवाथी ते मरीने ज्योतिषी देवता थया त्यांथी आयुष्य पूर्ण थये चवीने दृष्टिविष सर्पना कुळमां देवताधिष्ठित सर्प थया. ते सर्पना कुळमां बीजा सर्वे सर्पो पूर्वभवमां पापनी आलोचना नहीं करवाथीज उत्पन्न थयेला हता. ते सर्वे जातिस्मरण उत्पन्न थवाथी आहार शुद्धि करता हता तेमने जोइने आ नवा सर्पने पण पूर्वे मुनिना भवमां करेली आहार गवेषणाने संभारतां जातिस्मरण उत्पन्न थयुं. तेथी ' मारी दृष्टिथी कोइपण जीवोनो नाश न थाओ ' एम विचारीने ते सर्प आखो दिवस बिलमांज मुख राखीने रहेतो हतो, अने रात्रे प्रासुक वायुनुंज भक्षण करतो हतो.

एकदा कुंभ नामना राजानो पुत्र सर्पदंशथी मृत्यु पाम्यो. तेथी ते राजा सर्व सर्पजातिपर क्रोध उत्पन्न थवाथी सर्प मात्रने मरावबा लाग्यो. जे कोइ माणस जेटला सर्पने मारीने लावे, तेने राजा तेटला दीनार (महोर) आपे तेम तेणे जाहेर कर्युं. ते समये केटलाक लोको सर्पने आकर्षण करवानी विद्या (मंत्र)नो अभ्यास करवा लाग्या. एकदा कोइ मनुष्य ते दृष्टिविष सर्पना बिल पासे आवी सर्पविद्यानो मंत्र भणवा लाग्यो. तेथी ते सर्प बिलमां रही शक्यो नहीं. तेणे विचार कर्यो के ' मने जोइने अन्य जीवोनो नाश न थाओ ' एम विचारी तेणे पोतानुं मुख बिलमांज राखी पूछडु बहार काढयुं. ते पूछडु हिंसकोए छेद्युं. फरीथी सर्पे पाछळनो भाग जरा जरा बहार काढवा मांड्यो. एटले ते पण हिंसके काप्यो. एम करता ते सर्पना आखा शरीरना ककडा करी नांख्या. ते वखते ते सर्प विचारवा लाग्यो के " हे चेतन ! आ देहना ककडा थवाने मीषे तारा दुष्कर्मनाज ककडा

थाय छे. माटे हे जीव ! परिणामे हितकारक एवी आ व्यथाने तु समता पूर्वक सहन कर. " एम शुज ध्यान ध्यातां ते सर्प मरण पामीने तेज कुंज राजानी रा णीनी कुक्षिमां अवतर्यो.

नाग देवताए राजाने स्वप्नमां आवीने कह्युं के ' हवेथी तु सर्पनो घात करीश नहीं, तने पुत्र थशे ' त्यार पछी राजाए सर्पनी हिंसानो त्याग कर्यो. अ नुक्रमे समय पूर्ण थतां राणीए पुत्र प्रसव्यो. राजाए स्वप्नने अनुसारे तेनुं नागद त्त एवु नाम पाम्यु ते कुमार अनुक्रमे युवावस्था पाम्यो त्यारे एक वखत ते महे लनी बारीमां उज्नो हतो, ते वखते त्यांथी एक मुनिने जता जोइने तेने जातिस्म रण उत्पन्न थयु. तेथी वैराग्य पामीने ते कुमारे महा प्रयत्नथी माता पितानी आ ज्ञा लइ सुगुरुनी समिपे दीक्षा ग्रहण करी.

ते साधु तिर्यंच योनिमांथी आवेला हता तेथी तेमज क्षुधावेदनीयनो उ दय थवाथी पोरिसीनु पण प्रत्याख्यान करी शकता नहीं तेथी तेने गुरुए कह्यु के " हे वत्स ! तु मात्र एक क्षमानुज परिपूर्णपणे पालन कर, तेम करवाथी तु सर्व तपनु फळ पामीश " ते सांजळी ते गुरुनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवा लाग्या. ते साधु ह मेशां प्रात काळ थतांज एक गडुक प्रमाण कूर (चोखा) लावीने वापरता, हता त्यारेज तेने कांइक शांति थती हती. तेथी लोकमां तेनु कूरगडुक एवु नाम पड्यु

ते गच्छमां चार तपस्वी साधुओ हता तेमा पहेला साधु मासोपवासी ह ता, बीजा बे मासना उपवासी हता, त्रीजा त्रण मासना उपवासी हता, अने चोथा चार मासना उपवासी हता. ते चारे तपस्वीओ कूरगडु मुनिने नित्यज्नो जी कहीने तेनी निंदा करता हता. एकदा शासनदेवीए त्यां आवी कूरकडुक मु निने वंदना करी तथा अनेक प्रकारे तेनी प्रशंसा करी. पछी सर्व साधु समक्ष क ह्यु के ' आ गच्छमां आजथी सातमे दिवसे प्रथम एक मुनिने केवळ ज्ञान थशे ' ते सांजळी पेला चारे तपस्वीओ बोल्या क ' हे देवी ! अमारो अनादर करीने तें आ कूरगडुक साधुने केम वंदना करी ? ' त्यारे देवी बोली के 'हु जावतपस्वी ने वांदु छु ' एम कहीने ते देवी पोताने स्थाने गइ.

सातमे दिवसे कूरगडु मुनिए शुद्ध आहार लावीने गुरुने तथा पेला तप

स्त्रीओने देखाड्यो. ते वखते पेला तपस्वीओना मुखमा क्रोधथी श्लेष्म (बळखो) आव्यो. ते तेमणे ते आहारमा नांख्यो ते जोइ कूरगडुए विचार कर्यो के—

धिङ्मा प्रमादिनं स्वल्पतपःकर्मोज्झितः सदा ।
वैयावृत्यमपि ह्येषां ,मया कर्त्तुं न शक्यते ॥ १ ॥

" मने प्रमादीने धिक्कार छे. हु निरंतर जरा पण तपस्याथी रहित छु, तेमज आ तपस्वीओनी वैयावच्च पण हु करी शकतो नथी. " इत्यादि आत्मनिंदा करता अने निःशंकपणे ते आहार वापरता शुक्लध्यानमा आरूढ थयेला ते मुनिने केवळ ज्ञान प्रगट थयुं ते वखते देवोए तेनो महिमा कर्यो. ते जोइने पेला चारे तपस्वीओए विचार कर्यो के " अहो ! आ मुनिज खरेखरा भावतपस्वी छे अने आपणे तो द्रव्य तपस्वी छीए. " एम विचारीने ते चारे तपस्वीओए ते केवळीने खमाव्या. ते वखते मन, वचन अने कायानी शुद्धिथी खमावता ते चारेने पण समकाळे चरम ज्ञान (केवळ ज्ञान) प्रगट थयु. अनुक्रमे ते पाचे केवळी मोक्षपदने पाम्या.

" शांति, क्षमा, क्षांति, शम विगेरे नामथी आ गुणने सूत्रने विषे समकितना प्रथम लक्षण तरीके वर्णवेलो छे ते शमगुण धर्मने विषे प्रथम छे, अने छेल्ला ज्ञानने आपनार छे. माटे हे भव्य जीवो ! तमे शमता गुणने धारण करो. "

इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तम्भे एकचत्वारिंशत्तम
व्याख्यानम् ॥ ४१ ॥

व्याख्यान ४२ मुं.

समकितना बीजा संवेग नामना लक्षण विषे.

दुःखत्वेनानुमन्वानः, सुरादिविषय सुखम् ।
मोक्षाभिलाषसंवेगान्वितो हि दर्शनी भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—"जे पुरुष देवादिकना सुखने पण दुःख रूपे माने, अने मोक्षना अभिलाष रूप संवेग सहित होय, ते समकितवान कहेवाय छे"

आ संबंधमां निर्ग्रंथ मुनिनो प्रबंध छे ते नीचे प्रमाणे—

निर्ग्रन्थ (अनाथी) मुनिनी कथा

राजगृह नगरमां श्रेणिक राजा राज्य करता हता ते नगरनी बहार उपवनमां क्रीडा करता राजाए एक मुनिने समाधिमां तत्पर जोया. ते मुनिनुं शरीर अति कोमळ हतुं, अने तेनुं रूप जगतने विस्मय करे तेवुं सुंदर हतुं. तेमने जोइने राजाए विचार्युं के—

अहो अस्य मुने रूपमहो लावण्यवर्णिका ।
अहो सौम्यमहो क्षान्तिरहो भोगेष्वसंगता ॥ १ ॥

भावार्थ—"अहो! आ मुनिनुं रूप! अहो! आना लावण्यनी वर्णिका! अहो! आनी सौम्यता! अहो! एनी क्षमा! अने अहो! आनी भोगमां पण असंगता." अर्थात् ए सर्व अप्रतिम छे

आ प्रमाणे विचारी तेमने ध्यानमां तत्पर जोइ राजाए तेमना चरणकमळमां प्रणाम करीने पूछ्युं "हे पूज्य! आवी युवावस्थामां तमे आवुं दुष्कर व्रत केम ग्रहण कर्युं? तेनुं कारण कहो." त्यारे मुनि बोल्या के—

मुनिराह महाराज, अनाथोऽस्मि पतिर्न मे ।
अनुकंपाकराभावात्तारुण्येऽप्यादृतं व्रतम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" मुनिए कह्यु के हे महाराजा ! हुं अनाथ छुं. मारो कोइ स्वामी नथी. मारापर अनुकंपा करनारनो अभाव होवाथी में युवावस्थामांज व्रत-ग्रहण कर्युं छे. "

ते सांभळीने हास्य करता श्रेणिक राजाए कह्युं के—

वर्णादिनामुना साधो, न युक्ता ते ह्यनाथता ।
तथापि ते त्वनाथस्य, नूनं नाथो भवाम्यहम् ॥ १ ॥
भोगान् भुंक्ष्व यथास्वैरं, साम्राज्यं परिपालय ।
यतः पुनरिदं मर्त्यजन्मातीव हि दुर्लभम् ॥ २ ॥

भावार्थ—" हे साधु ! आ तमारु रूप विगेरे जोतां तमे अनाथ छो ए वात युक्त जणाती नथी. तोपण जो तमे अनाथ हो, तो हुं तमारो नाथ थवा तैयार छु. तमे यथेच्छ भोग भोगवो, अने मारा साम्राज्यनु प्रतिपालन करो आ मनुष्य जन्म फरीने मळवो अत्यंत दुर्लभ छे. अर्थात् आवी युवावस्था भोग भोगव्या विना निष्फळ जवा देवी योग्य नथी. "

ते सांभळीने मुनि बोल्या के " हे राजा ! तमे पोतेज अनाथ छो तो मारा नाथ शी रीते थइ शकशो ? " आ प्रमाणेनु कोइ पण वखत नहीं सांभळेलुं वाक्य सांभळीने राजाए आश्चर्य पामीने पूछ्युं के " हे मुनि ! तमारे तेम कहेवुं योग्य नथी. केमके हुं अनेक हस्तीओ, अश्वो, रथो अने स्त्रीओ विगेरेनु प्रतिपालन करुं छुं, तेथी हुं तेओनो नाथ छु; मने तमे अनाथ केम कहो छो ? " त्यारे मुनि पण कांइक हास्य करतां बोल्या के " हे राजा ! तमे अनाथ अने सनाथनो मर्म जाणता नथी. माटे ते विषे हुं तमने माराज दृष्टांतथी समजावुं छु ते सांभळो—

कौशांबी नगरीमां महीपाल नामे राजा मारा पिता छे, तेनो हुं पुत्र छुं. मने बाल्यावस्थामा ज नेत्रनी पीडा थइ अने तेनी पीडाथी मारा आखा शरीरमां दाहज्वर पेदा थयो. मारी व्यथा दूर करवा माटे अनेक मंत्रवादीओए तथा वैद्योए अनेक उपायो कर्या परंतु तेओ मारी व्यथा दूर करी शक्या नहीं. मारा पिताए मारे माटे पोतानु सर्वस्व आपी देवानुं कबुल कर्युं, परंतु मने दुःखथी मुक्त

करी शक्या नहीं, माटे हु अनाथ छु. मारा पिता, माता, भ्राता, बहेन, अने स्त्री विगेरे सर्व स्वजनो मारी पासे बेसीने रुदन करता हता अने भोजननो पण त्याग करीने मारी पासे ज निरंतर बेसी रहेता हता परतु तेओ मारा दुःखनो नाश करी शक्या नहीं. तेज मारी अनाथता छे. त्यारपछी में एवो विचार कर्यो के "आ अनादि ससारमा में आ करतां पण अधिक वेदनाओ अनेक वखत सहन करी हशे, पण आजे आटली वेदना पण हु सहन करी शकतो नथी, तो हवे आगामी काळे अनादि ससारमां हु आवी वेदना केम सहन करी शकीश ? माटे जो हु क्षणवार पण आ वेदनाथी मुक्त थाउ, तो तरतज प्रव्रज्या ग्रहण करु, के जेथी आगामी काळे आवी वेदना सहन करवी पडे नहीं." हे राजा ! आ प्रमाणे विचार करता हु सुइ गयो अने तरतज मारी वेदना शांत थइ गइ तेथी योगने क्षेमनो करनार होवाथी आ आत्मा ज नाथ छे एवो निश्चय करीने में प्रात.काळे स्वजनोने समजावी तेमनी रजा लइने चारित्र अगीकार कर्युं, छे. तेथी हवे हु मारो तथा बीजा त्रसादिक जीवोनो पण नाथ थयो छु. केमके योग क्षेम करनार मात्र आत्मा ज छे. वळी हे राजा ! बीजी रीते पण अनाथता कहेली छे, ते सांभळो—

प्रव्रज्य ये पञ्च महाव्रतानि, न पालयन्ति प्रचुरप्रमादात् ।
रसेषु गृध्धा अजितेन्द्रियाश्च, जिनैरनाथाः कथितास्त एव॥१॥

भावार्थ—" जेओ प्रव्रज्या ग्रहण करीने अति प्रमादने लीधे पांच महाव्रतोनु पालन करता नथी, रसोने विषे गृद्ध रहे छे, अने इन्द्रियोने नियममां राखता नथी तेओने ज श्रीजिनेश्वरे अनाथ कहला छे. "

निरर्थका तस्य सुसाधुता हि, प्रान्ते विपर्यासमुपैति योऽलम्।
न केवलं नश्यति चेहलोकस्तस्यापर. किंतु भवो विनष्ट ॥२॥

भावार्थ—" जे साधु अन्ते विपरीत आचरण करे छे, तेनु साधुपणु निरर्थक छे. अने तेथी मात्र आ लोकज तेनो नाश पामे छे एम नही, पण तेनो परभव पण नाश पामे छे "

निराश्रव सयममात्मबुद्ध्या, प्रपाल्य चारित्रगुणान्वित. सन्।

क्षिप्त्वाष्टकर्माण्यखिलानि साधुरुपेति निर्वाणमनन्तसौख्यम् ॥३॥

भावार्थ—" चारित्रना गुणोथी युक्त एवो साधु आत्मबुद्धिथी आश्रव रहित संयमनुं प्रतिपालन करीने समग्र आठे कर्मनो क्षय करी, अनंत सुखवाळा निर्वाण (मोक्ष) पदने पामे छे. "

आ प्रमाणे मुनिनां वाक्य सांभळीने श्रेणिक राजा अत्यंत खुशी थयो अने हाथ जोडीने तेणे कह्युं के " हे मुनिराज ! तमे मने जे सनाथ अने अनाथ पणानुं रहस्य कह्युं ते खरेखर सत्य छे. तेमां जरा पण असत्य नथी. हे मुनि ! तमे मनुष्य जन्म पाम्या ते सफळ छे. जगतने विषे तमेज उत्तम लाभ पाम्या छो. वळी तमे श्री जिनेश्वरना धर्मने विषे रह्या छो, तेथी तमे ज सनाथ छो अने तमेज बंधु युक्त छो. वळी तमेज खरेखरा चारित्र लीधुं त्यारथी स्थावर अने जंगम एवा अनाथ प्राणीओना नाथ थया छो. तेथी हुं मारा अपराधनो नाश करवा सारु तमने खमावुं छुं. वळी तमारा ध्यानमां विघ्नकारी प्रश्न पूछीने में जे दूषण कर्युं छे तथा सांसारिक भोग भोगववा माटे जे में तमने अघटित निमंत्रण कर्युं छे ते सर्व मारो अपराध क्षमा करो. " आ प्रमाणे कही भक्ति पूर्वक ते मुनिनी स्तुति करीने सर्व राजाओमां चंद्र समान श्रेणिक राजा धर्ममां अनुरक्त थइ पोताना अंतःपुर अने परिवार सहित पोतानी नगरीमां आव्यो.

अमित गुण समूहथी समृद्ध एवा ते निर्ग्रन्थ मुनि पक्षीनी जेम प्रतिबंध रहितपणे पृथ्वी उपर विहार करी त्रण गुप्तिथी गुप्त थइ अने उग्र एवा त्रण दंडथी विराम पामी, मोहादिकनो नाश करी, संवेगना प्रभावथी अनुक्रमे अक्षय सुखवाळा मोक्षपदने पाम्या.

॥ इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे द्विचत्वारिंशत्तम व्याख्यानम् ॥ ४२ ॥

व्याख्यान ४३ मुं.

त्रीजा निर्वेद नामना लक्षण विषे.

संसारकारकागार–विवर्जनपरायणा ।
प्रज्ञा चित्ते भवेयस्य, तन्निर्वेदकवान्नरः ॥१॥

भावार्थ—" संसाररूपी कारागृहनुं वर्जन करवामां तत्पर एवी जेना चित्तने विषे दृढ बुद्धि होय छे, ते पुरुष निर्वेदवान् कहेवाय छे "

सिद्धान्तमां कह्युं छे के " निव्वेएणं भंते जीवे किं जणइ " हे भगवान्! निर्वेदथी जीव शुं उपार्जन करे? भगवन कहे छे के " निव्वेएणं ते दिव्वमाणुस्सतिरिच्छएसु कामभोगेसु विरज्जमाणे निव्वेय हव्वमागच्छइ । सव्वविसएसु विरज्जइ । सव्वविसएसु विरज्जमाणे आरंभपरिग्गहपरिचायं करोति । आरंभपरिग्गहपरिचाय करेमाणे संसारमग्गं वोच्छिंदति सिध्धिमग्गपडिवन्ने य भवति" "निर्वेद थकी देव, मनुष्य अने तिर्यंच संबंधी कामभोगने विषे वैराग्य पामी खरा निर्वेदने प्राप्त थाय छे, अने सर्व विषयोमां विरक्ति पामे छे सर्व विषयोमां विरक्ति थवाथी आरंभपरिग्रहनो परित्याग करे छे आरंभपरिग्रहनो परित्याग करवाथी संसार मार्गनो उच्छेद थाय छे, अने सिध्धि (मोक्ष) मार्गनी प्राप्ति थाय छे. " आ प्रसंग उपर हरिवाहन राजानो प्रबंध छे ते नीचे प्रमाणे—

हरिवाहन राजानी कथा

भोगावती नामनी पुरीमां इन्द्रदत्त नामे राजा हतो. तेने हरिवाहन नामनो पुत्र हतो ते हरिवाहनने एक सुथारनो पुत्र तथा एक श्रेष्ठीनो पुत्र एम बे मित्रो हता ते बन्ने मित्रोनी साथे हरिवाहन स्वेच्छाए क्रीडा करतो हतो ते जोइ, राजाए एकदा दुर्वचनथी तेनो तिरस्कार कर्यो एटले तिरस्कारनुं दुःख सहन न थवाथी हरिवाहन पोताना बन्ने मित्रो सहित मावापना स्नेहनो त्याग करीने त्यांथी चाली नीकल्यो चालतां चालतां ते त्रणे मित्रो एक मोटा अरण्यमां जइ पहोंच्या. त्यां तेमणे सूंढने उछाळतो एक मदोन्मत्त हाथी तेमना तरफ आवतो

दीठो. तेथी सुथारनो अने वणिकनो पुत्र तो तेना भयथी कागडानी जेम नाशी गया. अने राजपुत्र तो शूरवीर हतो, तेथी तेणे ते मत्त हाथीने सिंहनाद वडे चेष्टा रहित करी दीधो. पछी पोताना बन्ने मित्रोनी शोध करतो ते राजपुत्र आगळ चाल्यो. परंतु तेमनी शुद्धि तेने मळी नहि अनुक्रमे भमतां भमतां तेणे एक मनोहर सरोवर जोयुं ते सरोवरमां स्नान करी राजपुत्र तेनी उत्तर दिशामां रहेला एक उद्यानमां पेठो. ते उद्यानमां सुंदर कमळथी सुशोभित एक वाव दीठी. एटले तेमां ते कौतुकथी उतर्यो. ते वावना मध्य भागमां एक द्वार हतुं. तेमां ते पेठो तो त्यां एक यक्षनुं मंदिर जोयुं तेवामां रात्री समय थइ जवाथी राजपुत्र ते यक्षना मंदिरमांज सुतो धीमीवारे नूपुरना रण रण शब्द करती केटलीएक अप्सराओ त्यां आवीने ते यक्षनी पासे नृत्य करवा लागी. नृत्य करी रह्या पछी श्रमनो नाश करवा माटे ते अप्सराओ पोताना घणा किंमती वस्त्रो त्यांज उतारी वावमां नावा पेठी. ते वखते राजपुत्रे यक्षमंदिरनुं द्वार उघाडी ते सर्वे वस्त्रो उपाडी लीधां, अने मंदिरमां पेसी द्वार बंध करी दीधां. पेली अप्सराओ स्नान करी बहार नीकळीने जुए छे, तो त्यां पोताना वस्त्रो दीठा नहीं. तेथी तेओ परस्पर बोली के "खरेखर आपणां वस्त्र कोइ धूर्त हरी लीधां जणाय छे, परंतु ते आपणाथी पण भय पाम्यो नथी तेथी ते दूरथी सांधी शकाशे नहीं." एम विचारी साम (मीठा) वाक्योथी तेने लोभ पमाडीने ते अप्सराओ बोलवा लागी के 'हे उत्तम पुरुष ! अमारां वस्त्रो आप.' राजकुमारे अंदरथी ज जवाब आप्यो के 'प्रथम वायु तमारां वस्त्रो हरण करी गयो हशे, माटे तेनी पासे तमे जाओ' ते सांभळीने तेना साहसथी संतुष्ट थयेली अप्सराओ बोली के " हे वत्स ! अमे तारा साहसथी प्रसन्न थइ छीए माटे आ स्वर्गरत्न तथा आ दिव्य कंचुक तने आपीए छीए ते ले ने अमारां वस्त्रो आप " ते सांभळीने राजपुत्रे द्वार उघाडी तेमनां वस्त्रो आपी क्षमा मागी. देवीओ ते बन्ने चीजो तेने आपीने स्वस्थाने गइ.

पछी कुमार त्यांथी आगळ चाल्यो मार्गमां एक निर्जन नगर जोयुं. ते नगरमां कौतुकथी फरतो फरतो ते राजगृहनी समीपे पहोंच्यो. अने तेनी सातमी भूमिका पर चढी गयो. त्यां तेणे कमळना सरखा लोचनवाळी एक सुंदर कन्याने दीठी. तेनुं दिव्य स्वरूप जोइने कुमारे विचार्युं के—

किमेषा प्रथमा सृष्टिर्विधात्रा रक्षिता ध्रुवम् ।
एतां दृष्ट्वा यथा नारीमन्या नारीः सृजाम्यहम् ॥१॥

भावार्थ—" शुं आ नारीने जोइने हुं बीजी नारीओ सरजीश एम धारीने विधाताए आ कन्यारुप प्रथम सृष्टि रची एने अहीं राखी मूकी हशे ! " अर्थात् आ कन्यानुं रुप एवुं सुंदर छे के आने जोइनेज बीजी स्त्रीओ सरजो होय एम जणाय छे. एटले बीजी स्त्रीओ आना करतां ओछी रूपवत देखाय छे.

आ प्रमाणे विचारतो राजपुत्र ते कन्या पासे गयो. एटले तेणीए तेने आसन नांखी आप्युं, तेपर राजपुत्र बेठो. पछी ते कन्याने शोकातुर जोइने तेणे पुछ्युं के ' हे भद्रे ! तुं शाकातुर केम छे ? ' त्यारे ते कन्या बोली के " हे भाग्य शाळी ! हुं विजय राजानी पुत्री अनगलेखा नामे छुं. एकदा हुं मारा महेलना गोखमां बेठी हती, ते वखते मने जोइने कोइ विद्याधरे मारु हरण करी अहीं आ पुर वसावीने मने राखी छे. अने ते मारी साथे लग्न करवा माटे विवाहनी सामग्री लेवा गयो छे. ते आजेज अहीं आवीने मने बळात्कारे परणवानो छे. परंतु पहेलां मने एक ज्ञानी मुनिए कह्युं हतुं के " हे राजपुत्री ! तारो पति हरिवाहन नामे राजपुत्र थशे ' ते मुनिनी वाणी अन्यथा थाय छे तेथी मारा मनमां अति खेद थाय छे. " ते सांभळी कुमार बोल्यो के " हे सुंदर भृकुटीवाळी स्त्री ! तुं खेद करीश नहीं. " आ प्रमाणे कुमार तेनी साथे वातचित करे छे, तेटलामां ते विद्याधर त्यां आवी पहोंच्यो. कुमारने जोइने क्रोध युक्त थयेलो विद्याधर तेनी साथे युध्ध करवा लाग्यो. परंतु कुमारे अप्सराओए आपेला जगतजेत्र खड्गरत्न वडे तेने जीती लीधो. एटले ते बोल्यो के " हे साहसिक शिरोमणि ! हुं तारा पराक्रमथी खुशी थयो छुं. माटे आ स्त्री अने आ पुर तने सोंपु छुं. तेने तुं सुखेथी भोगव हुं मारे स्थाने जाउं छुं. " एम कही ते विद्याधर स्वस्थाने गयो पछी ते विद्याधरनी लावेली विवाहनी सामग्री वडे हरिवाहन ते राजकन्याने परणी तेने पेलो दिव्य कचुक आपी, ते नगरमां घणा लोकोने वसावी, त्यां राज्यनुं पालन करवा लाग्यो.

एकदा हरिवाहन राजा प्रियानी साथे नर्मदा नदीने किनारे जइ उत्तम वस्त्रोने किनारा पर मूकी जळक्रीडा करवा लाग्यो एवामां पेलो दिव्य कचुक के जे वस्त्रोनी साथे किनारापरज मूकेलो हतो तेने पद्मराग मणिनी कांति युक्त होवाथी

मांसनी भ्रांतिए कोइ मत्स्य आवीने गळी गयो ते जोइ राजा विगेरे खेदयुक्त थया. घणी शोध करतां पण ते मत्स्य हाथ लाग्यो नहीं. एटले राजा विगेरे स्वस्थानके गया.

पेलो मत्स्य फरतो फरतो वेनातटे गयो. त्यां कोइ मच्छीमारनी जाळमां ते पकडाइ गयो. तेने विदारतां तेना उदरमांथी पेलो कचुक नीकळ्यो. ते कंचुकने मच्छीमारे पोताना राजाने भेट कर्यो. ते जोइ राजाए विचार्यु के " विश्वने मोह पमाडनारी आ कचुकने पहेरनारी कोण हशे के जेनो कचुक पण मने मोह पमाडे छे ? ते स्त्री कया उपायथी मने मळी शके ?" इत्यादि चिंतामां मग्न थइ गयेला राजाए पोताना प्रधानने कह्युं के " जो मारा जीवितनु तमारे प्रयोजन होय तो सात दिवसमां आ कंचुकने पहेरनार स्त्रीनी शोध करी लावो. " ते सांभळीने मंत्रीए दीर्घ विचार करी राजेश्वरी देवीनी आराधना करी. एटले देवीए प्रगट थइने वरदान मागवानुं कह्यु. मत्रीए कह्युं के " आ कंचुकने पहेरनारी स्त्रीने लावी मारा राजाने आपो. " ते सांभळीने देवीए कह्यु के " हे सचिव !

उदेति यदि वारुण्यां, भानुश्चांगारमुक् शशी ।
तथापि सा सती शीलं, प्राणान्तेऽपि न लुम्पति ॥ १ ॥

भावार्थ—" जो कदाच सूर्य पश्चिम दिशामां उदय पामे अने कदाच चन्द्र अंगारानो वरसाद करे तोपण ते सती स्त्री प्राणनो नाश थाय तोपण [illegible] शील मूके तेम नथी. "

तोपण हे सचिव ! तारो स्वामी कदाग्रह मूकतो न होय [illegible] लावी आपु छु. पण फरीथी आ कार्य माटे तारे मारु स्मरण करवुं नहीं. [illegible] कहीने तरतज ते स्त्री पासे जइ तेनुं हरण करी राजा पासे मूकीने [illegible] इ गइ. राजाए ते अनगलेखानु स्वरुप जोइ मोह पामी तेणीनी [illegible] थना करी. त्यारे ते बोली के ' हे राजा ! हु प्राणनो नाश [illegible] खण्डन करीश नहीं. ' ते सांभळी राजाए विचार कर्यो के " [illegible] मुख वडे ना ना कहे छे. परतु आ मारे आधीन छे तेथी [illegible] चित्तने पण हु प्रसन्न करीश. नितिशास्त्रमां पण सहसा [illegible] एम कहेलुं छे. " एम विचारी तेणीने एकात स्थळे [illegible] त्यां [illegible]

यो. अनगलेखा हृदयमां पोताना जर्तारनु स्मरण करती त्यां रही

अहीं अरण्यमां हाथीथी त्रास पामीने नासी गयेला पेला बे मित्रो जे राजकुमारथी जूदा पमी गया हता तेओए फरतां फरतां वनमां वमनी जाळमां बेसीने मंत्र साधन करता एक साधकने जोयो. साधके पण ते बन्ने साहसिक पुरुषोने जोइने कह्यु के " हे कुमारो ! तमे जो मारा उत्तरसाधक थाओ तो मारुं कार्य सिद्ध थाय. " ते सांजळीने ते बन्नेए हा कही. एटले ते साधके पोतानी विद्या तेमना सहायथी सिद्ध करी विद्या सिद्ध थवाथी संतुष्ट थयेला ते साधके ते बन्नेने अदृश्यअंजनी, शत्रुसैन्यमोहिनी अने विमानकारिणी ए त्रण विद्या आपी त्यांथी फरतां फरतां ते बने बेनातटे आव्या त्यां लोकोना मुखथी ' पोताना मित्र हरिवाहननी प्रियाने त्यांना राजाए हरण करावी हरिवाहनने शोकातुर करी मूक्यो छे ' इत्यादि वात सांजळीने मित्रनो विरह दूर करवा माटे ते बन्ने मित्रो अंजनना प्रयोगथी अदृश्य थइ अनगलेखानी पासे गया. ते वखते अनगलेखा पटमां चित्रेला पोताना पति हरिवाहनना चित्रपर दृष्टि राखीने बेठी हती. ते जोइने ते बन्नेए ते चित्रपट अदृश्यपणेज लइ लीधु. ते आश्चर्य जोइ अनंगलेखाना नेत्रोमां अश्रु जराइ गयां अने बोली के—

अपराद्ध मया किं ते, यच्चित्रितमपि प्रियम् ।
जहर्थ मम हत्याया, अपि त्व न बिनेपि किम् ॥ १ ॥

जावार्थ—" हे विधाता ! में तारो शो अपराध कर्यो छे ? के जेथी चित्रेला पतिने पण तें हरण कर्यो ? आथी मारा आत्मानी हत्या थशे. तेथी पण शु तने कांइ जय लागतो नथी ? "

ते सांजळी तेणीने दुःखी जोइ ते मित्रोए प्रगट थइ तेणीने चित्रपट आपी पोतानु वृत्तांत निवेदन कर्यु. ते सांजळी पोताना पतिना मित्रो जाणीने ते बोली " हे भाइओ ! तमो मारा दियर छो तो मने शोकथी मुक्त करो. " ते सांजळीने तेणीने धीरज आपी ते बन्ने त्यांथी कांइक संकेत करीने नीकळी गया. पछी पोते मंत्रवादी छे एवी तेओए लोकमां पोतानी प्रसिद्धि करी. अने राजा पासे जइने बोल्या के " हे राजा ! अमे मंत्रवादी छीए अमारा सरखुं कार्य बतावी अमारी खात्री करो " राजाए तेमने कह्यु के " आ कचुकले पहेरनारी रूपवती

स्त्री जन्म सुधी मारे वश थइने रहे, एवु तमे करो." ते सांभळी तेमणे राजाने एक तिलक करी तेणीनी पासे मोकल्यो. एटले प्रथमना संकेत प्रमाणे राजाने आवतो जोइ तेणीए उभा थइ आसन विगेरे आपी सन्मान कर्यु. ते जोइ तेने पोताने आधीन थयेली जाणी राजाए वारवार तेना शरीरनो संग करवानी याचना करी. त्यारे ते बोली के "हे राजा! हुं हवे तमारे आधीन छु. परंतु में अष्टापद गिरिनी यात्रा करवानो नियम करेलो छे, माटे ते यात्रा कर्या पछी हु इच्छित सुख भोगवीश." ते सांभळीने ते कामांध राजाए मधुर वचनथी पेला मंत्रवादीओ पासे अष्टापदनी यात्रा कराववानी प्रार्थना करी. त्यारे तेओए मंत्रशक्तिथी विमान बनाव्यु. ते जोइ राजाए अनंगलेखाने कह्यु के "हे प्रिया! आ विमानमां बेसी तारो अभिग्रह पूर्ण करी जलदीथी आव, अने मारो मनोरथ पूर्ण कर" त्यारे ते बोली के "हे राजा! हु ते अजाण्या पुरुषो साथे जाउं छु माटे तमारी बे कन्याओने मारी साथे मोकलो, तो तेनी साथे सुखे वार्तांविनोद थइ शके." ते सांभळीने राजाए पोतानी बे कन्याओने तेनी साथे मोकली. पछी जे विमानमां ते बन्ने मित्रो बेठा हता तेमां बन्ने कन्याओ साथे अनंगलेखा पण बेठी. एटले तरतज विमान आकाशमां उंचे चढ्यु. थोडे दूर जइने ते बन्ने मित्रोए राजाने कह्यु के "हे दुष्ट राजा! आ त्रणे स्त्रीओनी आशा हवे तारे मूकीज देवी." ते सांभळी राजा खिन्न थइ गयो, तेनो काइ पण उपाय रह्यो नहीं।

हवे मित्रना दुःखनो नाश करवा माटे ते बन्ने मित्रोए हरिवाहन राजानी पासे जइ ते विमान उतार्यु. तेमां बन्ने मित्रोने तथा प्रियाने जोइने हरिवाहन अत्यंत आनंद पाम्यो पछी राजाए तथा मित्रोए परस्पर पोतपोतानु वृत्तांत कही संभळाव्यु. बे कन्याओने हरिवाहने बन्ने मित्रोने परणावी।

अन्यदा इन्द्रदत्त राजाने पोताना कुमारनी तथा तेना मित्रोनी शोध मळतां तेमने पोताना राज्यमां बोलाव्या अने हरिवाहन कुमारने राज्यपर स्थापन करी पोते वैराग्य रंगथी प्रव्रज्या ग्रहण करी केटलेक दिवसे इन्द्रदत्त मुनिने धर्मध्यान दशाथी केवळज्ञान उत्पन्न थयु एटले ते भोगावती नगरीए समवसर्या ते वखते हरिवाहन राजाए परिवार सहित उद्यानमां जइ केवळीने वंदना करी. केवळीए आ प्रमाणे धर्मदेशना आपी—

विषयामिषसंलुब्धा, मन्यन्ते शाश्वत जगत् ।
आयुर्जलधिकल्लोललोलमालोकयन्ति न ॥ १ ॥

भावार्थ—" विषयरूपी मांसमां लुब्ध थयेला प्राणीओ आ जगतने शाश्वत—विनाश न पामे तेवु माने छे, परतु समुद्रना कल्लोल जेवा चपळ आयुष्यने जोता के जाणता नथी. "

इत्यादि धर्मदेशना साभळीने राजाए केवळीने पूछ्यु के ' हे स्वामी ! मारु आयुष्य केटलु बाकी छे ? ' केवळीए जवाब आप्यो के ' हे राजा ' तारु आयुष्य मात्र नव महूर्त्तनुज बाकी छे. ' ते साभळीने मरणथी भय पामेला ते राजानु अग कपवा लाग्यु. त्यारे मुनीश्वर बोल्या के " हे राजा ! जो तु मृत्युनी चिंताथी भय पामतो हो, तो तु प्रव्रज्या अगीकार कर. केमके—

अंतोमुहुत्तमित्त, विहिणा विहिया करेइ पव्वज्जा ।
दुक्खाण पज्जत, चिरकालकयाइ किं भणिमो ॥ १ ॥

भावार्थ—" एक अन्तर्मुहूर्त मात्र पण जो विधि पूर्वक ग्रहण करेली प्रव्रज्या सारी रीते पाळी होय तो ते सर्व दुःखोनो अत (नाश) करे छे, तो पछी चिरकाळ दीक्षानु पालन कर्युं होय, तो तेने माटे तो शु कहेवु ? " अर्थात् तेनु फळ तो सर्व दुःखनो नाश करनार थाय ज एमां आश्चर्य नथी.

आ प्रमाणे ज्ञानीनु वचन साभळीने राजाए स्त्री तथा मित्रो सहित तरतज दीक्षा ग्रहण करी पछी ते राजर्षि ' एगोहं नत्थि मे कोइ ' ' हु एकलोज छु, मारु कोइ नथी ' इत्यादिक शुभ ध्यान ध्याता मृत्यु पामीने सर्वार्थसिद्धि विमानमां देवपणे उत्पन्न थया, त्याथी चवीने महाविदेह क्षेत्रमा उत्पन्न थइ मोक्षपद पामशे. तेना मित्रो तथा अनगसेना विगेरे पण देवगति पामीने अनुक्रमे मोक्षसुख पामशे.

" श्री जिनेन्द्रना मार्गने विषे ' निर्वेद ' शब्दनो अर्थ ' ससारपर विरागता ' एवो करेलो छे ते निर्वेदरूप भावसिंहनो आश्रय करनार हरिवाहन

राजा शीघ्र सर्वार्थ सिद्धि विमानने पाम्या. तेवी रीते अन्य भव्य प्राणीओए निर्वेदने विषे दृढता राखवी."

इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे त्रयश्चत्वारिंशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ४३ ॥

व्याख्यान ४४ मुं.

अनुकंपा नामना चोथा लक्षण विषे.

दीनदुःखित दारिद्र्य प्राप्तानां प्राणिनां सदा ।
दुःखनिवारणे वाञ्छा, सानुकंपाभिधीयते ॥ १ ॥

भावार्थ—"दीन, दुःखी अने दारिद्र्यने पामेला प्राणीओनां दुःखोनु निवारण करवानी निरंतर जे वांछा (इच्छा) करवी ते अनुकंपा कहेवाय छे"

कार्या मोक्षफले दाने, पात्रापात्रविचारणा ।
दयादानं तु सर्वज्ञैर्न क्वापि प्रतिषिध्यते ॥ २ ॥

भावार्थ—"जेनु फळ मोक्ष छे, एवा सुपात्र दानमां पात्र अपात्रनो विचार करवो, पण दयादान (अनुकंपादान) करवा माटे तो तीर्थकरोए कोइ पण स्थाने निषेध कर्यो नथी."

निर्गुणेष्वपि सत्त्वेषु, दया कुर्वन्ति साधवः ।
न हि संहरति ज्योत्स्नां, चन्द्रश्चंडालवेश्मनि ॥ ३ ॥

भावार्थ—"साधुजनो (सज्जनो) निर्गुण प्राणीओनी उपर पण द-

या करे छे, केमके चंद्र पोतानो प्रकाश चमाळना घरपरथी कांइ रुइ लेतो नथी." ते तो सर्वत्र एक सरखो प्रकाश आपे छे, तेम सज्जनो पण गुणी अने निर्गुणी सर्वनापर दया करे छे.

आ विषय उपर एक प्रबंध छे ते संबंधमां कह्यु छे के—

अपकारेऽपि कारुण्यं, सुधी कुर्याद्विशेषत ।
दन्दशूक दशन्त श्रीवीरः प्राबोधयद्यथा ॥ १ ॥

भावार्थ—" बुद्धिमान पुरुषो अपकार करनार पर पण विशेषे करीने अनुकंपा (दया) करे छे जुओ श्री महावीर भगवाने दंश देता सर्पने पण बोध कर्यो हतो " आ प्रबंध नीचे प्रमाणे—

चंडकौशिकनी कथा.

श्री महावीर स्वामी छद्मस्थपणामां कनकखल नामे तापसोना आश्रममां चंडकौशिक नामना सर्पने प्रतिबोध करवा माटे गया हता ते सर्पना पूर्व भवनु स्वरूप आ प्रमाणे छे—एक तपस्वी मुनि क्षुल्लक साधुने साथे लइ पारणाने माटे गोचरी करवा गया हता. त्यां मार्गमां तपस्वी मुनिना पग तळे एक नानी देडकी दबाइने मरण पामी. तेनी आलोचना प्रतिक्रमण वखते तेणे करी नहीं, एटले पेला क्षुल्लक साधुए तेने ' देडकी चपाइ गयानी आलोयण केम लेता नथी ? ' एम कही स्मरण कराव्यु. ते वखते ते क्षुल्लकपर क्रोध आववाथी ते तपस्वी साधु तेने मारवा दोड्या रस्तामां स्तंभ आडो आववाथी ते साथे अफळाइने ते तपस्वी मुनि मृत्यु पाम्या, अने ज्योतिषिमां उत्पन्न थया. त्यांथी चवीने कनकखल नामना तापसना आश्रममा पाचसो तापसोना अधिपति चंडकौशिक नामे तापस थया

एकदा केटलाक राजपुत्रोने ते आश्रमना फळो तोडता जोइने क्रोधथी तेमने मारवा माटे हाथमा परशु (कुहाडी) लइने ते चंडकौशिक तापस दोड्यो मार्गमा मोटा अन्धकूपमा पडी तेज परशुवडे मृत्यु पामी तेज नामथी दृष्टिविष सर्प थयो

ते सर्पने प्रतिबोध करवानी इच्छाथी बीजा लोकोए निषेध कर्या छतां पण प्रभु तेज रस्ते जइ ते चंडकौशिकना राफडा पासे कायोत्सर्ग करी उभा रह्या

तेमने जोइने क्रोधथी ज्वलित थयेलो च ९५ मुं.
मुखमांथी ज्वाला मूकवा लाग्यो. परंतु ते ज्वालाओथी प्रभुने ...
त्यारे तेणे प्रभुना पग पर डंख दीधो तेथी प्रभुना पगमांथी गायना दूध जेवुं श्वे-
त शोणित नीकळवा लाग्युं. ते जोइने तेमज प्रभु बोल्या के 'हे चंडकौशिक !
बोध पाम, बोध पाम,' ए वचन सांभळीने इहापोह करतां तेने जातिस्मरण ज्ञान
थयुं, तेथी पश्चात्ताप करता ते सर्पे प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा दइ वंदना करीने अन-
शन ग्रहण कर्युं. पछी 'बीजा जंतुओ मारा विषनी ज्वालाथी मृत्यु न पामो.'
एम विचारीने तेणे पोतानुं मुख राफडानी अंदर बिलमां राख्युं. लोकोने ते वात-
नी खबर थतां सर्वे लोको ते रस्ते नीकळवा लाग्या. घी दूध विगेरे वेचवा जनारी
महीयारीओए ते सर्पनी पूजा निमित्ते तेनापर घृतनु सिंचन कर्युं. तेथी असंख्य
कीडीओ त्यां उत्पन्न थइ अने सर्पनुं शरीर चालणीनी जेम असंख्य छिद्रवाळुं
करी दीधुं. ते दुःखथी अत्यंत पीडा पामतां छतां पण प्रभुनी दृष्टिरुप अमृतथी
सिंचातो ते सर्प शुभ ध्यान पूर्वक पंदर दिवसनु अणसण पाळी मृत्यु पामीने सह-
स्रार देवलोकमां देवता थयो. त्यांथी चवीने तो थोडा भवमांज मोक्ष सुखने पा-
मशे. इति

आ विषयमां एक बीजुं पण दृष्टांत छे, ते संबंधमां कह्युं छे के—

तथा चौरोऽन्यराज्ञीभिर्लेभे वस्त्राद्यलंकृतः ।
न रतिं लघुराज्ञ्या तु, प्रदत्ताभयतो यथा ॥ १ ॥

भावार्थ—"कोइ एक चोर नानी राणीए अपावेला अभय दानथी जेवुं सुख पाम्यो, तेवुं सुख बीजी राणीओए (सेंकडो रुपियाना खर्च वडे) वस्त्रादिकथी शोभाव्या छता पण पाम्यो नहोतो" ते द्रष्टांत नीचे प्रमाणे —

चार राणीओनुं दृष्टांत.

वसंतपुरमां अरिदमन नामे राजा हतो. ते एकदा पोतानी चारे राणीओ सहित महेलना गवाक्षमां बेसी क्रीडा करतो हतो. तेवामां एक चोरने वध्यस्थान तरफ लइ जवातो तेमणे जोयो. ते जोइ राणीओए पूछ्युं के 'आणे शो अपराध कर्यो छे?' ते सांभळीने एक राजसेवक बोल्यो के 'तेणे चोरी करी छे, तेथी तेने वधस्थान तरफ लइ जाय छे.' ते सांभळीने मोटी राणीए राजाने कह्युं के —"हे स्वामी! में तमारी पासे पूर्वे एक वरदान थापण रुपे राखेलुं छे,

या करे छे, केमके चन्द्र पोतानो प्रकाश चंद्रदेवस आ चोरने मुक्त करी मने सोंपो" ते तो सर्वत्र एक प्रसंग करान ते राणीने सोंप्यो. ते राणीए हजार महोरनो खर्च करी ने चोरने स्नान, भोजन, अलंकार, अने वस्त्र विगेरेथी सत्कार कर्यो. अने संगीत विगेरे शब्दादिक विषयोथी तेने आखो दिवस आनंदमां राख्यो. बीजे दिवसे ते ज प्रमाणे लक्ष सुवर्णनो खर्च करी बीजी राणीए ते चोरनु पालन कर्यु. त्रीजे दिवसे त्रीजी राणीए कोटी द्रव्यनो व्यय करी ते ज रीते तेनो सत्कार कर्यो. चोथे दिवसे छेल्ली नानी राणीए राजा पासे वरदान मागी तेनी अनुमतिथी अनुकंपा वडे ते चोरने मरणना भयथी मुक्त कराव्यो, बीजो कांइ पण सत्कार कर्यो नहीं. मोटी त्रण राणीओए तेनी मश्करी करी के "आ नानीए आने कांइ पण आप्युं नहीं. तेम तेने माटे तेणीए कांइ खर्च पण कर्यो नहीं त्यारे तेणे चोरनो शो उपकार कर्यो?" नानी राणी बोली के—'तमारा त्रणे करता में वधारे उपकार कर्यो छे तमे कांइ पण उपकार कर्यो नथी.' आ प्रमाणे ते राणीओ वच्चे उपकारना विषयमां मोटो विवाद थयो. त्यारे तेनो न्याय करवा माटे राजाए ते चोरने ज बोलावीने पूछ्युं के—'तारा पर आ चारेमांथी कोणे वधारे उपकार कर्यो?' ते सांभळी चोर बोल्यो के—"हे महाराजा! मरणना भयथी पीडा पामेला में स्नान भोजनादिक सुखनो कांइ पण अनुभव कर्यो नथी. वाघनी सामे बांधेला लीला जवने खानारा बकरानी जेम में तो केवळ-त्रणे दिवस दुःखनो ज अनुभव कर्यो छे अने आजे तो शुष्क, निरस अने तृण जेवो सामान्य आहार करवाथी पण वणिकने घेर बांधेला गायना वाछरडानी जेम जिंदगी निर्भय थवाथी केवळ सुखनो ज अनुभव करुं छुं. अने तेथी ज आजे हर्षथी नृत्य करुं छुं" ते सांभळीने राजाए अभयदाननी प्रशंसा करी.

आ दृष्टान्तनु तात्पर्य ए छे के "जेम राजानी नानी राणीए चोरने मृत्युना दुःखमांथी बचावीने महान् उपकार कर्यो, तेवी रीते आस्तिक मनुष्ये निरंतर प्राणीओ पर अनुकंपा करवी तेम करवाथी समकितनु चोथुं लक्षण अनुकंपा ते शुद्ध रीते प्रगट थाय छे."

इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तम्भे चतुश्चत्वारिंशत्तम व्याख्यानम्॥४४॥

व्याख्यान ४५ मुं.

आस्तिक्यता नामना पांचमा लक्षण विषे

प्रभुनिर्ज्ञापितं यत्तत्तत्त्वान्तरश्रुतेऽपि हि ।
निःशंकं मन्यते सत्यं, तदास्तिक्यं सुलक्षणम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" बीजा तत्त्व (मत) नुं श्रवण कर्या छतां पण ' प्रभुए जे कह्यु छे ते ज सत्य छे ' एम जे निःशंकपणे माने छे ते आस्तिक्य नामनुं चोथुं लक्षण जाणवुं. " आ विषय पर पद्मशेखर राजानी कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

पद्मशेखर राजानी कथा

पृथ्वीपुरनो पद्मशेखर नामे राजा विनयंधर सूरिथी प्रतिबोध पामीने जैनधर्मी थयो हतो. अने जैनधर्मना आराधनमां तत्पर हतो. ते राजा सभा समक्ष निरंतर लोको पासे गुरुनुं आ प्रमाणे वर्णन करतो हतो—

निवर्तयत्यजनं प्रमादतः, स्वयं च निष्पापपथे प्रवर्तते ।
गृणाति तत्त्वं हितमिच्छुरङ्गिना, शिवार्थिनां यः स गुरुर्निगद्यते ॥१॥

भावार्थ—"जे गुरु अन्य जनोने प्रमादथी निवृत्ति पमाडे छे, अने पोते निष्पाप मार्गमां प्रवर्ते छे, तथा हितनी इच्छावाळा जे गुरु मोक्षना अभिलाषी प्राणीओने हितकारी तत्वनो उपदेश करे छे, ते सुगुरु कहेवाय छे."

वदिज्जमाणा न समुक्कसंति, हिलिज्जमाणा न समुज्जलंति ।
दमेति चित्तेण चरंति धीरा, मुणी समुग्घाइयरागदोसा ॥२॥

भावार्थ—" जेओ वंदना कराया सता उत्सुक (खुशी) थता नथी अने हीलना कराया सता खेद पामता नथी तथा जेओ चित्त वडे इन्द्रियोनुं दमन करे छे, धीरता गुणने धारण करे छे, अने जेओ रागद्वेषनो नाश करे छे, तेओज मुनि कहेवाय छे. "

या करे छे, केमके चंद्र पोतानो मरजी नगरदेव आ चोर
ते तो सर्वत्र एक मृत्ये करान ते राणीने सोंप्यो. ते गा
करी ते चोरने स्नान, जोजन, अलंकार, अने वस्त्रो वि
संगीत विगेरे शब्दादिक विषयोथी तेने आखो दिवस
दिवसे ते ज प्रमाणे लक्ष सुवर्णनो खर्च करी बीजी राणी
त्रीजे दिवसे त्रीजी राणीए कोटी द्रव्यनो व्यय करी ते प्र
चोथे दिवसे छेल्ली नानी राणीए राजा पासे वरदान
अनुकंपा वडे ते चोरने मरणना जयथी मुक्त कराव्यो,
कर्यो नहीं. मोटी त्रण राणीओए तेनी मश्करी करी के
कांइ पण आप्युं नहीं तेम तेने माटे तेणीए कांइ खर्च पण
चोरनो शो उपकार कर्यो ?" नानी राणी बोली के—
वधारे उपकार कर्यो छ तमे कांइ पण उपकार कर्यो नथी.
आ वच्चे उपकारना विषयमां मोटो विवाद थयो. त्यारे तेने
जाए ते चोरने ज बोलावीने पूछ्युं के—' तारा पर आ चारे
पकार कर्यो " ते सांजळी चोर बोल्यो के—" हे महाराज
पीडा पामेला में स्नान जोजनादिक सुखनो कांइ पण अनुजव
सामे बांधेला हीला जरने खानारा बकरानी जेम में तो केवळ
नो ज अनुजव कर्यो छे अने आजे तो शुष्क, निरस अने तु
आहार करवाथी पण वणिकने घेर बांधेला गायना वाछरडानी जे
थवाथी केवळ सुखनो ज अनुजव करुं छुं. अने तेथी ज आजे हु
छुं " ते सांभळीने राजाए अजयदाननी प्रशंसा करी.

आ दृष्टान्तनुं तात्पर्य ए छे के " जेम राजानी नानी राणीए
त्युना दु:खमांथी बचावीने महान् उपकार कर्यो, तेवी रीते आस्ति
निरंतर प्राणीओ पर अनुकंपा करवी. तेम करवाथी समकितनुं चोथुं
अनुकंपा ते शुद्ध रीते प्रगट थाय छे. "

इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे चतुश्चत्वारिंशत्तम व्याख्यानम्

सेवकोए गामना दरेक घरनी जप्ती लेवा मांडी. अनुक्रमे शोध करता करता जय वणिकना घरमांथी ते हार नीकळ्यो एटले राजपुरुषो तेने बांधीने राजा पासे लाव्या. राजाए तेनो वध करवानो हुकम कर्यो. ते वखते तेने कोइए छोडाव्यो नहीं, परंतु तेना स्वजनो राजानी घणी प्रार्थना करवा लाग्या. त्यारे राजाए कह्युं के "जो मारे घेरथी तेलनुं संपूर्ण भरेलुं पात्र लइने ते चाले, मार्गमां जरा पण तेलनुं बिंदु पडवा न दे, अने आखा नगरमां फरीने अहीं मारी पासे आवे, तो हुं तेने मरणनी शिक्षाथी मुक्त करुं, ते विना तेने मुक्त करीश नहीं." ते सांभळीने जयश्रेष्ठीए मरणना भयने लीधे तेम करवानुं अंगीकार कर्युं. पछी पद्मशेखर राजाए आखा नगरमां सर्व लोकोने हुकम कर्यो के "मार्गमां ठेकाणे ठेकाणे वीणा, वांसळी अने मृदंग विगेरे वाजित्रो वगडावो, अति मोह उत्पन्न करनार अने सुंदर वेष धारण करनार वेश्याओना हाव, भाव अने कटाक्ष पूर्वक नृत्य, गान विगेरे करावो, तथा सर्व इंद्रियोने सुख उपजे तेवा प्रेक्षणको स्थाने स्थाने रचावो." राजानी आज्ञा प्रमाणे आखा नगरमां अनेक जातनी ध्वजा विगेरेथी शोभा करीने लोकोए अनेक प्रकारना नाटको विगेरेथी आखुं शहेर मनोहर करी दीधुं. पछी जयश्रेष्ठीना हाथमां तेलथी परिपूर्ण भरेलुं पात्र आप्युं. ते पात्रमां ज बराबर दृष्टि राखीने ते चाल्यो.जो के ते संगीतादिक इंद्रियोना विषयनो घणो रसिक हतो, परंतु मृत्युना भयथी तेणे मननी एकाग्रता तेलना पात्रपर ज राखी हती. तेनी बन्ने पडखे राजाना सुभटो उघाडी तरवारे चालता हता अने "जो पात्रमांथी एक बिंदु पण पडशे, तो तरतज आ खड्गथी शिरच्छेद थशे" एवी धमकी आपता हता. एवी रीते आखा शहेरमां फेरवीने ते सुभटो तेने राजा पासे लाव्या. ते वखते राजाए काइक हास्य करीने कह्युं 'हे श्रेष्ठी! मन अने इंद्रियो अति चपळ छे, तेने तें शी रीते रोक्यां?' त्यारे श्रेष्ठी बोल्यो के 'हे स्वामी! मरणना भयथी रोक्यां.' राजाए कह्युं "ज्यारे एक ज भवना मरणना भयथी तें प्रमादनो त्याग कर्यो, त्यारे अनंता मरणथी भय पामेला साधु विगेरे उत्तम जनो शी रीते प्रमाद करे? माटे हे श्रेष्ठि! मारुं हित वचन सांभळ—

अनिर्जितेन्द्रियग्रामो, यतो दुःखैः प्रबाध्यते ।
तस्माज्जयेदिन्द्रियाणि, सर्वदुःखविमुक्तये ॥ १ ॥

भावार्थ—"जेणे इंद्रियोनो समूह जीत्यो नथी, ते पुरुष दुःखोथी पी-

गुरु वे प्रकारना होय छे. तपस्यायुक्त अने ज्ञानयुक्त. तेमां जे तपस्यायुक्त होय छे, ते वमना पांदमानी जेम केवळ पोताना आत्माने ज भवसागरथी तारे छे. अने जे ज्ञानयुक्त होय छे ते वहाणनी जेम पोताने तथा बीजा अनेक जीवोने तारे छे.

इत्यादिक गुरुना गुणोनु वर्णन करीने ते राजाए घणा लोकोने धर्ममां स्थापन कर्या. परंतु ते नगरमां एक जय नामनो वणिक नास्तिक मतवाळो रहेतो हतो, ते एम कहेतो के "इन्द्रियो पोतपोताना विषयमा स्वाभाविक रीते ज प्रवृत्त थाय छे, ते कोइथी रोकी शकाती ज नथी. तपस्या करवी ते तो केवळ आत्मानु शोषण करवानु छे. तेथी काइ पण फळ मळतु नथी. स्वर्ग तथा मोक्ष कोणे जोयां छे? ते सर्व असत्य छे. कह्यु छे के—

हत्थागया इमे कामा, कालिया ते अणागया।
को जाणई परे लोए, अत्थि वा णत्थि वा पुणो ॥१॥

भावार्थ—"आ काम भोग तो हाथमा आवेला छे अने तपस्यादिथी मळवा धारेला सुख तो अनागत काळमा प्राप्त थवाना छे, पण कोण जाणे छे के परलोक छे के नहीं?" एटले प्राप्त थयेलाने छोडी दइने आगळ मळशे के नहीं तेवी शंकामां कोण पडे?

माटे जे छे ते अहीं ज छे. स्वर्ग, मोक्ष, पुण्य, पाप विगेरे सर्व मानवा योग्य नथी." आ प्रमाणे लोको पासे उपदेश करीने ते जय वणिके घणा लोकोने भरमाव्या हता. ए रीते ते नगरमां पुण्य अने पापनो उपदेश आपवामां कुशळ एवा ते राजा अने वणिक बन्ने प्रत्यक्ष सुगति अने दुर्गतिना मार्गरूप देखाता हता.

एकदा राजाए जय वणिकनु स्वरूप जाण्यु, तेथी तेने बराबर शिक्षा आपवा माटे गुप्त रीते पोताना सेवक पासे पोतानो बहु मूल्यनो हार ते वणिकना घरमां तेना घरेणाना दाबडामा नखाव्यो. पछी आखा नगरमां पटह वगडावी सर्व लोकोने जणाव्यु के—"राजानो हार कोइ चोरी गयु छे, ते जो कोइ तरतमां लावीने राजाने आपशे, तो तेने काइ पण शिक्षा करवामा आवशे नहीं. अने जो पछी कोइना घरमांथी नीकळशे, तो तनो सखत दंड थशे" आ प्रमाणे आघोषणा करावी. पण कोइए हार लावीने आप्यो नहीं. पछी राजाना [illegible]

सेवकोए गामना दरेक घरनी जप्ती लेवा मांडी. अनुक्रमे शोध करता करता जय वणिकना घरमांथी ते हार नीकळ्यो एटले राजपुरुषो तेने बांधीने राजा पासे लाव्या. राजाए तेनो वध करवानो हुकम कर्यो. ते वखते तेने कोइए छोडाव्यो नहीं, परंतु तेना स्वजनो राजानी घणी प्रार्थना करवा लाग्या. त्यारे राजाए कह्युं के "जो मारे पेरथी तेलनुं संपूर्ण भरेलुं पात्र लइने ते चाले, मार्गमां जरा पण तेलनुं बिंदु पडवा न दे, अने आखा नगरमां फरीने अहीं मारी पासे आवे, तो हुं तेने मरणनी शिक्षाथी मुक्त करूं, ते विना तेने मुक्त करीश नहीं." ते सांभळीने जयश्रेष्ठीए मरणना भयने लीधे तेम करवानुं अंगीकार कर्युं. पछी पद्मशेखर राजाए आखा नगरमां सर्व लोकोने हुकम कर्यो के "मार्गमां ठेकाणे ठेकाणे वीणा, वांसळी अने मृदंग विगेरे वाजित्रो वगडावो, अति मोह उत्पन्न करनार अने सुंदर वेष धारण करनार वेश्याओना हाव, भाव अने कटाक्ष पूर्वक नृत्य, गान विगेरे करावो, तथा सर्व इन्द्रियोने सुख उपजे तेवा प्रेक्षणको स्थाने स्थाने रचावो." राजानी आज्ञा प्रमाणे आखा नगरमां अनेक जातनी ध्वजा विगेरेथी शोभा करीने लोकोए अनेक प्रकारना नाटको विगेरेथी आखुं शहेर मनोहर करी दीधुं. पछी जयश्रेष्ठीना हाथमां तेलथी परिपूर्ण भरेलुं पात्र आप्युं. ते पात्रमां ज बराबर दृष्टि राखीने ते चाल्यो. जो के ते संगीतादिक इन्द्रियोना विषयनो घणो रसिक हतो, परंतु मृत्युना भयथी तेणे मननी एकाग्रता तेलना पात्रपर ज राखी हती. तेनी बन्ने पडखे राजाना सुभटो उघाडी तरवारे चालता हता अने "जो पात्रमांथी एक बिंदु पण पडशे, तो तरत ज आ खड्गथी शिरच्छेद थशे" एवी धमकी आपता हता. एवी रीते आखा शहेरमां फेरवीने ते सुभटो तेने राजा पासे लाव्या. ते वखते राजाए काइक हास्य करीने कह्युं 'हे श्रेष्ठी ! मन अने इंद्रियो अति चपळ छे, तेने तें शी रीते रोक्या?' त्यारे श्रेष्ठी बोल्यो के 'हे स्वामी ! मरणना भयथी रोक्यां.' राजाए कह्युं "ज्यारे एक ज भवना मरणना भयथी तें प्रमादनो त्याग कर्यो, त्यारे अनंता मरणथी भय पामेला साधु विगेरे उत्तम जनो शी रीते प्रमाद करे? माटे हे श्रेष्ठि ! मारुं हित वचन सांभळ—

> अनिर्जितेन्द्रियग्रामो, यतो दुःखैः प्रबाध्यते ।
> तस्माज्जयेदिन्द्रियाणि, सर्वदुःखविमुक्तये ॥ १ ॥

भावार्थ—"जेणे इन्द्रियोनो समूह जीत्यो नथी, ते पुरुष दुःखोथी पी-

थाय छे, माटे सर्व दुःखनी मुक्ति थवा सारु इन्द्रियोनो जय करवो."

न चेन्द्रियाणा विजय., सर्वथैवाप्रवर्तनम् ।
रागद्वेषविमुक्त्या तु, प्रवृत्तिरपि तज्जय ॥ १ ॥

भावार्थ—" इन्द्रियोनी प्रवृत्तिनो सर्वथा रोध करवो तेज काइ इन्द्रियोनो जय नथी, परतु रागद्वेषनो त्याग करीने इन्द्रियोनी प्रवृत्ति करवी ते पण इन्द्रियजय कहेवाय छे "

हताहतानीन्द्रियाणि, सदा सयमयोगिनाम् ।
अहतानि हितार्थेषु, हतान्यहितवस्तुषु ॥ ३ ॥

भावार्थ—" सयमधारी योगीओना इन्द्रियो हत (रुधेलां) अने अहत (प्रवर्तेला) बने प्रकारना होय छे. तथा हितकारी कार्यने विषे अहत होय छे, अने अहितकारी वस्तुने विषे हत-रुधेला होय छे "

आ प्रमाणे सांभळीने जयश्रेष्ठी प्रतिबोध पाम्यो, अने जिनेश्वरना धर्मनु तत्त्व समजीने श्रावक धर्म पाम्यो एम अनेक जनोने धर्ममा स्थापन करीने पद्मशेखर राजा स्वर्गे गयो.

" गुणवान एवा आस्तिक पुरुषोए निर्मळ अत.करणथी आ पद्मशेखर राजानु चरित्र जाणीने जिनेश्वरना मतने विषे शुभ आस्था (श्रद्धा) धारण करवी. "

॥ इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तम्भे पचचत्वारिंशत्तम
व्याख्यानम् ॥ ४० ॥

स्तम्भ ३ जो सपूर्ण

श्री उपदेशप्रासाद

स्तंभ ४ थो.

व्याख्यान ४६ मुं.

समकितनी छ यतनामांनी पहेली बे यतना विषे

अन्यतीर्थिकदेवाना, तथान्यैर्गृहीतार्हताम् ।
पूजनं वन्दनं चैव, विधेयं न कदापि हि ॥ १ ॥

अर्थ—" अन्य तीर्थीओना देवोनु तथा अन्ये गृहण करेल अरीहतनी मूर्त्तिओनु पूजन वंदन कदापि करवु नही "

भावार्थ—" अन्य तीर्थीओना शंकरादिक देवोनुं पूजन वंदन विगेरे कदापि करवुं नहीं, ते पहेली यतना. तथा साङ्ख्य, बौधादिक अन्य दर्शनीओ ग्रहण करेली जिनप्रतिमानु पूजन वंदन विगेरे कदापि न करवु, ते बीजी यतना. अन्य मतीओए ग्रहण करेली जिनप्रतिमानुं पूजनादिक करवाथी अन्यमतीओ प्रसंग वडे अनेक दोषनी वृद्धि थाय, माटे तेनु वंदनादिक वर्जवु " आ यतना पर संग्रामसूर राजानी कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

संग्रामसूर राजानी कथा

पद्मिनीखंड नामना नगरमा संग्रामदृढ नामे राजा हतो तेने संग्रामसूर नामे पुत्र हतो. ते हमेशा शिकार करी अनेक प्राणीओनो वध करतो हतो. तेने तेना पिताए घणी रीते समजाव्यो तोपण तेणे पोतानो कदाग्रह छोड्यो नहीं. त्यारे तेनो तिरस्कार करीने तेने नगर बहार काढी मूक्यो. पछी ते कुमार गाम च-

हार एक परु बसावीने त्यां रह्यो. पछी हमेशा प्रातःकाळे कुतराओने लइने ते वनमां जइ प्राणीओनो घात करी प्राणवृत्ति करवा लाग्यो. एकदा कुतराओने त्यां राखीने सग्रामसूर कोइ गाम तरफ गयो ते वखते ते उद्यानमां कोइ सूरि महाराज समवसर्या. अवसर जोइने ते सूरिए ते कुतराओने प्रतिबोध करवा माटे मधुर वचनथी कह्यु के—

खणमित्तसुखकज्जे, जीवे निहणंति जे महापावा ।
हरिचंदणवणखंडं, दहति ते छारकज्जम्मि ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे महा पापी प्राणीओ क्षण मात्रना सुखने माटे बीजा जीवोने हणे छे, तेओ रक्षा (राख) ने माटे हरिचंदन वृक्षोना वनने बाळे छे, एम जाणवु. "

आ प्रमाणे सांभळीने ते कुतराओए प्रबोध पामीने जीवन पर्यंत प्राणी वधनो नियम ग्रहण कर्यो. सग्रामसूर परगामथी पोताने घेर आव्यो, त्यारे तेणे प्राणीओना वधने माटे कुतराओने मूक्या. पण ते कुतराओ तो जरा पण आगळ चाल्या नहीं, चित्रमां आळेखेला होय तेम स्त" र थइने उभा रह्या. ते जोइने तेणे तेना रक्षकोने आम थवानुं कारण पुछ्यु. त्यारे तेओ बोल्या के "हे स्वामी ! अमे विशेष कारण काइ पण जाणता नथी, परतु तेमनी चेष्टाथी एम जणाय छे के-कर.अने एक साधु आव्या हता, तेना वचनथी तेओ प्रतिबोध पाम्या छे " ते सांभळीने सग्रामसूरे विचार कर्या के ' अहो ! मने धिक्कार छे, के, हु पशु जेवो पण नहीं !' एम विचारीने ते गुरु पासे गयो. त्यां तेणे नीचे प्रमाणे धर्म श्रवण कर्यो.

देवो जिणोट्ठारसदोसवज्जिओ, गुरु सुसाहु समलोट्ठकचणो।
धम्मो पुणो जीवदयाइ सुदरो, सेवेह एय रयणत्तय सया॥१॥

भावार्थ—" अढार दोषथी रहित जे जिनेश्वर तेज देव, पथ्थर अने कांचनमां समान बुद्धिवाळा जे सुसाधु तेज गुरु, अने जीवदया विगेरेथी सुन्दर एवो जे धर्म तेज धर्म ए प्रमाणेना रत्नत्रयनु तु सदा सेवन कर "

ते सांभळी सग्रामसूरे श्रावक धर्म अगीकार कर्यो. ते जाणी राजाए तेने नगरमां बोलावी युवराज पदे स्थापन कर्या

हवे कुमारनो मित्र मतिसागर चिरकाळथी द्रव्य उपार्जन करवा समुद्र रस्ते गयो हतो, ते घणुं धन उपार्जन करीने आव्यो, त्यारे प्रथम मित्रने मळवा माटे गयो. तेने कुमारे कुशळ वार्ता पूछीने पछी द्वीप समुद्र विगेरेमां कांइ आश्चर्य जोयुं होय तो ते कहेवा कह्युं त्यारे मतिसागर बोल्यो के " हे मित्र ! हुं वहाणमा बेसीने समुद्रमा जतो हतो, त्यारे में जरतक्षेत्रनी मर्यादामा एक उंचा कल्पवृक्षनी शाखापर हींचको बांधीने ते हींचका रूप पल्यंकपर रहेली एक सुंदर स्त्रीने जोइ. ते स्त्री समग्र स्त्रीओना तिलकरूप हती, अने पोताना संगीत शब्दथी तेणीए किंनरी अने देवांगनाओने पण किंकर (दासी) रूप बनावी दीधी हती. तेवी रूप अने लावण्यवती स्त्रीने जोइने कौतुकथी में मारुं वहाण तेणीनी तरफ हंकार्युं, परंतु हुं तेणीनी पासे पहोंचुं एटलामा तो ते मारा मनोरथनी साथेज कल्पवृक्ष सहित समुद्रमां निमग्न थइ गइ. ते आश्चर्यकारक बनाव जोइने हुं घणु विस्मय पाम्यो. हे मित्र ! आज में ते आश्चर्य तमारी पासे निवेदन कर्युं छे. " ते सांजळीने कामदेवना बाणथी जेनु अंग जर्जरित थयु छे, एवो कुमार मित्रने साथे लइने वहाणमा बेसी समुद्रना ते जागमा आव्यो. एटले तेणे पण दूरथी तेणीने तेज रीते क्रीडा करती जोइ. कुमार तेणीनी पासे गयो, तेटलामा ते स्त्री प्रथमनी जेम समुद्रमा पडीने अदृश्य थइ गइ. ते जोइ साहसिक कुमारे हाथमा उघाडु खड्ग लइने तेणीनी पाछळ झंपापात कर्यो. एटले ते कुमार जळकांत मणिथी बनावेला सात माळना प्रासाद उप० पड्यो. पछी धीमे धीमे नीचे उतरीने कुमार नीचेना माळमां आव्यो. त्यां कल्पवृक्षनी शाखा साथे बांधेला पल्यंकमां अत्यंत सुंदर अने सूक्ष्म वस्त्रथी आखुं शरीर ढांकीने सुतेली ते स्त्रीने कुमारे जोइ. तेणे वस्त्र जरा उंचु कर्युं, एटले तरतज ते स्त्रीए उभी थइने कुमारने तेज पल्यंकपर बेसाड्यो. पछी तेणीए कुमारने तेनुं कुळ, नाम विगेरे पूछ्युं. तेनो यथास्थित जवाब आपीने कुमारे तेणीने तेनुं वृत्तांत पूछ्यु. त्यारे ते पण पोतानु यथास्थित स्वरुप कहेवा लागी.

" वैताढ्य पर्वतनी दक्षिण श्रेणीमां विद्युत्प्रभ नामे राजा छे. तेनी हुं मणिमंजरी नामनी पुत्री छु. एकदा मारा पिताए मने योग्य वयमां आवेली जोइने कोइ नैमित्तिकने पूछ्युं के ' मारी पुत्रीने योग्य पति क्यारे मळशे ? ' त्यारे नैमित्तिके कह्यु के ' हे राजा ! समुद्रमा जळकांत मणिनो महेल करावीने कल्पवृक्षनी शाखा

साथे पल्यंक बांधी त्यां तमारी पुत्रीने राखो. त्यां सूरसेन[1] राजानो पुत्र संग्राम
आवशे, ते तेनो पति थशे. ' आ प्रमाणे ते निमित्तिये कह्याथी मारा पिता
प्रमाणे सर्व करावी मने अहीं राखी. अहीं रहेतां मने घणे दिवसे तमारुं
शन थयु.

आ प्रमाणे ते बन्ने परस्पर प्रेमवार्ता करता हता. तेवामां हाथमां
तरवार धारण करीने ताल तमाल वृक्षना पांदडा जेवो श्याम अने भयंकर
वाळो एक राक्षस एकदम प्रगट थइ कुमार प्रत्ये बोल्यो के " हे कुमार ! हुं
दिवसथी भूख्यो छु, तु मारा भक्ष्यने परणवाने केम इच्छे छे ?" एम कहीने ते
हसे मणिमंजरीने झांझर सहित पगेथी गळवा मांडी. ते जोइ कुमारे तेना
जोरथी खड्गनो प्रहार कर्यो. परंतु ते खड्ग राक्षसने काइ पण इजा कर्या
ककडा थइ गयु त्यारे कुमारे तेनी साथे बाहुयुद्ध करवा मांड्यु तेमां राक्षस
कुमारने भूमिपर पाडीने बाथी लीधो पछी राक्षसे तेने कह्यु के ' हे राजपुत्र '
तारे तारी प्रियाने जीवाडवी होय, तो मने बीजी कोइ स्त्री अथवा तारी स्थूलका
नामनी दासी खावा माटे आप. कदी तेपण तु न करी शके तो मारा गुरु
परिव्राजकने तु प्रणाम कर अथवा मारा प्रासादमां विष्णुनी मूर्ति साथे जि
तिमा पण छे तेने प्रणाम करीने तु पूजा कर. अथवा मारी ज प्रतिमा क
तेनु हमेशां पूजन कर. नहीं तो आने हु आखी खाइ जइश. " ते सां
कुमार बोल्यो " हे राक्षस ! मारा जीवितनो अंत थाय, तोपण जिनेश्वरने
सुसाधुने मूकीने हु बीजाने नमस्कार करीश नहीं. तेमज कारण विना
जीवनी पण हिंसा हु करतो नथी तो बीजा जीवोनी हिंसा करवा देवानी
वातज शा माटे करवी ? हे देव ! तारे पण ते प्रमाणे बोलवु योग्य नथी
सांभळीने राक्षस बोल्यो के " हे राजपुत्र ! त्यारे तु आ जिनालयने विषे
त्यां वीतरागनु बिंब छे, तेनी तु पूजा कर " ते वात कबूल करी कुमार
जिनालयमां गयो, तो ते बिंब बौद्ध लोकोए पूजेलु हतु. तेथी तरतज कुमार
पाछो वळीने बोल्यो के ' हे देव ! शिरच्छेद थाय तोपण हु तारु वचन
रीश नहीं. ' तेवो तेनो दृढ निश्चय सांभळीने राक्षस मणिमंजरीने पग
मांग्यो ते वखते ते बाळा अत्यंत करुण स्वरे विलाप करवा लागी के

1 राजानु नाम प्रमाण्य प्रथम आव्यु छे

य! हे नाथ! मारुं मरणथी रक्षण करो, रक्षण करो.' ए प्रमाणे विलाप कर-
ते बाळाने कंठ पर्यंत गळीने राक्षसे कुमारने कह्यु के "हे मूर्खशिरो-
णि! जो तु दासीने पण आपवा ना कहेतो होय तो केवट एक बकरो ज
ाप, नहीं तो आ स्त्रीनु भक्षण करीने पछी तारु पण भक्षण करीश."
साभळी कुमार बोल्यो "कल्पात काळे पण तारा कहेवा प्रमाणे करनार नथी,
शामाटे तु वारवार पूछ्या करे छे ?" आ प्रमाणे तेना दृढ निश्चयथी संतुष्ट थ-
ो ते राक्षस तरतज पोतानुं दिव्य रूप प्रगट करीने बोल्यो के "हे साहसिक-
ारोमणि! देवेंद्रे करेली तारी प्रशसाने नहीं मानतो हु तारी परीक्षा करवा आ-
ो हतो, तारा प्रसादथी मने पण समकित प्राप्त थयुं छे." एम कही ते देव ते-
ना गांधर्व लग्न करी स्वर्गे गयो. पछी कुमार पण मणिमजरीने महोत्सव पूर्वक
र्णी पोताने नगरे आव्यो.

कुमारने राज्य पर बेसाडीने तेना पिताए दीक्षा ग्रहण करी. संग्रामसूर
ाजा पण श्रावक धर्मनु प्रतिपालन करी पांचमा देवलोकमा देवता थयो त्यांथी
यवी एक अवतार धारण करी मोक्षपदने पामशे.

"राजाओने विषे श्रेष्ठ एवो संग्रामसूर राजा बे यतनाने विषे सावधान
चित्तवाळो थइने कष्टमा पण अहिंसादिक नियमो पाळी पांचमा देवलोके गयो"

इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभे षट्चत्वारिंशत्तम
व्याख्यानम् ॥ ४६ ॥

व्याख्यान ४७ मु.

वाकीनी चार यतना विषे.

मिथ्यात्वलिप्तचित्तानां, संलापालापवर्जनम् ।
सकृद्वा बहुवारं वा, न यच्छेदशनादिकम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" मिथ्यात्वे करीने लीप्त छे चित्त जेनां एवा चरकादिक ताप सोने ' तमे कुशळ छो ?' एम स्नेह पूर्वक वारवार पूछवु ते सल्लाप अने एक वा पूछवु ते आल्लाप–ते बन्नेतु वर्जवु ते त्रीजी तथा चोथी यतना जाणवी तेमज ते मिथ्यात्वीओने एकवार अथवा वारवार अशनादिक आपवु नहीं, ते पाचमी तथा छट्ठी यतना जाणवी. "

उपासक दशाग सूत्रमां श्री भगवाने समकित ग्रहण करनारने आ प्रमाणे वर्तवा कह्यु छे के "नो मे कप्पइ अज्जप्पभिई अन्नउत्थियदेवयाणि वा अन्नउत्थिय परिग्गहियाणि अरिहंतचेइयाणि वा वंदित्तए वा नमंसित्तए वा पुव्विं अणालत्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा तेसिं असणं वा पाणं वा दाउं अणुप्पयाओ वा–" इत्यर्थ.—"आजथी आरंभीने मारे अन्य तीर्थिकोना हरिहरादिक देवोने तथा अन्यतीर्थिकोए ग्रहण करेला अरिहतना बिंबोने वांदवा न कल्पे, नमन करवु नकल्पे, पूर्वे नहीं बोलावेला एवा ते मिथ्यात्वीओनी साथे मारे आल्लाप के सल्लाप करवो न कल्पे, तथा तेओने अशन, पान विगेरे एकवार आपवु के वारवार आपवु न कल्पे " आ प्रसग उपर सद्दालपुत्र श्रावकनु दृष्टांत छे, ते उपासक दशाग सूत्रथी अहि लख्यु छे.

सद्दालपुत्रनी कथा

पोल्लासपुर नामना नगरमा मखलीपुत्र (गोशाळा)ना मतने माननारो सद्दालपुत्र नामनो श्रावक रहेतो हतो. ते पांचसो कुंभारनी दुकानोनो स्वामी हतो. तेनी पासे त्रण करोड सोनामहोरो हती, अने ते दसहजार गायोनो पोषक हतो. तेने अग्निमित्रा नामनी पत्नी हती. एकदा ते श्रेष्ठिनी पासे आवी आकाशमां अदृश्य रहीने एक देवे कह्यु के " हे श्रेष्ठी ! काले आ नगरमा महामाहन अर्हंत सर्वज्ञ पधारशे, तेनी तारे कल्याणकारक अने मगळकारक देव स्वरूपज धारी सेवा करवी. " एम कहीने ते देव गयो त्यारे तेणे विचार कर्यो के " खर मारो धर्मगुरु गोशाळोज महामाहन अने सर्वज्ञ छे, तेथी तेज काले पधारशे हु तेनी अशनादिकवडे सेवा करीश. "

पछी बीजे दिवसे प्रात काळे गोशाळाने बदले श्री महावीर स्वामीनुं आगमन साभळीने ते घणो हर्षित थयो अने महोत्सव पूर्वक तेमने वांदवा

दूरथीज प्रातिहार्यादिकनी शोभा जोइने ' अहो ! मारा गुरुनी शक्ति अचित्य जणाय छे. ' एम विचारीने प्रभु पासे जइ तेमने वंदना करीने पासे बेठो. प्रभुए देशना दीधी ते सांभळी पछी प्रभुए पूछ्युं के ' हे सद्दालपुत्र ! काले तने देवताए जे कह्युं हतुं ते साचुं छे ? ' त्यारे ' हा ' कहीने तेणे विनति करी के 'हे प्रभु ! मारी कुंभारनी दुकाने आप पधारो, जेथी हुं आपनी सेवा करुं. ' प्रभु पण त्यां पधार्या.

एकदा माटीना वासणोने तडकामां मूकेला जोइने जिनेश्वरे तेने पूछ्युं के 'हे श्रेष्ठी ! कया उपायथी आ वासणो बनाव्यां ? ' ते बोल्यो ' हे स्वामी ! माटीनो पिंड करी चक्रपर मूकीने आ वासणो तैयार करेलां छे. ' प्रभुए पूछ्युं ' हे भद्र ! आ वासणो तुं उद्यमथी तैयार करे छे के उद्यम विना ? ' आ प्रमाणे भगवाने प्रश्न कर्यो. त्यारे गोशाळाना मतमां रहेलो ते नियतिवादी होवाथी ' उद्योगथी बने छे ' एवो उत्तर आपे तो पोताना मतनी क्षति थाय अने बीजा मतनुं प्रतिपादन थाय तेथी तेणे ' उद्यम विना थाय छे. ' एवो जवाब आप्यो. प्रभुए फरीथी प्रश्न कर्यो के " हे सद्दालपुत्र ! कदाच कोइ माणस आ तारा वासणो चोरीने लइ जाय, अथवा भांगी नांखे, अथवा तारी स्त्री साथे भोग विलास करे, तो तेनो तुं शुं दंड करे ? " तेणे जवाब आप्यो के ' हे भगवान् ! ते माणसना प्राण हुं अकाळेज नाश पमाडुं, तेने अत्यंत तर्जना करुं ' त्यारे स्वामी बोल्या के " आ प्रमाणे तुं उद्यमनी परतंत्रताथीज सर्व कार्य करतां छतां ' उद्यम विनाज थाय छे ' एम जे बोले छे ते मिथ्या छे. एकांतपणे मानेलुं सर्व असत्य छे अने स्याद्वादपणे जे मानवामां आवे तेज सत्य छे. " इत्यादि भगवाननी युक्तिथी प्रतिबोध पामेला ते श्रेष्ठीए पोतानी स्त्री सहित जिनेश्वरनी पासे पांच अणुव्रत अने सात शिक्षाव्रत रूप श्राद्ध धर्म अंगीकार कर्यो. पछी श्री जिनेश्वरे अन्यत्र विहार कर्यो.

अन्यदा सद्दालपुत्रे भगवंतनो धर्म स्वीकार्यानी वात सांभळीने गोशाळो तेने घेर आव्यो. तेने जोइ सद्दालपुत्र मौन धारीने बेसीज रह्यो. उभा थइने आवकार पण आप्यो नहीं. ते वखते लज्जा पामेले मंखलीपुत्रे भगवानना गुणनुं आ प्रमाणे वर्णन कर्युं के—' हे देवानुप्रिय ! अहीं महामाहण पधार्या हता ? ' ते सांभळी सद्दालपुत्रे पूछ्युं—'तमे कोने महामाहण कहो छो ? ' गोशाळाए जवाब

आप्यो के—" हे सद्दालपुत्र ! सूक्ष्म अने बादर बने प्रकारना जीवोनी हिंसाथी विरमेला होवाथी श्री महावीर ज महामाहन छे. हे श्रमणोपासक! अहींआं महा गोप, महा सार्थवाह, महा धर्मकथक, अने महा निर्यामक आव्या हता" ते सांभळीने श्रेष्टीए पुछ्युं—' तमे आ कोनुं वर्णन कर्युं ?' गोशाळाए जवाब आप्यो के 'में आ सर्वे वर्णन त्रिशलाना पुत्र श्री महावीर स्वामीनुं कर्युं छे. ' ते सांभळीने हर्षित थयेला श्रेष्टिए बहुमानपूर्वक गोशाळाने कह्युं के—'तमे ते मारा गुरु साथे वाद करी शकशो ?' गोशाळे जवाब दीधो—" हे भद्र ! हुं तेमनी साथे वाद करवा समर्थ नथी. केमके तारा ते धर्मगुरु तो मने एक ज वचनमां जीती ले तेवा छे. " ते सांभळी सद्दालपुत्रे कह्युं के—"तमे ते सर्वज्ञनुं यथार्थ वर्णन कर्युं छे,तेथी हुं तमने सत्कार पूर्वक अशन, वस्त्र विगेरे आपुं छुं, परंतु धर्मबुद्धिथी आपतो नथी. " आ प्रमाणेना अनेक युक्तियुक्त वाक्योथी तेने प्रभुना धर्ममां दृढ जाणीने गोशाळो विलक्ष थइ त्यांथी अन्यत्र विहार कर्यो

एकदा एक निष्ठावाळो सद्दालपुत्र श्राद्धधर्म पाम्या पछी पदर वर्षे पौषध लइने पौषधशाळामां रह्यो हतो. ते वखते रात्रीए हाथमां तीक्ष्ण खड्ग धारण करीने कोइ देव पिशाचनुं रूप लइ त्यां आवी उपसर्ग करवा लाग्यो. तेना घरमांथी एक एक पुत्रने लावीने शस्त्रवडे तेने कापी तेना रुधिर वमे पौषधमां बेठेला ते श्रेष्टीना शरीरपर सिंचन करवा लाग्यो तोपण श्रेष्टिने तेनापर जरा पण क्रोध आव्यो नहीं तेम ते भय पण पाम्यो नहीं ते जोइ पिशाचे तेने कह्युं के—" हे मृत्युनी प्रार्थना करनार ! हजु पण जो तुं धर्मनो त्याग नहीं करीश तो हुं तारी समक्ष तारी स्त्रीनो पण घात करीश." आ प्रमाणे वारवार कहेला तेना वाक्यो सांभळीने श्रेष्टीए विचार कर्यो के—' खरेखर आ कोइ अनार्य (पापी) जणाय छे, माटे तेने हुं पकडी लउं ' एम विचारी मोटी पोकार करी तिरस्कार पूर्वक तेने पकडवा जाय छे तेवामां ते देव अदृश्य थइ गयो ते वखते पोताना पतिना मुखथी पोकार सांभळीने तेनी स्त्री तरतज पौषधशाळामां आवी, अने पतिने पोकार करवानुं कारण पुछ्युं. एटले तेणे यथार्थ वृत्तांत कह्युं. ते जाणीने ते बोली के—" हे स्वामी तमारा पुत्र विगेरे सर्व कुटुंबने कोइए हण्या नथी, ते सर्व आपणा घरमां सुतेला छे माटे कोइ देवतानो करेलो आ उपसर्ग छे एम जणाय छे. परंतु तमे प्रयत्नो जे कर्यो ते योग्य न कर्युं, माटे ते पापनी आलोयणा करो. " ते सांभळीने श्रेष्टी

लागेला दोषनी आलोयणा प्रतिक्रमणा करी. अनुक्रमे श्रावकनी अग्यार प्रतिमा वहन करी सौधर्म देवलोकमां चार पल्योपमना आयुष्यवाळो देवता थयो. त्यांथी चवीने महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थइ सिद्धिपदने पामशे. (आ कथा उपासक दशांगमांथी लखी छे.)

" श्री जिनेंद्रना वाक्यथी जेनुं चित्त बोध पाम्युं छे, जेणे गोशाळाना पक्षनो त्याग कर्यो छे अने जे सम्यक्त्वनी यतनाओ धारण करवामां प्रवीण छे तेवो सद्दालपुत्र श्रावक स्वर्गे गयो. "

इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तम्भे सप्तचत्वारिंशत्तमं व्याख्यानम् ॥४७॥

व्याख्यान ४८ मुं.

छ आगार विषे

आगाराः षड्विधाः प्रोक्ता, अपवादे जिनादिभिः।
राजगुरुवृत्तिकान्तारगणदेवबलैर्युताः ॥ १ ॥

भावार्थ—" श्री जिनेश्वरोए अपवाद मार्गे छ प्रकारना आगार कहेला छे. राजानी आज्ञाथी, गुरुजननी आज्ञाथी, आजिवीकाने माटे, समुदायना कहेवाथी, देवना बळात्कारथी अने कोइ बळवानना बळात्कारथी-ए प्रमाणे छ प्रकार छे. "

समकितने विषे आ आगारो अपवाद मार्गेज आपेला छे, पण उत्सर्ग मार्गे आपेला नथी. कह्युं छे के—

उस्सग्गसुत्र किंचि, किंचि अ अववायं भवे सुत्तं ।

तदुभयसुत्त किंचि, सुत्तस्स भंगा मुणेयव्वा ॥ १ ॥

भावार्थ—कोइक सूत्र उत्सर्गनुं छे, कोइक सूत्र अपवादनुं छे, अने कोइक सूत्र उत्सर्ग तथा अपवाद ए बन्नेने लागु पडे छे. ए प्रमाणे सूत्रना त्रण भागा समजवा.

माटे गुणनो विभाग जोइने बन्ने पक्षनी सेवा करवी. (बन्ने पक्षो ग्रहण करवा.) कह्युं छे के—

तम्हा सव्वाणुन्ना, सव्वनिसेहो य पवयणे नत्थि ।
आय वय तुलिज्जा, लाहोकखिव्व वाणियओ ॥ १ ॥

भावार्थ—" तेथी करीने जिन प्रवचनने विषे कोइ पण कार्यनी सर्वथा आज्ञा के सर्वथा निषेध कहेल नथी. परंतु लाभनी आकांक्षा (इच्छा) राखनारा वणिकनी जेम आय ने व्ययनी (लाभ ने हानीनी) तुलना (सरखामणी) करीने विशेष लाभवाळा कार्यनो स्वीकार करवो. " अर्थात् जेमां व्यय करतां लाभ वधारे मळे तेम होय ते कार्य करवुं.

उत्सर्ग मार्गमां सर्वथा तो यथाख्यात चारित्रवाळानो जे निरतिचार (अतिचार रहित) मार्ग छे ते ज छे. परंतु हालना समयमां तेवा प्रकारना संघयणादिकना अभावने लीधे तेवा प्रकारनो उत्सर्ग मार्ग पाळी शकाय नहीं, तेथी अपवाद मार्गनुं पण सेवन करीने पछी आलोयणादिवडे आत्मानी शुद्धि करवी.

प्रथम राजाभियोग भागनो आगार कहे छे.—

दाक्षिण्येन क्षितीशस्य, बलाद्वा वाक्यतोऽथवा ।
कुदृष्टीना नमस्कारो, राजाभियोग उच्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—" राजानी दाक्षिण्यता वडे, तेना बळात्कारथी अथवा तेना वचनथी कुदृष्टीओ (मिथ्यात्वीओ)ने नमस्कार करवो पडे ते राजाभियोग कहेवाय छे "

आ प्रसंग उपर कार्तिक श्रेष्ठीनुं दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

कार्तिक श्रेष्ठीनुं दृष्टान्त.

पृथ्वीभूषण नगरमां श्री मुनिसुव्रत स्वामीथी धर्मनो प्रतिबोध पामेलो कार्तिक नामे श्रेष्ठी रहेतो हतो. एकदा ते नगरमां गैरिक नामनो तापस आव्यो. ते कायम मासोपवास करीने पारणुं करतो हतो. तेना एक कार्तिक शेठ विना बीजा सर्व लोको भक्त थइ गया, एटले ते तापस कार्तिक शेठ उपर गुस्से थयो. एकदा राजाए ते गैरिकने पोताने त्यां पारणु करवा माटे निमंत्रण कर्यु त्यारे तेणे कह्यु के "हे राजा ! जो कार्तिक श्रेष्ठी मने पीरसे, तो हु तमारे घेर पारणु करवा आवुं." राजाए ते वात कबूल करी. पछी श्रेष्ठीने बोलावीने राजाए कह्युं के 'मारे घेर तुं गैरिकने पीरसीने जमाड' श्रेष्ठीए कह्यु के 'हे राजा ! आपनी आज्ञाथी हुं जमाडीश.' राजाभियोगेणं आगार होवाथी राजाना आग्रह वडे निषिद्ध कार्य करवामां व्रतनो भंग थतो नथी, एम मानीने श्रेष्ठीए हा पाडी. पछी गैरिकने भोजन कराववा ते राजाने त्यां गयो. तेने पीरसतां तापसे पोताना नाक पर आंगळी घसीने इसारो कर्यो के 'तारु नाक कपायु' ते जोइ श्रेष्ठीए विचार कर्यो के "जो प्रथमथी ज दीक्षा ग्रहण करी होत तो आ तापस मारो पराभव करी शकत नहीं." एम विचारीने तेणे एक हजार ने आठ वणिकपुत्र (वाणोतर) सहित दीक्षा ग्रहण करी.

अनुक्रमे द्वादशांगीनो अभ्यास करी बार वर्ष संयम पाळी सौधर्मेन्द्र थया. गैरिक तापस पण मरण पामी पोताना धर्मने प्रभावे तेज सौधर्मेन्द्रनो ऐरावण हाथी[1] थयो. तेणे विभंगज्ञान वडे कार्तिक शेठने ओळखीने नासवा मांड्युं. एटले तेने पकडीने इन्द्र तेनापर चढ्या. इन्द्रने भय पमाडवा माटे ते ऐरावणे पोताना बे रूप कर्या, त्यारे इन्द्रे पण बे रूप कर्यां. हाथीए चार रूप कर्या, त्यारे इन्द्रे पण चार रूप कर्यां. छेवट इन्द्रे अवधिज्ञानथी जोयु तो ते हाथीने गैरिक तापसनो जीव जाण्यो, तेथी इन्द्रे तेनी तर्जना करी, एटले तेणे पोतानुं स्वाभाविक रूप कर्युं. त्यांथी चवीने ते इन्द्र महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्य थइ सिद्धि पदने पामशे. आ कथा भगवती सूत्रमा विस्तारथी आपेली छे

[1] देवलोकमां तिर्यंच होता नथी पण तेवी फरजवाळा आभियोगिक देवने इन्द्रनी आज्ञा थतां ऐरावण हाथीनुं रूप विकुर्वीने फरज बजाववी पडे छे

इति कार्त्तिक श्रेष्ठी दृष्टांत.

केटलाएक राजानी आज्ञा छतां पण पोताना व्रतनो भंग करता नथी, ते पर कोशा गणिकानी कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

कोशा गणिकानी कथा.

पाटलीपुरमां अनुपम रूप, लावण्य अने कलाकुशळतादिक गुणरत्नोना कोश (भंडार) समान कोशा नामनी वेश्या रहेती हती. तेने प्रतिबोध करवा माटे गुरुनी आज्ञा लइने स्थूलभद्र मुनि तेने घेर आवी चातुर्मास रह्या हता. ते ज्याए तेमने वश करवा माटे अनेक प्रकारना हाव, भाव, विभ्रम, विलास विगेरे कर्या. पण तेथी तेमनुं चित्त किंचित् पण चलित थयुं नहीं. छेवट मुनिए तेने प्रतिबोध पमाड्यो. तेथी तेणीए बार व्रत लेतां चोथा व्रतमां राजानी आज्ञाथी आवेला पुरुष विना बीजा पुरुषनो संग नहीं करवानो नियम लीधो.

एकदा कोशाए लीधेल व्रतनो भंग करवा माटे नंदराजाए रूपमां कामदेव समान अने अति कामातुर एवा एक रथकार (सुथार) ने तेनी पासे मोकल्यो. ते रथकारे कोशाना मननुं रंजन करवा माटे रथांग उभा रहीने धनुर्विद्यानी निपुणताथी एक पछी एक बाण मूकी आंबी लाकडीनी जेम बनेला बाणना अग्रभागथी आंबानी टोचनी लुंब तोडीने ते लुंब पोताना हाथमां लइ कोशाने आपी. तेमज पोतानी वाणीनी सर्व प्रकारनी चतुराइ अने सर्व प्रकारनुं फळ बताव्युं. ते सर्व जोइने विषयथी विरक्त थयेली कोशा बोली के—

चरं ज्वलदय स्तम्भपरिरंभो विधीयते ।
न पुनर्नरकद्वाररामाजघनसेवनम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" तपावेला लोढाना स्तंभनुं आलिंगन करवुं सारुं, पण नरकना द्वार समान स्त्रीना जघननुं सेवन करवुं सारुं नहीं. "

इत्यादिक वैराग्यना वचनो कहीने पछी तेना गर्वनो नाश करवा माटे सरसवनो ढगलो करी, तेनी उपर एक सोय मूकी, ते सोयना अग्रभाग पर पुष्प मूकी, ते पुष्प पर नृत्य करती बोली के—

न दुक्करं अंबयलुंबतोडनं, न दुक्करं सरिसवनच्चियाणं ।
तं दुक्करं तं च महाणुभावं, जं सो मुणी पमयवणम्मी वुच्छो ॥१॥

भावार्थ—" आंबानी लुंब तोडवी दुष्कर नथी, तेमज सरसवना ढगला पर नाच करवो ते पण दुष्कर नथी, परंतु महानुभाव श्री स्थूलभद्र मुनि प्रमादना अथवा प्रमदाना वनमां प्रमादी न थया, तेज एक दुष्कर छे."

गिरौ गुहायां विजने वनान्तरे, वासं श्रयन्तो वशिनः सहस्रशः।
हर्म्येऽतिरम्ये युवतीजनान्तिके, वशी स एकः शकटालनंदनः ॥२॥

भावार्थ—"पर्वतनी गुफामां अने निर्जन वनमां निवास करनारा हजारो मनुष्यो जितेन्द्रिय होइ शके छे, परंतु अति मनोहर हवेलीमां सुंदर युवतिजननी साथे वसीने तो मात्र एक शकटालमंत्रीना पुत्र श्री स्थूलभद्र ज जितेन्द्रिय रह्या छे."

इत्यादिक श्री स्थूलभद्र मुनिनी प्रशंसा करीने तेणीए ते रथकारने प्रतिबोध पमाड्यो. तेथी ते रथकारे विषयथी पराङ्मुख थइने दीक्षा ग्रहण करी. अने अनुक्रमे स्वर्ग सुख प्राप्त कर्युं. कोशा पण चिरकाळ जैनधर्मनी प्रभावना करीने स्वर्ग सुख पामी.

" कोशा वेश्यानी जेम स्वधर्ममां रागी एवा जे मनुष्यो राजानी आज्ञा छतां पण स्वधर्मनो त्याग करता नथी तथा जेओ अन्य जनोने पोतानी बुद्धिथी प्रतिबोध पमाडे छे तेओ खरेखरा मुक्ति मार्गना मुसाफर जाणवा."

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभेऽष्टचत्वारिंशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ४८ ॥

बीजा गणाभियोग आगार विषे

समुदायो जनानां हि, स एवोक्तो जिनैर्गणः ।
क्रियते तस्य वाक्येन, निषिद्धमपि सेवनम् ॥ १ ॥
गणाभियोग आगारो, द्वितीयोऽयं निगद्यते ।
केचिदुत्सर्गपक्षस्था, नैव मुञ्चन्त्यभिग्रहम् ॥ २ ॥

भावार्थ—" मनुष्योना समुदायने जिनेश्वरोए गण कहेलो छे. ते गणना वाक्यथी निषिद्ध कार्यनुं पण सेवन करवुं पडे ते बीजो गणाभियोग नामनो आगार कहेवाय छे. उत्सर्ग पक्षमां दृढ एवा कल्याएक गणाभियोगथी पण पोताना अभिग्रहने छोडता नथी. " आ प्रसंग उपर सुधर्म राजानी कथा छे ते आ प्रमाणे—

सुधर्म राजानी कथा

पंचाल देशमां सुधर्म नामे राजा हतो. ते जैनधर्ममां दृढ हतो एकदा राजा पासे आवीने दूते कह्युं के—' हे देव ! महाबल नामनो चोर लोकोने बहु पीडा करे छे. ' राजाए जवाब आप्यो के—' हुं जाते त्यां जईने तेनो निग्रह करीश. केमके

तावद्गर्जन्ति मातङ्गा, वने मदभरालसा ।
शिरोविलग्नलाङ्गूलो, यावन्नायाति केसरी ॥ १ ॥

भावार्थ—" ज्यां सुधी पूछडाने मस्तक पर राखीने केसरीसिंह आव्यो न होय (दृष्टिए पड्यो न होय) त्यां सुधी ज वनने विषे मदना समूहथी आळसु थयेला हाथीओ गर्जना करे छे. "

एम कहीने सैन्यना भारथी पृथ्वी तळने ... सुधर्म राजा ते चोरनो निग्रह करवा गयो. त्यां क्रीडा मात्रथी ज ते ... करीने राजा

पोताना नगर तरफ पाछो फर्यो. नगरमां प्रवेश करती वेळाए नगरनो मुख्य दरवाजो एकाएक तुटी पड्यो ते जोइने अपशुकन थया जाणी राजा पाछो वळी गामनी बहार ज रह्यो मंत्रीओए जलदीथी नवो दरवाजो कराव्यो. ते पण प्रवेश वखते पडी गयो. एटला त्रीजो दरवाजो कराव्यो. ते पण तेज रीते पडी गयो ते जोइ राजाए मंत्रीने पूछ्यु के 'आ दरवाजो वारवार केम पडी जाय छे ?' मंत्रीए कह्युं हे देव ! जो पोताना हाथथी एक पुरुषने हणीने तेनु बलिदान आपो, तो आ रवाजानो अध्यक्ष यक्षदेव प्रसन्न थाय; बीजी रीते पूजा, नैवेद्य के बलिदानथी संतुष्ट थाय तेम नथी." आ प्रमाणे चार्वाक मतवाळा मंत्रीनु वचन सांजळीने जा बोल्यो "जे नगरमा जवा माटे जीववध करवो पडे, ते नगरमां जवानुं मारे प्रयोजन छे ? केमके जे अलंकार पहेरवाथी कान तुटी जाय, ते अलंकार शा टे पहेरवो ? राजनीतिमा पण आ प्रमाणे कह्यु छे—

न कर्तव्या स्वय हिसा, प्रवृत्तां च निवारयेत् ।
जीवित वलमारोग्यं, शश्वद्वाञ्छन्महीपतिः ॥१॥

भावार्थ—" जीवितने, वळने अने आरोग्यताने निरतर इच्छता राजाए पोते हिंसा करवी नहीं अने थती हिंसानु पण निवारण करवु."

राजानो आवो निश्चय जाणीने मंत्रीए समग्र पौरजनोने बोलावीने कह्यु के " हे लोको ! सांजळो. जो राजा एक मनुष्यनो वध करी बलिदान आपे, तो आ दरवाजो स्थिर थाय तेम छे. ते वात में राजाने जाहेर करी, त्यारे तेणे मने जवाब आप्यो के " हु जीवहिंसा करीश नहीं, करावीश नहीं, अने तेम करवा अनुमोदन पण आपीश नही तो, हवे तमारा सौना विचारमां जेम आवे तेम करो." ते सांजळीने महाजने राजा पासे आवी कह्यु के " हे स्वामी ! अमे बधु करशु पण आपे मौन रहेवुं." राजाए कह्यु " जो प्रजा काइपण पाप करे, तो तेनो छठो भाग राजाने आवे छे कह्युं छे के—

यथैव पुण्यादिसुकर्मभाजां, षष्ठांशभागी नृपतिः सुवृत्तः ।
तथैव पापादिकुकर्मभाजां, षष्ठांशभागी नृपतिः कुवृत्तः॥१॥

भावार्थ—" जेम पुण्यादिक सुकर्म करनारा मनुष्योना पुण्यनो छठो भा-

ग राजाने मळे छे, तेमज पापादिक कुकर्म करनार मनुष्योना पापनो पण छठो भाग राजाने मळे छे. ”

फरीथी महाजने कह्यु के “ हे स्वामी ! ते पापनो भाग सघळो आपने माथे, तेमां आपनो भाग नहीं. ” इत्यादि कहीने महा भयथी राजानी पासे मौन रहेवा हा पाडी. पछी महाजने पोतपोताना घरमांथी द्रव्य काढीने एकठु करी तेनो सुवर्णमय एक पुरुष बनाव्यो. ते सुवर्णना पुरुषने एक गाडामां नाखी गाममां फेरवी आघोषणा करावी के “ जो कोइ माता पोताना पुत्रने पोताना हाथे विष खवरावे अने तेनो पिता पोताने हाथे तेनु गळु मरडी नांखे, तो तेने आ सुवर्णमय पुरुष तथा एक क्रोड सोनामहोर मळशे.”

हवे ते नगरमां एक महा दरिद्री वरदत्त नामनो ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने रुद्रदत्ता नामनी स्त्री हती. ते बन्ने अति निर्दय हता. तेमने सात पुत्रो हता. उपर जणावेली आघोषणा सांभळीने वरदत्ते पोतानी स्त्रीने कह्यु के “ हे प्रिया ! नाना पुत्रने आपीने आ बधु द्रव्य आपणे ग्रहण करीए, केमके धननु माहात्म्य मोटु छे. कह्यु छे के—

पूज्यते यदपूज्योऽपि, यदगम्योऽपि गम्यते ।
वद्यते यदवद्योऽपि, तत्प्रभावो धनस्य च ॥ १ ॥

भावार्थ—“ अपूज्य छता पण पूजाय छे, अगम्य छतां पण गमन कराय छे अने अवद्य छतां पण वदन कराय छे, ते सर्व धननोज प्रभाव छे. ”

ते सांभळीने निर्दयपणाने लीधे तेणीए पण पतिनु वाक्य अंगीकार कर्यु. पछी ते ब्राह्मणे पग्रह छबीने कह्यु के ‘ मने आ द्रव्य आपीने आ पुत्रने लइ जाओ ’ त्यारे लोकोए कह्यु के “ ज्यारे तारी स्त्री विष आपशे अने तु तेनु गळु मरडी नांखशे त्यारे तने आ धन मळशे, ते विना मळशे नहीं. ” ते वात बेन्ना आपणे अंगीकार करी ते वखते पोताना मावापनु वाक्य सांभळीने ते नाना पुत्र इन्द्रदत्ते विचार कर्यो के ‘ अहो ! संसार केवो स्वार्थी छे के द्रव्यने माटे पोताना पुत्रने पण मारी नांखवा तैयार थाय. ’

पछी ते पुत्रने तेणे महाजनने सोंप्यो. महाजन तेने पुष्पादिकथी शणगारी

રાજા પાસે લઇ ગયા. રાજાએ હસતે મુખે આવતા તે બાળકને જોઇને પૂછયું કે "હે બાળક ! તું કેમ હસે છે ? શું તું મરણથી પણ બ્હીતો નથી ?" તે બાળક બોલ્યો કે "હે રાજા ! સાંભળો

तावद्भयाद्धि भेतव्यं, यावद्भयमनागतम् ।
आगतं तु भयं दृष्ट्वा, सोढव्यं तमशंकितैः ॥ १ ॥

ભાવાર્થ—"જ્યાં સુધી ભય પ્રાપ્ત થયું ન હોય, ત્યાં સુધીજ ભયથી બિહિવું, પરંતુ ભયને આવેલુ જોઇને તો તેને નિઃશંકપણે સહનજ કરવું. પછી ભય રાખવો નિષ્ફળ છે."

વળી હે રાજા ! લતાના અંકુરથી હંસોની જેમ જ્યારે શરણ કરવા લાયકથીજ ભય પ્રાપ્ત થાય, ત્યારે પછી ... આ" તે સાંભળી રાજાએ હંસનું વૃત્તાંત પૂછ્યું ત્યારે તે બાળકે હંસની કથા આ પ્રમાણે કહી—

કોઇ એક અરણ્યમાં માનસ સરોવરની પાળ પર એક સીધો અને ઊંચો વૃક્ષ હતો. તે વૃક્ષ પર ઘણા હંસો રહેતા હતા.એકદા તે વૃક્ષના મૂળમાં એક લતાનો અંકુર જોઇ વૃદ્ધ હંસે બીજા હંસોને કહ્યું કે "હે પુત્ર પૌત્રો ! આ લતાના અંકુરને તમે સર્વે ચાંચવડે કાપી નાંખો, જેથી સર્વેનું મરણ ન થાય." તે સાંભળીને જુવાનીયા હંસો હસીને બોલ્યા કે "અહો ! આ વૃદ્ધ મરણથી કેવા બીએ છે ? સર્વ કાળ જીવવાની ઇચ્છા કરે છે. આ અંકુરાથી આપણને શો ભય થવાનો છે ?" તે જાણી વૃદ્ધ હંસે વિચાર્યું કે "અહો ! આ જુવાનીયા મૂર્ખ જણાય છે પોતાના હિતને કે અહિતને પણ જાણતા નથી. કહ્યું છે કે—

प्रायः संप्रति कोपाय, सन्मार्गस्योपदर्शनम् ।
निर्लूननासिकस्येव, विशुद्धादर्शदर्शनात् ॥ १ ॥

ભાવાર્થ—હાલના વખતમાં સત્યમાર્ગનો ઉપદેશ કરવો, તે ઘણુ કરીને કોપને માટેજ થાય છે. જેની નાસિકા કપાઇ ગઇ હોય, તેવા મનુષ્યને જો નિર્મળ અરિસો દેખાડીએ, તો તે કોપને માટેજ થાય છે." વળી—

उपदेशो न दातव्यो, यादृशे तादृशे नरे ।

पश्य वानरमूर्खेण, सुगृही निर्गृही कृता ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेवा तेवा (मूर्ख) माणसने उपदेश आपवो नहीं. केमके जुओ ! तेवो विचार कर्या विना उपदेश आपनारी मूर्ख वानरे सुघरीने घर विनानी करी नांखी. " ते दृष्टांत आ प्रमाणे छे.

एक वृक्ष पर एक सुघरी सुंदर माळो बनावीने तेमां सुखे रहेती हती एकदा वर्षाऋतुमां पवनीज वृष्टि थती हती तेमां आम तेम भमतो, शीतळवायुथी कपतो अने दांतने ककडावतो एक वानर त्यां आवी पहोंच्यो तेने तेवो दुःखी थतो जोइ सुघरीए कयु के " हे वानर ! आवी वर्षाऋतुमां आम तेम केम भमे छे? अमारी जेम घर करीने केम रहेतो नथी ? " ते सांभळीने वानर बोल्यो—

सूचीमुखे दुराचारे, [illegible] पंडितमानिनि ।
असमर्थो गृहारम्भे, समर्थो गृहभंजने ॥ १ ॥

भावार्थ—" सोयना सरखी तीक्ष्ण मुखवाळी, दुराचारी अने पंडितमानी एवी हे सुघरी ! हु घर बनाववाने तो असमर्थ छु पण घर भांगवाने तो समर्थ छु. "

एम कही एक फाळ मारी ते वानरे तेणीनो माळो चांखी नांखी एक एक तृणने जुदी जुदी दिशाओमां फेंकी दीधा. पछी ते सुघरी बीजे स्थाने जइने सुखेथी रही. "

आ प्रमाणे विचारी ते वृद्ध हंस मौन धारीने रह्यो. केटलेक काळे ते लता वधीने झाडनी आसपास वींटाइ चोतरफ फेलाइ गइ, अने अनुक्रमे वृक्षनी टोंच सुधी पहोंची गइ एक दिवस कोइ पारधीए आवी ते लताने पकडी वृक्ष पर चडीने पाश पाथरी दीधो रात्री थता सर्वे हंसो सुवा माटे ते वृक्ष पर आव्या एटले ते सर्वे पाशमां सपडाइ गया तेथी तेओ पोकार करवा लाग्या त्यारे वृद्ध हंसे कयु के ' पहेलां मारु वचन तमे मान्यु नहीं तेथी आ मृत्यु प्राप्त थयु. ' तेओ बोल्या " हे पिता ! लतानो अंकुर शरणने माटे राख्यो हतो, ते ज अंकुर मरणने माटे थइ पडयो हवे तमे आमाथी जीववानो उपाय बतावो. कयु छे के—

चित्तायत्तं धातुबद्धं शरीरं, नष्टे चित्ते धातवो यान्ति नाशम् ।

तस्माच्चित्तं यत्नतो रक्षणीयं, स्वस्थे चित्ते बुद्धयः संभवन्ति॥१॥

भावार्थ—"आ सप्तधातुथी बंधायेलुं शरीर चित्तने आधीन छे, चित्त नाश पामवाथी धातुओ नाश पामे छे. तेथी करीने चित्तनुं यत्नथी रक्षण करवु. केमके चित्त स्वस्थ होवाथी बुद्धिओ उत्पन्न थाय छे."

वृद्ध हंसे कह्यु के "हे पुत्रो! तमे बधा प्रातःकाळे मरेलानी जेवा तद्दन स्तब्ध थइ जजो, किंचित् पण हालशो चालशो नहीं, एटले तमने मरेला धारी एमनेएम पारधी नीचे नांखी देशे. नहींतो तमारां गळां मरडीने मारी नांखी पछी नीचे नांखशे." सर्वे हंसोए वृद्धना कह्या प्रमाणे कबुल कर्युं. प्रातःकाळे पारधी आवीने जुए छे तो सर्वेने मरेलां जाण्या. एटले विश्वासथी सर्वेने जाळमांथी काढी नीचे नांख्या. बधा हंसो नीचे नखाइ रह्या त्यारे पेला वृद्ध हंसे इशारो कर्यो. एटले सर्वे उडी उडीने पलायन करी गया अने चिरकाळ जीवता रह्या. ते वखते वृद्धहंसे कह्यु के—

दीग्घकालं वयं तत्थ, पायवे निरुवद्दवे ।
मूलाओ उट्ठिया वल्ली, जाय सरणतो भयम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"अमे दीर्घकाळ सुधी ते उपद्रव रहित एवा वृक्ष उपर रह्या, पण पछी ते वृक्षना मूळमांथीज वेल उठी (जेथी अमे मरणना भयमां आवी पड्या) माटे शरणथकीज भय थयु."

आ प्रमाणेनी वार्ता कहीने इन्द्रदत्ते कह्यु के "हे राजा! आ जगतनो एवो नियम छे के—पिताथी ताप पामेलो पुत्र माने शरणे जाय,माताथी उद्वेग पामेलो पुत्र पिताने शरणे जाय, बन्नेथी परिताप पामेलो राजाने शरणे जाय, अने राजाथी पण उद्वेग पामेलो होय तो ते महाजनने शरणे जाय छे. हवे ज्यां माता पोतेज विष आपे छे, पिता गळु मरडे छे, राजा ते कार्यमां प्रेरणा करे छे अने महाजनो द्रव्य आपीने ते कार्य करावे छे, तो पछी कोनु शरण लेवुं? केमके—माता पिताए पुत्रने आपी दीधो,राजा शत्रु थइने घात करवा बेठो, देवता बलीदाननी इच्छा राखे छे, तो हवे लोको शु करे? माटे हे राजा! हवे मारे भय राखीने शुं करवु? हवे तो राजी खुशीथी यमराजाना अतिथि थवुं तेज योग्य छे."

आ प्रमाणेनां ते बाळकनां वचनो सांभळीने राजाए कयुं के "हे बाळक! हुं तने शेमी मूकुं छुं, तने जे मारे ते मारो शत्रु छे. तुं सुखेथी जीवतो रहे. मारे आ नगर विगेरेनुं कांइपण प्रयोजन नथी." एम कहीने राजाए आखा नगरमां पोताना सेवक पासे अमारी पटह वगडाव्यो. आ प्रमाणेनुं राजानुं धैर्य जोइने तरत एक देव प्रगट थइ बोल्यो के "हे राजा तारा धैर्यनी शक्रे करेली प्रशंसा सांभळी तेनी परीक्षा करवा माटे में आ दरवाजो त्रणवार पाडी नांख्यो हतो, परंतु तारा धैर्यथी हुं संतुष्ट थयो छुं." एम कही राजाने प्रणाम करी दरवाजो हतो तेवो करी दइ राजानी प्रशंसा करतो ते देव स्वस्थाने गयो.

"सुधर्म राजाए सर्व जनोना आग्रहथी पण हिंसावाळुं वाक्य कबूल कर्युं नहीं. अंते वैराग्यथी चारित्र ग्रहण करीने ते राजा मोक्षसुखने पाम्यो."

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभे एकोनपंचाशत्तम व्याख्यानम् ॥ ४९ ॥

व्याख्यान ५० मुं

वृत्तिकांतार नामना आगार विषे.

दुर्भिक्षारण्यसंपर्के, जीवनार्थं विधीयते ।
मिथ्यात्वं स च कान्तारवृत्तिनाम निगद्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—"दुकाळने विषे अन्नादिकने अभावे तथा अरण्यमां भूला पडनां जळ फळ विगेरेना अभावे जीववाने माटे जे कांइ मिथ्यात्वनुं सेवन करवुं पडे ते 'कांतारवृत्ति' नामनो आगार कहेवाय छे."

उत्सर्ग अपवादने जाणनार कोइ सविज्ञ पुरुष पण जीवितने राखवा माटे मिथ्यात्व सेवे के नियमभंगादि करे ते वृत्तिकांतार नामनो त्रीजो आगार कहेवाय-छे. केटलाएक उत्सर्ग मार्गमां दृढ रहेनारा तो अच्चंकारी भट्टानी जेम कष्टमां पण स्वधर्मने छोडता नथी. ते दृष्टांत आ प्रमाणे—

अच्चंकारी भट्टानी कथा.

क्षितिप्रतिष्ठित पुरमां 'धना' नामनो श्रेष्ठी हतो. तेने 'भद्रा' नामनी स्त्रीथी आठ पुत्रो उपर एक 'भट्टा' नामनी पुत्री थइ हती. एकदा श्रेष्ठीए तेना उपरना अतिशय प्रेमथी स्वजनोने एकठा करीने कह्युं के—'आ मारी पुत्रीने कोइए चुकारो पण करवो नहीं.' तेम कहेवाथी ते पुत्रीने सौ 'अचंकारीभट्टा' कहेवा लाग्या. एकदा तेणीने मनोहर युवावस्था पामेली जोइने राजाना मंत्रीए तेना पिता पासे तेनी मागणी करी. त्यारे श्रेष्ठीए कह्यु के—"जे पुरुष मारी पुत्रीनुं वचन उल्लंघन करे नहीं तेने मारे मारी पुत्री आपवानी छे." ते सांभळी मंत्रीए तेनुं वचन कबुल कर्युं. एटले शुभ दिवसे श्रेष्ठीए तेमना लग्न कर्या. तेनी साथे विषयसुखनो अनुभव करता केटलाक दिवसो व्यतीत थया. एकदा तेणीए मंत्रीने कह्युं के—"हे प्राणनाथ ! तमे राज्यना मोटा अधिकारी छो, परतु जो मारी साथे प्रीति राखवानी इच्छा होय तो तमारे सूर्य अस्त थया पछी क्याइ पण जवुं नहीं. एम करशो तोज मारी प्रीति रहेशे." ते सांभळीने मंत्रीए तेणीनु वाक्य अगीकार कर्युं.

एक दिवस राजाए मंत्रीने पूछ्युं के 'हे मंत्री ! तमे हमेशा वहेला घेर केम जाओ छो ?' त्यारे मंत्रीए सत्य वात जाहेर करी. ते सांभळीने राजाए विनोदने माटे काइ मीष करीने मंत्रीने रात्रीना बे प्रहर सुधी रोकी राख्यो, पछी रजा आपी. मंत्री घेर जइने जुए छे तो बारणुं बंध हतुं. तेथी ते बोल्यो के "हे प्रिया ! द्वार उघाड. आजे राजानी आज्ञाथी आटलो विलंब थयो छे, मारी मरजीथी रोकायो नथी, माटे पराधीन एवा मारा पर कोप करीश नहीं." आ प्रमाणे वारंवार कहेवाथी भट्टाए कोप करीने एकदम द्वार उघाड्युं. अने पछी मंत्रीनी दृष्टीने छेतरीने ते तरतज घर बहार नीकळी पिताना घर तरफ चाली. मार्गमां चोरोए तेणीने पकडी अने तेणीना वस्त्रो तथा आभूषणो लइ लइने तेणीने पल्लीपतिने सोंपी. पल्लीपतिए तेणीनु मनोहर रुप जोइ भोगने माटे घणी प्रार्थना करी,

परंतु तेणीए हा मानी नहीं. तेथी पल्लीपतिए तेणीने घणु दुःख देवा मांड्यु त्यारे ते बोली के—" मारा प्राणनो नाश थशे, तोपण हु मारु शील खंडन करीश नहीं. तु फोगट फांफां शा माटे मारे छे ?" एम कह्यां छतां पण पल्लीपति समज्यो नहीं. त्यारे तेने बोध करवा माटे तेणीए एक कथा कही

"कोइ एक तेजोलेश्यानी सिद्धिवाळो तापस कोइ वृक्ष नीचे बेठो हतो. तेना मस्तक पर एक बगलीए चरक करी तेथी क्रोध करीने ते तापसे ते पक्षीपर तेजोलेश्या मूकी तेने बाळी नांख्यु पछी तेणे विचार्यु के 'जे कोइ मारी अवज्ञा करशे तेने हु तेजोलेश्याथी बाळी नाखीश' एम विचारीने ते तापस भिक्षाने माटे कोइ श्रावकने घेर गयो. ते श्रावकनी पतिव्रता स्त्री पोताना पतिनी सेवामां व्यग्र हती तेथी ते तापसने भिक्षा देवा जरा विलंब करीने आवी एटले क्रोध करीने तेणे तेणीना पर तेजोलेश्या मूकी, परंतु शीलना प्रभावथी ते बळी नहीं ते वखते तेणीए कह्यु के 'हे तापस! हु ते बगली नथी ' ते सांभळी विस्मय पामीने तापसे पूछ्यु के 'अरण्यमां थयेली ए वात तें शी रीते जाणी ?' तेणीए कह्यु के 'आ प्रश्ननो जवाब तने वाराणसीपुरीनो कुंभार आपशे.' ते सांभळीने तापसे त्यां जइ ते कुंभारने पूछ्यु, त्यारे ते बोल्यो के 'ते स्त्रीने तथा मने शील ना प्रभावथी ज्ञान उत्पन्न थयु छे तेथी अमे बनेए ते वात जाणी छे. माटे हे तापस 'तु पण शील पाळवामां यत्न कर ' ते सांभळीने तापस आश्चर्य पामी शीलनी प्रशंसा करी त्यांथी स्वस्थाने गयो "

आ प्रमाणेनी वार्ता सांभळीने पल्लीपति नर्मदाना शापथी भय पामी तेनाथी विरक्त थयो पछी तेणे तेणीने कोइ माणसने वेचाती आपी दीधी ते माणसे तेणीने बब्बर कुळमां जइने नीच गणिका वेची तेणे पण भोगने माटे प्रार्थना करी. ते तेणीए मानी नहीं त्यारे ते गणिका बोली के 'जो तु अन्न व स्त्रादि सुखने इच्छती होय, तो मारु कहेलु कबूल कर.' ते सांभळीने ते नर्मदा प्र सबधी बीजा आगारने जाणती हती, तोपण तेणीए पोतानो निश्चय छोड्यो नहीं तेथी क्रोध पामीने तेणे तेणीना शरीरमांथी रुधिर काढी एक वासणमां नांख्यु रुधिरमां उत्पन्न थयेला कृमिना रुधिरथी ते वस्त्र रगवा लागी ए प्रमाणे वार वार रुधिर काढवाथी तेणीने पांडुरोग थयो तोपण तेणीए शीलनु खंडन क नहीं.

नविषद्धतुं सेवन करवुं पडे तो तेथी व्रत भंग थतो नथी. तोपण केटलाएक आना अपवाद मार्गनो त्याग करीने उत्सर्ग पक्षनेज स्वीकार करे छे.अर्थात् तेवा गुरुवर्गना वचनथी पण ग्रहित नियमादिनो भंग करता नथी. आ संबंधमां सुलसनु दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

सुलसनी कथा

राजगृही नगरीमां अत्यंत निर्दय, अभव्य अने हमेशां पांचसो पाडानो वध करनार कालशौकरिक नामनो कसाइ रहेतो हतो.एकदा श्रेणिकराजाए पोतानी नरक गतिनु निवारण करवा माटे तेने एक कूवामां नांख्यो.तो त्यां पण तेणे माटीना पांचसो पाडा बनावीने तेनो वध कर्यो. त्यारे राजाए तेना हाथ पग बांधीने कूवामां नांख्यो.ते वखते तेणे मनथी कल्पना वडे सेंकडो पाडाओ बनावीने तेनो वध कर्यो. ए प्रमाणे हमेशा जीवहिंसा करता तेणे अत्यंत पाप कर्म उपार्जन करी सातमी नरकनु आयुष्य बांध्यु. मृत्यु समय नजीक आवता ते कालशौकरिक रोगथी अत्यंत पीडा पामवा लाग्यो. त्यारे तेना पुत्र सुलसे पिताने शान्ति थवा माटे मनवांछित खान पान, सुंदर गीत गान, सुकुमार पुष्पशय्या, अने सुगंधी चंदननो लेप विगेरे घणा उत्तम उपचारो कर्या. तोपण तेनाथी तेने जरा पण सुख थयु नहीं. परंतु उलटो वधारे दाह थवा लाग्यो. तेथी सुलसे अभयकुमार पासे जइ ते वृत्तांत जणाव्यु. ते सांभळी अभयकुमारे कह्यु—"ते तारो पिता नरकमां जवानो छे,तेथी नरकनी आनुपूर्वी तेनो सन्मुख आवेली छे. माटे सुखना उपचारो मात्र दुःखना ज कारणभूत थाय छे. तो हवे तारे निरस भोजन आपवु, खार जळ पीवा देवु,गधेडा अने कूतराना शब्दो संभळाववा, तीक्ष्ण कांटानी शय्या पर सुवाडवो अने अशुचीनु विलेपन करवु. इत्यादि विरुद्ध उपचार करवाथी तेने सुख थशे." आ प्रमाणे अभयकुमारना कहेवाथी सुलसे तेवा उपचार कर्या, तेथी कालशौकरिकने काइक सुख उत्पन्न थयु. छेवट ते मृत्यु पामीने सातमी नरके गयो. तेना पुत्र सुलसे पापनु फळ प्रत्यक्ष जोयुं तेथी अने अभयकुमारना उपदेशथी ते श्री महावीरस्वामीनो बार व्रतधारी श्रावक थयो.

एकदा सुलसने तेनी माता, व्हेन विगेरे स्वजनोए मळीने कह्युं के 'तु तारा पितानी जेम पापकर्म कर.' त्यारे ते बोल्यो के 'हु तेवुं पापकर्म कदी पण

अथकारी भट्टा गर्वनो त्याग करी, श्राध्धधर्मनु प्रतिपालन करी, समाधि थी मरण पामीने देवतानां सुखो अनुन्नवी ठेवट मोक्षपदने पामशे.

" आ अचंकारीनी कथा सानळीने जे सुबुध्धिमान दुःखमां पण धर्म त्याग करे नहीं ते पुरुष थोमा काळमां मोक्ष लक्ष्मीने पामे. "

इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तम्भे पञ्चाशत्तम
व्याख्यानम् ॥ ५० ॥

व्याख्यान ५१ मु.

गुरुनिग्रह नामना आगार विषे

पितृमातृकलाचार्या, मिथ्यात्वन्नक्तिचेतस. ।
कारयन्ति यथेच्छं ते, तद्गुरुनिग्रहो न्नवेत् ॥ १ ॥

न्नावार्थ—" पिता, माता अने कलाचार्य जो मिथ्यात्वथी वासित चित्त वाळा होय (मिथ्यात्वी होय) अने तेथी तेओ पोतानी इच्छाथी काइपण नि पिद्ध कार्य करावे,तो ते गुरुनिग्रह कहेवाय छे. अर्थात् गुरुनिग्रहथी नियमनो न्नंग करवो पमे तो तेनो दोष लागतो नथी कारण के ते आगार राखवामां आवे छे—

गुरुनिग्रह एटले गुरुना आदेशथी नियम न्नंगादि करवु पमे ते गुरु कोने कहीए ?

माता पिता कलाचार्य, एतेषा ज्ञातयस्तथा ।
वृध्धा-धर्मोपदेष्टारो, गुरुवर्ग सता मतः ॥ १ ॥

न्नावार्थ—" माता, पिता, कलाचार्य, पोतानो ज्ञातिवर्ग, वृध्धजनो तथा धर्मनो उपदेश करनार—आटला गुरु कहेवाय छे. एम सत्पुरुषो माने छे. "

आ गुरुवर्गमांथी जेओ मिथ्यादृष्टिना न्नक्त होय, अने तेमना वाक्य

निषिद्धनु सेवन करवु पडे तो तेथी व्रत भंग थतो नथी. तोपण केटलाएक आना अपवाद मार्गनो त्याग करीने उत्सर्ग पक्षनोज स्वीकार करे छे.अर्थात् तेवा गुरुवर्गना कथनथी पण ग्रहित नियमादिनो भंग करता नथी. आ संबंधमां सुलसनुं दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

सुलसनी कथा.

राजगृही नगरीमां अत्यंत निर्दय, अभव्य अने हमेशां पांचसो पाडानो वध करनार कालशौकरिक नामनो कसाइ रहेतो हतो.एकदा श्रेणिकराजाए पोतानी नरक गतिनु निवारण करवा माटे तेने एक कूवामां नांख्यो.तो त्यां पण तेणे माटीना पांचसो पाडा बनावीने तेनो वध कर्यो. त्यारे राजाए तेना हाथ पग बांधीने कूवामां नांख्यो.ते वखते तेणे मनथी कल्पना वडे सेंकडो पाडाओ बनावीने तेनो वध कर्यो. ए प्रमाणे हमेशा जीवहिंसा करता तेणे अत्यंत पाप कर्म उपार्जन करी सातमी नरकनु आयुष्य बांध्यु. मृत्यु समय नजीक आवतां ते कालशौकरिक रोगथी अत्यंत पीडा पामवा लाग्यो. त्यारे तेना पुत्र सुलसे पिताने शान्ति थवा माटे मनवांछित खान पान, सुंदर गीत गान, सुकुमार पुष्पशय्या, अने सुगंधी चंदननो लेप विगेरे घणा उत्तम उपचारो कर्या. तोपण तेनाथी तेने जरा पण सुख थयुं नहीं. परंतु उलटो वधारे दाह थवा लाग्यो. तेथी सुलसे अभयकुमार पासे जइ ते वृत्तांत जणाव्युं. ते सांभळी अभयकुमारे कह्युं—"ते तारो पिता नरकमा जवानो छे, तेथी नरकनी आनुपूर्वी तेनी सन्मुख आवेली छे. माटे सुखना उपचारो मात्र दुःखना ज कारणभूत थाय छे. तो हवे तारे निरस भोजन आपवु, खारु जळ पीवा देवु,गधेडा अने कुतराना शब्दो संभळाववा, तीक्ष्ण कांटानी शय्या पर सुवाडवो अने अशुचीनु विलेपन करवुं. इत्यादि विरुद्ध उपचार करवाथी तेने सुख थशे." आ प्रमाणे अभयकुमारना कहेवाथी सुलसे तेवा उपचार कर्या, तेथी कालशौकरिकने काइक सुख उत्पन्न थयु. छेवट ते मृत्यु पामीने सातमी नरके गयो. तेना पुत्र सुलसे पापनु फळ प्रत्यक्ष जोयुं तेथी अने अभयकुमारना उपदेशथी ते श्री महावीरस्वामीनो बार व्रतधारी श्रावक थयो.

एकदा सुलसने तेनी माता, व्हेन विगेरे स्वजनोए मळीने कह्यु के 'तु तारा पितानी जेम पापकर्म कर.' त्यारे ते बोल्यो के 'हु तेवु पापकर्म कदी पण

करीश नहीं. केमके ते पापनो भोक्ता हुं थाउं.' ते सांभळीने तेओ बोल्या के 'धननी जेम तं पापसमूहने पण अमे वहेंची लेशुं.' त्यारे सुलसे एक कुहाडावडी पोताना पग पर घा कर्यो अने तेनी पीडाथी पृथ्वी पर पडी गयो. पछी ते बोल्यो के 'तमे पाप वहेंची लेवा कहो छो तो हमणा आ मारी पीडा वहेंची ल्यो, केमके मने घणुं दुःख थाय छे' त्यारे तेओ बोल्या के 'ते कांइ वहेंची लेवाय नहीं, ते तो जे करे तेज भोगवे.' त्यारे सुलस बोल्यो के 'ज्यारे तमे आ मत्यक्ष पीडाने पण वहेंची लइ शकता नथी त्यारे पाप शी रीते वहेंची लेशो?' एम कहीं तेओने निरुत्तर करी दीधा अने जींदगी पर्यंत जीववध कर्या नहीं. कह्यु छे के—

अवि इच्छिय मरणं, न परपीडं करति मणसा वि ।
जे सुविइयसुगइपहा, सुरियसुओ जहा सुलसो ॥ १ ॥

भावार्थ—"काळसौकरिकना पुत्र सुलसनी जेम जेओने सुगतिनो मार्ग सुविदित छे, तेओ मरणने इच्छे परंतु मनथी पण परने पीडा करे नहीं."

अनुक्रमे सुलस श्राद्धधर्मनुं प्रतिपालन करीने स्वर्गे गयो इति सुलस कथा.

आ संबंधमां एक बीजुं दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

आरोग्यद्विजनुं दृष्टांत

उज्जयिनी नगरीमां एक ब्राह्मण रहेतो हतो. ते बाल्यावस्थाथीज अत्यंत रोगी होवाथी सौ कोइ तेने रोगद्विज कहीने बोलावता हता लोकोना मुखथी पोतानुं तेवुं नाम सांभळीने ते ब्राह्मण हमेशां खेद पामतो हतो एकदा धर्मदेशना करता मुनिना मुखथी तेणे सांभळ्युं के—

आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धिर्गतं वयो नो विषयाभिलाष. ।
यत्नश्च भैषज्यविधौ न धर्मे, स्वामिन्महामोहविडम्बना मे॥१॥

भावार्थ—"आयुष्य गळी जाय छे पण पाप बुद्धि गळती नथी, युवावस्था जाय छे पण विषयनो अभिलाष जतो नथी अने औषध करवामां यत्न थाय छे पण धर्मने विषे यत्न थतो नथी माटे हे स्वामी! हे जिनेश्वर! मने महामोहनी विडंबना छे."

अनित्यानि शरीराणि, विजवो नैव शाश्वतः ।
नित्यं संनिहितो मृत्युः, कर्तव्यो धर्मसंग्रहः ॥ १ ॥

जावार्थ—" शरीर अनित्य (क्षणजंगुर) छे, वैजव निरंतर रहेवानो नथी, अने मृत्यु निरतर पासे ज रहेलुं छे. माटे प्राणीए धर्मनो संग्रह करवो."

आ प्रमाणे मुनिनी वाणी सांजळी प्रतिबोध पामेला ते ब्राह्मणे तेज वखते तेमनी पासे श्रावकना बार व्रत ग्रहण कर्यां. ते व्रतोनुं शुद्ध पालन करवाथी तथा शुद्ध श्रावक थवाथी मोटा मोटा लोको तेना व्याधिने माटे अनेक प्रकारनी चिकित्सा करवानुं कहेवा लाग्या. तोपण ते औषध नहीं करतां व्याधिनी पीमाने सहन करवा लाग्यो. ते पोताना आत्माने कहेतो हतो के—

पुनरपि सहनीयो, दुःखपाकस्त्वयायं ।
न खलु जवति नाशः, कर्मणां संचितानाम् ॥
इति सह गणयित्वा, यद्यदायाति सम्यक् ।
सदसदिति विवेको,ऽन्यत्र जूयः कुतस्ते ॥ १ ॥

जावार्थ—" हे जीव ! फरीथी पण तारे आ दुःखविपाक सहन करवो ज पमशे, केमके संचय करेला कर्मोनो नाश थतो नथी. एम धारीने सुख के दुःख जे जे प्राप्त थाय तेने तुं सम्यक् प्रकारे सहन कर. केमके आ प्रमाणेनो सत् असत्नो विवेक फरीथी तने बीजा जन्मे क्यांथी प्राप्त थशे ? "

आ प्रमाणे दृढ चित्तवाळा ते ब्राह्मणनी एक वखत इन्द्रे प्रशंसा करी के " अहो ! आ रोगद्विज महा सत्त्ववाळो छे. केमके तेना गुरु जनोए अनेक प्रकारनी चिकित्सा करवा मांमी, तोपण तेनी अपेक्षा राख्या विना ते रोगनी व्ययाने सहन करे छे. " ते सांजळीने इंद्रना ते वचन पर श्रद्धा नहीं आववाथी कोइ बे देवो वैद्यनुं स्वरूप धारण करीने तेनी पासे आवी बोल्या के " हे रोगी ब्राह्मण ! अमे तने रोगथी मुक्त करीए, परंतु तारे रात्रे मद्य मांस माखण विगेरेनुं भोजन करवुं पमशे. " आ प्रमाणे वैद्यनुं वाक्य सांजळीने तेणे विचार कर्यो के " ब्राह्मणना कुळमां उत्पन्न थयेला अने वळी विशेषे करीने हालमां जिनधर्मने पामेला एवा मारे आ निंदित कर्मनो त्याग करवो ते ज श्रेष्ठ छे. केमके तेवुं कर्म लौकिकमां अने

लोकोत्तरमां बनेमा निंद्य छे. " एम विचारीने ते रोगी ब्राह्मणे वैद्योने कह्यु के " हे वैद्यो ! हु बीजा औषधथी पण चिकित्साने इच्छतो नथी, तो पछी आवा सर्व धर्ममां असेव्य पदार्थोनु सेवन करीने तो हु शी रीते ज चिकित्सा करावुं ? कह्यु छे के—

मद्ये मांसे मधुनि च, नवनीते तक्रतो बहिः ।
उत्पद्यन्ते विलीयन्ते, सूक्ष्माश्च जन्तुराशयः ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—" मद्यमां, मांसमां, मधमां अने छाशथी जूदा पमेला माखण मां क्षणे क्षणे सूक्ष्म जन्तुनो समूह उत्पन्न थाय छे अने नाश पामे छे. "

सप्तग्रामे च यत्पापमग्निना भस्मसात्कृते ।
तदेव जायते पापं मधुबिन्दु प्रभक्षणात् ॥ २ ॥

ज्ञावार्थ—" अग्निवमे सात गाम बाळीने भस्म करवाथी जेटलु लागे तेटलु पाप मधनु एक बिंदु भक्षण करवाथी लागे छे. "

यो ददाति मधु श्राद्धे, मोहितो धर्मलिप्सया ।
स याति नरकं घोरं, खादकैः सह लंपटैः ॥ ३ ॥

ज्ञावार्थ—" जे पुरुष धर्म थवानी इच्छाथी मोह पामीने श्राद्धमां मध आपे छे, ते पुरुष तेना लंपट खानाराओनी साथे घोर नरकमां जाय छे. "

आ प्रमाणे तेना वचनो सांभळीने ते वैद्योए तेना स्वजनो पासे जइ कह्यु. त्यारे तेओ एकठा थइने शास्त्रनी युक्तिथी तेने चिकित्सा कराववानी प्रेरणा करवा लाग्या. तेओए कह्यु के—

शरीरं धर्मसंयुक्तं, रक्षणीयं प्रयत्नतः ।
शरीराच्छ्रवते धर्मः, पर्वतात् सलिलं यथा ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—"धर्मना साधनभूत शरीरनु प्रयत्नथी रक्षण करवुं, केमके पर्वतथी पाणी श्रवे छे तेम शरीरथी धर्म स्रवे छे (थाय छे) "

आ प्रमाणे पिता विगेरे स्वजनोए तेने घणी रीते समजाव्यो, तोपण धर्ममां दृढ होवाथी देहादिकनी आशा राख्या विना मात्र मोक्ष सुखनीज आशामां चुस्त रह्यो. तेणे देहनी पीमाने अंगे कह्यु के—

आपदर्थे धनं रक्षेद्दारान् रक्षेद्धनैरपि ।
आत्मानं सततं रक्षेद्दारैरपि धनैरपि ॥ १ ॥

भावार्थ—" आपत्तिने माटे धननी रक्षा करवी, धनवडे स्त्रीनु रक्षण करवु, अने स्त्री तथा धनवडे करीने पण निरंतर आत्मानु रक्षण करवु. "

धर्मिष्ठ पुरुषोने देह ने धन समान छे, अने आत्मा देहथी विशेष छे. माटे देहनी पीडानी उपेक्षा करीने पण आत्मानु रक्षण करवु. "

आ प्रमाणे ते ब्राह्मणनी पोतानी प्रतिज्ञामां निश्चलता जोइने ते बन्ने देवो अत्यंत हर्षित थया. पछी 'अहो ! सात्त्विक शिरोमणि ! अहो ! सत्यप्रतिज्ञावान् ' एम कहेता ते बन्ने देवोए पोतानु रुप प्रगट कर्यु. अने उछे करेली तेनी प्रशंसानु वर्णन करी सर्व रोगने हरण करनारा रत्नोथी तेनुं घर भरपूर करीने देवो स्वस्थाने गया. ते रत्नोना प्रभावथी औषध विना ज तेनु शरीर आरोग्य थइ गयु. तेथी तेनुं नाम सर्वत्र 'आरोग्यद्विज' एवु प्रसिद्ध थयु

"आ प्रमाणे ते ब्राह्मणे गुरुनिग्रहरुप आगारने जाणता छता पण धर्मनी दृढता मूकी नहीं अने ग्रहण करेला नियमो निरतिचार पाळी स्वर्ग सुखने पाम्यो. प्रांते मोक्ष सुखने पामशे."

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तम्भे एकपञ्चाशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ५१ ॥

व्याख्यान ५२ मु.

देवाभियोग नामना आगार विषे.

कुलदेवादिवाक्येन, यन्मिथ्यात्वं विधीयते ।
स सम्यक्त्वरताना च, भवेत्सुराभियोगक ॥ १ ॥

भावार्थ—" कुळदेवादिकना वचने करीने जे काइ मिथ्यात्वनु सेवन करवु पडे ते सम्यक्त्वधारीने देवाभियोग नामनो आगार कहेवाय छे. "

चूलनीपिता नामना श्रावकनी जेम केटलाएक व्रत ग्रहण कर्या पछी देवादिकना उपसर्गथी चपळता पामे छे, परतु तेथी तेमने महा दोष लागतो नथी. मिथ्यादुष्कृत विगेरे आपवाथी ते दोष जलदी निवृत्ती पामे छे, केटलाएक उत्सर्ग मार्गमा स्थित रह्या थका नमि राजर्षिनी जेम चलित थता ज नथी. तेनी कथा आ प्रमाणे—

नमि राजर्षिनी कथा

अवन्ति देशमा सुदर्शन नामना नगरने विषे मणिरथ नामे राजा हतो. तेनो नानो भाइ युगबाहु युवराज पद पर हतो. ते युगबाहुने मदनरेखा नामनी अति स्वरुपवान स्त्री हती. एकदा मदनरेखाने जोइने मणिरथ राजा कामातुर थयो तथी ते एकदम मनमा बोली उठ्यो के—

दृष्ट्वा यद्रुपसपत्ति, स्वात्मन्येव स्मरो ज्वलन् ।
वृथा पुन प्रवादोऽय, लोके दग्धो हरेण यत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे स्त्रीनी रुप सपत्ति जोइने मारा आत्माने विषे ज कामदेव बळवा लाग्यो छे, तो ' शकरे कामदेवने बाळी नाख्यो छे ' एम जे लोकमा कहेवाय छे ते वृथा ज छे "

पछी मणिरथ मदनरेखाने वश करवा माटे निरतर दासी द्वारा पुष्प, ताबूल, वस्त्र तथा अलकार विगेरे मोकलवा लाग्यो तेने ' आ जेठनी प्रसादी छे ' एम मानी मदनरेखा ग्रहण करवा लागी. एकदा राजाना कहेवाथी दासीए मदनरेखा पासे राजानी इच्छा जणावी ते साभळीने मदनरेखा बोली के " हे दासी !

जगत्प्रसिद्धो नारीषु, शीलमेव महागुण ।
तस्मिन् लुप्ते वृथा सर्व, गते जीव इवागिन ॥ १ ॥

भावार्थ—" स्त्रीओने विषे शीलरूपीज महागुण जगप्रसिद्ध छे, ते

शीलनो लोप थाय, तो पछी जीव विनाना शरीरनी जेम ते स्त्रीओनो जन्म वृथाज छे."

माटे तमारे पृथ्वीपतिने आवुं अयोग्य वचन मारा प्रत्ये कहेवुं योग्य नथी." एम कही दासीने तेणीए विदाय करी. दासीए तेज प्रमाणे राजा पासे जइने कह्युं. ते सांभळी रागथी लुब्ध थयेला राजाए विचार कर्यो के "मारा बंधुने मारी नाखीश तो पछी ते मारे कबजे आवशे, ते विना मारु कार्य सिद्ध थशे नहीं." एम विचारीने राजा बंधुनो वध करवानो उपाय शोधवा लाग्यो.

एकदा वसंत ऋतुमां क्रीडा करवा माटे युगबाहु पोतानी प्रियाने साथे लइने उद्यानमा गयो. त्यां चिरकाळ सुधी क्रीडा करीने रात्रीए पण त्यांज (उद्यानमां) कदली गृहनी अंदर प्रिया सहित सुइ गयो. ते अवसर जोइने राजा गुप्त रीते खड्ग लइने ते कदलीगृहमां पेठो. त्यां युगबाहुने प्रिया सहित निद्रावश थयेलो जोयो. एटले तरतज कुलमर्यादानु उल्लंघन करी, यश धर्म अने लज्जादिकनो पण त्याग करी, राजाए खड्गवडे बंधुनो शिरच्छेद कर्यो. 'कामदेवनो उदय एवोज होय छे.' पछी राजा पोताना घर तरफ चाल्यो. राजाए पोताना बंधु पर जे वखते खड्गनो प्रहार कर्यो, तेज वखते मदनरेखा जाग्रत थइ गइ, तेणीए जोयुं तो राजाए ज ते अकृत्य कर्युं दीठु एटले ते मौन रही. राजाना गया पछी पोताना पतिनो अवसान समय जाणी विलाप करती ते गद् गद् कंठे बोली के—

त्वं वृथा मा कृथाः खेदं, महाभाग मनागपि ।
सर्वत्र प्राक्कृतं कर्म, प्राणिनामपराध्यति ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे प्रिय ! हे महाभाग्यवान ! तमे जरा पण वृथा खेद करशो नहीं, केमके पूर्वे करेला कर्मो ज सर्वत्र प्राणीओनो अपराध करे छे."

तस्मान्मन. समाधेहि, विधेहि शरणं जिनम् ।
ममत्वं मुञ्च मैत्रीं च, कुरु सर्वेषु जन्तुषु ॥ २ ॥

भावार्थ—" तेथी करीने हे प्राणेश ! तमे तमारा मनने समाधिमां राखो, जिनेश्वरनु शरण करो, ममतानो त्याग करो अने सर्व जंतुओने विषे मैत्री भाव धरावो."

ઇત્યાદિ પ્રિયાનાં વચનોથી કોપને શાંત કરી પંચપરમેષ્ઠી મંત્રનું સ્મરણ કરતો તે યુગબાહુ મરણ પામીને પાંચમા દેવલોકમાં દેવ થયો.

પછી મદનરેખા જેઠની વક્ર નિષ્ઠા જાણીને પોતાના શીલનું રક્ષણ કરવા માટે પોતાના યુવાન પુત્રનો તથા ધન વિગેરેનો ત્યાગ કરીને ગર્ભવતી છતાં પણ રાત્રીમાંજ ત્યાંથી ચાલતી થઇ. ચાલતાં ચાલતાં તે એક મોટા ભયંકર અરણ્યમાં આવી પડી. તે વનમાં સિંહ અને શાર્દુલ વિગેરેના ભયંકર શબ્દોથી ત્રાસ પામેલી તે સતીએ ત્યાંજ પુત્રનો પ્રસવ કર્યો. પછી તે બાળકને રત્નકંબલમાં વીંટી, પોતાના પતિના નામની મુદ્રિકા તે બાળકની આંગળીમાં પહેરાવીને, પોતાના વસ્ત્રોની તથા દેહની શુદ્ધિ કરવા માટે નજીકના એક સરોવરમાં ગઇ. તે સરોવરમાં રહેલા જળહસ્તીએ તેને પોતાની સૂંઢવડે પકડીને આકાશમાં ઉછાળી. તે વખતે આકાશમાર્ગે કોઇ ખેચર નંદીશ્વર દ્વીપની યાત્રા કરવા વિમાનમાં બેસીને જતો હતો. તેણે તેણીને ઝીલી લીધી અને પોતાના વિમાનમાં બેસાડી. ત્યારે તે મદનરેખાએ રુદન કરતાં પુત્ર પ્રસવની અને તે પુત્રને માર્ગમાં મૂકી આવ્યાની વાત તે વિદ્યાધરના રાજા પાસે કહી. તે સાંભળીને તેણે વિદ્યાના બળથી તે પુત્રનું સ્વરૂપ જાણીને કહ્યું કે "હે ભદ્રે ! તું ચિંતા ન કર, વિપરીત શિક્ષા પામેલા અશ્વથી હરણ કરાયેલા મિથિલા નગરીના રાજા પદ્મરથે તારા પુત્રને લઇને પોતાની પુત્ર રહિત પ્રિયાને આપ્યો છે. માટે હવે તું તે સબંધી વિષાદનો ત્યાગ કરી મને પતિ તરીકે અંગીકાર કર." તે સાંભળીને મદનરેખા બોલી કે "હે પૂજ્ય ! પ્રથમ મને નંદીશ્વરની યાત્રા કરાવો. પછી હું તમારો મનોરથ પૂર્ણ કરવાનો યત્ન કરીશ" તે સાંભળીને વિદ્યાધર તેણીને નંદીશ્વર દ્વીપે લઇ ગયો. ત્યાં બાવન જિનેશ્વરના બિંબોને વંદના કરીને તે વિદ્યાધર તથા મદનરેખા ત્યાં રહેલા મણિચૂડ નામના ચક્રવર્તી રાજર્ષિ પાસે આવી તેને વંદના કરી તેની પાસે બેઠા.

હવે પાંચમા દેવલોકમાં ઉત્પન્ન થયેલો યુગબાહુ દેવ અવધિજ્ઞાનથી પોતાનો પૂર્વભવ જાણીને ત્યાં આવ્યો અને પ્રથમ મદનરેખાને વંદના કરીને પછી તેણે મુનિને વંદના કરી. તે જોઇને મણિપ્રભ વિદ્યાધરે તેને કહ્યું કે "તમે વિવેકી થઇને પ્રથમ આ સ્ત્રીને વંદના કરીને પછી મુનિને વંદના કરી તેનું શું કારણ ? એવું અયોગ્ય આચરણ તમે કેમ કર્યું ?" એમ કહીને તેને ઉપાલંભ દીધો ત્યારે ચારણશ્રમણ મુનિએ તે દેવના પૂર્વભવનું સ્વરૂપ મણિપ્રભને કહી સંભળાવીને કહ્યું કે—

"हे विद्याधर राजा !

धर्माचार्यमनुस्मृत्य, तूर्णमत्रेयिवानयम् ।
युक्तं मुनिं विहायादौ, ननामैना महासतीम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" आ देव पोताना धर्माचार्यनुं स्मरण करीने शीघ्रताथी अहीं आव्यो छे तेथी मुनिनो त्याग करीने ते प्रथम आ महासतीने नम्यो, ते तेणे युक्त कर्यु छे. " केमके—

यतिना श्रावकेणाथ, योऽर्हद्धर्मे स्थिरीकृत. ।
स एव तस्य जायेत, धर्माचार्यो न संशयः ॥ २ ॥

भावार्थ—"मुनिए अथवा श्रावके जेणे जैनधर्ममां स्थिर कर्यो होय, तेज तेनो धर्माचार्य कहेवाय छे. तेमा काइपण संशय नथी. "

आ प्रमाणेनी हकीकत सांभळीने ते विद्याधरे देवने खमाव्यो. पछी ते देवे मदनरेखाने उपाडीने मिथिला नगरीमां मूकी. त्यां पोताना पुत्रने सुखी जोइने ते स्वस्थ चित्तवाळी थइ पछी तेणे वैराग्य पामी ने कोइ प्रवर्तिनी पासे दीक्षा ग्रहण करी.

मदनरेखाना पुत्रनु नाम नमि पाड्युं.ते नमिकुमार अनुक्रमे युवावस्था पाम्यो, त्यारे मिथिलापतिए तेने एक हजार ने आठ कन्याओ परणावी. पछी पद्मरथ राजाए नमिने राज्यपर बेसाडीने दीक्षा ग्रहण करी.

अहीं जे रात्रीए मणिरथ राजाए पोताना नाना भाइने खड्गथी मार्यो तेज रात्रीए कृष्ण सर्पना दंशथी रौद्रध्यानवडे मरण पामीने ते चोथी नरके गयो, अने राज्यनो अधिकारी युगबाहुनो मोटो पुत्र चंद्रयशा थयो.

एकदा नमिराजानो पट्ट हस्ती बंधन स्तंभने उखेडीने नासी गयो. तेने कोइ पकडी शक्यु नहीं. ते नासतो नासतो चंद्रयशाना नगरना सीमाडामां आव्यो, एटले ते हस्तीने चंद्रयशाए पकडी लीधो. ते वातनी नमिराजाने खबर थता तेणे दूत मोकली चंद्रयशा पासे पोतानो हाथी माग्यो. त्यारे तणे हाथी आपवानी ना कही. ते सांभळीने नमिराजा युद्ध करवा माटे त्यां आव्यो अने चंद्रयशाना नगरने घेरो घालीने पड्यो. आ वृत्तांत मदनरेखा आर्याए सांभळ्यो, ते-

थी ते त्यां आवीने नमिने कहेवा लागी के ' हे वत्स नमि ! मोटा भाइ साथे युद्ध करवुं तने युक्त नथी.' ते सांभळी विस्मय पामेला नमिए पूछ्युं के 'शी रीते चन्द्रयशा मारो बंधु थाय ? ' त्यारे आर्याए पोतानी सर्व वार्ता तेने कही संभळावी. ते सांभळी नमिराजाए पिताना नामनी मुद्रिका जोइ. तेथी तेने वधारे निश्चय थयो. एटले ते युद्धथी निवृत्त थइने चन्द्रयशा पासे गयो अने तेने सर्व वृत्तांत कह्यो. पछी बने भाइओ परस्पर प्रीतिवाळा थया. अनुक्रमे चन्द्रयशाए नमिकुमारने पोतानुं राज्य सोंपीने व्रतनी इच्छाथी दीक्षा अंगीकार करी.

बन्ने राज्योनुं अखण्ड पालन करतां अन्यदा नमिराजाना देहमां छ मास नी स्थितिवाळो महा दाहज्वर उत्पन्न थयो. अनेक वैद्योए अनेक प्रकारे चिकित्सा करी, तोपण ते शांत थयो नहीं. एकदा कोइ वैद्यना कहेवाथी तेने विलेपन करवा माटे सर्व राणीओ चंदन घसवा लागी. ते वखते राणीओना हाथमां रहेला कंकणो परस्पर अथडावाथी बहु शब्द करवा लाग्या. ते शब्द राजाथी सहन थयो नहीं, एटले तेना हुकमथी राणीओए एक एक कंकण राखीने बीजां सर्वे कंकणो काढी नाख्यां. राजाए पूछ्युं के ' हवे कंकणनो शब्द केम संभळातो नथी ? ' त्यारे ते राणीओए एक एक कंकण बताव्युं. ते जोइने चारित्रावरण कर्मनो क्षय थवाथी नमिराजाने एवो अध्यवसाय उदय आव्यो के—

वलयावलिदृष्टान्ताज्जीवो बहुपरिग्रही ।
दुःख वेदयते नूनं, वरमेकाकिता ततः ॥ १ ॥

भावार्थ—" कंकणसमूहना दृष्टांतथी एवुं सिद्ध थाय छे के घणा परिग्रहने धारण करनारो जीव निश्चये दुःखनेज अनुभवे छे. माटे एकला रहेवुं ते श्रेष्ठ छे "

आ प्रमाणे एकाकी विचरवानुं ध्यान करतां राजा निद्रावश थयो. स्वप्नमां पोताने मेरुपर्वतपर रहेलो ने श्वेत हाथीपर चडेलो जोयो. स्वप्नमांथी जागतां ' आवो सुवर्ण पर्वत में पूर्वे क्यांक जोयो छे ' एम उहापोह करतां ते राजाने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं अने पूर्वजन्म दीठो. ते पूर्वभवे अगणित पुण्यवाळुं चारित्र पाळवाथी अनुपम लक्ष्मीवाळा पुष्पोत्तर विमानमां देवता थयो हतो. ते वखते जन्मकल्याणक माटे त्यां आवेलो होवाथी तेणे सुवर्णमय मेरु पर्वत

थेलो हतो आ प्रमाणे जातिस्मरण थतांज तेनी चारित्र लेवानी उत्कट इछा थइ. तेथी तेज वखते देवताए तेने साधु वेष आप्यो एटले नमिराजा प्रव्रज्या ग्रहण करीने घरथी नीकल्या.

नमिराजाना आश्चर्यकारक प्रतिबोधथी रंजीत थयेला सौधर्मेन्द्र अवधिज्ञानथी ते स्वरुप जाणीने ब्राह्मणनो वेष धारण करी नमिराजर्षि पासे आवीने बोल्या के "हे मुनि ! आ तमारा नगरना लोको घणो आक्रंद करे छे, अने तमारा नगरमा अग्नि लाग्यो छे. प्रव्रज्या ग्रहण करवी ते दया पाळवाने माटे छे, तेथी पूर्वापर विरोधवालु आ तमारु चारित्र योग्य नथी. माटे प्रथम सर्वने सुखी करीने पछी व्रत लेवु योग्य छे. वळी तमे जरा पाछुं वळीने जुओ के—

एष वन्हिश्च वातश्च, तवैव दहति गृहम् ।
अन्तःपुरं च तन्नाथ, त्वं किमेतदुपेक्षसे ॥ १ ॥

भावार्थ—" जुओ आ अग्नि अने आ वायु तमाराज महेलने अने अन्तःपुरने बाळे छे, माटे तेना नाथ थइने तमे तेनी केम उपेक्षा करो छो ? "

आ प्रमाणे शक्रे प्रेरेला प्रत्येक बुद्ध मुनि बोल्या के—

सुखं वसामि जीवामि, येन मे नास्ति किञ्चन ।
मिथिलानगरीदाहे, न मे दहति किञ्चन ॥ १ ॥

भावार्थ—" हु सुखे वसु छु, अने सुखे जीवु छुं, केमके मारुं कांइपण नथी. मिथिला नगरी बळे छे, तेमा मारु काइ बळतु नथी."

स्वार्थाय यतते सर्वस्तं विना दुःखमश्नुते ।
मयापि साध्यते स्वार्थस्तस्मान्निर्ममचेतसा ॥ २ ॥

भावार्थ—" सर्व प्राणी पोताना स्वार्थने माटे यत्न करे छे. केमके स्वार्थ साध्या विना दुःख प्राप्त थाय छे, तेथी हु पण ममता रहित चित्तवडे मारो स्वार्थ (आत्मानो अर्थ) ज साधु छु. "

फरीथी शक्रेन्द्रे कह्यु के—' हे मुनि ! सोनुं, रुपुं, मणि विगेरेथी भंडारनी वृध्धि करीने पछी व्रत ग्रहण करवु युक्त छे ' ते सांभळीने नमि राजर्षि

बोल्या के—

सुवण्णरूप्पस्स उ पव्वया भवे, सिया हु केलाससमा असंखया।
नरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि, इच्छा हु आगाससमा अणंतिआ॥१॥

भावार्थ—"सुवर्णना अने रुपाना कैलास पर्वत जेवडा असंख्य पर्वतो होय, तो तेथी पण लुब्ध पुरुषने संतोष थतो नथी. केमके इच्छा आकाशनी जेवी अन्त रहित छे."

इत्यादि उत्तराध्ययन सूत्रमां कहेली अनेक युक्तिओथी मुनिए ते विप्रने निरुत्तर कर्यो. छेवट तेमनु चित्त क्षोभ पामे तेम नथी, एम जाणीने इन्द्रे ब्राह्मणना रुपनो त्याग करी पोतानु स्वरुप प्रगट करी तेमने प्रणाम करीने स्तुति करी के—

अहो ते निज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ।
अहो निरकया माया, अहो लोहो वसंकिओ॥ १ ॥

भावार्थ—" अहो ! तमे क्रोधने जीती लीधो छे, अहो ! तमे मानना पराजय कर्यो छे, अहो ! तमे मायानो तिरस्कार कर्यो छे, अने अहो ! तमे लोभने वश करी लीधो छे."

इत्यादि बहु प्रकारे स्तुति करीने स्वर्गपति स्वर्गमा गया. अने नमिराजर्षि अनुक्रमे केवळज्ञान पामीने मोक्षपदने पाम्या.

" प्रत्येक बुद्ध नमिराजर्षिए शक्रनी युक्तिओथी पण धर्मनो त्याग कर्यो नहीं, तेथी तेमनी ज्ञातासूत्रने विषे श्री महावीरस्वामीए पण प्रशंसा करेली छे, ते राजर्षि अमोल सुखने अर्थे थाओ. "

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तम्भे द्विपञ्चाशत्तम
व्याख्यानम् ॥ ५२ ॥

व्याख्यान ५३ मु.

बलाभियोग नामना छेल्ला आगार विषे

वहूनां हठवादेन, बलाद्वा त्यस्तसेवनम् ।
एवं बलाभियोगः स्यात्, पमेते छिण्डिका मताः ॥ १ ॥

भावार्थ—" घणा लोकोना हठवादथी अथवा कोइना बळात्कारथी त्याग करेलानुं सेवन करवुं पडे ए बलाभियोग आगार कहेवाय छे. आ छए आगारोने छींडीओनी संज्ञा आपेली छे. "

केटलाएक उत्सर्ग मार्गमां स्थित रहेला मनुष्यो बीजाना बळात्कारथी पण पोताना ग्रहण करेला व्रतने मूकता नथी. ते उपर सुदर्शन श्रेष्ठीनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

सुदर्शन श्रेष्ठीनी कथा.

चंपापुरीमां ऋषभदास नामे श्रेष्ठी हतो. तेने अर्हद्दासी नामनी शीलवती स्त्री हती एकदा माघ मासमां सुभग नामनो शेठनी भेंसो चारनार नोकर शेठना ढोर चारीने सायंकाळे घर तरफ आवतो हतो, तेवामां मार्गने विषे कोइ वस्त्र रहित अने टाढने सहन करता मुनिने काउसग्ग ध्याने उभेला जोया. तेमने जोइने ते मुनिनी प्रशंसा करतो ते सुभग शेठने घेर आव्यो. पछी बीजे दिवसे प्रातःकाळे वहेलो उठीने शेठनी भेंसो लइने ते वन तरफ चाल्यो ते वखते पण तेज स्थाने तेज रीते कायोत्सर्ग रहेला पेला मुनिने जोइने सुभग तेनी पासे जइ पगे लागीने बेठो थोडी वारे सूर्योदय थतां ते चारण मुनि ' नमो अरिहंताणं ' एम बोली आकाशमां उत्पती गया. ते जोइने सुभगे ' नमो अरिहंताणं ' ए आकाशगामी विद्यानो मंत्र छे एम जाणीने ते पद याद राखी लीधुं पछी एक दिवस ते सुभग अरिहंतनी पासे ते पदनुं ध्यान करतो बेठो हतो. ते जोइने श्रेष्ठीए पूछ्युं के ' तुं आ मंत्र क्यांथी शीख्यो ?' त्यारे सुभगे ' मुनि पासेथी शीख्यो ' एम कही सर्व वृत्तांत कह्युं. ते सांभळी संतुष्ट थइने श्रेष्ठीए तेने आखो नवकार मंत्र शीखव्यो,

तेथी ते मंत्रनुं ते हमेशां ध्यान करवा लाग्यो

अनुक्रमे वर्षाकाळ आव्यो ते वखते पण सुभग ढोर चारवा जतो हतो एक दिवस अत्यंत वृष्टि थवाथी पृथ्वी समुद्रनी जेम जळमय थइ गइ. भेंसोने लइने पाछा वळतां वच्चे मोटी नदी हती. तेमां पण पूर आवेलुं हतुं. ते जोइ आकाशमां उडवानी बुद्धिथी नवकार मंत्रनुं स्मरण करीने तेणे नदीमां पडतुं मूक्युं. ते वखते एक खीलो वागवाथी ते मृत्यु पामीने तेज श्रेष्ठीने घेर सुदर्शन नाम नो पुत्र थयो. ते सुदर्शन युवावस्था पाम्यो, त्यारे तेने श्रेष्ठीए कोइ श्रेष्ठीनी मनो रमा नामनी कन्या परणावी.

सुदर्शनने राजाना पुरोहित अने कपिलनी साथे गाढ मैत्री हती. एकदा कपिलना मुखथी सुदर्शनना रुपादिक गुणनी प्रशंसा सांभळीने तेनी स्त्री कपिला ते ना पर अनुरक्त थइ. एक दिवस एकांतनो वखत जोइने ते सुदर्शनने घेर गइ, अने तेने कह्युं के ' आजे तमारा मित्रने शरीरे ठीक नथी, माटे तेनी खबर लेवा माटे तमे जल्दी मारे घेर चालो, ते बोलावे छे.' एम कही तेने पोताने घेर तेडी गइ. त्यां गुप्त गृहमां तेने लइ जइ बारणां बंध करी लज्जानो त्याग करीने तेणे भोगनी प्रार्थना करी. त्यारे परस्त्रीने विषे नपुंसक जेवा सुदर्शने पोताना शीलनुं रक्षण करवा माटे कह्युं के ' हे मुग्धे ! हुं तो नपुंसक छुं तुं मारी पासे फोगट शा माटे प्रार्थना करे छे ? ' एम कही ते त्यांथी नीकळी पोताने घेर गयो.

एकदा राजा पुरोहित अने सुदर्शनने साथे लइने उद्यानमां क्रीडा करवा गयो. ते वखते वाहनमां बेसीने अभया राणी पण कपिलाने साथे लइ उद्यानमां गइ. तेवामां कपिलाए एक स्त्रीने छ पुत्रो सहित मार्गे चाली जती जोइने 'आ स्त्री कोण छे ?' एम अभया राणीने पूछयुं त्यारे राणी बोली के " आ तो सुदर्शन शेठनी स्त्री छे. तेने तुं ओळखती नथी ? आ छए तेणीना पुत्रो छे." ते सांभळीने कपिलाए कह्युं के–'शेठ तो नपुंसक छे तेने पुत्रो क्यांथी ? ' एम कही पोतानो सर्व वृत्तांत राणी पासे कह्यो. ते सांभळी राणी बोली के ' तुं तो मूर्ख छे ते शेठे कपट करीने तने छेतरी. ' कपिला बोली के " हे देवी ! तमारी चतुराइ तो हुं त्यारे ज जाणुं के ज्यारे तेनी साथे तमे एकपण वखत क्रीडा करो." ते सांभळीने राणीए ते वचन अंगीकार कर्युं. पछी एकदा राजा विगेरे सर्व क्रीडा करवा उद्या

नमां गया हता. अभया राणी महेलमां एकली हती. ते वखते तेणे पंडिता नामनी पोतानी धात्रीने सुदर्शनने तेडी लाववानुं कह्युं. ते धात्री सुदर्शनने घेर गइ. तो एक शून्य घरमां सुदर्शनने कायोत्सर्ग रहेल दीठो. तेने धात्रीए उपाडीने रथमां नांख्यो. पछी तेनापर उत्तम वस्त्र ओढाडीने कामदेवनी मूर्तिना मीषथी तेने राणीना महेलमां लइ गइ. त्यां एकांतमां राणीए हावभाव पूर्वक कामविकार देखाडी तेनी घणी प्रार्थना करी. परंतु सुदर्शननुं मन जरा पण क्षोभ पाम्युं नहीं. त्यारे राणीए पोताना स्तननो स्पर्श थाय तेवी रीते तेना आखे अंगे गाढ आलिंगन कर्युं. तोपण तेनुं मन क्षोभ पाम्युं नहीं छेवट ते राणी थाकी गइ त्यारे तेणीए पोकार करी सीपाइओने बोलाव्या. अने 'आ सुदर्शन मने बळात्कार करवा अहीं आव्यो छे ' एम कह्युं. सीपाइओ सुदर्शनने पकडीने राजा पासे लइ गया. राजाए सुदर्शनने पूछ्युं. पण तेणे राणीपरनी दयाने लीधे कांइपण कह्युं नहीं त्यारे तेने ज दूषित धारी राजाए क्रोधथी ' आने विडंबना पूर्वक आखा नगरमां फेरवी शूळीए चडावीने मारी नाखो ' एवी आज्ञा करी. सीपाइओ ते प्रमाणे करी तेने गाममां फेरववा लाग्या. ते वखते सुदर्शननी स्त्रीए तेने तेवी अवस्थामां दीठा. तेथी तरतज घर देरासरमां जइ पतिनुं कलंक उतरे त्यां सुधीने माटे कायोत्सर्ग करीने ते श्री जिनेश्वर पासे उभी रही. अहीं राजसेवकोए सुदर्शनने गाममां फेरवी गाम बहार लइ जइने शूळीपर चडाव्यो. एटले ते शूळी तेना शीयळना प्रभावथी सुवर्णनुं सिंहासन थइ गइ. त्यारे सिपाइओए तेनो वध करवा माटे खड्गना प्रहारो कर्या. तेमां कंठमां प्रहार कर्या, त्यारे तेना कंठमां हार थइ गया, मस्तकपर कर्या त्यारे मुगुट थयो, कानपर कर्या त्यारे कुंडळ थयां, हाथ पग पर प्रहार कर्या त्यारे कडां थइ गयां. ते जोइ आश्चर्य पामीने ते आश्चर्यकारक बनाव सीपाइओए राजाने निवेदन कर्यो. ते सांभळी राजा तरतज त्यां आव्यो अने सुदर्शनने सत्कार पूर्वक हाथीपर बेसाडी मोटा उत्सव साथे पोताने घेर लइ गयो. ते हकीकत जाणीने तेनी स्त्रीए कायोत्सर्ग पार्यो. पछी राजाए आग्रह पूर्वक सुदर्शनने सत्य वात पूछी. त्यारे तेणे राणीने अभय वचन अपावी बधी वात कही. पछी राजाए सुदर्शनने हाथीपर बेसाडीने तेने घेर मोकल्यो.

आ वृत्तांत जाणीने अभया राणी गळे फासो बांधीने मृत्यु पामी. अने पंडिता पाटलिपुरे कोइ वेश्याने घेर जइने रही. अनुक्रमे सुदर्शन शेठे वैराग्य पा-

मी दीक्षा लीधी. विहार करतां करतां ते पाटलिपुर आव्या. त्यां पंडिताए वहोरावतांना मीषे पोताने घेर लइ जइने बारणा बंध करी तेनी घणी कदर्थना करी. पण्तु ते मुनि जरापण चलित थया नहीं केवट सायंकाळे पंडिताए तेने छोडी मूक्या. एटले ते मुनि गाम बहार नीकळी वनमां जइ स्मशान भूमिने विषे प्रतिमा धारण करीने उभा रह्या. त्या व्यतरी थयेली अभया राणीए पूर्व जवना वैरथी अनुकूळ तथा प्रतिकूळ अनेक उपसर्गों कर्या, तोपण ते मुनिनु चित्त किंचित् पण चलित थयुं नहीं, तेओ तो शुभ ध्यानमांज स्थिर रह्या अनुक्रमे शुक्लध्यानना योगथी तेमने केवळज्ञान उत्पन्न थयु. देवोए केवळनो महिमा कर्यो तेमणे देशना दीधी. तेमनी देशना सांभळीने अभया तथा पंडिता प्रतिबोध पामी समकितधारी थइ. सुदर्शन केवळी चिरकाळ सुधी केवळी पर्यायनु पालन करी प्रांते मोक्ष पदने पाम्या.

" सुदर्शननी जेम बळाभियोगथी पण जेओ स्वधर्मने विषे दृढ रहेछे तेओ सुदर्शननीजेम जगतमां प्रधान थइने अल्पकाळमां उत्कृष्ट संपत्तिने पामे छे."

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तम्भे त्रिपञ्चाशत्तम व्याख्यानम् ॥ ५३ ॥

व्याख्यान ५४ मुं.

समकितनी छ भावनाओ विषे

मूलं द्वार प्रतिष्ठानमाधारो भाजनं निधिः ।
द्विविधस्यापि धर्मस्य, प्रणेता बोधिभावना. ॥ १ ॥

भावार्थ—" मूल, द्वार, प्रतिष्ठान, आधार, भाजन अने निधि ए छ प्रकारना धर्मने विषे बोधिनी भावना कहेली छे "

मूलं सर्वज्ञधर्मस्य द्वारं मुक्तिपुरस्य च ।
जिनोक्तधर्मयानस्य, प्रतिष्ठानं सुनिश्चलम् ॥ १ ॥
आधारो विनयादीनां, धर्मामृतस्य जाजनम् ।
निधिर्ज्ञानादिरत्नानां, सम्यक्त्वमिति जावयेत् ॥ २ ॥

जावार्थ—" समकित एज सर्वज्ञ जाषित श्रावक अने साधु ए बन्ने प्रकारना धर्म रूप वृक्षनुं मूळ छे. केमके ते मूळ निश्चळ होय तोज स्वर्ग मोक्षादिक फळ प्राप्त थाय छे, ए पहेली जावना. समकित ए मोक्षरूप पुरनुं द्वार छे. केमके समकित रूप द्वार विना मोक्षपुरनी अंदर प्रवेश थइ शकतो नथी. सामान्य नगरने विषे पण दरवाजा विना प्रवेश थइ शकतो नथी, ए बीजी जावना. जिनेश्वरे कहेला धर्म रूपी वाहननुं समकित ज प्रतिष्ठान (निश्चळ पीठ) छे. ते प्रतिष्ठान निश्चळ होय तो धर्म रूपी यान चिरकाळ टकी शके छे, ए त्रीजी जावना. समकित विनयादि गुणोनो आधार (अवस्थान) छे. ते आधार विना विनयादिक गुणो स्थिर थता नथी, ए चोथी जावना. समकित ए धर्म रूपी अमृतनुं पात्र छे. केमके ते पात्र विना ते धर्म रूपी अमृत रही शकतुं नथी, ए पांचमी जावना. तथा समकित ए ज्ञान, दर्शन अने चारित्र रूपी रत्नोनुं निधान (जंडार) छे. निधान विना बीजां रत्नो जेम जाळवी शकातां नथी तेम समकित विना ज्ञानादिक त्रण रत्नो रही शकतां नथी, ए छठी जावना. आ प्रमाणे छ जावना जाववी. " आ संबंधमां विक्रम राजानी कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

विक्रम राजानी कथा.

कुसुमपुरने विषे हरितिलक नामे राजा हतो. तेने गौरी नामनी राणी हती अने विक्रम नामे पुत्र हतो. ते कुमार युवान थयो त्यारे तेने राजाए बत्रीश राजकन्याओ परणावी. ते स्त्रीओनी साथे विक्रम कुमार दोगुंदक देवनी जेम एकांत सुखनो अनुजव करवा लाग्यो.

एकदा अशुज कर्मना वशथी कुमारने अकस्मात् कास, श्वास अने ज्वरादिक व्याधिओनो उपद्रव थयो. तेना निवारण माटे घणा मंत्र, तंत्र अने औषधादिवडे उपचारो कर्या. परंतु कोइ पण रीते रोगनी शांति थइ नहीं. छेवटे

व्याधिनी असह्य पीडाथी तेणे धनंजय नामना यक्षनी रोगशांति माटे सो पाडाना बळिदाननी मानता करी. ते पण निष्फळ गइ. एकदा ते नगरना उद्यानमां विमल नामना केवळी समवसर्या. ते खबर वनपाळना मुखथी सांभळीने राजा केवळीने वंदना करवा जवाने तैयार थयो त्यारे कुमार बोल्यो के " हे पिता ! मने पण त्यां लइ जाओ, जेथी मुनिना दर्शनवडे मारा रोगनी शांति तथा पापनो क्षय थाय." ते सांभळीने राजा तेने साथे लइ गया. मुनिने वंदना करी तेमना मुखथी धर्मदेशना सांभळ्या पछी राजाए पोताना कुमारने महा व्याधि थवानुं कारण पूछ्युं. त्यारे केवळी बोल्या के—

" पूर्वे आ कुमार पद्म नामे राजा हतो. ते अन्यायनुं मंदिर हतो. एकदा शिकार करवाने माटे ते वनमां गयो हतो. त्यां प्रतिमा धारण करीने उभेला कोइ साधुने जोइने तेणे कारण विना वैरने चिंतवी ते मुनिने शर वडे हण्या. ते पाप कर्म जोइने तेना धार्मिक प्रधानोए तेने पांजरामां नाख्यो अने तेनी गादीए तेना पुत्रने स्थापन कर्यो. मुनि तो काळ करी शुभ ध्याननें योगे सर्वार्थसिद्धि नामना विमानमां उत्पन्न थया. केटलाक दिवसो पछी पद्म राजाने पांजरामांथी छोडी, काढी मूक्यो. ते फरतो फरतो कोइ वनमां गयो. त्यां आमतेम भमतां तेणे एक मुनिने दीठा, एटले द्वेषथी तेने पण तामना करी. मुनिए तेने ज्ञानथी दुराचरणी जाणीने तेजोलेश्यावडे बाळी दीधो ते मरीने सातमी नरके गयो. त्यांथी आयुष्यनो क्षय थये स्वयंभूरमण समुद्रमां मत्स्यपणे उत्पन्न थयो. त्यांथी पाछो सातमी नरके जइ फरीथी मत्स्य थइ छठी नरके गयो. ए प्रमाणे दरेक नरकमां बबे त्रण त्रण वार भ्रमण करीने कुदेवमां उत्पन्न थइ, पृथ्वी, अप, तेजस् विगेरेमां, अनंत कायादिकमां अने तिर्यंचमां उत्पन्न थइ महा पीडाओने सहन करता ते पद्म राजाना जीवे अनंती अवसर्पिणी उत्सर्पिणीओ व्यतीत करी. पछी अकाम निर्जरा वडे तेना कर्म हळवा थवाथी ते कोइक श्रेष्ठीनो पुत्र थयो. ते भवमां तेणे तापसी दीक्षा लीधी. त्यांथी मरीने आ तारो पुत्र थयो छे. हे राजा ! मात्र थोडुं अवशेष रहेला मुनिघातना पापथी तेने आ रोगो उत्पन्न थया छे. "

आ प्रमाणे सांभळतां पण कपारो आवे तेवो पोतानो पूर्व भव सांभळी करता ते कुमारने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. पछी कुमारे मुनिने कह्युं के—

मिच्छत्तमोहमूढो, जीव तु मं कत्थ कत्थ नह भमिओ ।
छेयणभेयण पमुहं, किं किं दुक्ख न पत्तोसि ॥ १ ॥

भावार्थ—" मिथ्यात्व मोहथी मूढ बनेलो आ मारो जीव क्यां क्यां भम्यो नथी ? (सर्व योनिमां भम्यो छे.) अने जुदा जुदा भवोमां छेदन भेदन विगेरे कया कया दुःखोने पाम्यो नथी ? (सर्व दुःखो पाम्यो छे.) "

माटे हे पूज्य! मारा पर कृपा करो संसाररूपी कूवामांथी धर्मरूपी रज्जु-वडे मने खेंची काढो (मारो उध्धार करो) " ते सांभळीने मुनिए दयावडे छ भावनाथी युक्त एवा समकिततुं वर्णन कर्युं. तेथी ते समकित सहित श्रावक धर्मनो अंगीकार करी पोताना नगरमां गयो.

एकदा पेला यक्षे प्रकट थइने कुमारने कह्युं के "हे कुमार ! मारी शक्तिथी तारा व्याधि नाश पाम्या छे, माटे मने सो पाडा आप. " कुमारे हसीने जवाब आप्यो के " मारो रोग तो केवळी भगवंतनी कृपाथी गयो छे, माटे तुं पाडा माग-तां कांइ शरमातो नथी ? हुं एक कुंथुवानी पण हिंसा करतो नथी, तो तुं आ शु मागे छे ?" ते सांभळीने यक्ष क्रोधथी बोल्यो के ' अरे ! ठीक छे, त्यारे हवे मारुं बळ तने बतावीश, जोजे.' एम कहीने ते अदृश्य थयो

एकदा कुमार वनने विषे रहेला जिनालयमां जइ प्रभुनी पूजा करीने घर तरफ आवतो हतो. ते वखते मार्गमां ते यक्ष कुमारना बे पग पकडी तेने भूमि पर पछाडीने बोल्यो के ' अरे ! केम हजु सुधी तु तारो आग्रह मूकतो नथी ?" कुमारे जवाब आप्यो " हे यक्ष ! तुं जीवहिंसा करवी छोडी दे. कह्यु छे के—

श्लोकार्धेन प्रवक्ष्यामि, यदुक्तं ग्रन्थकोटिभिः ।
परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे वात करोड ग्रंथे करीने कही छे, ते वात हु अर्धा श्लोक-थीज कहुं छु के–जे परोपकार छे ते पुण्यने माटे छे, अने परने पीडा करवी ते पा-पने माटे छे. "

हेमधेनुधरादीनां, दातारः सुलभा भुवि ।
दुर्लभः पुरुषो लोके, यः प्राणिष्वभयप्रद. ॥ २ ॥

जावार्थ—" सुवर्ण, गायो अने पृथ्वी विगेरेनुं दान करनार पृथ्वीपर सु लज छे, पण जे प्राणीओने अजयदान आपे छे ते पुरुष आ लोकमां दुर्लज छे."

आ प्रमाणे कुमारनु साहस जोइने यक्ष बोल्यो के—" जो तुं जीवहिंसा न करे तो तुं मात्र मने प्रणाम ज कर, तेथी ज हुं संतुष्ट थइश." ते सांजळी कु मारे कह्यु के—" प्रणाम घणी जातना थाय छे. तेमांथी तु कइ जातना प्रणाम इच्छे छे? प्रणामना जेद आ प्रमाणे छे, ते तु सांजळ. हास्य प्रणाम, विनय प्र णाम, प्रेम प्रणाम, प्रजु प्रणाम अने जाव प्रणाम—ए पांच प्रकारना प्रणाममां प्र थमकरीथी के हीलनाथी जे प्रणाम थाय, ते हास्य प्रणाम कहेवाय छे, पिता वि गेरे गुरुजनने जे प्रणाम थाय, ते विनय प्रणाम छे, मित्रादिकने जे प्रणाम थाय, ते प्रेम प्रणाम छे, राजा विगेरेने प्रणाम करीए, ते प्रजु प्रणाम छे अने देव गुरुने जे प्रणाम करीए ते जाव प्रणाम कहेवाय छे. तु आ प्रणामोमांथी कया प्रणामने योग्य छे?" यक्ष बोल्यो के—" हे कुमार! तु मने छेल्ला जाव प्रणाम कर, केमके आ जगतनी उत्पत्ति, संहार अने पालन तथा संसारथी निस्तारण विगेरे सर्व मारा हाथमां छे." ते सांजळी कुमार बोल्यो के—" हे यक्ष! प्रथम तु ज जव सागरमां डूबेलो छे तो तु बीजाने शी रीते तारीश? केमके—

जह लोहसिला अप्पं पि, बोलइ तह विलग्ग पुरिसस्स।
इय सारंजो गुरु, परमप्पाण च बोलेई ॥ १ ॥

जावार्थ—" जेम लोढानी शिला (जळमां) पोताने तथा पोताने वळ गेला पुरुषने पण बूमाडे छे, तेम आरंजवाळा गुरु पण पोताने तथा परने जवसा गरमां बोळे छे–बूमाडे छे."

आ प्रमाणे युक्तिथी राजकुमार यक्षने प्रतिबोध पमाड्यो. एटले ते संतुष्ट थइने कुमारपर पुष्पवृष्टि करीने 'संकट समये मने याद करजे' एम कही अदृश्य थयो.

एकदा कुमारे यक्षनी सहायथी दुर्जय एवा कलिंग देशना राजाने युद्धमा जीती लीधो अने पछी निष्कंटक राज्य चलाववा लाग्यो. केटलोक काळ व्यतीत थये विक्रम राजा एक दिवस राजवाटीमां फरवा जतो हतो. तेवी वखत एक शेठीने घेर महोत्सव थतो जोइ ते पण आनंद पाम्यो. पछी क्रीडा

करीने पाछो वळ्यो. त्यारे तेज श्रेष्ठीने घेर माणसोने रुदन करता जोइने राजाए कोइने तेनु कारण पूछ्युं. त्यारे तेणे कह्यु के—

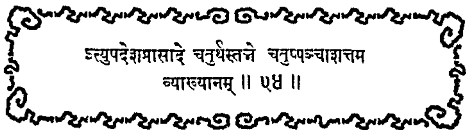
"हे स्वामी! आ श्रेष्ठीने घेर पुत्रनो जन्म थयो हतो, तेथी महोत्सव थतो हतो, पण जन्म्या पछी तरतज ते पुत्र मरण पाम्यो, तेथी तेना कुटुंबीओ रुदन करे छे." ते सांभळीने विक्रम राजाने वैराग्य उत्पन्न थयो. तेणे विचार्युं के—

बाल्यादपि चरेद्धर्ममनित्यं खलु जीवितम् ।
फलानामिव पक्वानां, शश्वत्पतनतो भयम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"आ जींदगी अनित्य छे, तेथी बाल्यावस्थाथीज धर्मनुं आचरण करवुं, केमके पाकेला फळनी माफक जीवने निरंतर पडी जवानो (मृत्युनो) भय रहेलो छे"

आ प्रमाणे विचारीने राजाए पोताना पुत्रने राज्य पर बेसाडी दीक्षा ग्रहण करी अनुक्रमे केवळज्ञान पामी मोक्षपदने पाम्या.

"विक्रम राजानी जेम शुभ भावना वडे समकितनु सेवन करवुं. केमके तेम करवाथी तेवी भावना वडे बन्ने लोकमा शुभनो उदय थाय छे."


इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तम्भे चतुष्पञ्चाशत्तम
व्याख्यानम् ॥ ५४ ॥

व्याख्यान ५५ मुं.

समकितनां ७ स्थानकमाना प्रथमनां बे स्थानक विषे.

अनुभवसिद्धो जीवः, प्रत्यक्षो ज्ञानचक्षुषाम् ।
ज्ञायतेऽनेकभाग्भाभिरस्तिस्थान तदेव हि ॥ १ ॥

भावार्थ—" ज्ञानरूपी नेत्रवाळाओने (केवळज्ञानीओने) प्रत्यक्ष पणे जीव अनुभव सिद्ध छे. तेमज ते जीव अनेक वांछाथी जणाय छे (सिद्ध थाय छे.) ते पहेलुं ' अस्तिस्थान ' कहेवाय छे. "

केटलाएक मिथ्यात्वीओ 'जीव छे ज नहीं' एम माने छे. तेओ एवुं अनुमान करे छे के—आत्मा पांचे इन्द्रियोथी प्रत्यक्षपणे ग्रहण करी शकातो नथी तेथी आकाशना पुष्पनी जेम ते (आत्मा) छ ज नहीं. आवा नास्तिक वादीने आचार्य जवाब आपे छे के—पोताना ज्ञानथी ज अनुभवातो आत्मा सिद्ध छे. केमके केवळज्ञानीने तो ते प्रत्यक्ष छे अने छद्मस्थोने अनुमानथी सिद्ध थाय छे अनेक प्रकारनी वांछनाओथी तथा सुख दुःखादिकनी कल्पना जाळथी निश्चय थइ शके छे के ते वांछाओनो तथा कल्पनाओनो करनार आत्मा छे ते विषे अनुमान आ प्रमाणे थइ शके छे सुख, दुःख अने इच्छा विगेरेनो कारणभूत होवाथी आत्मा छे जे जे वस्तु कार्य अने कारणभूत छे, ते ते वस्तु छतीज होय छे जेम घट कार्य अने तेनुं कारण माटीनो पिंड ते जेम छती वस्तु छे, तेम प्रमाणे आ आत्मा कारण अने सुख दुःखादिक तेना कार्यो छे, तेथी आत्मानी सिद्धि थाय छे. जेओनी आवी सम्यग् बुद्धि छे तेओमां सम्यक्त्वनुं प्रथम स्थानक छे एम जाणवुं. आ प्रमाणे जीवनुं होवापणुं जे मानवुं ते पहेलुं ' अस्तित्स्थान ' कहेवाय छे.

हवे बीजुं जीवनुं नित्यत्वस्थान कहे छे—

द्रव्यस्यापेक्षया नित्यो, हि व्ययोत्पादवर्जित ।
पर्यायापेक्षयाऽनित्य , सद्भावेन च शाश्वत. ॥ १ ॥

भावार्थ—" द्रव्यनी अपेक्षाए नाश अने उत्पत्ति रहित एवो नित्य आत्मा छे, पर्यायनी अपेक्षाए अनित्य छे, अने सद्भाव वडे ते आत्मा शाश्वत छे."

आ आत्मा द्रव्यनयनी अपेक्षाए विनाश अने उत्पत्ति रहित छे एटले आत्मा कदापि उत्पन्न थतो नथी तेमज विनाश पण पामतो नथी. अहीं कोइ शंका करे के ' आटलुंज कहेवाथी तो आचार्ये आत्मानुं नित्यपणुं एकांते अंगीकार कर्युं ' तो तेना निराकरणने माटे उत्तरार्धमां कहे छे के पर्यायनयनी अपेक्षाए आत्मा अ- अने सत्तापे करीने शाश्वत छे. केमके पूर्वे करेलानुं तथा करावेलानुं तेने स्मरण

थाय छे, ते आवी रीते के ' में पूर्वे भवे जे अरिहंततुं बिंब कराव्युं हतुं, तेज आ बिंब छे.' ए प्रमाणे आ जन्मने विषे ते बिंब जोवाथी तेनुं स्मरण थाय छे, अने जातिस्मरण ज्ञान उपजे छे. जीवना पर्याय बदलाता होवाथी बीजा भवमां गमन करवा वडे ते सादि सांत भांगे अनित्य जणाय छे. अर्थात् आत्मा नित्य छे अने तेना पर्यायो अनित्य छे, एम जाणवुं.

वळी द्रव्य कदापि पर्याय रहित होतुंज नथी. ते विषे पूर्वसूरिए कह्युं छे के—

पर्यायविच्युतं द्रव्यं, पर्याया द्रव्यवर्जिताः ।
कदापि केन किंरूपा, दृष्टा मानेन केन वा ॥ १ ॥

भावार्थ—" पर्याय रहित द्रव्यने तथा द्रव्य रहित पर्यायने कोइ पण वखत कोइ पण रूपे कोइए जोया छे ? अथवा कोइ पण प्रमाणथी सिद्ध कर्या छे? नथीज कर्या, केमके पर्याय विनानुं द्रव्य अने द्रव्य विनाना पर्याय होताज नथी."

वळी सद्भाव एटले सत्ताने आश्रयीने आत्मा शाश्वत छे. एटले आद्यंत रहित-केवळ स्थिर स्वभावपणाए करीने ध्रुव छे. आ प्रमाणे निश्चळ करेला मनवाळाने समकितनुं बीजुं स्थानक छे एम जाणवुं. आ प्रसंग उपर इंद्रभूतिनो प्रबंध छे ते नीचे प्रमाणे—

इंद्रभूति (गौतम) नो प्रबंध

मगध देशना गोबर नामना गाममां वसुभूति नामे ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने पृथ्वी नामनी पत्नी हती अने इन्द्रभूति नामनो पुत्र हतो. ते पोतानी बुद्धिथी व्याकरण, न्याय, काव्य, अलंकार, वेद, पुराण अने उपनिषद् विगेरे सर्वशास्त्रमां विद्वान थयो हतो, परंतु तेने वेदनो अर्थ विचारतां जीवना होवापणा विषे संशय थयेलो हतो, पण ते पोते सर्वज्ञ होवानो फोळ धारण करतो हतो, तेथी कोइने पूछीने पोताना संशयनो खुलासो करी शकतो नहोतो.

एकदा ते इन्द्रभूति श्री महावीर स्वामीना समवसरणने विषे आव्यो, ते वखते प्रभुए तेने बोलाव्यो अने ज्ञानवडे तेना मननो संशय जाणीने कह्युं के " हे इन्द्रभूति ! तुं जीवनो अभाव स्थापन (सिद्ध) करे छे अने तेमां एवी युक्तिओ करे छे के घट, पट, लकुट विगेरे पदार्थोनी जेम जीव प्रत्यक्ष देखातो नथी, माटे ते ससलाना

शींगडानी जेम छे ज नहीं. आ प्रमाणे प्रत्यक्ष प्रमाणथी आत्मा नथी एम सिद्ध थाय छे. वळी अनुमान प्रमाणथी पण आत्मा सिद्ध थइ शकतो नथी. केमके अनुमान प्रमाण पण प्रत्यक्ष पूर्वक ज प्रवर्ते छे. प्रथम महानस (रसोडा) विगेरेमा धुमाडो जोइने अग्निनी सिद्धि प्रत्यक्ष प्रमाणथी करी हती, तेथी त्यारपछी ज्यां धुमाडो होय त्यां अग्नि होय एवी व्याप्तिनु ज्ञान थाय छे, अने त्यार पछी कांइ पर्वतादिकमा धुमाडो जोवाथी तेमा अग्नि सिद्ध करवा माटे अनुमान करवामां आवे छे. ते प्रमाणे अहीं आत्मानी सिद्धि करवा माटे आत्मारूप लिंगिनी साथे तेना कोइ पण लिंग (चिन्ह)नी प्रत्यक्ष प्रमाणथी सिद्धि थती नथी, के जे चिन्ह जोइने व्याप्तिनु ज्ञान थाय अने त्यार पछी अनुमान करी शकाय. वळी आगमथी पण आत्मानी सिद्धि थइ शकती नथी, केमके सर्वे मतना आगमो परस्पर विरुद्ध छे एक शास्त्रमां एम पण कयु छे के—

एतावानेव लोकोऽयं यावानिन्द्रियगोचरः ।
भद्रे वृकपद पश्य यद्वदन्त्यबहुश्रुता. ॥ १ ॥

भावार्थ—" कोइ नास्तिके रेतीमां पोताना हाथवडे वरुना पगलां जेवी रेखाओ करीने, पछी तेने जोइ माणसो आ वरुना पगलां जणाय छे एम कहेता जोइ पोतानी बहेनने कयु के—हे प्रिया ! आ दुनिया जेटली इन्द्रियोथी ग्राह्य छे तेटलीज छे, तेथी वधारे कांइ नथी. जो आ अबहुश्रुतो मारी करेली रेखाने वरुना पगलां कहे छे, तेम तेओए शास्त्रोमा घणु कपोलकल्पित ज लखेलु छे. अर्थात् अनेक प्रकारना त्याग नियमादि बतावनारा शास्त्रो मुग्ध जनोने छेतरवा माटे रचेलां छे. " वळी ते ब्राह्मणे बीजो श्लोक कह्यो के—

पिव खाद च चारुलोचने, यदतीत वरगात्रि तन्न ते ।
न हि भीरु गतं निवर्तते, समुदयमात्रमिद कलेवरम् ॥ २ ॥

भावार्थ—" हे सुदर नेत्रवाळी ! तु मरजी प्रमाणे खान पान कर. सुदर देहवाळी ! जे गयु ते तारु नथी (अर्थात् ते फरीथी मळवानुं नथी केमके हे भीरु (बीकण स्त्री) ! गयेलु पाछु आवतुज नथी. अने आ शरीर महाभूतनो समुदाय ज छे अर्थात् शरीरना नाश थये सर्वनो नाश था

छे. परलोक विगेरे सर्व असत्य छे. तेथी खावुं पीधुं ने भोगववुं तेज खरुं छे." (आ प्रमाणे नास्तिको माने छे.)

तेमज वेदमां पण कह्युं छे के " न हि वै सशरीरस्य प्रियाप्रिययोरपहतिरस्ति, अशरीरं वा सतं प्रियाप्रिये न स्पृशतः " । " शरीरवाळा जीवने प्रिय के अप्रियनो नाश (अभाव) नथी. शरीर विनाना जीवने प्रिय के अप्रिय स्पर्श करता नथी. " (अहीं प्रिय शब्दे सुख अथवा पुण्य अने अप्रिय शब्दे दुःख अथवा पाप समजवुं.)

वळी कपिलना मतवाळा कहे छे के—" अस्ति पुरुषः । अकर्त्ता निर्गुणो भोक्ता चिद्रूपः इत्यादि " पुरुष—आत्मा छे. ते आत्मा अकर्त्ता छे (कर्त्ता नथी). निर्गुण छे (सत्वादिक गुणवाळो नथी) पण भोक्ता अने चैतन्य स्वरूप छे. इत्यादि.

आ प्रमाणे शास्त्रो पण परस्पर विरुद्ध कहेता होवाथी आत्मा सिद्ध थतो नथी.

तेमज आ त्रण भुवनने विषे एवो कोइ पण पदार्थ नथी, के ते पदार्थनी जेवो जीव कहीने उपमान प्रमाणथी पण आत्मा सिद्ध करी शकाय. तेथी सर्व प्रमाणोथी अतीत एवो आत्मा (जीव) छेज नहीं एम सिद्ध थाय छे."

हे इंद्रभूति ! आवुं जे तारुं समजवुं छे ते अयुक्त छे. हे आयुष्मन् ! तें आत्मा इन्द्रियोवडे अग्राह्य होवाथी ते (आत्मा) नथी एम कह्युं, पण जेम तारा मननो संशय में जाण्यो तेमज हुं प्रत्यक्ष रीते सर्वत्र जीवने जोउं छुं. केवळ हुंज जोउं छुं एम नथी परंतु तुं पण ' अहं ' (हुं) एवो शब्द बोली तारा देहमां आत्मा रहेलो छे एम बतावी आपे छे. छतां तेनो तुं अभाव कहे छे तेथी ' मारी माता वंध्या छे ' ए वाक्यनी जेम तारा पोताना ज वाक्यमां दोष आवे छे. वळी स्मरण, कांइपण जाणवानी इच्छा, कोइपण कार्य करवानी इच्छा, कर्पाक जवानी इच्छा, संशय विगेरे ज्ञान विशेष, एवा जीवना ज गुणो छे. अने तेथी ते स्वसंवेदन प्रत्यक्ष छे. माटे तेनो तुं स्वीकार कर.

वळी अनुमान प्रमाणथी पण आत्मा सिद्ध थाय छे.—देहादिक इंद्रियोनो जे अधिष्ठाता तथा भोक्ता छे ते जीव ज छे. जेनो भोक्ता न होय ते भो-

ग्य पण न होय, गधेडाना शींगडानी जेम आ शरीरादिक भोग्य छे तो तेनो भोक्ता पण कोइ होवो ज जोइए. वळी हे गौतम ! तने जीव विषे संशय थवाथी तारा शरीरमां जीव छे एम निर्णय थाय छे. (केमके तने संशय थयो, ते कोने थयो ?) ज्यां ज्यां संशय होय, त्यां त्यां ते (संशयवाळो) पदार्थ होवो ज जोइए. जेम कोइ पुरुष दूरथी झाडनुं ठुंठु अने माणस जोयेल होवाथी फरीने ज्यारे एवुं दृष्टिए पडेछे त्यारे ते तेमां माणसना अने झाडनां ठुंठानां—बन्नेनां लक्षणो विचारे छे के शुं आ ते झाडनुं ठुंठु छे के पुरुष छे ? पछी अन्वय व्यतिरेक धर्म विचारी, पक्षी ते उपर बसवाथी आ स्थाणु (झाडनुं ठुंठु) छे एम सिद्ध करे छे. अथवा हस्तपादादिक अवयवोथी अने हालवा चालवाथी माणस छे एम सिद्ध करे छे तेवी ज रीते आत्मा अने देह ए बन्ने पदार्थो छता होय तो ज संशय थाय छे, पण बेमांथी एक पदार्थ न ज होय, तो तेवो संशय पण थतो नथी आ प्रमाणे अनुमान प्रमाणथी पण तुं जीवनी हयाती अंगीकार कर

तेमज वळी हे गौतम ! सर्वे शास्त्रो (आगमो) परस्पर विरुद्ध होवाथी कयुं प्रमाण अने कयुं अप्रमाण ? एवो तने जे संदेह थाय छे ते पण अयुक्त छे. केमके सर्वे आगमो आत्मानी हयातीनुं तो स्थापन करे छे ज.

शब्द प्रमाण (व्याकरण) वाळा शाब्दिको कहे छे के—

यद्व्युत्पत्तिमत्सार्थकं शुद्धपदं तद्वस्तुजवत्येव यथा तपनः । व्युत्पत्त्यादिरहितो यत् शब्दः तद्वस्तु नास्त्येव यथा डित्थडवित्थादयः ।

" जे व्युत्पत्तिवाळुं, सार्थक एक पद होय ते पदार्थ होय ज जेम तपतीति तपन–ताप पमाडे ते तपन कहेवाय, ए व्युत्पत्तिथी तपन शब्दे सूर्य एवो पदार्थ एम सिद्ध थयुं तथा जे व्युत्पत्ति विगेरे विनानो शब्द होय, ते पदार्थ न होय, जेम डित्थ, डवित्थ विगेरे. तेवीज रीते अततीति आत्मा–भवांतरमां निरंतर गति करे, ते आत्मा एम आत्मा शब्द शब्दप्रमाणथी पण सिद्ध थाय छे, वळी कह्युं छे के—

परमानन्दसंपन्नं, निर्विकारं निरामयम् ।

ध्यानहीना न पश्यन्ति, निजदेहे व्यवस्थितम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" परम आनंदथी युक्त, विकार रहित अने निरामय एवो आत्मा पोताना देहमाज रह्यो छे. तोपण तेने ध्यान रहित पुरुषो जोइ शकता नथी. "

उत्तमा ह्यात्मचिन्ता च, मोहचिन्ता च मध्यमा ।
अधमा कामचिन्ता च, परचिन्ताऽधमाधमा ॥ २ ॥

भावार्थ—" आत्मानी चिंता-आत्माना हिताहितनुं चिंतवन-विचार करवो ते उत्तम छे, मोहनी चिंता एटले सांसारिक अनेक कार्योनी चिंता करवी ते मध्यम छे, कामनी एटले इंद्रियोना विषयादिकनी चिंता करवी ते अधम छे, अने पारकी चिंता करवी ते अधमाधम छे. "

नलिन्यां च यथा नीरं, भिन्नं तिष्ठति सर्वदा ।
अयमात्मा स्वभावेन, देहे तिष्ठति सर्वदा ॥ ३ ॥

भावार्थ—" नलिनी (कमलिनी)ने विषे जेम जळ हमेशां जूदुं ज रहे छे तेम आ आत्मा पोताना स्वभावथीज निरंतर देहने विषे (जूदो ज) रहे छे. "

आ प्रमाणे हे गौतम! सर्व शास्त्र संमत एवा जीवनो जेओ अभाव कहे छे तेओ मिथ्यावादी ज छे माटे अनंत जीवोथी भरेलुं आ विश्व छे एम तुं अंगीकार कर.

वळी हे गौतम ! "आत्मानी जेवो कोइ पदार्थ नथी माटे उपमान प्रमाणथी पण आत्मा सिद्ध थइ शकतो नथी " एम जे तुं माने छे ते पण अयोग्य छे. केमके धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय ए त्रणे पदार्थो एक जीवना प्रदेश जेटलाज प्रदेश प्रमाणवाळा छे. तेथी तेनी उपमा आपी शकाय छे (आ विषे हरिभद्र सूरिकृत षड् दर्शन समुच्चयनी बृहद्वृत्तिमां विस्तारथी कहेलुं छे. त्यांथी जोइ लेवुं.) वळी हे गौतम ! जेवो तारा देहमां आत्मा छे, तेवो ज बीजाना देहमां पण छे केमके हर्ष, शोक, संताप, सुख, दुःख विगेरे विज्ञाननो उपयोग सर्व देहोमां जणाय छे. वळी आत्मा कुंथु (कुंथवो) जेवडा श-

इने मोटो हाथी जेवडो पण थाय छे. इद्र थइने तिर्यंच पण थाय छे. तेथी जेनी शक्ति चिंतवी न शकाय तेवो ते अचिंत्य, शक्तिमान्, विभु-(समर्थ), कर्ता, भोक्ता, ज्ञाता अने कर्मथी भिन्नाभिन्न स्वरूपवाळो छे.

वळी तुं विज्ञानघन विगेरे वेद वाक्यना पदोनो अर्थ जे करे छे ते अयोग्य छे तुं कहेछे के " विज्ञानघन वै तेभ्यो भूतेभ्यः समुत्थाय (उत्पन्न) ततस्तान्येव (महाभूतान्येव) अनुविनश्यति तदा विज्ञानघन आत्मा नश्यति । अत एव न प्रेत्यसंज्ञास्ति, प्रागेव सर्वनाश नष्टत्वात्"—" एटले विज्ञानवाळो आ आत्मा आ पंचमहाभूत थकी उत्पन्न थइने पछी तेज महाभूतोमांज नाश पामे छे. एटले गाढ विज्ञान स्वरूप आत्मा नाश पामे छे. माटे परभवमां जाय छे एवी तेनी संज्ञा रहेती नथी. केमके पूर्वे भवे ज तेनो सर्वथा नाश थयो छे." आ प्रमाणे तुं अर्थ करे छे ते युक्त नथी. अमे कहीए छीए ते प्रमाणे धार एटले विरोध आवशे नहीं–विज्ञान एटले ज्ञान अने दर्शननो उपयोग तेणे करीने घन (निबिड–गाढ) एवो जीव आ ज्ञेयभावना परिणामने पामेला महाभूत (घटादिक) थकी उत्पन्न थइने एटले घटादिकना ज्ञानरूप उपयोग वडे उत्पन्न थइने, तेज उपयोगमां आवेला घटादिकनो नाश थवाथी काळना क्रमे करीने (एक काळे एक वस्तुनो उपयोग, बीजे काळे बीजी वस्तुनो, ए रीते) बीजी वस्तुनो उपयोग थये सते प्रथम वस्तुनो उपयोग नाश पामे छे, पण आत्मानो सर्वथा नाश थतो नथी केमके आ एकज आत्मा त्रण स्वभाववाळो छे, ते आ प्रमाणे—पूर्व वस्तुना उपयोगनो नाश थवाथी विनाशी, बीजी वस्तुना ज्ञाननो उपयोग थवाथी उत्पन्न स्वभाववाळो, अने अनादिकाळथी प्रवृत्त थयेला सामान्य विज्ञाननी संततिथी अविनष्ट ध्रुव स्वभावी आत्मा छे आ प्रमाणे बीजी सर्व वस्तुओ पण त्रण स्वभाववाळी जाणवी. हवे न प्रेत्यसंज्ञास्ति एटले बीजी वस्तुना उपयोग वखते पूर्वे वस्तुनुं ज्ञान एटले संज्ञा होती नथी, केमके हाल बीजी वस्तुनो उपयोग वर्तेछे—तेनी संज्ञा छे हे गौतम ! आ युक्तिओथी ' जीव छे ' एम तुं अंगीकार कर."

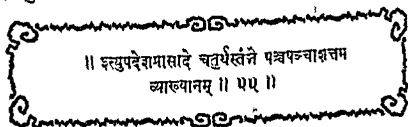
आ प्रमाणे त्रण जगतना स्वरूपने जाणनार भगवाने सर्व जीवोने प्रतिबोध करवाना उपायनी निपुणताथी गौतमनो संशय दूर कर्यो, एटले पचास वर्षनी वये ते गौतमे गृहस्थ धर्मनो त्याग करी पांचसो शिष्यो सहित भगवान पा

दीक्षा ग्रहण करी. पछी भगवाने तेने प्रथम गणधरने पदे स्थापन कर्या. सात हाथ उंचा देहवाळा, अनेक लब्धिओथी युक्त, शुद्ध चारित्रनु पालन करवाथी मनःपर्याय ज्ञान पामेला, क्षायोपशम समकितथी युक्त, यावज्जीव छठ तप करनार, विषय अने कषायनो जय करवा रूप गुणने पामेला इन्द्रभूति (गौतम) गणधरे त्रीश वर्ष सुधी श्री महावीर प्रभुनी सेवा करी.

एकदा श्री महावीर स्वामीए पोताना निर्वाणनो समय नजीक जाणीने गौतमना पोताना प्रत्येना रागनो नाश करवा माटे तेमने (गौतम गणधरने) देवशर्मा नामना ब्राह्मणने प्रतिबोध करवा माटे मोकल्या. तेमना गया पछी प्रभुए सोळ प्रहर सुधी एक धाराए देशना आपी. देशनाने अंते भगवान अविनाशी मोक्षपद पाम्या गौतम गणधर देवशर्माने प्रतिबोध करी जिनेश्वर पासे पाछा आवता हता, तेवामां मार्गमां प्रभुना मोक्ष कल्याणकने माटे आवेला देवताओना मुखथी भगवाननुं निर्वाण जाणी वज्रना प्रहारथी हणाया होय, तेम महा दुःखी थयेला चित्तथी विचार करवा लाग्या के—" अहो ! कृपासागर प्रभुए आ शुं कर्यु ? के जेथी आवा समये मने दूर मोकल्यो ? शु मने पोतानी साथे लइ गया होत तो मोक्षनो मार्ग सांकडो थइ जात ? हे त्रण जगत्मां सूर्य समान प्रभु ! हवे मारा प्रश्नना जवाब कोण आपशे ? " इत्यादि विचार करीने ते वारंवार ' महावीर ' ' महावीर ' ए शब्दनो मोटे स्वरे जाप करवा लाग्यो. एम करतां तेमना कंठ अने तालु सुकाइ गयां. एटले पछी ' वीर ' ' वीर ' अने छेवट एकला 'वी' शब्दनोज उच्चार थवा लाग्या. ते वखते पोते द्वादशांगीना जाण होवाथी एक 'वी' शब्दे करीने ज सर्व शास्त्रोना अर्थने प्रगट करवानी शक्तिने धारण करनार श्री गौतम गणधरने 'वी' शब्दथी शरु थता अनेक सारा शब्दो स्मरणमां आव्या. ते आ प्रमाणे—हे वीतराग! हे विबुद्ध! हे विषयत्यागी ! हे विज्ञानी ! हे विकारजीत् ! हे विद्वेषी (गयो छे द्वेष जेमनो एवा) ! हे विशिष्ट श्रेष्ठ ! हे विश्वपति ! हे विमोही (गयो छे मोह जेनो एवा) ! इत्यादि शब्दो याद आवतां तेमाना प्रथम ' वीतराग ' शब्दनो अर्थ विचारता तेमनो सर्व मोह—राग जतो रह्यो, अने तत्काळ केवळज्ञान उत्पन्न थयु. देवताओए केवळीनो महिमा कर्यो. सुवर्णकमळ विगेरेनी रचना करी. पछी तेनापर बेसीने अनेक भव्य जीवोने प्रतिबोध करी बार वर्ष सुधी केवळी अवस्थाए विचरी मांते सादिअनंत सुख (मोक्ष)ने

पाम्या.

" निर्मळ केवळज्ञानवमे उत्तम एवा प्रथम गणधर गौतम के जे जिनेश पासेथी जीवनो निश्चय जाणीने प्रतिबोध पाम्या, ते गणनायकनी हु मनोहर स्तुति करु छु. "



॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंजे पञ्चपञ्चाशत्तम व्याख्यानम् ॥ ५५ ॥

व्याख्यान ५६ मु.

समकितना त्रीजा तथा चोथा स्थानक विषे

शुजाशुजानि कर्माणि, जीव· करोति हेतुजि· ।
तेनात्मा कर्तृको ज्ञेय· , कारणै कुम्भकृद्यथा ॥ १ ॥

जावार्थ—" जेम कुजार माटी, चक्र अने चीवर (दोरो) विगेरे कारणोथी घमानो कर्ता छे तेम जीव कषायादिक बंधना हेतुओ वमे शुज अने अशुज कर्मो करे छे. माटे आत्मा कर्त्ता कहेवाय छे. " आ जीव कर्त्ता छे एवु समकितनु त्रीजु स्थानक जाणवु.

हवे चोथु जोक्ता स्थानक कहे छे—

स्वय कृतानि कर्माणि, स्वयमेवानुजूयते ।
कर्मणामकृतानाच, नास्ति जोग· कदापि हि ॥ २ ॥

जावार्थ—" पोते (आत्माए–जीवे) करेलां कर्मो (कर्मोनु फळ) पोते ज जोगवे छे केमके नहीं करेलां कर्मनो जोग (अनुजव) कदापि थतोज नथी." जीव जोक्ता छे एवु समकितनु चोथु स्थानक जाणवु. आ प्रसग उपर अभि

भूति गणधरनु दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

अग्निभूतीनु दृष्टांत

मगध देशना गोबर गाममा वसुभूति ब्राह्मणनी पृथ्वी नामनी स्त्रीथी बीजो अग्निभूति नामनो पुत्र थयो हतो. ते पण सोमभट्टने घेर यज्ञ कराववा पोताना पाचसो शिष्यो सहित गयो हतो ते वखते पोतानी पहेला तेना मोटा भाइ इन्द्रभूति जिनेश्वर पासे गया हता, तेमणे पराजय पामी प्रभु पासे दीक्षा लीधी ते हकीकत जाणीने अग्निभूतिए विचार कर्यो के " मारो भाइ इन्द्रभूति त्रण भुवनने पण दुर्जेय छे, तेने कोइ इन्द्रजाळीए छळथी (कपटथी) छेतर्यो जणाय छे अने जगत्‌ना गुरु एवा मारा भाइनु चित्त भ्रमित करी दीधु लागे छे. तेथी हवे हुं जइने तेनो युक्तिथी पराजय करु. अरे ! मारा भाइनी मोटी भूल छे के ते सर्वज्ञोमां सूर्य जेवा मने अहीं मूकीने एकला गया. अने इंद्रजाळीके पण आ केवु अकार्य कर्यु के पोतानी शक्ति जाण्या विना सिंहने आलिंगन दीधुं ? पण हवे मारे तेनी पासे जलदी जवु जोइए. " आ प्रमाणे वाणीनो आडंबर करतो अग्निभूति पोताना पाचसो शिष्योने साथे लइने जिनेश्वर पासे गयो. ते वखते जिनेश्वर तेने 'हे गौतम अग्निभूति ! आव ' एम तेना नाम गोत्रकथन पूर्वक बोलाव्यो. ते सांभळीने अग्निभूतिए विचार्युं के " हु जगतमां प्रसिद्ध छुं, तेथी मने कोण न ओळखे ? परंतु जो मारा मननो संशय कहीने तेनो खुलासो करे, तो मने विस्मय थाय. " ए प्रमाणे ते विचार करतो हतो, तेवामा भगवान बोल्या के " हे अग्निभूति गौतम ! तने ' कर्म छे के नहीं ? ' एवो संशय छे, परंतु ते तारो संशय अयोग्य छे, तुं वेदना पदोनो अर्थ बराबर जाणतो नथी तेथी तने एवो संशय थयो छे. ते वेदना पदो आ प्रमाणे छे. "पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूत यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति। यदेजति यन्नेजति यद्दूरे यदन्तिके यदन्तरस्य सर्वस्यास्य बाह्यत इत्यादि " आनो अर्थ तु एवो करे छे के " पुरुष एटले आत्मा. एवनो अर्थ निश्चय छे, अने ते कर्मनी व्यावृत्ति (निषेध)ने माटे छे. आ सर्व प्रत्यक्ष देखातु चेतन तथा अचेतन, जे थइ गयु अने जे थवानु (मुक्ति तथा संसार). उतनो अर्थ समुच्चय छे. अमृतत्वस्य एटले मृत्युधर्म रहित एवा मोक्षनो ईशान-प्रभु छे जे काइ आहारादिकथी वृद्धि पामे छे, पशु विगेरे जे कांइ चा-

हले छे, पर्वत विगेरे जे चालता नथी, मेरु विगेरे जे दूर छे, अने जे समीपे छे ते सर्व आत्मा ज छे. जे आ चेतन तथा अचेतन सर्वनी मध्ये तथा ते सर्वनी बहार छे ते सर्व पुरुष (आत्मा) ज छे " आ प्रमाणे अर्थ करीने तु कर्मनो अभाव सिद्ध करे छे ते अयुक्त छे. केमके केटलांएक वेदनां वाक्यो विधिवाद करे छे, केटलांएक अर्थवाद करे छे, तथा केटलांएक अनुवाद करनारां होय छे. तेमां 'अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः'—स्वर्गनी इच्छावाळाए अग्निहोत्र करवो इत्यादि वाक्यो विधिवाद करनारां छे. अर्थवादनां वाक्यो स्तुत्यर्थक अने निंदार्थक एवा बे प्रकारनां होय छे. तेमां 'पुरुष एव' इत्यादि वाक्यो आत्माना स्तुत्यर्थक छे. अने 'जीवहिंसानु कारण होवाथी यज्ञकर्म न करवु' ए निंदार्थक वाक्य छे. तथा 'द्वादश मासा संवत्सरोऽग्निरुष्णोऽग्निर्हिमस्य भेषजं'—बार मासनु वर्ष छे, अग्नि उष्ण छे, अग्नि हिमनु औषध छे, इत्यादिक वाक्यो अनुवादवाळां छे, केमके ते वाक्यो लोकप्रसिद्ध अर्थने ज कहेनारां छे हवे 'पुरुष एव' इत्यादि स्तुत्यर्थक वाक्यो जाति विगेरेना मदनो त्याग करवा माटे छे अने अद्वैतवादना प्रतिपादक छे. एटले ज्यां जोइए त्यां आत्मा ज छे, माटे मदनो त्याग करवो ए एनु तात्पर्य छे

वळी हे गौतम ! आत्मपणाए करीने सरखा एवा सर्व आत्मानु आ जे देव, मनुष्य, तिर्यंच, नारकी, राजा, अने रंकपणारुप विचित्रपणु प्रत्यक्ष छे ते निर्हेतुक नथी; तेनु कारण होवु ज जोइए कारणविना जो आवी विचित्रता होय तो ते सदा एक सरखी होवी जोइए अथवा न होवी जोइए. पण तेम तो नथी. आ तो बदलाया ज करे छे. माटे ए सर्व विचित्रता कर्मथी ज थयेली छे एम अवश्य मानवु पडशे. कह्यु छे के—

नित्यं सत्त्वमसत्त्वं वा हेतोरन्यानपेक्षणात् ।

"अन्य हेतुनी अपेक्षा नहोय तो नित्य सत्व अथवा असत्वपणु होवु जोइए " तेम नथी तेथी, जे कांइ ते विचित्रतानो हेतु छे तेज कर्म छे.

पौराणिको पण कर्मनु प्रतिपादन करे छे. तेओ कहेछे के—

यथा यथा पूर्वकृतस्य कर्मणः, फलं निधानस्य इवावतिष्ठते ।
तथा तथा तत्प्रतिपादनोद्यता, प्रदीपहस्तेव मतिः प्रवर्तते ॥१॥

भावार्थ—" जेम जेम निधाननी पेठे पूर्व करेला कर्मनु फळ प्राप्त थाय

छे, तेम तेम ते कर्मनुं प्रतिपादन करवा तैयार थयेली मति जाणे हाथमा दीवो लइने ज आवती होय, तेम प्रवर्ते छे." वळी

यत्तत्पुराकृतं कर्म न स्मरन्तीह मानवाः ।
तदिदं पांडवज्येष्ट दैवमित्यभिधीयते ॥ २ ॥

भावार्थ—" हे युधिष्ठिर ! पूर्वे करेला जे कर्मने मनुष्यो आ भवमां संभारी शकता नथी (मनुष्योने स्मरणमा आवता नथी), ते कर्म 'दैव' ए शब्दथी कहेवाय छे "

वळी हे अग्निभूति ! ते कर्म मूर्तिमान छे एम मान केमके कर्मने अमूर्त मानवाथी आकाशादिकनी जेम तेनाथी आत्माने अनुग्रह उपघातनो (सुख दुःखनो) संभव घटे नहीं वळी ए कर्मोनी साथे आत्माने अनादिकाळथी संबंध (संयोग) छे एम पण जाण. केमके जो तेनो संबंध सादि मानीए तो मुक्त जीवोने पण कर्मनो संबंध थशे जोइए, केमके सादि संबंध मानवाथी ससारी जीव पहेलां कर्म रहित हतो, अने पछी अमुक काळे कर्म सहित थयो, तो मुक्त जीव पण कर्म रहित थया पछी तेने पण अमुक वखते कर्मनो संबंध थवो जोइए अने तेम थवाथी मुक्त जीवो अमुक्त थशे, माटे तेम मानवु इष्ट नथी, तेथी प्रवाहे करीने जीव कर्मनो संबंध अनादि छे एम जाण. अहीं कोइ एवी शंका करे के ' ज्यारे जीव कर्मनो संबंध अनादि छे, त्यारे तेनो वियोग शी रीते थइ शके ? केमके जे अनादि होय, ते अनंत पण होय. जेम काळ अनादि छे तेम अनंत पण छे.' आ शंकानो जवाब ए छे के जेम सुवर्ण अने पाषाणनो संबंध अनादि छे, तोपण तेवा प्रकारनी सामग्रीने योगे अग्निमां मूकीने धमवाथी सुवर्ण अने पाषाण जूदा पडे छे, तेम जीव पण ध्यानरूपी अग्निना योगे अनादि संबंधवाळा कर्मथी जूदो पडे छे, एम सिद्ध थाय छे.

वळी हे आयुष्मान् ! जो कर्म न होय, तो धर्म, अधर्म, दान, अदान, शीळ, अशीळ, तप, अतप, सुख, दुःख, स्वर्ग, नरक विगेरे सर्व व्यर्थ थाय, माटे तुं तारो पक्ष छोडीने ' कर्म छे ' एम अंगीकार कर.

अहीं कोइ शंका करे के 'जगत् विगेरे सर्व वस्तुओनो कर्ता ईश्वर एक ज छे, तो शामाटे वंध्याना पुत्रनी जेम अदृष्ट कर्मनी कल्पना करवी?" आवी शंका तद्दन असत्य

ने. केमके जो जगतनो कर्ता इश्वर छे, तो ते मूर्तिमान छे के अमूर्त छे ? जो मूर्ति
ान होय, तो ते कुंभकार विगेरेनी जेम देखातो केम नथी? अने जो अमूर्त छतो ज
जगतने सरजे छे, तो तेने शरिरादिकना अभावने लीधे जगतने सरजवानु सामर्थ्य
क्यांथी होय ? माटे शुभाशुभ कर्मनो कर्ता जीव ज छे, अने भोक्ता पण जीव
ज छे. ते विषे आगममां पण कहु छे के " जीवे णं भंते किं अत्तकडे दुक्खे पर
कडे दुक्खे उभयकडे दुक्खे ? गोयमा ! अत्तकडे नो परकडे तदुभयकडे । हे भ
गवान ! शु जीव पोते करेला दुःखो भोगवे छे के बीजाए करेला के पोते तथा
बीजाए–उभये करेलां दु खो अनुभवे छे ? हे गौतम ! जीव पोते करेलां दु.खो
ज अनुभवे छे. पण बीजाए करेला के उभये करेला दुःखो भोगवतो नथी. " मा
टे जीव पोते करेलां कर्मोने पोते ज भोगवे छे.

वळी हे अग्निभूति ! तारा मननो संशय जेम में जाण्यो तेम हु ज्ञानाव-
रणादिक आठे कर्मो प्रत्यक्ष जोउं छु, माटे तु कर्मनो स्वीकार कर जोव, कर्म
विगेरे कोइपण वस्तु मारे अदृश्य नथी. तेम ज वेदने विषे पण " पुण्य पुण्येन
कर्मणा, पाप पापेन कर्मणा–शुभ कर्मथी पुण्य अने अशुभ कर्मथी पाप बधाय छे."
आ प्रमाणे कहु छे. माटे आगम (वेद)थी पण कर्म सिद्ध थाय छे, तेथी तु ते
नो स्वीकार कर

आ प्रमाणे भगवानना उपदेशथी प्रतिबोध पामेलो अग्निभूति पोताने
गर्वे छोडीने विचार करवा लाग्यो के "अहा ! मारु मोटु भाग्य छे, के जेथी मने
विश्वने विषे पूज्य, गाढ अज्ञाननु हरण करवावा सूर्य समान तथा अनत गुणो
वडे युक्त एवा गुरु प्राप्त थया. " एम विचारी आनदथी पांचसो शिष्यो सहित
छेतालीश वर्षनी उमरे तेणे (अग्निभूतिए) प्रभु पासे दीक्षा ग्रहण करी. पछी
दश वर्ष सुधी छद्मस्थपणे विहार करी केवळ ज्ञान पाम्या अने सोळ वर्ष सुधी
केवळीपर्यायने भोगवी सिद्ध पदने पाम्या. (अहीं कर्मनी सिद्धिमा घणी यु
क्तिओ छे. ते विस्तारनी अपेक्षा वाळाए श्री जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणे करेली म
हाभाष्यनी मोटी वृत्तिमाथी जाणी लेवी.)

" श्री जिनेश्वरना वाक्यथी कर्म विषेनो सदेह छेदीने बीजा गणध
अग्नि–ि चारित्र ग्रहण करी अने त्रसादिक जीवोने विषे दयामय आगमनी

स्पणा करी मुक्तिपदने पाम्या. ”

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभे षट्पञ्चाशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ५६ ॥

व्याख्यान ५७ मुं.

समकितना पांचमा तथा छठा स्थानक विषे.

अभावे बन्धहेतूनां, घातिकर्मक्षयोद्भवे ।
केवले सति मोक्षः स्याच्छेषाणां कर्मणां क्षये ॥ १ ॥
सुरासुरनरेन्द्राणां, यत्सुखं भुवनत्रये ।
तत्स्यादनन्तभागोऽपि, न मोक्षसुखसंपदाम् ॥ २ ॥
अनन्तसुखसंपूर्णं, निर्वाणपदमक्षयम् ।
नाद्यनन्तं प्रवाहेण, भाषितं विश्ववेदिभिः ॥ ३ ॥

भावार्थ—“ कर्मना बंध हेतुओनो अभाव थवाथी अने घाति कर्मोनो क्षय थवाथी केवळज्ञान थया पछी बाकीना अघाति कर्मोनो क्षय थये मोक्ष प्राप्त थाय छे. त्रण जगतमां सुर, असुर अने नरेंद्रोने जे सुख छे, ते सर्व सुखने एकत्र करीए तो ते मोक्षसुखनी संपदाने अनंतमे भागे पण थाय नहीं. विश्वना सर्व भावने जाणनारा जिनेश्वरोए निर्वाण (मोक्ष) पदने अनंत सुखथी संपूर्ण, अक्षय (अविनाशी) अने प्रवाहनी अपेक्षाए अनादि अनंत कहेलुं छे. ” आ 'निर्वाण छे' ए नामनुं समकितनुं पांचमुं स्थानक जाणवुं.

हवे छठुं मोक्षोपाय (मोक्षनो उपाय) छे ए नामनुं छठुं स्थानक कहे छे.

ज्ञानादयस्त्रयः शास्त्रे, मोक्षोपायाः प्रकाशिताः ।

इति सम्यक्त्वरत्नस्य, षट् स्थानानि विचिन्तयेत् ॥१॥

भावार्थ—" शास्त्रोने विषे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए त्रण मोक्षना उपायो कहेला छे आ प्रमाणे समकित रुपी रत्नना छ स्थानोनुं चिंतवन करवुं." आ संबंधमां प्रभास गणधरनुं दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

प्रभास गणधरनो प्रबंध

राजगृह नगरमां बल नामे ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने अतिभद्रा नामनी स्त्री हती तेमने प्रभास नामनो पुत्र हतो. ते वेद, सांख्य, मीमांसा, न्याय, योग चार विगेरे शास्त्रोमां निपुण थवाथी अहंकारना पूरवडे आखा जगतमां पोताना शिवाय बीजा सर्वने मूर्ख मानवा लाग्यो

अहीं पापापुरीमां सोम विप्रने त्यां यज्ञ थतो हतो. तेमां इंद्रभूति विगेरे विद्वानो आवेला हता. तेमां आ प्रभास पण आवेलो हतो. ते वखते इन्द्रभूति विगेरे जे जे विप्रो श्री महावीर स्वामी पासे गया, ते ते सिंहने जोइने मृगनी जेम पोताना अहंकारनो त्याग करीने प्रभुना चरणरूप मानस सरोवरमां हंसपणाने पाम्या. ते वात लोकोना मुखथी सांभळीने प्रभास विचार करवा लाग्यो के "खेरखर आवुं रूप धारण करीने साक्षात् इश्वर ज पोताना धामथी अहीं अमने पवित्र करवा आवेला जणाय छे, नहीं तो तेनी आटली बधी शक्ति न होय. माटे हुं पण तेनी पासे जइने तेनी विद्वत्ता, देहकांति अने चतुराइ विगेरे जोउं तो खरो. त्यां जवाथी मने तो बन्ने प्रकारे लाभ छे. एक तो मारी ज्ञातिना मोटा पण्डितो त्यां गयाछे तेथी मारे पंक्तिभेद राखवो योग्य न होवाथी जवुं योग्य छे. अने बीजुं जो कदाच कोइपण प्रकारनी युक्तिथी घुणाक्षर न्याये हुं तेने जीती जाउं तो सर्व लोकोमां हुं श्रेष्ठपद पामुं." आ प्रमाणे विचारीने ते प्रभास श्री जिनेश्वर पासे आव्यो. तेने जोइ प्रभु बोल्या के " हे आयुष्यमान् प्रभास! तुं एम माने छे के-मोक्ष छे के नहीं ? तने आवो संशय थवानुं कारण परस्पर विरुद्ध एवा वेद वाक्यो छे. वेदमां कह्युं छे के " जरामर्यं वा एतत्सर्वं यदग्निहोत्र । तथा-सैप गुहा दुरवगाहा । तथा-द्वे ब्रह्मणी परमपर च, तत्र पर सत्त्वं ज्ञानमनन्तरं ब्रह्मेति " । आ पदोनो अर्थ तुं आवो करे छे—जे अग्निहोत्र छे ते यावज्जीव करवानुं छे. आ अग्निहोत्रनी क्रिया प्राणीवधना हेतुभूत होवाथी ते शबल एटले पापव्यापार रुप छे, ते

थी ते स्वर्ग फळ ज आपी शके, पण मोक्षरुप फळ आपी शके नहीं. अने ए प-दर्मां यावज्जीव ते करवानु कह्युं छे तेथी बीजो एवो कोइ काळ बाकी रहेतो नथी के जे काळे मोक्षना हेतुभूत बीजी क्रिया करी शकाय माटे साधनना अभावे सा-ध्य (मोक्ष)नो पण अभाव छे. एम सिद्ध थाय छे. बीजा वाक्यमां—ते आ गुहा (मोक्षरुपी गुहा) संसारनी आसक्तिवाळा, जीवोने दुरवगाहा (दुःखे करीने प्रवेश करी शकाय तेवी) छे. तथा ब्रह्म बे छे. पर अने अपर. तेमां परब्रह्म ते स-त्य (मोक्ष) अने अपर ब्रह्म ते ज्ञान छे. आ प्रमाणे वेद पदोनो अर्थ करीने तु एम विचारे छे के—प्रथमना वेद वाक्यथी मोक्ष नथी एम सिद्ध थाय छे, अ-ने बीजा पदोथी मोक्ष छे एम सिद्ध थाय छे. आ प्रमाणे अर्थ करवाथी तने सं-शय थयो छे के आ वाक्योमां कया वाक्यने प्रमाण गणवुं ? परंतु हे प्रभास ! ए वेद पदोनो अर्थ हुं कहुं छु ए प्रमाणे करवो. जे अग्निहोत्र छे ते यावज्जीव करवो. तेमां जे वा शब्द कहेलो छे तेथी एम समजवुं के मुमुक्षु पुरुषोए मोक्षना साधनभूत क्रियानुष्ठान करवु. आ अर्थ योग्य छे. तथा हे सौम्य ! तु एम पण माने छे के दीवो बुझाइ जाय छे तेम जीवनुं निर्वाण थाय छे? ते बाबतमां केटलाक सौगतो कहे छे के—

दीपो यथा निर्वृतिमभ्युपेति, नैवावनीं गच्छति नान्तरिक्षम् ।
दिशं न कांचिद्विदिशं न कांचित्, स्नेहक्षयात्केवलमेति शान्तिम् ॥१॥
जीवस्तथा निर्वृतिमभ्युपेति, नैवावनीं गच्छति नान्तरिक्षम् ।
दिशं न कांचिद्विदिशं न कांचित्क्लेशक्षयात्केवलमेति शान्तिम् ॥२॥

भावार्थ—" जेम दीवो निर्वृत्ति पामे छे (ओलाइ जाय छे) त्यारे ते पृथ्वी पर कोइ जग्याए जतो नथी, आकाशमां जतो नथी, कोइ दिशामां जतो नथी, तेमज कोइ विदिशामां जतो नथी, परंतु स्नेह (तेल) नो नाश थवाथी (थइ रहेवाथी) केवळ शांतिने ज पामे छे. तेवी रीते जीव निर्वृत्ति पामे छे त्यारे ते पृथ्वी पर क्यांइ जतो नथी, आकाशमां जतो नथी, कोइ दिशामां जतो नथी, तेमज कोइ विदिशामां जतो नथी; परतु क्लेशनो (कर्मनो अथवा ससारनो) क्षय थवाथी केवळ शांतिने ज पामे छे. "

आम मानवुं ते असत्य छे. केमके जैन शासनमां कह्यु छे के—

केवलसच्चिद्दर्शनरूपाः सर्वार्त्तिदुःखपरिमुक्ताः ।
मोदन्ते मुक्तिगता जीवाः क्षीणान्तरारिगणाः ॥१॥

भावार्थ—" क्षीण थया छे अभ्यंतर शत्रु समूह जेना एवा जीवो मुक्तिमां गया छतां सर्व आर्त्ति ने दुःखथी मुक्त थइने केवळ सत् चित (ज्ञान) दर्शन रूपे हर्ष पामे छे. "

दीपनुं उदाहरण सर्वथा नाश तरीके आप्युं छे ते योग्य नथी. तेनुं कारण ए छे के—दीपकना अग्निनो कांइ सर्वथा नाश थतो नथी. परंतु ते अग्नि अन्य परिणाम पामे छे. जेम दूधनुं परिणाम दहीं विगेरे थाय छे तेम अथवा अन्य परिणाम पामीने चूर्ण रूप थयेला घडानो जेम सर्वथा नाश नथी तेम दीपकना अग्निनो पण सर्वथा नाश थतो नथी अहीं कोइ शंका करे के " जो दीपकना अग्निनो सर्वथा नाश न थतो होय, तो ते अग्नि ओलवाया पछी केम साक्षात् देखातो नथी ? " एनो उत्तर ए छे के—दीपक ओलवाया पछी तरत ज ते अग्नि अंधकारना पुद्गल रूप परिणामने पामे छे तेथी ते देखातो नथी. केमके ते अति सूक्ष्मतर परिणामने पामे छे जेम धमानुं अति सूक्ष्म चूर्ण थइने पृथ्वी साथे मळी जवाथी ते बिलकुल देखातुं नथी तेम अथवा आकाशमां थयेला श्याम वादळा अन्य परिणाम पामीने अति सूक्ष्मतर थइ जवाथी जोवामां आवतां नथी, तेम दीपकनो अग्नि पण अन्य परिणाम पामवाथी देखी शकातो नथी केमके पुद्गलना परिणामो अति विचित्र छे. जेम सुवर्णना क्षीण पाना कर्या होय तो ते चक्षुथी जोइ शकाय छे. पण तेने शुद्ध करवा माटे अग्निमां नाख्यां अने ते सुवर्णनो रस थइ ढोळाइने भस्म साथे मळी गयो, त्यारे ते चक्षुथी जोइ शकातुं नथी. परंतु स्पर्शथी सुवर्ण छे एम जाणी शकाय छे. तेने पण अत्यंत चूर्ण करी सूक्ष्म रजनी साथे मेळवीए तो ते किंमत विनानुं अने नहीं जेवुं ज थइ जाय छे. पण खरी रीते तो ते सुवर्ण रहेलुं ज छे, नाश पामी गयुं नथी. केमके तेनो फरीथी जुदो प्रयोग करीए तो पाछुं ते हतुं तेवुं सुवर्ण करी शकाय छे इत्यादि अनेक प्रकारनी विचित्रता पुद्गलोमां रहेली छे. ते पोतानी बुद्धिथी जाणी लेवी. दीवाना पुद्गलो पण प्रथम चक्षुथी ग्राह्य हता, ते ओलवाया पछी तरत ज अंधकारमय थइ गया छतां घ्राणेन्द्रिय (नासिका) वडे ग्रहण थइ शके छे. जेम जुदा

परिणामने पामेलो दीपक निर्वाण शब्दथी बोलाय छे, तेम जीव पण कर्म रहित थइने एकलो, मूर्ति रहित, संपूर्ण जीवस्वरूपनी प्राप्तिरूप अव्याबाध परिणामने पामवाथी निर्वाण—निवृत्ति पाम्यो एम कहेवाय छे

अहीं कोइ शंका करे के—शब्दादिक विषयनो उपभोग न होवाथी तथा शरीर अने इन्द्रियो न होवाथी मोक्षमां सुखनो पण अभाव ज होवो जोइए. तेनो उत्तर ए छे के—मुक्ति पामेला जीवोने वचनथी अगोचर एवुं अति उत्कृष्ट अकृत्रिम स्वाभाविक सुख छे. (आ अनुमान प्रमाणमा प्रतिज्ञा—साधवा लायक वाक्य छे.) प्रकर्ष ज्ञान थवाथी जन्म, जरा, व्याधि, मरण, अरति, चिंता अने उत्सुकता विगेरे निःशेष (समग्र) बाधाथी रहित छे माटे. (आ हेतु छे.) तेवा प्रकारना उत्कृष्ट मुनिनी जेम. (आ उदाहरण छे.) हवे सासारिक सुखनी दुःख पणे घटना करे छे—आ ससारमा पुष्पमाळा, चंदन, स्त्रीसंभोग विगेरेथी उत्पन्न थता सुख तथा चक्रवर्ती विगेरेनी पदवीनुं पुण्यफळनुं सुख निश्चयथी जोइए तो दुःख ज छे. (प्रतिज्ञा) ते सुख परिणामे विनाशी होवाथी तेमज ते सुख कर्मना उदयथी उत्पन्न थयेलु होवाथी. (हेतु) जेम खरजवाळा प्राणीने खरजनुं सुख तथा रोगी माणसने अपथ्य आहारनु सुख परिणामे दुःख रूप छे तेम. (उदाहरण) सासारिक सुखो दुःख रुप ज छे. कह्युं छे के—

नग्नः प्रेत इवाविष्ट., कुणन्तीमुपगुह्य ताम् ।
गाढायासितसर्वांगः, कः सुधी रमते किल ॥ १ ॥

भावार्थ—" नग्न थइने अने प्रेत वळगेल होय तेनी जेम कामाविष्ट थइने सीत्कार शब्द करती स्त्रीने आलिंगन आपी सर्व अंगेने अत्यत प्रयास पामतो पुरुष तेणीनी साथे जे क्रीडा करे छे तेवी क्रीडा कोण बुद्धिमान करे? केमके तेमा शु सुख छे? अर्थात् काइपण सुख नथी." मात्र मोहाधीनपणाथी दुःखने अनुभवतो सतो सुख माने छे. वळी कह्यु छे के—

भुक्ताः श्रियः सकलकामदुघास्ततः कि
सम्प्रीणिताः प्रणयिनः स्वधनैस्ततः किम् ।
दत्तं पदं शिरसि विद्विषता तत॰ कि

कल्पं स्थितं तनुभृता तनुभिस्ततः किम् ॥ २ ॥

भावार्थ—" सकल मनोरथने पूर्ण करनारी लक्ष्मीने कदि भोगवी तो तेथी शुं ? पोताना धन वडे प्रेमी जनोने प्रसन्न कर्या तो तेथी शुं ? शत्रुओना मस्तकपर पग मूक्यो तो तेथी शुं ? अने आ देहवडे कदि प्रलयकाळ पर्यंत रह्यो (जीव्यो)तो तेथी पण शुं ?" केमके परिणामे तो ते सर्व निष्फळ अने विनाशी छे ए चोकस वात छे.

इत्थं न किंचिदपि साधनसाध्यजातं
स्वप्नेन्द्रजालसदृशं परमार्थशून्यम् ।
अत्यन्तनिर्वृतिकरं यदपेतबाधं
तद्ब्रह्म वाञ्छत जना यदि चेतनास्ति ॥ ३ ॥

भावार्थ—" आ प्रमाणे परमार्थ रहित स्वप्न अने इन्द्रजाळना जेवुं सुख भोगवीने जो काइपण साधनथी सधातुं सा य नीपजाव्युं नहीं तो ते वधु नकामुं छे. माटे हे भव्य जीवो ! जो तमाराम चेतना (बुद्धि) होय, तो अत्यंत निर्वृत्ति करनार अने बाधा रहित एवा ब्रह्म (मोक्ष)नी वांछा करो. "

आटला माटे संसारना सर्व सुखो तत्त्वतः दुःखरूपज छे, ते विषे महात्माओए कह्युं छे के—

विसयसुहं दुक्ख चिय, दुक्खपडियारओ तिगिच्छं व्व ।
तं सुहमुवयाराओ, न य उवयारो विणा तत्थं ॥ १ ॥

भावार्थ—" दु खना प्रतिकार रूप ज मात्र होवाथी विषय सुख ते दुःख रूप ज छे कोढ, अन्तर्गळ, विगेरे व्याधिओ जेम क्वाथ पान, छेदन, अंजन विगेरे चिकित्सा करवाथी मटे छे, अर्थात् दुःख रुप प्रतीकारथी मटे छे तेम विषय सुख पण मात्र क्षुधा, तृषा, कामविकारादि दुःखोना प्रतिकाररूप होवाथी ते दुःख ज छे. छतां लोकमां ते सुखना नामथी जणाय (ओळखाय) छे ते मात्र उपचारथी ज बोलाय छे. परन्तु तेवो उपचार पारमार्थिक सुख विना कोइ पण स्थाने ... थी " जेम कोइ माणवक (मनुष्य)ने सिंह विगेरे नामथी बोलावीए तो

तयी लोक रहित तेओ तेना नामथी ओळखाय छे खरा पण तेथी ते सिंहनो शब्द सांभळतां लोकोने भयादिक उत्पन्न थता नथी. तेम विषय सुख पण वास्तविक सुख उपजावनार नथी, मात्र तेनु नाम ज सुख छे, सुख शब्दथी ते ओळखाय छे. पारमार्थिक सुख तो एक मोक्षमा ज रहेलु छे. ते सुखने कोइनी उपमा आपी शकाय तेम नथी. (निरुपम छे.) तथा ते सुख प्रतिकार रहित सत्य ज छे.

वळी हे प्रभास ! वेदमा पण संसार अने मोक्षनुं स्वरुप बतावेल छे ते आ प्रमाणे " न ह वै सशरीरस्य प्रियाप्रिययोरपहतिरस्ति। अशरीरं वा वसंतं प्रियाप्रिये न स्पृशत इति " न ए अव्यय निषेधने माटे छे. ह अने वै ए बे पण अव्यय छे. तेनो अर्थ ' जेथी करीने ' एवो थाय छे. शरीरनी साथे जे रहे ते सशरीरी–जीव. ते (जीव)ने प्रिय अप्रिय एटले सुख दुःखनी अपहति एटले तेनो विनाश नथी. (अर्थात् शरीर साथे रहेला जीव सुख दुःख पामे छे.) अने शरीर रहित एटले मुक्तिनी अवस्थामा रहेला (लोकाग्रमा रहेला) ने ते प्रिय तथा अप्रिय (सुख दुःख) स्पर्श करता नथी (मोक्षमा प्रियाप्रिय नथी. अर्थात् त्यां आत्मा स्वस्वरुपे ज रहे छे). अहीं कोइ प्रश्न करे के—ते मोक्ष सुख शी रीते पमाय ? तेनो जवाब ए छे के—ज्ञान, दर्शन अने चारित्र विना बीजा कशाथी ते प्राप्त थतु नथी. ते विषे दर्शन सप्ततिकामा कह्यु छे के—

सम्मत्तनाणचरणा, संपुन्नो मोक्खसाहणोवाओ।
ता इह जुत्तो जत्तो, ससत्तिओ नायतत्ताणं ॥ १ ॥

भावार्थ—" सम्यक्त्व, ज्ञान अने संयम संपूर्ण प्राप्त करवा ते ज मोक्ष साधवानो उपाय छे. ते उपाय आ नरभवने विषे ज साधवा योग्य छे. कारणके तत्त्वना जाण पुरुषो स्वशक्तिवडे अहीं ज तेने मेळवे छे. "

ये धर्मशीला मुनयः प्रधानास्ते दुःखहीना नियमे भवन्ति ।
संप्राप्य शीघ्रं परमार्थतत्त्वं, व्रजन्ति मोक्षं त्विदमेकमेव ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेओ धर्मशील (धर्मनु प्रतिपालन करनार) प्रधान मुनिओ होय छे, तेओ निश्चे दुःख रहित थाय छे. तेओ शीघ्रपणाथी परमार्थ तत्त्वने पामीने एक चिद्रूप एवा मोक्ष प्रत्ये जाय छे. "

इत्यादि भगवानना मुखथी युक्ति युक्त वचनो सांभळीने प्रसन्न थयेला प्रभासे पोतानो संशय दूर थवाथी पोताना त्रणसो शिष्यो सहित भगवान पासे दीक्षा

ग्रहण करी. तेणे सोळ वर्षना गृहस्थपर्यायनो त्याग करीने सर्व विरति अंगीकार करी. पछी आठ वर्ष सुधी छद्मस्थ पर्याय पाळीने आवरण रहित अव्याबाध केवळ ज्ञान पाम्या. केवळी अवस्थामां सोळ वर्ष विचरी अनेक भव्य जीवोने प्रतिबोध पमाडी जे सुखने माटे उद्योग कर्यो हतो ते मोक्ष सुख प्राप्त कर्युं (आ प्रमाणे संक्षेपथी सर्व गणधरोनुं वर्णन जाणवुं)

परिनिव्वुआ गणहरा, जीवंते णायए नवजणाओ ।
इदभूति सुहम्मो य, रायगिहे निव्वुए वीरे ॥ १ ॥

भावार्थ—" नव गणधरो महावीर स्वामीनी हयातिमां निवृत्ति पदने पाम्या अने इन्द्रभूति तथा सुधर्मा स्वामी राजगृही नगरीमां वीर भगवान निर्वाण पाम्या पछी मोक्ष पदने पाम्या. (आ प्रमाणे आवश्यक निर्युक्तिमां कह्युं छे).

मास पाओवगया सव्वे वि य सव्वलद्धियसंपन्ना ।
वज्जरिसहसंघयणा समचउरसावसंठाणा ॥ २ ॥

भावार्थ—" सर्व गणधरो सर्व लब्धिथी युक्त, वज्रऋषभनाराच संघयणवाळा, समचतुरस्र संस्थानवाळा, अने अंते एक मासनुं पादपोपगम अनशन करीने मोक्ष सुखना मेळवनारा थया छे. "

" बाल्यावस्था (सोळ वर्षनी वय) ने विषेज चारित्र ग्रहण करी प्रभुनी पछीथी निवृत्ति सुख पामनार मुनि श्रेष्ठ प्रभास गणधर अमारा प्रभूत (घणा) उदयने माटे थाओ. "

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभे सप्तपञ्चाशत्तम व्याख्यानम् ॥ ५७ ॥

सम्यक्त्वना सडसठ भेदनुं विवरण

सपूर्ण

व्याख्यान ५८ मुं.

समकितना केटलाएक अन्य प्रकारो कहे छे–

सम्यक्त्वं चैकधा जीवे, तत्त्वश्रद्धानतो भवेत् ।
निश्चयव्यवहाराभ्यां, दर्शनं द्विविधं मतम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" तत्त्वश्रद्धान रुप जीवने विषे एक प्रकारनुं समकित छे. अने निश्चय तथा व्यवहारे करीने समकित बे प्रकारनु मानेलुं छे. "

पाछला व्याख्यानोमा बतावेला समकितना ६७ भेदो पैकी एकसठ भेदो व्यवहार समकितमां अन्तर्गत थाय छे अने छेल्ला छ भेदो निश्चय समकितमां अंतर्भाव पामे छे.

समकितना पांच प्रकार छे ते आ प्रमाणे—

आदावौपशमिकं च, सास्वादनमथापरम् ।
क्षायोपशमिकं वेद्यं, क्षायिकं चेति पञ्चधा ॥ १ ॥

भावार्थ—" पहेलु औपशमिक, बीजु सास्वादन, त्रीजुं क्षायोपशमिक, चोथुं वेद्य (वेदक) अने पाचमु क्षायिक. एम पाच प्रकारे समकित छे. "

१ तेमां औपशमिक समकित—जेनी कर्मग्रंथि भेदायेली छे (ग्रथिभेद कोलो छे) एवा शरीरी (मनुष्य) ने सम्यक्त्वनो प्रथम लाभ थती वखते पहेला अंतर्मुहूर्तमां थाय छे. अथवा उपशम श्रेणी पर चडेलां उपशांतमोहीने मोहना उपशमथी उत्पन्न थयेलु ते पण औपशमिक समकित कहेवाय छे. ते पण अतर्मुहूर्त ज रहे छे.

२ समकित पाम्या पछी तत्काल अनतानुबंधी कषायना उदयथी समकितनु वमन करतां ते समकितना रसनो लेशमात्र आस्वाद पामे छे, ते बीजु सास्वादन नामनु समकित कहेवाय छे आ समकित जघन्यथी एक समय सुधी अने उत्कृष्टथी छ आवलीका सुधी रहे छे

३ मिथ्यात्व मोहनीयना उदयमां केटलाकनो क्षय अने केटलाकनो उप शम करवाथी जे सम्यक्त्व गुण प्राप्त थाय, ते क्षायोपशमिक समकित कहेवाय छे.

४ क्षपक श्रेणीपर चडेला देहीने अनंतानुबंधी चार कषायनो क्षय थया पछी मिथ्यात्व मोहनी अने मिश्र मोहनीनो सारी रीते परिपूर्ण क्षय थये अने सम्यक्त्व मोहनीना छेल्ला अंशने भोगवती वखते क्षायिक समकितनी सन्मुख थना रने वेदक समकित थाय छे.

५ समकित मोहनी, मिश्र मोहनी ने मिथ्यात्व मोहनी तथा अनंतानुबंधी चार कषाय ए सात प्रकृतिनो क्षय थवाथी जीवने जे तत्त्वश्रद्धा थाय छे ते पांचमु क्षायिक समकित छे.

आ समकित गुणथी त्रण प्रकारनु पण छे—रोचक, दीपक अने कारक. तेमां सिद्धान्तने विषे कहेला तत्त्वो उपर हेतु तथा उदाहरण विना जे दृढ आस्था थाय, ते रोचक समकित कहेवाय छे आ समकित उपर कृष्ण अर्धचक्रीनो प्रबंध छे ते नीचे प्रमाणे—

कृष्ण वासुदेवनो प्रबंध

द्वारका नगरीमां एकदा वर्षाऋतुमां श्री नेमिनाथ भगवंत समवसर्या. तेमने वंदना करीने श्रीकृष्णे पूछ्युं के 'हे स्वामी! वर्षाऋतुमां मुनिओ केम विहार करता नथी ?' प्रभुए जवाब आप्यो के, "हे कृष्ण! वर्षाऋतुमां पृथ्वी घणा जंतुओथी व्याप्त थाय छे तेथी ते काळे विहार करता तं जीवोनुं रक्षण थइ शके नहीं, माटे मुनि विहार करता नथी" ते सांभळीने कृष्णे पण अंतःपुरमांज चार मास रहेवानो निश्चय कर्यो. केमके राजसभामां जवाथी घणा सभासदोने आववु पडे एटले घोडा गाडीओ विगेरेना जवा आववाथी घणा जीवोनुं मर्दन थाय.

ते नगरीमां एक वीरक नामनो साल्वी रहेतो हतो. ते कृष्णनो भक्त हतो तेने कृष्णना दर्शन करीने जमवानो नियम हतो. तेथी ज्यारे कृष्ण चार मास अंतः पुरमां रह्या त्यारे तेमनुं दर्शन नहीं थवाथी ते वीरक हमेशां त्यां आवी राजद्वारनी पुष्पादिकथी पूजा करीने चाल्यो जतो, परतु भोजन करतो नहीं, वस्त्रो बदलतो नहीं, हजामत करावतो नहीं अने नख पण लेवरावतो नहीं. आ प्रमाणे तेणे चार सुधी कर्युं वर्षाकाळ पूर्ण थये ज्यारे कृष्ण अंतःपुरनी बहार नीकळ्या त्यारे

वीरके आवीने नमन कर्यु. तेने जोइने राजाए पूछ्युं के 'हे वीरक ! तु आवो कृश केम देखाय छे ?' ते सांभळी प्रतीहारे कह्यु के "हे स्वामी ! आपनु दर्शन घणा दिवस नहीं थवाथी तेणे भोजन विगेरे कर्यु नथी, तेथी ते आ आवो दुर्बळ थइ गयो छे." ते सांभळीने कृष्ण तेनापर तुष्टमान थया, अने ते वीरकने सर्वत्र ज्या पोते होय, त्या आववानी छुट आपी. पछी ते नेमिनाथने वांदवा गया, त्या भगवानना मुखथी धर्मोपदेश सांभळीने कृष्णे कह्यु के "हे प्रभु ! भागवती दीक्षा के अन्य व्रतो ग्रहण करवाने हु समर्थ नथी तोपण हु एटलो नियम करु छुं के जे कोइ दीक्षा लेवा तैयार थशे, तेनो हु महोत्सव करीश." आ प्रमाणे अभिग्रह लइने कृष्ण वासुदेव पोताने घर गया.

एकदा विवाहने योग्य वये पहोंचेली पोतानी कन्याओ कृष्णने प्रणाम करवा आवी. त्यारे वासुदेवे ते पुत्रीओने पूछ्यु के "हे पुत्रीओ ! तमे राणीओ थवा इच्छो छो, के दासीओ थवा इच्छो छो ? तमारा मननो जे मनोरथ होय ते कहो" त्यारे ते कन्याओ बोली के 'हे पिता ! आपना प्रसादथी अमे राणीओ थवा इच्छीए छीये.' ते सांभळी कृष्ण बोल्या के "हे पुत्रीओ ! जो तमारी एवी ज इच्छा होय, तो श्री नेमिनाथ पासे जइ दीक्षा ग्रहण करो" ते सांभळीने ते सर्व कन्याओए प्रभु पासे जइ चारित्र ग्रहण कर्यु. एकदा एक राणीए पोतानी पुत्रीने शीखव्यु के "तु तारा पिता पासे प्रणाम करवा जाय, त्यारे तने जो ते राणी के दासी थवानुं पूछे, तो तारे एनो जवाब आपवो के–हुं दासी थवा इच्छु छु" अन्यदा प्रणाम करवा जतां कृष्णे ते पुत्रीने पूछ्यु, त्यारे तेणीए माताना शिखामण प्रमाणे जवाब दीधो. ते सांभळीने कृष्णे विचार कर्यो के "आ पुत्रीनी पेठ बीजी पुत्रीओ पण संसारमा पडशे, माटे जो हु आने खरेखरी दासी ज बनावुं तो पछी बीजी पुत्रीओ संसारमा पडे नहीं." एम विचारीने तणे एकांतमां वीरक सानवीने पूछ्यु के "हे वीरक ! तें पहेलां कोइ पण वखत काइ अद्भुत कार्य कर्यु होय ते कहे." वीरक बोल्यो के "हे स्वामी ! मे कांइ तेवु अद्भुत कार्य तो कर्यु नथी, परन्तु एक वखत हु शरीरचिंता करवा गयो हतो त्यां एक बोरडीना झाडनी टोच पर रहेला काकीडाने में एक ज पथ्थर मारीने पृथ्वी पर पाडी दीधो हतो, तथा वर्षाऋतुमां गामना पैडाना चीलामा भराइ रहेलु पाणी में डावा पगथी रोकी दीधु हतु; अने पग लइ लीधो त्यारे पछी नदीनी जेम तेनो प्रवाह चाल्यो

हतो. तथा एक वखत पांजणीना वासणमां माखीओ गुंजारव करती हती, तेने में ते वासणना मुखपर हाथ मुकीने रोकी (स्थी) दीधी हती. " आ प्रमाणे सां भळीने कांइक हास्य करी कृष्ण सभामां गया त्यां सर्व सभासदो समक्ष ते बो ल्या के " हे सभासदो ! वीरक साळवीनुं पराक्रम अति अद्भुत छे तेथी तेनुं कु ळ पण उच्च छे. सांभळो—

येन रक्तस्फटो नागो, निवसन् बदरीवने ।
पातित क्षितौ शस्त्रेण, क्षत्रिय सैष वै महान्॥ १ ॥
येन चक्रकृता गंगा, वहन्ती कलुषोदकम् ।
धारिता वामपादेन, क्षत्रिय सैष वै महान् ॥ २ ॥
येन घोषवती सेना, वसन्ती कलशीपुरे ।
धारिता वामहस्तेन, क्षत्रियः सैष वै महान् ॥ ३ ॥

भावार्थ—" बदरीना वनमां रहेला रक्तफणावाळा नागने (काकीडाने) जेणे शस्त्रवडे मारी पृथ्वी पर पाडी नाख्यो, ते आ वीरक महा क्षत्रिय छे. वळी जेणे चक्रथी प्रगटेली गंगा नदी के जे मेलुं पाणी वहेती हती, तेने डाबा पगवडे रो की दीधी ते आ वीरक महा क्षत्रिय छे, तथा कलशीपुरमां (कळशामां) रहेली अने घोष (शब्द) करती सेनाने जणे एक डाबा हाथथीज रुंधी दीधी ते आ वीरक खरेखर महा क्षत्रिय छे " तेथी आ मारी केतुमजरी नामनी पुत्रीने ते योग्य वर छे " एम कहीने कृष्णे ते वीरक साथे तेनी इच्छा नहीं छतां पण केतुमजरीने परणावी वीरक पण कृष्णना भयथी तेणीने परणीने पोताने घेर लइ जइ तेणीनी दासनी जेम सेवा करवा लाग्यो घणा दिवसो गया पछी एकदा कृष्णे वीरकने पूछ्युं के ' मारी पुत्री तारी आज्ञा प्रमाणे वर्ते छे के नहीं ? ' वीरके जवाब आ प्यो के ' हे राजा ! हुं आपनी पुत्रीनी आज्ञा प्रमाणे वर्तुं छुं.' ते सांभळीने कृष्णे कृत्रिम क्रोध करी तने बहु धिक्कार्यो. तेथी ते वीरके घेर जइने तेणीने कह्युं के " अरे स्त्री ! तु केम बेठी छे ? खेळ तैयार कर, घरमांथी वासीदुं काढ, पाणी लाव, अने जलदीथी रसोइ तैयार कर. " आ प्रमाणे कोइ वखत नहीं सांभळेलां वाक्यो सांभळीने ते बोली के ' हे स्वामी ! हुं आपानुं कोइ पण काम

जाणती नथी.' ते सांजळीने वीरके दोरडी वमे तेणीने खूब मारी. तेथी ते रोती रोती पिता पासे गइ अने पिताने सर्व वात कही त्यारे ते वोल्या के 'तें दासीपणुं माग्युं हतु तेथी में तने दासीपणु आप्युं छे.' ते बोली " हे पिता ! हवे हुं तेने घेर नहीं जउं, परंतु आपना प्रसादथी हु राणी थइश." त्यारे कृष्णे वीरक साळवीनी रजा लइने तेणीने प्रव्रज्या अपावी. आ प्रमाणे कृष्णे घणा जीवोने दीक्षा अपावी परतु पोते अप्रत्याख्यानी कषायना उदयथी व्रतादिकनु ग्रहण करी शक्या नहीं.

एकदा श्री नेमिनाथ जिनेश्वर रैवतक गिरिपर समवसर्या, ते वखते कृष्ण परीवार सहित प्रजुने वांदवा गया त्यां अढार हजार साधुओने तेणे द्वादशावर्त्त वंदनवडे वंदना करी. वीजा राजाओ तो थाकी जइने थोडा थोडा साधुओने वदना करी विराम पाम्या, पण वीरक साळवीए कृष्णनी साथे ठेवट सुधी सर्व मुनिओने द्रव्य वंदना करी. प्राते वंदनाना परिश्रमने लीधे कृष्णना गात्रो परसेवाथी आर्द्र थइ गया. सर्व मुनिने वदना करीने कृष्णे प्रभु पासे जइने कह्यु के "हे जगवत ! घणासोने साठ युद्धो करतां पण मने आटलो श्रम लाग्यो नहोतो." त्यारे जगवान् बोल्या के "हे कृष्ण! तमने आजे घणो लाज थयो छे. तमे आजे सात कर्म प्रकृतिनो क्षय करीने क्षायिक समकित उपार्जन कर्यु छे तथा आवती चोवीशीमां पहेलेथी गणता बारमा अने छेल्लेथी गणता तेरमा अमम नामना तीर्थंकर थवानु कर्म उपार्जन कर्यु छे तथा सातमी नरकनु आयुष्य बाध्यु हतु ते त्रीजी नरकनु रह्यु छे."
ते साजळीने कृष्ण बोल्या के 'हे जगवत ! फरीथी सर्व मुनिओने वंदना करीने त्रण नरकनु आयुष्य पण तोमी नाखु.' जिनेश्वर बोल्या के 'हे कृष्ण ! ते समये जे तमारो तद्दन निःस्पृह जाव हतो ते हवे जतो रह्यो छे तेथी फरीने वदना करता ते लाज मळे तेम नथी, पण जगतना उत्तम पदार्थो सर्व तमने प्राप्त थया छे, तेथी हवे तेनाथी अधिक शेनी इच्छा छे ? वळी त्रीजी नरकनुं आयुष्य तो निदान (नियाणु) करीने बांधेला वासुदेवपणानी साथे ज रहेलुं छे. तेथी तेनो अजाव तो थवानो ज नथी. कह्यु छे के 'अनियाणकमा रामा' इत्यादि -बळदेव नियाणु कर्या विना थाय छे अने वासुदेव तो अवश्य नियाणु करवाथी ज थाय छे, ते जोगमां जोग त्रीजी नरके तो अवश्य जाय ज छे, माटे ते त्रीजी नरकनु आयुष्य टळे तेम नथी." आ प्रमाणे प्रजुना मुखथी साजळीने प्रजुनु वाक्य सत्य मानता

कृष्ण पोताने घेर गया.

अहीं कोइने शंका थाय के—त्रीजी नरकमां उत्कृष्ट आयुष्य सात सागरोपमनुं कहेलुं छे अने नेमिनाथथी आरंभीने आवती चोवीशीमां बारमा अमम जिनेश्वर थाय, त्यां सुधीनुं अंतर तो अप्रताळीश सागरोपमनुं थाय छे, तो पछी सात सागरोपम वाळा एक भवमां तेटलो काळ केम व्यतित थाय के जेथी कृष्ण नरकथी नीकळीने तीर्थकर थइ शके ? अहीं एवो जवाब छे के—"श्री हेमचंद्र सूरिए करेला नेमिनाथना चरित्रमां श्रीकृष्णना पांच भव कहेला छे. तत्त्व तो केवळी जाणे. तथा वसुदेव हिंडि नामना ग्रंथमां एम कह्युं छे के—कृष्ण त्रीजी नरकमांथी नीकळीने भरतक्षेत्रने विषे शतद्वार नगरमां मांडलिक राजा थइ दीक्षा ग्रहण करी, तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन करीने वैमानिक देवता थइ त्यांथी च्यवी, बारमा अमम नामे तीर्थंकर थशे." आ प्रमाणे श्री कृष्ण वासुदेव शुद्ध श्रद्धा गुणथी भवनो पार पामशे.

आ रोचक गुण (समकित) श्रेणिक राजा विगेरेने पण तीर्थंकरादि पद आपनार तरीके प्रसिद्ध छे.

" पृथ्वी पर देवताओ तथा मनुष्यो जेमना गुणोनुं वर्णन करे छे, एवा कृष्ण त्रिकरण शुद्धिथी श्री जैन शासनने विषे भक्तिवाळा थया छे. "

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभेऽष्टपंचाशत्तम व्याख्यानम् ॥ ५८ ॥

व्याख्यान ५९ मुं.

कारक समकित विषे.

तथा कार्यं गुरोर्वाक्यं, यथा प्रवचनाच्छ्रुतम् ।
तपोव्रतादिकं सर्वं, सेवनात् कारको मतः ॥ १ ॥

भावार्थ—"जे प्रमाणे प्रवचन (सिद्धांत)थी सांभळ्युं होय, ते प्रमाणे गुरुनुं वाक्य अंगिकार करवुं अने तप, व्रत विगेरे सर्व आचरण करवुं. तेम करवाथी कारक समकित कहेवाय छे." आ संबंधमां काकजंघ ने कोकाशनी कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

काकजंघ अने कोकाशनी कथा.

सोपारक नगरमां 'विक्रम' नामे राजा हतो. ते नगरमां 'सोमिल' नामे एक रथकार (सुथार) हतो. ते सर्व रथकारोनो अग्रेसरी (उपरी) हतो. ते सोमिलने 'देविल' नामनो पुत्र हतो. तथा ते ज सोमिलनी दासीने ब्राह्मणथी उत्पन्न थयेलो 'कोकाश' नामनो पुत्र हतो. ते सोमिल पोताना पुत्र देविलने हमेशां मोटा प्रयासथी पोतानी विद्या शीखवतो हतो. कह्यु छे के—

पितृभिस्ताडितः पुत्रः, शिष्यश्च गुरुशिक्षितः ।
घनाहतं सुवर्णं च, जायते जनमण्डनम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"मातापथी ताडन करायेलो पुत्र, गुरुथी शिक्षा अपायेलो शिष्य अने घणथी टीपायेलु सुवर्ण—ए त्रणे लोकमां शोभाने पामे छे."

सोमिल पोताना पुत्रने घणी महेनत लइने शीखवतो हतो, परतु तेने कांइ पण आवड्यु नहीं अने दासीपुत्र कोकाश तेनो चाकर होवाथी तेनी पासे बेसी रहेतो हतो ते मौनताथी ज सर्व कळाओने मात्र सांभळीने शीखी गयो. तेमज गुरु (सोमिल) करतां पण वधारे कुशळ थयो. केटलेक काळे सोमिल रथकार मरण पा-

करतो हतो.

तेवा समयमां पाटलीपुरना राजा 'जितशत्रु' ए चार नररत्नो सेवानी इच्छाथी विचारधवळनी राजधानी उज्जयिनी नगरीने अकस्मात् घेरो घाल्यो. ते वखते काकतालीय न्याये विचारधवळ राजा शूळना महा रोगथी पीडा पामी समाधिवडे मृत्यु पाम्यो. 'महाशूळ विगेरे व्याधिओ घणुं करीने मृत्युरुप नाटकनी नांदी समान छे.' कह्यु छे के—

> शूल विस अहि विसूइअ, पाणि अ सत्थग्गि संभमेहिं च ।
> देहंतरसंकमणं, करेइ जीवो मुहुत्तेण ॥ १ ॥

भावार्थ—"शूलरोगथी, विष भक्षणथी, सर्प दंशथी, विसूचिकाथी, जळमां डुबवाथी, शस्त्रना वागवाथी अने अग्निना उपद्रवथी तेमज ससंभ्रमथी जीव एक मुहूर्त्त मात्रमां बीजा देहनी अंदर संक्रमण करे छे. अर्थात् मृत्यु पामीने बीजा देहने धारण करे छे."

विचारधवळ राजानुं मृत्यु थवाथी तेना मंत्रीओए नायक विनानु सैन्य नकामु जाणी जितशत्रु राजाने ज भेटनी जेम ते पुरी सोंपी दीधी. एटले जितशत्रु राजा ते राज्य पण भोगववा लाग्यो. पछी ते चारे नररत्नोनी तेणे परीक्षा करी. तो जेवा तेणे सांभळ्या हता तेवा ज ते नररत्नो जणाया. एकदा राजाए अंगमर्दक रत्ननी पासे अंगमर्दन करावीने पछी तेमांथी समग्र तेल पाछु काढती वेळाए अंगमर्दकने आज्ञा करीने पोतानी एक जंघामा पांच कर्ष जेटलुं तेल बाकी रखाव्युं. पछी सभामा जइने कह्यु के "जो कोइ बीजो अंगमर्दक अभिमान धरावतो होय तो तेणे मारी जंघामांथी बाकी रहेलुं तेल काढी आपवु." ते सांभळी बीजा अंगमर्दकोए घणा उपायो कर्या पण तेओ एक बिंदु पण काढी शक्या नहीं. तेथी तेओ झखवाणा थइ चाल्या गया. बीजे दिवसे अंगमर्दक रत्नने राजाए ते जंघानु तेल काढवा आज्ञा करी. पण अंगमर्दक रत्न बीजे दिवसे तेल काढी शक्यो नहीं. केमके ते ज दिवसे तेल काढवानी तेनी शक्ति हती. राजानी जंघामां रहेलु तेल कूवानी छाया कुवामां ज रहे तेम त्यां ज स्थित थयु तेथी तेनी जंघा कागडाना वर्ण जेवी श्याम वर्णवाळी थइ गइ. त्यारथी लोकमां तेनु काकजंघ एवुं नाम प्रसिद्ध थयुं राजा जेवाना पण तेवा उपनामो लोको पाडे छे. केमके 'ज-

गतने मुखे गरणुं बांधी शकातुं नथी. ' वळी सारां उपनामो नठारां उपनामोनी जेवा प्रसिद्ध थता नथी. जुओ मापनुप, कुरगडूक, सावद्याचार्य, रावण विगेरे नामो जेवा प्रसिद्धि पाम्या ठे तेवा सारा नामो प्रसिद्धि पाम्या नथी.

एकदा कोकण देशमां निर्धन लोकोनो संहार (नाश) करवामां महाराक्षस-जेवो मोटो डुष्काळ पड्यो. तेथी धनिक लोको पण निर्धन जेवा थया, अने राजा पण रक जेवा थइ गया. कह्यु ठे के—

मान मुञ्चति गौरव परिहरत्यायाति दीनात्मताम्
लज्जामुत्सृजति श्रयत्यदयता नीचत्वमालम्बते ।
भार्या बन्धुसुतासुतेष्वपकृतीर्नानाविधाश्चेष्टते
किं किं यन्न करोति निन्दितमपि प्राणी क्षुधापीडितः॥१॥

नावार्थ—" डुष्काळमां क्षुधाथी पीडा पामेला लोको माननो त्याग करे ठे, गौरव (मोटाइ) मूकी दे ठे, दीनता धारण करे ठे, लज्जानो त्याग करे ठे, निर्दयतानो आश्रय करे ठे, नीचपणानु अवलंबन करे ठे, नार्या, बंधु, पुत्र अने पुत्रीने विषे नाना प्रकारना अपकार करवानी चेष्टा करे छे. अर्थात् तेओना डु:खनी दरकार करता नथी. तथा क्षुधापीमित मनुष्य बीजां पण कया कया निंदित कार्यो करतो नथी ? सर्व करे ठे. "

आवा नयंकर डुष्काळना समयमां कोकाश पोताना कुटुंबनो निर्वाह नहीं थइ शकवाथी स्वदेश छोमी उज्जयिनी नगरीमां कुटुब सहित आव्यो. त्यां को इनी सहाय विना राजाने मळी शकाय तेम नहोतु. तेथी विचार करीने ठेवटे ते कोकाशे काष्टना घणा पारेवा बनाव्या. तेने कारिगरीथी एवी खीलीओ मारी हती के ते पारेवा उमीने राजाना धान्यना कोठारमां जइ जीवता पारेवानी जेम चांचवमे चोखा दाळ विगेरे तमाम जातनु अनाज पोताना काष्टशरीरमां जेटलु माय तेटलु नरीने पाठा कोकाश पासे आवता. पढी ते अनाज तेमांथी काढीने ते वमे कोकाश पोताना कुटुबनु नरण पोषण करतो. एकदा धान्यना रक्षकोए साचा पारेवानी जेम दाणाथी नरेला ते काष्टकपोतरुप चोरोने धान्यना कोठारमांथी नीकळता जोया.

तेथी आश्चर्य पामीने ते आरक्षको ते पारेवानी पाछळ तपास करवा

गया. तो ते पारेवाओने कोकाशना घरमां पेसता जोया. तेथी तेओ ते कोकाशने पकडीने राजा पास लइ गया. राजाए तेने पूछ्युं. त्यारे तेणे सत्य हकीकत कही आपी. कह्युं छे के—

सत्यं मित्रैः प्रियं स्त्रीभिरलीकं मधुरं द्विषा ।
अनुकूलं च सत्यं च, वक्तव्यं स्वामिना सह ॥ १ ॥

भावार्थ—" मित्रो पासे सत्य बोलवुं, स्त्रीनी पासे प्रिय बोलवुं, शत्रु पासे असत्य पण मधुर बोलवु, अने राजा पासे अनुकूळ तेमज सत्य वचन बोलवु. "

तेनी कलाकुशळता सांभळीने राजाए हर्षित थइ पूछ्युं के 'तुं बीजी पण कांइ कळा जाणे छे ? ' कोकाश बोल्यो—" हे स्वामी ! रथकारनी सर्व कळाओ हुं जाणु छुं. आपणी इच्छा प्रमाणे गति करे तेवा मोर, गरुड, पोपट, हंस विगेरे पक्षिओ लाकडाना बनावुं छुं के जेनी उपर रथनी जेम बेसीने पृथ्वीनी जेम आकाशमां पण कीलिकादिकना प्रयोगथी जवाय अवाय. " ते सांभळीने कौतुकप्रिय राजाए कह्यु के " मारे माटे तेवो एक गरुड बनाव के जेनापर बेसीने आकाशमां रही आखा भूमंडळनी शोभा जोउं. " आ प्रमाणेनी राजानी आज्ञा थतां कोकाशे तेवो गरुड बनाव्यो. ते गरुडने जोवाथी ज राजाए प्रसन्न थइने तेना आखा कुटुंबनो सारी रीते निर्वाह थाय तेवो बदोबस्त करी आप्यो. तेथी तेओ सुखेथी त्यां ज रह्या कह्युं छे के—

लवणसमो नत्थि रसो, विन्नाणसमो अ बंधवो नत्थि ।
धम्मसमो नत्थि निही, कोहसमो वेरिणो नत्थि ॥ १ ॥

भावार्थ—" लवण जेवो बीजो कोइ (उत्तम) रस नथी, विज्ञान (कळा—हुन्नर) जेवो कोइ बांधव नथी, धर्म समान बीजो कोइ निधि (भंडार) नथी, अने क्रोध समान बीजो कोइ वैरी नथी. "

एक दिवस कोकाशने साथे लइने राजा विष्णुनी जेम पोतानी राणी सहित गरूड पर आरुढ थइ आकाश मार्गे चाल्यो. घणा देशोने उल्लंघन करी भरुच पुरनी उपर आव्या, त्यारे राजाए कोकाशने ते नगरनु नाम विगेरे पूछ्युं. त्यारे तेणे गुरुना मुखथी पूर्व वृत्तांत सांभळ्युं हतु तेथी ते बोल्यो के " हे स्वामी ! आ

नगरनुं नाम भरूच छे. आ पुरमां पहेलां श्री मुनिसुव्रत स्वामीए साठ योजन दूर रहेला प्रतिष्ठान पुरथी एक रात्रीमां ज आवीने यज्ञमां होमवाने तैयार करेला अश्व, के जे पोतानो पूर्व जन्मनो मित्र हतो, तेने प्रतिबोध पमाड्यो हतो. अने तेने जैन धर्ममां दृढ कर्यो हतो. जेथी ते अश्व मृत्यु पामीने सौधर्म देवलोकमां सामानिक देवता थयो हतो. तेणे तरतज अवधिज्ञान वडे पूर्वनी हकीकत जाणी एटले ते अहीं (भरूचमां) आव्यो. अने जिनेश्वरना समवसरणने स्थाने तेणे जिन प्रासाद बनावी तेमां प्रभुनुं बिंब पधरावी तेनी सन्मुख पोतानी अश्व मूर्ति रची राखी अने अश्वावबोध नामनुं तीर्थ स्थापन कर्युं " आ प्रमाणे वातो करतां अने विविध देशोनुं अवलोकन करतां तेओ लंका नगरी उपर आव्या, त्यारे राजाए तेनुं नाम विगेरे कोकाशने पूछ्युं. कोकाश बोल्यो के " हे स्वामी ! आ लंका नगरी छे अहीं पहेलां रावण नामे राजा थइ गयो. तेनी समृद्धिनुं वर्णन लोकमां (लौकिक शास्त्रोमां) एवुं संभळाय छे के—ते रावणे नव ग्रहोने पोताना पलंगे बांध्या हता, यमराजाने बांधीने पातालमां नांख्यो हतो, वायुदेव तेने घेर वासीदुं वाळतो हतो, चारे मेघो तेने घेर गंध युक्त जळनी वृष्टि करता हता, यमराज पोताना पाडा उपर जळ भरीने लावतो हतो, साते मातृका देवीओ तेनी आरती उतारती हती, शेषनाग तेना मस्तक पर छत्र धारण करतो हतो, सरस्वती तेनी पासे वीणा वगाडती हती, रंभा नामनी अप्सरा नृत्य करती हती, तुंबरु (देव) गंधर्व गायन करतो हतो, नारद तेनुं दूतपणुं करतो हतो तेमज ताळ वगाडतो हतो, सूर्य तेनी रसोइ करतो हतो, चंद्रमा अमृत वृष्टि करतो हतो, मंगळ (ग्रह) जोशी दोनारो हतो, बुध अरिसो देखाडतो हतो, गुरु (बृहस्पति) घडीयाळ वगाडतो हतो, शुक्र (शुक्राचार्य) तेनो मंत्री हतो, शनि तेना पृष्ठ भागनो रक्षक हतो, अठ्याशी हजार ऋषिओ पाणीना परबनी रक्षा करता हता, विष्णु तेनी पासे मसाल धारण करता हता अने ब्रह्मा तेना पुरोहित हता आवी समृद्धिवाळो छतां पण ते रावण परस्त्रीनुं हरण करवाथी दुःख पाम्यो " आ रीते वातो करता ते पाछा वळी पोताना नगरमां आव्या.

अन्यदा पश्चिम दिशामा गया. त्यां सिद्धाचळ अने गिरनार तीर्थ देखी तेनुं वर्णन कर्युं. ए ज प्रमाणे उत्तर दिशा तरफ गया त्यारे कोकाशे अष्टापद नामनो कैलास पर्वत, शाश्वत सिद्धायतनो तथा जिनेश्वरना कल्याणकना स्थानको दे

लाव्या. हस्तिनापुर आवतां तेनुं वर्णन कर्युं के " हे स्वामी ! अहीं सनत्कुमार विगेरे पांच चक्रवर्तीओ तथा पांच पांडवो थया छे. श्री ऋषभदेव स्वामीनुं वरसी-तपनुं पारणुं पण अहीं थयुं छे. शांतिनाथ आदि त्रण जिनेश्वरना मोक्ष कल्याणक विना बाकीना चार चार कल्याणको अहीं थया छे. विष्णुकुमारे उत्तर वैक्रिय शरीर अहीं कर्युं हतुं, तथा कार्तिक श्रेष्ठीए एक हजार ने आठ पुरुषो सहित अहींज दीक्षा लीधी हती. विगेरे अनेक शुभ कार्यो अहीं थयेलां छे." आ प्रमाणे हमेशां नवां नवां तीर्थोनुं महात्म्य संभळावीने कोकाशे राजाने जैन धर्म पर रुचिवाळो कर्यो. पछी एकदा कोकाश राजाने ज्ञानी गुरु पासे लइ गयो. गुरुए धर्मोपदेश करतां कह्युं के " गृहस्थीओने माटे समकित सहित पांच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत मळी बार व्रतो कहेला छे. बीजा धर्मना नियमो ग्रहण करवाथी तेना फळमां सामान्य वर्षानी जेम कदाच संदेह रहे छे पण आ जैन धर्मनुं फळ तो पुष्करावर्त मेघनी जेम मळे ज छे-निष्फळ जतुं ज नथी. " इत्यादि धर्मोपदेश सांभळीने राजाए समकित सहित बार व्रतो ग्रहण कर्या. तेमां छठ्ठा दिग्विरति व्रतमां एक दिवसे दरेक दिशाए एक सो योजनथी वधारे दूर जवुं नहीं एवो नियम लीधो.

एकदा राजा यशोदेवी नामनी पोतानी पट्टराणी सहित काष्ठ गरुड पर बेसी फरवा जवा तैयार थतो हतो. ते हकीकत जाणीने विजया नामनी बीजी राणीए सपत्नी (शोक्य) परना द्वेषने लीधे पोताना खानगी माणस पासे ते गरुडनी एक मूळ खीली काढी नंखावी तेने स्थाने बीजी तेवीज नवी खीली स्थापन करावी. ते वातनी कोइने खबर पडी नहीं. कह्युं छे के—

उन्मत्तप्रेमसंरंभादारभन्ते यदंगनाः ।
तत्र प्रत्यूहमाधातुं, ब्रह्मापि खलु कातरः ॥ १ ॥

भावार्थ—" उन्मत्त प्रेमना वेगथी स्त्रीओ जे कार्यनो आरंभ करेछे ते कार्यमां विघ्न लाववाने ब्रह्मा पण समर्थ थतो नथी "

पछी राजा राणीसहित गरुड पर बेठो. अने कोकाशे गरुडने आकाशमां उडाड्यो. घणा दूर गया पछी राजाए दिग्विरति व्रत याद आववाथी कोकाशने पूछ्युं के ' हे मित्र ! आपणे केटले दूर आव्या ? ' कोकाश बोल्यो ' हे स्वामी !

आपणे घणो योजन दूर आव्या छीए. ' ते सांजळी खेद युक्तथइ राजाए कयु के हे मित्र ! गरुमने जलदी पाछो वाळ, पाछो वाळ. केमके जाणता छतां निषिद्ध आचरण करवाथी तो मूळ व्रतनो जंग थाय छे अने अजाणतां व्रतनो जंग थवाथी अतिचार लागे छे तो ते प्रतिक्रमणादिक करवावडे शुद्ध थइ शके छे. अहो ! कौतुक जोवानु जेने प्रिय छे एवा मने धिक्कार छे के जेथी में आत्महित पण जाण्यु नहीं. " आ प्रमाणे जाणे पोतानु सर्वस्व गयु होय तेम राजा शोक करवा लाग्यो ते वखते कोकाशे गरुमने पाछो वाळवा माटे जीजी खीली पकमी के तरत ज ते खीली अन्य छे एम जाणीने ते चिंतातुर थइ बोल्यो " हे देव ! दुर्दैवना वशथी कोइ दुष्टे आ खीली बदली नाखी छे, हवे ते खीली विना गरुम पाछु वळी शकशे नहीं, माटे हवे तो थोडे दूर जइने नीचे उतरीये तो ठीक थाय केमके जो अहीं ज उतरशु तो आ शत्रुनु राज्य होवाथी अनर्थनो संजव थशे." ते सांजळी राजाए कयु के " हे मित्र ! अनंत जव सुधी दुःख आपनार व्रतजंग करवा रुप वाक्य तु केम बोले छे ? अनाभोगादिकथी (अजाणथी) कदि निषिद्धनु सेवन थयु होय तो व्रतनुं मालिन्य थवारुप अतिचार लागे छे, अने जाणीजोइने जो व्रतनु उल्लंघन करीये तो व्रतनो जंग ज थाय छे अतिचारथी खंमित थयेलु व्रत तो काचा घमानी जेम पाछु सांधी शकाय छे पण अनाचारथी थयेल व्रतजंग तो पाका घमानी जेम साधी शकातो नथी. माटे अहींथी एक पगलु पण आगळ चधवानु करीश नहीं कयु छे के—

जलधूलीधरित्र्यादिरेखावदितरे नृणाम् ॥
पर पाषाणरेखेव, प्रतिज्ञा हि महात्मनाम् ॥ १ ॥

जावार्थ—" सामान्य जनोनी प्रतिज्ञा जळ, धूळ अने पृथ्वी विगेरेमा करेली रेखा जेवी छे. (तरत जंग थाय तेवी होय छे.) पण महात्माओनी प्रतिज्ञा तो पथ्थरनी रेखा जेवी एटले तेनो जंग ज न थाय तेवी होय छे. "

वळी हे कोकाश ! व्रतना उल्लंघननु फळ तो कटु फळना आस्वादनी जेम हमणा ज प्राप्त थयु छे, माटे ते ज खीलीथी जो वळे तो वाळ, नहीं तो अहीं ज उतरी पमवु योग्य छे " ते सांजळी राजानी दृढतानी वारंवार प्रशंसा करतो कोकाश गरुमने पाछो वाळवा प्रयास करवा लाग्यो. तेवामां तो ते गरुमनी

बन्ने पांखो मळी गइ अने ते नीचे पड्यो. परंतु सारा नाग्यने योगे ते गरुम एक सरोवरमा पड्यो. तेथी कोइना अंगने कांइ पण इजा थइ नहीं. पछी राजा, राणी अने कोकाश गरुम सहित सरोवरने कांठे आव्या. तेनी नजीकमां ज कांचनपुर नगर जोइने कोकाशे राजाने शीखामण आपी के " हे स्वामी ! आप सावधान थइने अहीं ज कोइ न जाणे तेम छुपा रहो. हु गाममां कोइ रथकारने घेर जइ नवी खीली करीने आवुं बुं. " एम कहीने नय रहीत कोकाश राजाना मानीता रथकारने घेर गयो अने तेनी पासे खीली करवा माटे विशेष प्रकारना ओजार माग्या. एटले ते रथकार एक रथनुं पैमु करतो हतो ते पमतुं मूकीने' तेना मागेला ओजार लावी आपवा घरनी अंदर गयो ते ओजार लइने आव्यो तेटलामां तो कोकाशे रथनु पैंमुं तेना करतां घणु ज सुदर दीव्यचक्र (पैमु) बनाव्युं के जे पैंमुं हाथमांथी नीचे मुकता ज धक्को मार्या विना तेनी मेळे चाले. ते रथकारे आवी असाधारण कळा जोइ मनमां विचार्यु के " नक्की आ कोकाश ज बे, तेना विना बीजो आ पृथ्वी पर आवी दीव्य कळावाळो कोण बे ? कोइ ज नथी. " आ प्रमाणे निश्चय करी ते रथकार कांइक मीष करीने त्यांना राजा पासे गयो. अने तेने कह्यु के "हे राजा! पुण्य योगे मारे घेर अकस्मात कोकाश आवेलो बे." ते सांनळीने राजाए पोताना सेवकोने मोकली कोकाशने बोलावी पूछ्यु के ' तारो राजा क्यां बे ? ' त्यारे बुद्धिमान कोकाशे मरणना नयथी तेम ज कांइक मनमां विचार करीने पोताना राजानु ठेकाणु कही दीधुं. एटले कनकप्रन्न राजाए सैन्य सहित काकजन्न राजा पासे जइ तेने बांधी लइने विमबना पूर्वक काष्ठना पांजरामां नांख्यो कलिंग देशनो राजा तेनापरना वैरने लीधे तेने खावानु पण आपतो नहीं. तेथी घणा माणसोने दया आववाथी राजाना नयने लीधे कागमाने बळिदान आपवाने मीषे तेमने पिंम (बळिदान) आपवा लाग्या. ए प्रमाणे काकपिंमथी प्राणवृत्तिने करतो अने कोइपण वखत जेणे स्वप्नमां पण दुःख जोयु नथी एवो काकजघ राजा आवा कष्टने समये पण धीरज राखी पोताना पूर्व कर्मने ज निंदतो सतो दिवसो निर्गमन करवा लाग्यो. ते पोताना आत्माने कहेतो के—

को इत्थ सया सुहिओ, कस्स व लच्छी थिराइ पिम्माइ ।
को मच्चुणा न गहिओ, को गिद्धो नेव विसएसु ॥ १ ॥

भावार्थ—" आ विश्वमां निरंतर सुखी कोण छे ? कोनी लक्ष्मी अने प्रेम स्थिर रह्यां छे ? मृत्युए कोने ग्रहण कर्यो नथी ? अने विषयोमां कोण आसक्त थयो नथी ? "

केटलेक दिवसे राजा कोकाशनो वध करवा तैयार थयो त्यारे पौरजनोए राजाने कह्यु के "हे स्वामी ! आ अकार्य करवु आपने योग्य नथी. एक स्त्रीने माटे थइने आवो प्रमाद कोण नोतरी लावे ? उत्तम पुरुषो तो गुणोने विषे पक्षपात राखीने तेमां स्वपरनो विभाग चिंतवता ज नथी. कह्युं छे के—

सर्वेषा बहुमानार्हः, कलावान् स्वपरोऽपि वा ।
विशिष्य च महेशस्य, महीयो महिमाप्तिकृत्[1] ॥ १ ॥

भावार्थ—" कळावान पोतानो होय के पारको होय, तो पण ते सर्वने बहुमान करवाने योग्य छे. जुओ चंद्र कळावान् होवाथी शंकरे तेने पर न गणतां पोताना भालस्थळमां स्थान आप्यु छे. "

आ प्रमाणे पौरजनोनुं कहेवुं सांभळीने राजाए कोकाशनो सत्कार करी तेने कह्यु के " हे कळाकुशळ ! मारे माटे एक कमळना आकारे गरुडनी जेवु आकाशगामी घर बनाव तेने सो पांखडीओ कर अने दरेक पांखडीओ उपर मारा पुत्रोने रहेवा योग्य मंदिरो बनाव. तेना मध्यमां कर्णिकाने स्थाने मारे रहेवा योग्य भुवन कर अने ते भुवननी सन्मुख प्रधानो विगेरे परिजनोनी बेठक बनाव. आवी रीतनु देवविमाननी जेवु भुवन बनाव. " ते सांभळीने जीवतनी आशावाळा थयेला कोकाशे पोतानो अभिप्राय गुप्त राखीने ' आपनी आज्ञा प्रमाण छे ' एम कही पोताना मनोरथने सिद्ध करवा माटे अने बहारथी राजानुं चित्त प्रसन्न करवा माटे तेणे कह्यु तेवु कमळगृह बनाव्यु. पछी तेणे काकजंघ राजाने गुप्त रीते कह्यु के " हे स्वामी ! तमे चिंतानो त्याग करीने श्री जिनेश्वरना ज ध्यानमां तत्पर रहो. हु थोडा दिवसमां शत्रुने विडंबनामां नांखु छु. " एम कही कोकाशे गुप्त रीते काकजंघना पुत्रने सैन्य सहित बोलाव्यो तेना नजीक आव्याना खबर मळतां ते ज दिवसे शुभ मुहूर्त कहीने कनकप्रभ राजाने परिवार सहित ते कमळगृहमां बेसवा कह्यु. राजा पण ते जोइने गर्वथी सौधर्म इन्द्रना भुवननो पण ति-

---

[1] उत्तरार्ध अशुद्ध जणाय छे

रस्कार करतो आनंद पाम्यो. पछी सर्वने ते पद्मगृहमा दाखल करीने मफुल्ल मुखथी कोकाश बोल्यो के " हे राजा ! तमे सर्वे पोतपोताना स्थानपर सावधान थइने बेसी जाओ. हुं खीलीना प्रयोगथी हमणां आ विमान आकाशमा उमाडी तमने कौतुक देखाडुं छु. " ते सांजळीने जूख्या माणसो भोजन माटे बेसी जाय, तेम तेओ कौतुक जोवाने माटे पोतपोताने स्थाने बेसी गया. पछी कोकाश कांइक मीषथी ते कमळगृहनी बहार नीकळी बोल्यो " हे मूढ लोको ! जुओ ! मारा स्वामीनी विडंबना करवानुं फळ ! " एम कहीने तेणे खीली फेरवी के तरत ज निद्राथी घूर्णायमान थयेला नेत्रनी पेठे ते आखुं भुवन कमळनी जेम बीडाइ गयुं अने तेमां रहेला सर्वे लोको भ्रमरानी जेम हाहारव करवा लाग्या अहीं कमळ अने भ्रमरा उपर अन्योक्तिथी कहेलो श्लोक घटी शके छे. ते आ प्रमाणे छे—

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजश्रीः ।
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे
हा हन्त हन्त नलिनीं गज उज्जहार ॥ १ ॥

भावार्थ—" कोइ एक भमरो एक कमळमा पेसी तेनो रस चूसतो हतो, तेवामां रात पडी, अने कमळ बीडाइ गयुं. त्यारे अंदर रहेलो भमरो विचार करवा लाग्यो के ' रात्रि जती रहेशे अने सारो प्रातःकाळ थशे तथा सूर्यनो उदय थशे, त्यारे आ कमळनी शोभा खीलशे (कमळ उघडशे एटले हुं नीकळी जइश). ' एम कोशमां रहेलो भमरो विचार करतो हतो तेटलामां तो खेदकारक वात बनी के कोइ हाथी त्यां पाणी पीवा आव्यो, तेणे ते कमळने तोडी नाख्युं अने खाइ गयो." जेथी भमरानी धारणा मननी मनमां रही. तेम अहीं पण कौतुक जोवाने मिषे देवभुवन जेवा भुवनमा पेठेला राजा विगेरेनी कौतुक जोवानी इच्छा मननी मनमां रही अने उलटा कष्टमां आवी पड्या. युक्ति छे के

ए बनावने कोकाशना करी राखेला संकेत प्रमाणे शतमन्यु राजानो पुत्र सैन्य सहित त्यां आवी पहोंच्यो. तेणे कनकप्रभ प्रमुख राजाओने जीतीने पोते

मातापिताने पांजरामांथी बहार काढ्या. पछी कोकाश सहित सौ पोताने नगरे गया. काकजंघ राजाए पोतानी मतमां बांधेली अवधि उपरांतनो ते देश होवाथी पोताने तावे कर्यो नहीं.

काकजघ राजाए राज्यनुं पालन करतां गरुडनी खीली बदलवाना प्रपंच पोतानी ज चीजी राणीनो हतो, एम जाण्या छतां गंभीरताने लीधे प्रगट कर्या नहीं. कह्युं छे के—

अर्थनाशं मनस्तापं, गृहे दुश्चरितानि च ।
वञ्चनं चापमानं च, मतिमान्न प्रकाशयेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" धननो नाश, मननो संताप, घरमां चालतुं दुराचरण, वंचन (कोइनाथी ठगाइ गया होइए ते), अने अपमान (कोइए कर्युं होय ते) ए टलां वानां बुद्धिमान पुरुषे कोइनी पासे प्रकाशित करवां नहीं. "

अहीं परिवार सहित कनकप्रभ राजाने कमळगृहमांथी बहार काढवा माटे घणा उपायो करवामां आव्या. लोको एकठा थइने ते कमळगृहने भांगी नाखवा माटे कुहाडा विगेरेना प्रहार तेना पर करवा लाग्या. परंतु ते कमळगृह न उघडतां तेनी अंदर रहेला राजा विगेरे सर्वने तेना प्रहारनी पीडा थवा लागी. छेवटे तेमने कांइ पण उपाय सूझ्यो नहीं त्यारे ते लोकोए अवतीमां आवी कोकाशनी पासे पोताना राजाना जीवितनी भिक्षा मागी. त्यारे कोकाशे तेओने कह्युं के " तमारो राजा अमारा राजानी दासनी जेम सेवा करे, तो तेने मुक्त करुं. " ते सांभळी लोकोए तेम करवुं कबूल कर्युं पछी कोकाशे त्यां जइने ते कमळगृह उघाड्युं, एटले सर्वे बहार नीकळ्या. कनकप्रभ राजाए कोकाशनो पितानी जेम सत्कार कर्यो पछी कोकाश पोताना नगरमां आव्यो.

एकदा काकजंघ राजा अने कोकाश गुरु पासे गया त्यां तेमणे धर्मदेशना सांभळीने पोतानो पूर्वभव पूछ्यो त्यारे गुरु बोल्या के "हे राजा ! पूर्वे तुं गजपुरनो राजा हतो अने आ कोकाश ते ज गाममां ब्राह्मण जातिनो जैन धर्मी सूत्रधार हतो. तेना वचनथी तें तेनी पासे अनेक जैन प्रासादो कराव्या. एकदा ते ज गाममां कोइ बीजा गामथी एक जैन सूत्रधार आव्यो. ते पण पोतानी कळामां कुशळ हतो तेनी कळापर इर्ष्या आववाथी तारा प्रथमना सूत्रधारे तारी पासे

तेनी जाति नीच छे इत्यादि कहीने तेनी निंदा करी. कह्युं छे के—

कलावान् धनवान् विद्वान् क्रियावान् धनमानवान् ।
नृपस्तपस्वी दाता च स्वतुल्यं सहते न हि ॥ १ ॥

भावार्थ—" कळावान, धनवान, विद्वान, क्रियावान, धनना अभिमानवाळो, राजा, तपस्वी अने दातार—एओ पोतानी सरखाने सहन करता नथी—जोइ शकता नथी."

पोताना सूत्रधारना कहेवाथी तें पण ते नवा आवेला सूत्रधारने छ घडी सुधी कारागृहमां राख्यो. पण पछी ते कार्य अघटित लागतां तेने मुक्त कर्यो. ते पापनी आलोचना कर्या विना तमो बन्ने मरण पामीने सौधर्म देवलोकमा देवता थया. त्यांथी चवीने आ भवे पण तमे राजा अने रथकार थया छो. कोकाशे जाति मद कर्यो हतो, तेथी आ भवे ते दासीपुत्र थयो. अने पेला परदेशी सूत्रधारने छ घडी केदखानामां राख्यो हतो तेथी आ भवे तमे बन्ने छ मास सुधी केदखानामां तेम ज पतिभधर्मा रह्या."

आ प्रमाणे ज्ञानीना वचनो सांभळीने काकजंघ राजाए पोताना पुत्रने राज्य पर स्थापन करी कोकाश सहित दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे केवळ ज्ञान पामी ते बन्ने मोक्षपदने पाम्या.

" जगतप्रसिद्ध काकजंघ राजा कोकाशनी बुद्धिथी धर्मनी दृढता मेळवी कारक समकित धारण करी अतींद्रिय ज्ञान पामीने मोक्षे गया."

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तंभे एकोनषष्टितम व्याख्यानम् ॥ ५९ ॥

व्याख्यान ६० मुं.



दीपक समकित विषे

मिथ्यादृष्टिरजव्यो वा, स्वय धर्मकथादिनि: ।
परेषां बोधयत्येवं, दीपक दर्शन जवेत ॥ १ ॥

जावार्थ—' मिथ्यादृष्टि के अभव्य पोते धर्मकथादिके करीने बीजाने बोध पमाडे, ते मिथ्यादृष्टिने दीपक समकित कहेवाय छे. "

अहीं आ प्रमाणे भावना जाणवी—अनादि सांत जांगे प्रथम गुणस्थानके वर्ततो कोइ मिथ्यादृष्टि जीव कोइ पण पुण्यने योगे श्रावकना कुळमां उत्पन्न थाय. त्यां कुळाचारथी लीधे गुरु विगेरे सामग्री पामीने मोटाइ पामवानी इच्छाए करीने अथवा मत्सर, अहंकार के दंज विगेरेए करीने जिनबिंब, जिनचैत्य विगेरे श्रावकने उचित एवा सारां कार्यो करे, परंतु ते देवादिकना सत्य स्वरुपने जाणतो नथी, तेम ज ग्रंथि भेद पण कर्यो नथी. तेथी सम्यग्जाव विना ज ते सुकृत्यो करे छे. आ प्रमाणे प्राणी अनंतीवार तेवा सुकृत्यो करे छे, परंतु तेथी विशेष प्रकारनो लाज थतो नथी. आगममां कह्युं छे के—

पाएणणंत देउल पडिमाओ कराविआओ जीवेण ।
असमंजसवित्तीए न हु सुध्धो दंसणलवो वि ॥ १ ॥

जावार्थ—" जीवे प्राये करीने अनंतीवार चैत्यो तथा प्रतिमाओ करावी छे, पण ते असमंजस वृत्तिथी (मिथ्यादृष्टिथी) करावेली होवाथी शुद्ध दर्शन (समकित)नो एक लेश पण पाम्यो नथी. " (आ गाथा दर्शनरत्नाकरनी छे.)

वळी अनादि अनंत जांगे प्रथम गुणस्थानके वर्ततो कोइ अजव्य जीव घणीवार गुर्वादिक सामग्री पाम्या छतां पण कदापि कोइ पण जवमां सास्वादन स्वजावने (बीजा गुणस्थानकने) पण पामतो नथी. ते विषे त्रण भुवनना शरणभूत श्री तीर्थंकर महाराजे कह्युं छे के—

कालें सुपत्तदाणं, सम्म विसुद्ध बोहिलाभं च ।
अंते समाहिमरणं, अभव्वजीवा न पावंति ॥ १ ॥
इंदत्तं चक्कीत्तं, पंचुत्तरसुरविमाणवासं च ।
लोगंतियदेवत्तं, अभव्वजीवा न पावंति ॥ २ ॥
उत्तरनरपंचुत्तर[1] तायतीसा य पुव्वधर इंदा ।
केवलिदिक्खिय सासणि जक्खणि जक्खा य नोऽभव्वा ॥३॥

भावार्थ—" समये सुपात्र दान, सम्यक् प्रकारे विशुद्ध बोधिलाभ तथा अंते (मृत्यु समये) समाधि मरण एटला वानां अभव्य जीवो पामता नथी. इन्द्रपणुं, चक्रवर्तीपणुं, पांच अनुत्तर विमाननो वास, लोकांतिक देवपणुं, एटला वाना पण अभव्य जीवो पामता नथी. शलाका पुरुषपणुं, नारदपणुं, त्रायस्त्रिंशत् देवपणुं, चौद पूर्वधारीपणुं, इन्द्रपणुं, केवळी पासे दीक्षा तथा शासनना यक्ष अथवा यक्षिणीपणुं एटलां वाना पण अभव्य जीवो पामता नथी. "

संगम य कालसूरि कविला अंगार पालया दो वि
नोजीवगुट्ठमाहिल उदायिनिवमारओ अभव्वा ॥ १ ॥

भावार्थ—" एक रात्रीमां श्री महावीर स्वामीने एकवीश माणांत उपसर्ग करनार संगम देव, कालसौकरिक कसाइ, कपिला दासी, अंगारमर्दक आचार्य बे पालक (पांचसो मुनिने पीलनार पालक तथा कृष्णनो पुत्र पालक), नोजीवनो स्थापक गोष्ठामाहिल तथा उदायीराजानो मारनार विनयरत्न साधु–एटला आ चोवीशीमां अभव्य थया छे. "

चार सामायिक (समकित, श्रुत, देश विरति, सर्व विरति,)मां अभव्य प्राणी कदाच उत्कृष्ट पामे तो श्रुत सामायिक पामी शके छे. तेथी अधिक बीजा त्रण सामायिकनो लाभ तेने मळतो नथी.

उपर कहेला भव्य तथा अभव्य बन्ने प्रकारना जीवो मिथ्यात्ववडे युक्त

[1] उत्तर नर एटले लोकोत्तर पुरुष शलाका पुरुष जणाय छे तेनी संख्या ७० नी कई रीते गणी छे ते समजातुं नथी ६३ शलाका पुरुष उपरांत ११ रुद्र गणे तो ७४ थाय ने नव नारद गणे तो ८३ थाय कार सित्तरीमां एम गणेल छे

छता पण धर्मादिकनी मरुपणा करीने तथा छचा प्रकारनी समिति गुप्ति धारण करीने बीजाओने प्रतिबोध पमाडे छे, तथा शासनने दीपावे छे. तेथी कारणने विषे कार्यनो उपचार करवाथी तेमने दीपक समकित कहेवाय छे. आ प्रसंग उपर अंगारमर्दकाचार्यनो संबंध छे ते नीचे प्रमाणे—

अंगारमर्दक सूरिनो प्रबंध

क्षितिप्रतिष्ठित पुरने विषे श्री विजयसेन सूरिना शिष्ये एकदा रात्री म ध्ये स्वप्नमा पांचसो हाथीओथी युक्त एक सूकर जोयो. ते वात तेणे प्रातःकाळे गुरुने कही. ते सांभळी गुरु बोल्या के ' आजे कोइ अभव्य गुरु (आचार्य) पांचसो शिष्यो सहित अहीं आवशे. ' पछी ते ज दिवसे रूद्र नामना आचार्य पांचसो शिष्यो (साधुओ) सहित ते ज गाममा आव्या. ते दिवसे विजयसेन सूरिए तेमनी अशनादिकथी भक्ति करी. पछी बीजे दिवसे पोताना शिष्योने ते रुद्राचार्यनी अभव्यतानी खात्री कराववा माटे लघुनीत करवाने स्थाने गुप्त रीते कोयला पथराव्या. रात्रे ते रुद्राचार्यना शिष्यो मात्रु परठववा गया, तेव खते पगतळे कोयला दबावाथी चमचम शब्द थवा लाग्यो. ते शब्द सांभळीने ते साधुओ कोयलाने नहीं जाणवाथी जीवोनु मर्दन थाय छे एम जाणीने वारंवार प श्चात्ताप करी पोताना आत्मानी निंदा करवा लाग्या अने ते पापनु प्रतिक्रमण करवा लाग्या. पछी रुद्राचार्य पोते लघुनीत करवा उठ्या. तेणे पण चमचम शब्द सांभळ्यो तेथी तेना पर वारंवार जोरथी पग मूकी शब्द करावता बोल्या के ' अ हो ' आ अरिहंतना जीवो पोकार करे छे ' आ वाक्य विजयसेन सूरिए पोताना शिष्योने प्रत्यक्ष संभळाव्यु पछी प्रातःकाळे सूरिए रुद्राचार्यना शिष्योने कह्यु के " आ तमारो गुरु अभव्य होवाथी सेववा योग्य नथी केमके—

सप्पो इक्कं मरणं, कुगुरु दिंति अणंताइ मरणाइं ।
तो वर सप्प गहियं, मा कुगुरुसेवणं भद्दं ॥ १ ॥

भावार्थ—" सर्प (करड्यो होय तो) एक ज वखत मरण आपे छे पण कुगुरु तो अनंतभव सुधी अनंता मरण आपे छे तेथी सर्पने ग्रहण करवो श्रे ष्ठ छे कुगुरुनी सेवा करवी श्रेष्ठ नथी "

असजयं न वंदेज्जा, मायरं पियरं गुरु ।
सेवणाविय सिप्फाणं, रायाणं देवया पि वा ॥ २ ॥

जावार्थ—' संयम विनाना (असयति–विरति रहित) माता, पिता, गुरुने वदना करवी नहीं अने तेवा असयति शेठ, राजा, अथवा देवतानी सेवा पण करवी नहीं "

भठ्ठायारो सूरि, जठ्ठायाराणुविरकओ सूरि ।
उम्मग्गठ्ठिओ सूरि, तिन्नि वि मग्गा पणासंति ॥ ३ ॥

जावार्थ—" ज्रष्ट आचारवाळो सूरि, ज्रष्ट आचारवाळाने नहीं अटकावनार सूरि अने उन्मार्गनी प्ररूपणा करनार सूरि—ए त्रणे धर्म मार्गनो नाश करनारा छे. "

वहारथी आचार पाळनाराने माटे श्री अनुयोगद्वार सूत्रमा कह्यु छे के " जेओ साधुना गुणोथी मुक्त एवा साधु क्रियाओ करे छे तेओ छ जीवनिकाय पर दयावाळा होता नथी, अश्वनी जेवा चपळ होय छे, हाथीओनी जेवा निरकुश (मदोन्मत्त) होय छे, शरीरने घसारी मसारी ममळी समारी राखे छे अने धोयेला धुपेला उज्ज्वळ वस्त्रो पहेरे छे अने जिनेश्वरनी आज्ञानु उल्लंघन करी स्वच्छदपणे विचरे छे. तेओ बन्ने वखत जे आवश्यक क्रिया करे छे ते लोकोत्तर द्रव्य आवश्यक कहेवाय छे. इत्यादि " वळी श्री प्रज्ञापना सूत्रनी वृत्तिमा पण कह्यु छे के—

परमत्थ संथवो वा सुदिठ्ठ परमत्थसेवणा वा वि ।
वावन्न कुदसण वज्जणाय सम्मत्तसद्दहणा ॥ १ ॥

जावार्थ—" परमार्थ संस्तव, सुदृष्टि परमार्थ सेवना, व्यापन्न दर्शनीनु व र्जन तथा कुदर्शनीनु वर्जन--आ चार समकितनी सदहणा छे. (आ चारे सदहणानु वर्णन दृष्टात साथे पहेला स्थभमा आवी गयेल छे.)

तेथी करीने मिथ्यादृष्टिनी सेवना करवाथी आत्मगुणनी हानी थाय छे–पतन थाय छे कह्यु छे के—

जं तवसंयमहीण नियमविहुण च बंभपरिहीणं ।
त सेलसम अयतं बुडुतं बोलए अन्नं ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे तप संयमथी रहित छे, नियम विनाना छे, अने ब्रह्मचर्यथी रहित छे तेवा अयत—अविरति जीवो पथ्थरना वहाण समान होवाथी पोते बुडे छे अने बीजाने पण बुडाडे छे. "

अहीं आवश्यक निर्युक्तिनी बृहद्वृत्तिमा कहेलु एक दृष्टांत बहु उपयोगी छे. ते ए छे के—कोइ एक साधुओना समुदायमा एक साधु श्रमणगुण रहित हतो. ते हमेशां गोचरी विगेरेनी आलोचनाने वखते वारंवार पोताना आत्मानी निंदा करतो सतो प्रतिक्रमण करतो हतो. तेने जोइने घणा मुनिओ तेनी प्रशंसा करता हता. एकदा कोइ सम्यक् ज्ञानवाळा संवेगी साधु त्यां आव्या. तेमणे तेनो प्रपंच जाणीने बीजा साधुओने कह्यु के " एक समृद्धिवाळो गृहस्थ दर वर्षे पोताना घरमां सर्व रत्नादिक भरी पुण्यने माटे ते घर बाळी देतो हतो ते जोइने सर्व लोको तेनी प्रशंसा करता हता के ' अहो ! आ गृहस्थनु रत्नादिक पर केवु निर्लोभीपणु छे ? ' अन्यदा तेणे रत्नादिकथी भरीने पोतानु घर अग्निथी सळगाव्यु. ते वखते प्रचंड वायु वावाथी अग्निनी ज्वाळा एटली बधी वृद्धि पामी के आखु नगर बळीने भस्म थइ गयु तेथी राजाए ते गृहस्थने दरिद्री करी (सर्वस्व लइ लइने) नगर बहार काढी मूक्यो. बीजा कोइ नगरमा कोइ वणिक ते प्रमाणेज पोतानु घर बाळवा तैयार थयो तेनी खबर थता तेनु परिणाम अशुभ जाणीने राजाए प्रथमथी ज तेने गाम बहार काढी मूक्यो. तेथी आखा नगरना लोको सुखी थया हे मुनिओ ! ते ज प्रमाणे आ साधु पण बहारथी बधो आडंबर करे छे, त तमोने पण अनर्थकारक छे, माटे तेनी प्रशंसा के सेवा करवी बीलकुल योग्य नथी. तेनो परिचय पण हानीकारक छे " ते सांभळीने बधा साधुओ ते बाह्याचारीनो त्याग करीने पोतपोताना धर्मध्यानमां तत्पर थया.

माटे हे साधुओ ! तमे पण आ अभव्य गुरुनो त्याग करी शुद्ध चारित्र नु पालन करो " ते सांभळीने रुद्राचार्यना शिष्यो विस्मय पामी विचार करवा लाग्या के " अहो ! आ रुद्राचार्यनो कोइ अलौकिक क्रियादंभ छे के जेथी आटला वखत सुधी आपणा जाणवामा पण ते आव्यो नहीं. अने तेथी ज तेनी

आपणे आवश्री मुदत सुधी सेवा करी." आ प्रमाणे विचारीने तेओए ते अज्ञ-
न्न गुरुनो त्याग कर्यो. अने संयमनुं प्रतिपालन करीने स्वर्गे गया.

त्यांथी चवीने ते पांचसो दिलीप राजाना पुत्रो थया. ते पुत्रो युवावस्था
पाम्या, त्यारे हस्तिनापुरमा कोइ राजपुत्रीनो स्वयंवर थतो हतो त्यां गया. ते व-
खते रुद्राचार्य (अंगार मर्दक)नो जीव घणा जवोने विषे भ्रमण करीने उंट थ
यो हतो. ते उंट पर घणो जार जरीने तेनो स्वामी ते ज गाम पासेथी नीकळ्यो.
ते उंटने जारने लीधे वराम मारतो जोइने ते पांचसो कुमारो विचार करवा लाग्या
के " अहो ! आ उंट पूर्व कर्मने योगे आ जवमां अनाथ अने अशरण थइने म-
हा दुःख पामे छे. श्री देवेन्द्र आचार्ये कर्मग्रंथमां कह्युं छे के—" तिरियाउ
गूढहियओ सढो ससल्लो. इत्यादि—गूढ हृदयवाळो, शल्यवाळो अने शठ-
तावाळो प्राणी तिर्यंचनु आयुष्य बांधे छे. विगेरे " ए रीते चिंतवता ते
पांचसो कुमारोने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयु. तेथी तेओए पोताना पूर्वजव
दीठो एटले तेने पूर्व जवनो उपकारी गुरु जाणीने तेना स्वामी पासेथी धन
आपी छोडाव्यो अने दुःख रहित कर्यो. पछी ते सर्वे कुमारो आत्र जवनाटक जो-
इ चारित्र ग्रहण करी केवळज्ञान पामीने मोक्षे गया.

" अंगार मर्दक आचार्य बहारथी विरागता धरावतो हतो. तेना
पांचसो शिष्योए मोक्षनुं साधन कर्युं पण ते तो जवमां जटक्यो. माटे दीपक
समकितवाळानी सेवा करवी नहीं. अने शुजमतिवाळा जीवोए शुद्ध श्रद्धा
धारण करवी. "

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तम्भे षष्ठितम
व्याख्यानम् ॥ ६० ॥

व्याख्यान ६१ मुं.

समकितनुं वस्तु स्वरूप

मिथ्यात्वपुद्‌गलाभावात् प्रदेशाः सन्ति चात्मनः ।
ते सर्वे स्वस्थतां नीते सम्यक्त्वं वस्तु तद्भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" आत्मप्रदेशसाथे रहेला मिथ्यात्वमोहनीना पुद्‌गलोनो अभाव (क्षय) थवाथी आत्माना सर्व प्रदेशो जे स्वस्थताने पामे छे ते वस्तुताए समकित कहेवाय छे. "

अहीं श्लोकमां मिथ्यात्वना पुद्‌गलो कह्या तेना उपलक्षणथी अनंतानुबंधि कषायना जे पुद्‌गलो छे ते पण ग्रहण करवा. तेनो क्षयोपशमादिके करीने अभाव थवाथी मलीनताने अभावे उज्वळ थयेला वस्त्रनी जेम जीवना प्रदेशाने विषे निर्मळता रुप जे श्रद्धागुण प्रगट थाय छे ते ज वस्तुताए समकित कहेवाय छे. ए आ श्लोकनो भावार्थ छे.

अहीं शिष्य शंका करे छे के—जीव मिथ्यात्वना पुद्‌गलोना ज त्रण पुंज करे छे शुद्ध, अर्ध शुद्ध तथा अशुद्ध. ते आ रीते—कोद्रवा फोतरां सहित होय छे, तेने छाण विगेरे लगाडी फोतरा काढी शुद्ध कोद्रवा करवामां आवे छे तेमां जेना तद्दन फोतरां नीकळी जाय ते शुद्ध, जेना अर्धा फोतरा नीकळी जाय—अर्धा रहे ते अर्ध शुद्ध, अने जेना एमना एम फोतरां रहे ते अशुद्ध. ए रीते त्रण पुंज करे छे. ते विषे कह्यु छे के—

दंसणमोहं तिविहं सम्मं मीसं तहेव मिच्छत्तं ।
सुद्धमद्धविसुद्धमविसुद्धं तं हवइ कमसो ॥ १ ॥

भावार्थ—" दर्शन मोहनीयना त्रण प्रकार छे. सम्यक्त्व, मिश्र अने मिथ्यात्व. तेमां पहेलो शुद्ध, बीजो अर्धविशुद्ध अने त्रीजो अविशुद्ध एम अनुक्रमे त्रण पुंज होय छे "

तो एक सरखा ज मिथ्यात्वना पुद्गलो साधक बाधक बंने प्रकारना गुणने विषे शी रीते प्रवर्ती शके ? जो बे वस्तु भिन्न भिन्न होय, तो तेम घटी शके. जो एम कहो के ते मिथ्यात्वना पुगद्लोमाथी मदनपणु (मेलापणु) जतुं रह्यु तेथी ते शुद्ध सम्यक्त्व मोहनीय थाय छे तो पछी तेमां मदन (मेला) पणुं शुं ? अर्थात मेलापणु क्यां रह्युं के जेथी ते मिथ्यात्वना पुदगलो कहेवाय ? "

आ शकानो गुरु जवाब आपे छे के—चार प्रकारना (चोठाणीया) महारसने स्थाने रहेला (चोठाणीया रसवाळा) मिथ्यात्वना पुद्गलो मिथ्यात्वरुप बाधकपणाने तथा विभावपणाने पामी शके छे. परंतु कोदराना फोतराना त्यागनी जेम ते पुद्गलोमाथी महारसना अभावे करीने अनिवृत्ति करण करवाथी एक ठाणीयो रस कर्यो. तेथी यथार्थ वस्तु परिणामनो व्याघात न करे एवुं समकित मोहनीय थाय छे. तेमां काइक शकादिक उत्पन्न थाय छे तेथी तेने मोहनीय कह्यु छे. ते समकित मोहनीयनो सर्वथा क्षय थयाथी चरमदर्शन (क्षायिक समकित) थाय छे. तेमा कदापि शकादिक अतिचार लागता ज नथी. आ रीते पुद्गलो भिन्न भिन्न नहीं छता पण तेना त्रण प्रकार थाय छे. तेमां काइ शंका करवा जेवुं नथी. "

हवे समकित दृष्टिनुं ज्ञान तेज ज्ञान कहेवाय छे ते विषे कहुं छे के—

सदाद्यनन्त धर्माढ्यमेकैक वस्तु वर्तते ।
तत्तथ्यं मन्यते सर्व श्रध्धावान् ज्ञानचक्षुभिः ॥ १ ॥

भावार्थ—" दरेक वस्तु सत्, असत्, विगेरे अनंत धर्म युक्त छे ते सर्व ज्ञानचक्षुए करीने श्रध्धावान् सत्य माने छे. "

एकान्तेनैव भाषन्ते वस्तुधर्मान् यथा तथा ।
तस्मादज्ञानता ज्ञेया मिथ्यात्विनां निसर्गजा ॥ २ ॥

भावार्थ—" मिथ्यात्वीओ सर्व वस्तुना पृथक् पृथक् धर्मोने जेम तेम (कोइक युक्तिथी) एकातपणे ज कहे छे. माटे ते मिथ्यात्वीओनी स्वाभाविक ज अज्ञानता छे एम जाणवु "

दरेक वस्तु सत् असत् विगेरे अनत धर्म युक्त छे. जेम एक घट रुपी वस्तु

छे ते पोताना रक्तपणादिक गुणे करीने सत् छे अने बीजा पटादिकना धर्म करीने असत् छे आदि शब्दथी अहीं पुद्गलोनी साथे एकपणु (अभिन्नपणु) छे, व्यवहारथी मानेलु छे के घट छे, निश्चयथी तो पट, लकुट (लाकडी), शकट, सुवर्ण विगेरे धर्म युक्त छे तेथी आ घट चूर्ण रूप थयो छतो कदाचित् ते ते भावने पण पामे छे. तेवी रीते जीव पण गायपणु, हाथीपणुं, स्त्रीपणु, पुरुषपणु विगेरे पामे छे ते व्यवहारथी जाणवु, निश्चयथी तो पूर्वे कहेला सर्व धर्मथी युक्त अने अच्छेद्य, अभेद्य विगेरे गुण युक्त छे. आ प्रमाणे सर्वत्र समकितीने ज्ञान होय छे पण बीजाने तवु ज्ञान होतु नथी, अज्ञान होय छे. महाभाष्यमा कह्यु छे के—

सदसदविसेसणाओ भवहेउ जहट्ठिओवलंभाओ ।
नाणफलाभावाओ मिच्छदिट्ठिस्स अन्नाणं ॥ १ ॥

भावार्थ—" मिथ्यात्वीनु ज्ञान सत् असत् विगेरे विशेष धर्मथी युक्त एवा वस्तुना परिज्ञान रहित होय छे, भवना हेतुभूत छे एटले के ते सत्तावन बधना हेतुने यथार्थपणे जाणतो नथी, यदृच्छापणु—स्वेच्छाचारीपणु छे अने ज्ञाननुं फळ जे विरति तेनो अभाव छे. तेथी मिथ्यादृष्टिनुं ज्ञान ते अज्ञान ज जाणवु "

हवे समकित सते ज बुद्धिना आठ गुण पण होय छे ते विषे कहे छे.

अष्टौ बुद्धिगुणाः सन्ति शुश्रूषाश्रवणादयः ।
सम्यक्त्ववान् तदाढ्यः स्यादित्याहित चिदात्मभिः ॥१॥

भावार्थ—" शुश्रूषा, श्रवण विगेरे बुद्धिना आठ गुणो छे ते गुणो समकितवानने होय छे. एम ज्ञानी पुरुषोए कह्यु छे. " ते आ प्रमाणे—

सुश्रूषा एटले सांभळवानी इच्छा ते विना श्रवणादिक गुणो प्राप्त थता नथी बीजो गुण श्रवण एटले शास्त्रादिक सांभळवु ते. श्रवण करवाथी ज मोटा गुण प्राप्त थाय छे ते विषे पाभशकमा कह्यु छे के—

क्षाराम्भस्त्यागतो यद्वन्मधुरोदकयोगतः ।
बीजं प्ररोहमादत्ते तद्वत्तत्त्वश्रुतेर्नरः ॥ १ ॥

भावार्थ—" खारां जळनो त्याग थवाथी अने मीठा जळनो योग थवाथी

बीज अंकुराने पामे छे. ते ज प्रमाणे तत्त्वनु श्रवण करवाथी माणस बोधीबीजना अंकुरने पामे छे. "

क्षारांजस्तुल्य इह च, जवयोगोऽखिलो मतः ।
मधुरोदकयोगेन, समा तत्त्वश्रुति स्मृता ॥ १ ॥

जावार्थ—" अहीं खारा जळ जेवो समग्र जवयोग जाणवो अने मीष्ट जळना योग समान तत्त्वज्ञाननुं श्रवण समजवु. "

त्रीजो गुण ग्रहण एटले श्रवण करेला शास्त्रनु ग्रहण करवु. चोथो गुण धारण एटले ग्रहण करेलाने भूलवु नहीं. पाचमो गुण उहा एटले ते संबंधी विचार करवो ते सामान्य ज्ञान. छठो गुण अपोह एटले अन्वयव्यतिरेकादिके विशेष विचार करवो ते विशेष ज्ञान सातमो गुण अर्थविज्ञान एटले उहा अने अपोहना योगथी मोह, सदेह, विपर्यास (उलटी मति) विगेरेनो नाश थवाथी जे ज्ञान प्रगट थाय-ते. अने आठमो गुण तत्त्वज्ञान एटले ' आ आम ज छे ' एवो निश्चय थवो ते. आ आठ बुद्धिना गुणो छे, ते आठे गुणोथी युक्त दर्शन (समकित) होय छे केमके तेथी (समकितथी) सर्व पदार्थना परमार्थनी पर्यालोचना थइ शके छे. ते विषे सुबुद्धि मंत्रीनु दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे छे—

सुबुद्धि मत्रीनु दृष्टान्त

चपा नगरीमा जितशत्रु नामे राजा हतो तेने सुबुद्धि नामे मंत्री हतो. ते जैनधर्मी हतो. एकदा राजा मनोहर षड्‌रसमय स्वादिष्ट रसवती करावीने घणा सामत, मंत्री विगेरे सहित जोजन करवा बेठो. जमता जमता स्वादलुब्ध राजा "अहो ! आ रसवती केवी स्वादिष्ट छे? अहो ! आनी सुगध केवी सरस छे ?" इत्यादि वाक्योथी वारंवार तेनी प्रशसा करवा लाग्यो. ते वखते सुबुद्धि मत्री विना बीजा सर्वे सामंतो विगेरे पण रसोइना स्वाद विगेरेनी प्रशसा करवा लाग्या. सुबुद्धि तो सारी के नरसी काइ पण बोल्यो नहि. तेथी राजाए तेने पूछ्युं के " हे मत्री ! तमे केम आ रसोइनी काइ पण प्रशसा करता नथी ? शुं तमने आ रसोइ सारी नथी लागती ?" मत्रीए कह्यु के " हे स्वामी ! मने शुज के अशुज वस्तु जोइने काइपण विस्मय थतो नथी केमके पुद्गलो स्वजावथी ज घमीमां सुगधी, घडीमा दुर्गंधी, घमीमा सुरस, घमीमा नीरस थइ जाय छे. तेथी तेनी

प्रशंसा करवी के निंदा करवी युक्त नथी ” राजाए तेना वचन पर विश्वास आण्यो नहीं. एक दिवस राजा सर्व परिवार सहित उद्यानमां जतो हतो. त्यां मार्गमां एक नगर फरती खाइ हती ते आवी. तेमां जळ थोडुं हतुं, तेथी ते जळमां कीडा पड्या हता, दुर्गंध मारतुं हतुं अने सूर्यना तापथी उकळी गयेलुं हतुं तेनी दुर्गंधथी राजाए तथा बीजाओए नासिकाने वस्त्रथी ढांकी दइने ते पाणीनी दुर्गंधता विषे निंदा करी के ' अहो ! आ जळ महा दुर्गंधी छे. ' ते सांभळी मंत्रीए कह्युं “ हे राजा ! आ जळनी निंदा करवी युक्त नथी केमके आ ज जळ काळे करीने प्रयोग वडे दुर्गंधी छतां पण सुगंधी थइ जाय छे.” ते सांभळी राजाए तेना वाक्यने स्वीकार्युं नहीं. पछी मंत्रीए गुप्त रीते पोताना खानगी माणस पासे ते खाइनुं जळ मगावी वस्त्रथी सारी रीते गळीने एक कोरा माटीना घडामां नाख्युं. पछी तेमां निर्मळी (कतक) फळनुं चूर्ण नांखी ते जळने निर्मळ कर्युं. पाछुं फरी पी गळीने बीजा कोरा घडामां नाख्युं ए प्रमाणे एकवीश दिवस सुधी ते जळने गळी गळीने जुदा जुदा घडामां नाख्युं. एटले ते जळ तद्दन स्वच्छ, स्वादिष्ट अने शीतळ तथा सर्व जळ करतां अधिक सुंदर थइ गयुं पछी तेमां सुगंधी पदार्थ नाखी तेने सुवासित कर्युं. पछी ते जळ मंत्रीए राजाना जळरक्षकने आपीने कह्युं के ' आ जळ जमवा आव्ये राजाने पीवा आपवुं. ' पछी राजाए ज्यारे पीवा माटे जळ मांग्युं त्यारे तेणे ते जळ आप्युं ते जळनुं पान करी तेना अलौकिक गुणो जोइ राजाए पूछ्युं के ' आवुं अद्भुत स्वादिष्ट जळ क्यांथी ? ' जळरक्षके जवाब आप्यो के ' हे स्वामी ! आ जळ मंत्रीए मने आप्युं छे. ' राजाए मंत्रीने पूछ्युं, त्यारे मंत्रीए कह्युं के ' हे स्वामी ! जो मने अभय आपो तो आ जळनी हकीकत कहुं. ' ते सांभळी राजाए तेने अभय आप्युं. त्यारे मंत्रीए कह्युं के ' हे राजा ! पेली खाइनुं आ पाणी छे. ' ते सांभळी राजाए ते वात मानी नहीं. त्यारे मंत्रीए राजानी समक्ष ते खाइनुं जळ मगावी पूर्वे कहेली विधि प्रमाणे ते जळने स्वादिष्ट बनाव्युं. ते जोइ राजा विस्मय पामी बोल्यो के ' हे मंत्री ! आवी रीति ते क्यांथी जाणी ? ' मंत्रीए कह्युं “ हे देव ! जिनागम सांभळवाथी अने सद्दहवाथी आ सर्व पुद्गळना परिणामनी खबर पडे छे हे राजा ! पुद्गलोनी अचिंत्य शक्ति छे अनेक प्रकारे परिणाम पामवानो तेनो स्वभाव छे पण ते बधा स्वभाव तीर्थं जावे वर्ते छे ते सर्व ज्ञानीओ ज्ञानथी जाणी शके छे छद्मस्थ जीवो ज्ञानावरणीयादि

कर्मावरणे आवरण पामेला होवाथी सम्यक् प्रकारे जाणी शकता नथी. तो पण तेओ शास्त्रना ते वचनोने अवश्य सदहे छे.

वळी हे राजा ! आ जगतमां वस्तुनी अनुपलब्धि (अप्राप्ति) बे प्रकारे होय छे. एक तो सत् (छतो) वस्तुनी अप्राप्ति अने बीजो असत् (अछती) वस्तुनी अप्राप्ति तेमा ससलानां शींगडां, आकाशनु पुष्प विगेरे असत् वस्तुनी अप्राप्ति कहेवाय छे. एटले ते वस्तुओ दुनियामा छे ज नहीं. बीजी सत् (छती) वस्तुनी अप्राप्ति ते आठ प्रकारनी छे. तेमा अति दूर रहेली वस्तुनी प्राप्ति न थाय ते पहेलो प्रकार छे. तेना पण देश, काळ अने स्वभाव ए त्रण भेद छे. जेम कोइ माणस बीजे गाम गयो, तेथी ते देखातो नथी. तेथी ते माणस शुं नथी ? छे, पण देश थकी अति दूर रहेलो होवाथी तेनी प्राप्ति थती नथी. ए प्रमाणे समुद्रने पेलेपार मेरु विगेरे छे, ते सत् छतां पण दूर होवाथी देखाता नथी. तथा काळथी दूर होय ते पण देखाता नथी. जेम मृत्यु पामेला पोताना पूर्वजो तथा हवे पछी थवाना पद्मनाभ जिनेश्वर विगेरे काळथी दूर होवाने लीधे देखाता नथी. त्रीजो प्रकार स्वभावथी दूर होय ते पण देखाता नथी. जेम आकाश, जीव, भूत, पिशाच विगेरे देखाता नथी. ते पदार्थो छे पण चर्मचक्षु गोचर थइ शकता नथी आ त्रण भेद पहेला विप्रकर्ष (दूर) नामना प्रकारना छे. बीजो प्रकार अति समीप जे वस्तु होय, ते पण देखाती नथी. जेम नेत्रमा रहेलु काजळ देखातुं नथी, ते शुं नथी ? छे ज. इन्द्रियनो घात थवाथी वस्तु देखाय नहीं ते त्रीजो प्रकार छे. जेम अंध, बधिर विगेरे माणस रूप, शब्द विगेरेने जोइ सांभळी शकतो नथी. तो तेथी शु रूप, शब्द विगेरे नथी ? छे ज तथा मनना असावधानपणाथी वस्तु देखाय नहीं, ते चोथो प्रकार छे. जेम अस्थिर चित्तवाळो मनुष्य पोतानी पासे थइने जता हाथीने पण जोइ शकतो नथी. तो शु हाथी त्यांथी गयो नथी ? गयो छे. तथा अति सूक्ष्मपणाथी वस्तु देखाय नहीं ते पाचमो प्रकार छे. जेम के जाळीयानी अंदर पसता सूर्यना किरणोमा रहेली त्रसरेणु (रजकणो) तथा परमाणु द्व्यणुक विगेरे तेमज सूक्ष्म निगोदना जीवो विगेरे देखाता नथी. तेथी शु ते नथी ? छे ज. तथा कोइ वस्तुना आवरणथी कोइ वस्तु देखाय नहीं ते छठो प्रकार छे. जेम भींतने अतरे रहेली वस्तु देखाती नथी. तो ते वस्तु शुं नथी ? छे. चंद्र मंडळनो पाछळनो भाग देखातो नथी. केमके ते आगळना भागथी

व्यवहित थयेलो छे. तेमज शास्त्रना सूक्ष्म अर्थ पण मतिनी मदताने लीधे जाणी शकातो नथी. तथा एक वस्तु वडे बीजी वस्तुनो पराजय थवाथी ते (बीजी) वस्तु देखी शकाती नथी ते सातमो प्रकार छे. जेम सूर्यादिकना तेजथी पराजय पामेला ग्रह, नक्षत्रो आकाशमां प्रकट छतां पण देखाता नथी. तेमज अंधकारथी पराजय पामेलो घडो देखातो नथी. तो शुं ते वस्तु नथी ? छे ज. तथा समान वस्तु साथे मळी जवाथी जे देखाय नहीं ते आठमो प्रकार छे जेम कोइना मगना ढगलामां एक मुठी आपणा मग नाख्या अथवा कोइना तलना ढगलामां आपणे तल नाख्या ते आपणे जाणीये छीये, तो पण आपणे नाखेला मग अथवा तल देखाता नथी. (जुदा पाडी शकता नथी.) तेमज जळमां नांखेलुं लवण, साकर विगेरे जुदु देखी शकातु नथी तो तेथी शु ते जळमा लवण के साकर नथी ? छे ज आ प्रमाणे आठ प्रकारे छती वस्तुनी पण अप्राप्ति थाय छे.. ए प्रमाणे पुद्गल तथा जीव विगेरेमा अनेक स्वभावो विद्यमान छे, ते अनुक्रमे प्रकट थाय छे, परंतु ते सर्व स्वभावोनी विप्रकर्षादिक कारणोने लीधे प्राप्ति थइ शकती नथी. एम सर्वत्र जाणवु.

अहीं कोइ शंका करे के "उपर बतावेला प्रकारोमां देवदत्त विगेरे देशांतर गयेला देखाता नथी एम कह्यु, तेओ जो के आपणने अदृश्य छे, तो पण तेओ जे देशमां गया छे ते देशना लोकोने तो तेओ प्रत्यक्ष छे, तेथी तेओनी सत्ता (होवापणु) मानवामां अमने बाधो नथी. पण जीवादिक तो कोइ पण कदापि देखी शकता नथी, तो ते जीवादिक छे एम शी रीते मानी शकाय?" आनो जवाब ए छे के "जेम परदेश गयेला देवदत्तादिक केटलाकने प्रत्यक्ष होवाथी तेमनु होवापणु मानी शकाय छे, तेम जीवादिक पदार्थो पण केवलीने प्रत्यक्ष होवाथी तेमनुं होवा पणु मानी शकाय छे. अथवा परमाणुओ निरंतर अप्रत्यक्ष छे तो पण तेना (परमाणुना) कार्यथी तेमनी सत्ता (होवापणु) अनुमानथी सिद्ध थाय छे, तेम जीवादिक पण तेना कार्यथी अनुमान वडे सिध्ध थाय छे."

आ प्रमाणे सिध्धान्तना वाक्यनी युक्तिओथी सुबुद्धि प्रधाने राजाने प्रतिबोध पमाड्यो. तेथी राजा देशविरति (बार व्रत) अंगीकार करी श्रावक थयो. पछी केटलेक काळे राजा तथा प्रधाने प्रव्रज्या ग्रहण करी. अने अनुक्रमे मोक्ष पदने पाम्या कह्यु छे के—

जियसत्तु पडिवुद्धो, सुबुद्धिवयणेण उदयनायंमि।
तह्रोवि समणसिंहा, सिद्धा इक्कारसंगधरा ॥ १ ॥

भावार्थ—" सुबुद्धिमंत्रीना वचन वडे जळना दृष्टांतथी जीतशत्रु राजा प्रतिबोध पाम्यो. अने ते बन्ने श्रमणसिंहो अगीयार अंगने धारण करी सिद्धिपदने पाम्या."

" आ चार स्तंभमा (प्रथम स्थंभमां) समग्र बुद्धिना निधानरुप समकितने घणा प्रकारे दृष्टांतो सहित देखाडयु छे. ते समकित मोक्षना सर्व शुभ हेतुओमां मुख्य (प्रथम) छे. माटे पाठकोए (भणनारे, भणावनारे, सांभळनारे) ते समकितनी प्राप्ति माटे सतत् उद्योग करवो. "

॥ इत्युपदेशप्रासादे चतुर्थस्तम्भे एकषष्टितम व्याख्यानम् ॥ ६१ ॥

॥ इति चतुर्थ स्तंभः ॥

॥ इति प्रथम खंड ॥

खास खरीदो ने वांचो

जैन वर्गमां हालमा पुस्तको प्रसिध्ध करवानुं काम घणु सतोपकारक चालवा लाग्यु छे. जुदी जुदी चार पाच संस्थाओए ते काम उपाडी लीधु छे. श्रीमंत गृहस्थो ते कार्यमां पोताना द्रव्यनो व्यय करवा लाग्या छे. गुजराती जापाना वांचनाराओने माटे नीचेना पुस्तको अमूल्य लाज आपनारा छे.

१ उपदेश प्रासाद जाषांतर	जाग १ लो (स्तंज १ थी ४)		१–८–०
२	”	जाग २ जो (स्तंज ५ थी ९)	१–८–०
३	”	जाग ३ जो (स्तंज १० थी १४)	१–८–०
४	”	जाग ४ थो (स्तंज १५ थी १९)	२–०–०
५	”	जाग ५ मो (स्तंज २० थी २४)	२–०–०

आ पांच जागमां थइने ३६० व्याख्यानो छे. ते दरेक व्याख्यान उपदेशक होवा साथे कथाओवाळा होवाथी रसिक छे. समकित अने श्रावकना व्रतो उपरांत बीजी अनेक बाबतो समावेली छे. तेनी खरी खुबी वांचवाथीज जाणी शकाय तेम छे. आ पांचे जाग जेगा खरीदनारना रु. ७–८–० लेवामां आवे छे.

६ उपदेशमाळा मुळ सहित जाषांतर (७० कथाओ सहित) कीं. रु. १–८–०

(बुकनु प्रमाण घणु मोटु होवा छतां अन्य सहाय मळेली होवाथी किंमत बहुज ओछी राखवामां आवी छे. ग्रंथ अपूर्व छे)

७ श्री त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र जाषांतर		(पर्व १ लुं–२ जु)	२–४–०
८	”	(पर्व ३–४–५–६)	२–४–०
९	”	(पर्व ७ मुं)	१–४–०
१०	”	(पर्व ८ मु–९ मु)	१–१२–०
११	”	(पर्व १० मु)	१–८–०

आ पांच जागमां २४ तीर्थंकर, १२ चक्रवर्ती, ९ वासुदेव, ९ बळदेव अने ९ प्रतिवासुदेव मळी ६३ महापुरुषोना चरित्रो बीजी अनेक कथाओ सहित तेमज उपदेशथी जरपूर छे. पांचे जाग जेगा खरीदनारना रु. ८ लेवामां आवे छे.

१२ श्री अध्यात्म कल्पद्रुम (विवेचन साथे) बीजी आवृत्ति कीं. रु १–४–०

आ ग्रंथ उपदेशथी जरपूर छे. ७५ फारमनी बुक छतां किंमत फक्त



પ્રમાણે જ રાખવામાં આવી છે. ટુંકા વખતમાં બીજી આવૃત્તિ કરવી પડીછે.

૧૩ ચરિત્રાવળી ભાગ ૧ લો. ૧-૦-૦

૧૪ „ ભાગ ૨ જો. ૧-૦-૦

૧૫ „ ભાગ ૩ જો. ૧-૦-

આ ત્રણે ભાગમાં અનેક ચરિત્રો, વાર વ્રત ઉપર કથાઓ વિગેરે રસિકરસિક વિભાગ જ ચુટીને દાખલ કરવામાં આવેલ છે.

૧૬ પ્રતિક્રમણના હેતુ. (જેના આઠ પર્યાય ઉપર આઠ કથાઓ સહિત) ૦-૬-૦

૧૭ શ્રી વિજયચદ્ર કેવળી ચરિત્ર ભાષાંતર (આઠ પ્રકારની પૂજા ઉપર આઠ કથાઓ તેમજ બીજી કથાઓ યુક્ત) ૦-૬-૦

૧૮ પ્રબોધ ચિંતામણિ ભાષાંતર (આગામી ચોવીશીમાં થનારા ગણધરે કહેલુ પોતાનુ પૂર્વ વૃત્તાંત. મોહ વિવેકનુ સ્વરૂપ) ૦-૮-૦

૧૯ શ્રી શત્રુંજય માહાત્મ્ય ભાષાંતર (શ્રી ધનેશ્વરસૂરિ વિરચિત દશ હજાર શ્લોકના ગ્રંથનું ભાષાંતર. પણ રસીક ને ઉપદેશક) ૨-૮-૦

૨૦ શ્રી જૈનધર્મ પ્રસારક સભાનો જ્યુબીલી અંક (ખાસ વાંચવા લાયક અને અનેક પ્રકારનો ધર્મ લેવા યોગ્ય) ૦ ૧૨ ૦

આ શિવાય બીજી પણ અમારી સભા તરફથી છપાયેલી ૫૦ ઉપરાંત બુકો છે, તે તેનુ લીસ્ટ મગાવીને ખરીદ કરવા યોગ્ય છે

શ્રી જૈનધર્મ પ્રસારક સભા

ભાવનગર.

लइ कने बेसाडीने नगर बहार नीकळी. अनुक्रमे चालती चालती ते धात्री पृष्ठ चपा नगरीना उद्यानमां आवी. ते वखते ते नगरीनो राजा पुत्ररहित मरण पामेलो होवाथी प्रधानोए पंच दिव्य कर्या हता. ते पचदिव्ये उद्यानमां सुतेला पेला पुत्रने प्रमाण कर्यो. तेथी प्रधानोए तेने राज्याभिषेक कर्यो. एटले ते धात्री सहित त्यां रही राज्यनु पालन करवा लाग्यो

अहीं केटलेक काळे काष्ठ श्रेष्ठी परदेशथी घेर आव्यो. त्यां पुत्र, धात्री, मेना अने कूकडो ए चार वस्तु तेणे जोइ नहीं, तेथी तेणे पोपटने ते विषे पूछयु त्यारे पोपट बोल्यो के ' हे श्रेष्ठी ! मने पांजरामांथी बहार काढो, तो हु निर्भय थइने सर्व वृत्तान्त कहु. ' त्यारे श्रेष्ठीए तेने पांजरामांथी मुक्त कर्यो. एटले ते पोपटे वृक्षपर बेसीने वज्रा तथा ब्राह्मणना अयोग्य संबधनी सर्व वात कही. ते सांभळीने श्रेष्ठीए वैराग्य पामी तरतज दीक्षा लीधी.

राजाना भयथी वज्रा पण ब्राह्मणने लइ त्यांथी नीकळी गइ. तेओ चालता चालता दैवयोगे पुत्रना राज्यवाळा नगरमांज आवीने रह्या काष्ठ साधु पण विहारना क्रमे फरता फरता तेज नगरमां आव्या, अने अकस्मात् ते वज्राने ज घेर भिक्षा लेवा गया वज्राए पोताना पतिने ओळखीने विचार्यु के ' जो आ मने ओळखशे, तो मारी हीलना करशे. ' पछी तेणीए भिक्षाना पात्रमां भिक्षानी साथे पोतानु एक आभूषण मूकी दइ पोकार कर्या तेथी राजसेवकोए ते साधुने चोर धारीने पकड्या अने राजा पासे लइ गया ते वखते राजा पासे बेठेली धात्रीए तेमने ओळखीने राजाने कह्यु के ' आ तारा पिता छे. ' एटले राजाए सर्व वृत्तांत जाणी पिताने हणवा इच्छती माताने गाम बहार काढी मूकी, अने पोते श्रावक थयो. पछी पोताना पिताने बहु आग्रहथी तेणे त्यां राख्या. राजा हमेशां सर्व समृद्धि सहित गुरुने वंदना करवा माटे जवा लाग्यो ए प्रमाणे जैन शासननी उन्नति जोइने ब्राह्मणो द्वेष करवा लाग्या, तेथी तेओ मुनिना छिद्र जोवा लाग्या. पण ते तपस्वी मुनिमां एक पण दूषण जोवामां आव्यु नहीं, तेथी निराश थइने ब्राह्मणोए प्रपच कर्यो तेओए एक गर्भवती दासीने द्रव्यनो लोभ बतावीने कह्यु के ' तु आ साधुने कलंक आप. ' द्रव्यना लोभथी तेणीए हा कही. पछी काष्ठ साधु विहार करवा माटे तैयार थया अने राजा विगेरे घणा लोको त्यां आव्या. ते वखते पेली दासी साध्वीनो वेष पहेरी मुनि पासे आवी सर्व सांभळतां बोली के

'हे पूज्य ! आ तमाराथी रहेला गर्भने एमने एम मूकीने तमे विहार करो छो, ते युक्त नथी.' एम कहीने तेणीए मुनिनुं वस्त्र पकड्युं. एटले आश्चर्य पामेला मुनि बोल्या के 'हे मुग्धा ! शामाटे असत्य बोलीने तु अमने कोप पमाडे छे ?' ते बोली के 'हुं असत्य बोलती नथी' ते सांभळीने शासननी उन्नतिने माटे सर्व लोक समक्ष लब्धिवान मुनि बोल्या के 'जो आ गर्भ माराथी रहेलो होय तो ते तेमने तेम स्थित रहो, परंतु जो आ गर्भ माराथी रहेलो न होय, तो तत्काल तेणीनी कुक्षि भेदीने नीकळी पडो' एम कहेताज ते गर्भ तेनी कुक्षि-मांथी नीकळीने पृथ्वीपर पड्यो, एटले भयथी कंपती ते दासी बोली के 'हे पूज्य' में ब्राह्मणोना कहेवाथी आवुं अकृत्य कर्युं छे, माटे मारापर क्षमा करो.' एम कहीने ते मुनिना पगमां पडी. ब्राह्मणो पण कंपता कंपता त्यां आवीने मुनिना पगमां पड्या. पछी राजा विगेरेनी विनतिथी मुनिनो क्रोध शांत थयो. सर्व लोको मुनिना उपदेशथी धर्म पाम्या, अने ब्राह्मणोए जैन धर्मनी निंदा करवी मूकी दीधी. मुनि पण उत्कृष्ट तपवडे सर्व कर्मनो क्षय करी मुक्ति पदने पाम्या.

"हे भव्य जीवो ! जो तमने मुक्तिना सुखनी अभिलाषा होय, तो आ काष्ट मुनिनुं अद्भुत चरित्र सांभळीने विविध प्रकारनी तपस्याओ करी जिन धर्मनी उन्नति करो."

इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे एकत्रिंशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ३१ ॥

व्याख्यान ३२ मुं.

छठा विद्याप्रभावक विषे.

मंत्रयन्त्रादिविद्याभिर्युक्तो विद्याप्रभावकः ।
सघाद्यर्थे महाविद्या, प्रयुञ्जयति नान्यथा ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे मंत्र, यंत्र विगेरे विद्याथी युक्त होय, ते विद्याप्रभावक कहेवाय छे. ते विद्या प्रभावक संघ विगेरेना कार्यने माटे महाविद्यानो उपयोग करे छे, बीजा कार्य माटे तेनो उपयोग करता नथी. " अहीं हेमचंद्राचार्यनुं दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

श्री हेमचन्द्र सूरिनी कथा.

धंधुका गाममां मोढ ज्ञातिमां उत्पन्न थयेला चांगदेवे देवचंद्रसूरि पासे दीक्षा लीधी गुरुए अनुक्रमे तेनु हेमचंद्रसूरि एवुं नाम पाम्युं अनुक्रमे पाट एमा कुमारपाल राजा थये सते श्री हेमसूरिए त्यां जइने उदयन मंत्रीने पूछ्युं के—' राजा अमने कोइवार संभारे छे के नहीं ? ' उदयने कह्यु के ' संभारता नथी.' त्यारे सूरिए कह्यु—हे मंत्री ! आजे तु राजाने एकांतमा कहेजे के ' आजे तमारे नवी राणीने महेले सुवा जवु नहीं. ' मंत्रीए तेज प्रमाणे कह्यु. ते रात्रे नवी राणीना महेल पर वीजळी पडी, तेथी ते महेल बळी गयो, राणी पण मृत्यु पामी. ते जोइ आश्चर्य पामेला राजाए मंत्रीने पूछ्यु के, तने आवी खबर प्रथम केवी रीते पडी ? ' आवु उत्कृष्ट ज्ञान कोनु छे ? ' त्यारे मंत्रीए ' हेमसूरिए ते वात कही हती ' एम कह्यु. ते सांभळीने राजा तरतज हेमसूरि पासे जइ तेमने प्रणाम करीने बोल्यो के ' हे पूज्य ' आपनो मारापर परम उपकार छे माटे आ राज्य ग्रहण करीने मारा पर अनुग्रह (कृपा) करो. ' सूरि बोल्या " हे राजा ! अमारे राज्यनो खप नथी, परंतु—

कृतज्ञत्वेन राजेन्द्र, चेत्प्रत्युपचिकीर्षसि ।
आत्मनीने तदा जैनधर्मे धेहि निज मनः ॥१॥

भावार्थ—" हे राजेन्द्र ! जो तु कृतज्ञपणाए करीने (करेला गुणने जाणवापणाए करीने) प्रत्युपकार करवा इच्छतो हो, तो आत्माने हितकारक एवा जैन धर्मने विषे तारु मन स्थापन कर अर्थात् जैन धर्मनो स्विकार कर. "

ते सांभळीने राजा बोल्यो, 'हे स्वामी ! आप जेम कहेशो तेम हु करीश.' एकदा राजा सूरिने साथे लइने सोमेश्वरनी यात्राए गयो त्यां राजाए महादेवने वंदना करी. ते वखते राजाने ब्राह्मणोए कह्यु के " जैन धर्मीओ तेमना तीर्थंकर

शिवाय बीजा देवने नमता नथी. " ते सांभळीने राजाए सूरिने कह्युं के 'हे पूज्य ! आप शिवने वंदना करो.' त्यारे सूरि बोल्या के—

भवबीजाङ्कुरजनना, रागाद्याः क्षयमुपागता यस्य ।
ब्रह्मा वा विष्णुर्वा, हरो जिनो वा नमस्तस्मै ॥१॥

यत्र तत्र समये यथा तथा, योऽसि सोऽस्यभिधया यथा तथा।
वीतदोषकलुषः स चेद्भवानेक एव भगवन्नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

भावार्थ—" जेना भवबीजना अंकुरने उत्पन्न करनारा रागादिक क्षय पामेला छे, एवा ब्रह्मा, विष्णु, शिव के जिन जे होय, तेने मारो नमस्कार हो. जे ते समये, जे ते प्रकारे, जे ते नाम वडे, जे छे ते तुज छे. सर्व दोष अने पाप रहित जो कोइ होय तो तुं एकज छे, माटे हे भगवान् ! तमने मारो नमस्कार हो." १–२

आवी स्तुति सांभळीने राजा आश्चर्य पाम्यो. पछी तेणे गुरुने कह्युं के, 'हे पूज्य ! मत मतांतरनो आग्रह मूकीने खरुं तत्व शुं छे ? ते मने कहो.' सूरि बोल्या 'हे राजा ! शास्त्रनो संवाद दूर रहो, मात्र आ शिवज तमारी पासे तत्वनुं निरूपण करशे ते तमे आदरजो. पछी मध्यरात्रिए सूरिना ध्यानथी प्रत्यक्ष थइने शिवे राजाने कह्युं के, हे राजा ! श्रीतीर्थंकरोए प्ररूपित करेला स्याद्वाद तत्वनुं आचरण करवाथी तुं वांछित फळने पामीश. ते सांभळीने राजा समकितनी सन्मुख थयो.

एकदा वायुने स्थंभन करवानी क्रियामां एटले शरीरमां चालता वायुने रोकीने शरीरने हलकुं बनाववानी क्रियामां निपुण एवो देवबोधि नामनो ब्राह्मण कमळना नाळना दांडा करी, केळनां पांदडानुं आसन (शिबिका–पालखी) करी, काचा सुतरना तांतणाथी ते नाळ अने पादडां बांधी ते शिबिका नाना शिष्योना स्कंधपर उपडावी, पोते तेमां बेसीने राजसभामां आव्यो. ते जोइ विस्मय पामेला राजाए तेने सन्मान आप्युं. पछी पूजाने समये जिनेश्वरनी पूजा करता राजाने जोइने देवबोधिए कह्युं के, 'हे राजा ! तारा कुळधर्मनुं उल्लंघन करवुं तने युक्त नथी. कह्युं छे के—

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवंतु,

लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥१॥

भावार्थ—" नीतिशास्त्रमां निपुण एवा पुरुषो निंदा करो अथवा स्तुति (प्रशंसा) करो, लक्ष्मी प्राप्त थाओ अथवा मरजी मुजब चाली जाओ, आजेज मृत्यु प्राप्त थाओ, अथवा बीजा युगमां मृत्यु थाओ, तोपण धीर पुरुषो काइ पण दरकार राख्या विनाज न्यायना रस्ताथी एक पगलुं पण चलित थता नथी. "

माटे हे राजा ! तारे कुळपरंपरानो शिवधर्म छोडवो योग्य नथी." ते सांभळीने राजा बोल्यो के " सर्वज्ञे कहेलो होवाथी जैनधर्मज सत्य छे." देवबोधि बोल्यो के " हे राजा ! जो तने शिवधर्मनी प्रतीति आवती न होय, तो महेश्वरादिक त्रणे देवताओ अने तेमनी पूजा करता तारा पूर्वजोने साक्षात् अहीं आवेला जोइने तारा मुखथीज तेमने पूछी निश्चय कर " एम कहीने तेणे पोतानी विद्याशक्तिथी ते देवोने तथा कुमारपाळना पूर्वजोने प्रत्यक्ष देखाड्या ते देवो अने पूर्वजो बोल्या के—' हे वत्स ! तारे देवबोधिना कहेवा प्रमाणे करवुं. ' तेथी राजा विस्मय पामीने जड जेवो बनी गयो. त्यारे उदयन मंत्रीए कह्युं के ' हे राजा ! हेमसूरि पण अनेक विद्यामां कुशळ छे ' ते सांभळीने राजा प्रातःकाळे देवबोधि विगेरेने लइने सूरि पासे वंदना करवा आव्या, ते वखते हेमचंद्रसूरि शरीरनी अंदरना पांचे (प्राण, अपान, व्यान, उदान अने समान) वायुने रुंधीने आसनथी कांइक उंचा रही व्याख्यान आपवा लाग्या ते वखते पूर्वथी संकेत करी राखेला शिष्योए सूरिनी नीचेथी आसन (पाट विगेरे) खेंची लीधुं. एटले सूरि जमीनथी घणा उंचा रही व्याख्यान आपवा लाग्या ते जोइ राजा विगेरे सर्वे महा आश्चर्य पाम्या पछी सूरि महाराजे 'अमारा देवोने जो. ' एम कही कुमारपाळ राजाने एक ओरडामां लइ गया त्यां समवसरणमां रहेला चोवीश तीर्थंकरोनी पूजा करता तेना एकवीश पेढीना पूर्वजोने तेणे जोया तेओ (तीर्थंकरो) पण बोल्या के ' दयाधर्म पाळवाथी तुं विवेकी छो, आ हेमसूरि तारा गुरु छे, ते जेम कहे तेम करजे ' तथा तेना पूर्वजो पण बोल्या के " हे वत्स ! तें जैनधर्मनो आदर कर्यो, तेथी अमे सुगतिना भाजन थइ आवी महा ऋद्धि पाम्या छीए "

एम कही ते सर्वे अन्तर्धान (अदृश्य) थया. ते जोइ हींचका खाता मनवाळा राजाए सूरिने तत्त्व पूछ्युं के " हे महाराज ! देवबोधिए बताव्युं ते सत्य के आ सत्य ? आ बाबतमा मारु मन चकडोळे चड्युं छे. " त्यारे सूरि बोल्या के " हे राजा ! प्रथम देवबोधिए तने जे बताव्युं, तथा में तने जे आ बताव्युं ते सर्व इन्द्रजाळ छे. आकाशपुष्पनी जेम असत्यज छे, परतु तत्त्व तो जे तने सोमेश्वर महादेवे कह्युं हतुं तेज छे. " ते सांभळीने राजाए मिथ्यात्वनो त्याग कर्यो, अने अनुक्रमे ते बारव्रतधारी थयो.

अन्यदा आश्विन मास आव्यो त्यारे नवरात्रिना दिवसे देवीना पूजारीए आवी राजाने कह्युं के " हे राजा ! कुळदेवीनी पासे बळिदान माटे सातमने दिवसे सातसो पाडानो वध थाय छे, आठमने दिवसे आठसो पाडानो वध थाय छे अने नोमने दिवसे नवसो पाडानो वध करवामा आवे छे. आवो तमारी वंशपरपरानो नियम छे. ते प्रमाणे जो न थाय तो देवी विघ्न करे छे. " ते सांभळीने राजाए सूरि पासे जइ ते वात करी. त्यारे सूरिए कह्युं के " जे दिवसे जेटलां प्राणीओ वध थाय छे, ते दिवसे तेटला प्राणीओ ते देवीनी पासे धरीने कहेवुं के–' हे देवी ! आ शरण रहित पशुओ तमारी पासे मूक्या छे, हवे जेम तमने योग्य लागे तेम करजो ' पछी राजाए सूरिना कहेवा प्रमाणे कर्युं. एटले देवीए एके प्राणीनुं भक्षण कर्युं नहीं. परंतु नवमीनी रात्रिए हाथमा त्रिशूळने धारण करनारी कंटेश्वरी देवीए प्रत्यक्ष थइ राजा पासे आवीने कह्युं के ' हे राजा ! तें परंपराथी चालतो आवती बलि तने केम मूकी दीधी ? " राजाए जवाब आप्यो के ' हे देवी ! हुं जीवुं छुं त्यांसुधी तो एक कीडीनो पण वध करीश नहीं. ' ते सांभळीने क्रोध पामेली देवी राजाना मस्तकमां त्रिशूळ मारीने अदृश्य थइ. ते देवीना प्रहारथी राजाना शरीरमा तत्काळ कुष्ट व्याधि उत्पन्न थयो, अने तेनी असह्य पीडा थवा लागी. तेथी राजाए अग्निमा प्रवेश करवानो विचार कर्यो ते ? निषेध करीने उदायन मत्रीए ते वृत्तान्त सूरिने जणाव्यो. त्यारे सूरिए जळ मत्रीने उदायनने आप्युं ते जळ राजा पर छांटवाथी तेनो देह सुवर्णनी कांति जेवो थइ गयो. पछी प्रातःकाळे राजा गुरुने वादवा गयो. उपाश्रयमा प्रवेश करता ज राजाए एक स्त्रीनुं करुणावाळु रुदन सांभळ्युं. एटले राजाए ते स्त्रीनी सन्मुख जोयुं तो रात्रे जोयेली देवीने त्यां रुदन करती दीठी पछी गुरु पासे जइ राजाए कह्युं के ' हे पूज्य ! थांभले बां-

थेनी आ स्त्रीने मूकी दा. सूरि बोल्या ' हे राजा ! तेणीनी पासेथी काइ मागी ल्ये ' त्यारें राजाए पोताना अढार देशोमा जीव रक्षा माटे कोटवाळ (रखवाळ) पणु करवानु माग्यु ते वात ढवीए स्विकारी, एटले ते बन्धन थकी मुक्त थइ अने राजभवनना द्वारे जइने रही

एकदा राजसभामा सूरिए स्थूलभद्र मुनिनी प्रशसा करी के—

वेश्या रागवती सदा तदनुगा षड्भी रसैर्भोजनं
सौध धाम मनोहर वपुरहो नव्यो वय.सगम· ।
कालोऽय जगदाविलस्तदपि य काम जिगायादरात्
तं वन्दे युवतिप्रबोधकुशल श्री स्थूलभद्रं मुनिम् ॥१॥

भावार्थ—"वेश्या पोतापर रागवाळी अने निरतर तेमने अनुसरनारी हती, हमेशा छ रसवाळु भोजन खावाउ हतु, कामशास्त्रना चित्रवाळी शाळामा वसवाउ हतु, शरीर पण मनोहर हतु, अवस्था पण युवान हती अने काळ पण वर्षाऋतुनो हतो, तोपण जेणे आदर पूर्वक कामदेवने जीत्यो एवा स्त्रीजनोने प्रतिबोध पमाडवामा कुशळ श्री स्थूलभद्र मुनिने हु वदना करु "

आ प्रमाणे सामळीने राजानी पासे बेठेला द्वेषी ब्राह्मणो बोल्यो के—

विश्वामित्रपराशरप्रभृतयो ये चाम्बुपत्राशिन—
स्तेऽपि स्त्रीमुखपङ्कज सुललितं दृष्ट्वैव मोह गता· ।
आहार सघृत पयोदधियुत भुञ्जन्ति ये मानवा—
स्तेषामिन्द्रियनिग्रह, कथमहो दम्भ समालोक्यताम्॥१॥

भावार्थ—" विश्वामित्र अने पराशर विगेरे ऋषिओ के जेओ जळ अने पांदडा मात्रनोज आहार करता हता, तेओ पण स्त्रीनु सुन्दर मुखकमळ जोइने मोह पामी गया हता; तो जे लोको घृत, दूध अने दहींवाळो आहार करे, तेओ इन्द्रियोनो निग्रह शी रीते करी शकाय ? अहो ! जुओ ! केवो दंभ छे ? एटले जैनो केवो दंभ करे छे ? "

ते सांभळीने सूरिए तेनो जवाब आप्यो के, " हे राजा ! शीलनुं पालन करवामां आहार के नीहार कारणभूत नथी. परंतु मननी वृत्तिज कारण छे. केमके—

सिंहो बली द्विरदसूकरमांसभोजी,
संवत्सरेण रतिमेति किलैकवारम् ।
पारापतः खरशिलाकणमात्रभोजी,
कामी भवत्यनुदिनं ननु कोऽत्र हेतुः ॥ १ ॥

भावार्थ—" बळवान सिंह हाथी अने सूकरनुं मांस खाय छे, तोपण ते एक वरसमां एकज वार कामक्रीडा करे छे, अने पारेवा मरडीया कांकरा अने जुवारना कण खाय छे ते छतां तेओ हमेशा कामीज रहे छे तो तेनुं शुं कारण ?"

ते सांभळीने कुवादीओना मुख श्याम थइ गया. आ विगेरे अनेक प्रबंधो कुमारपाळना चरित्रथी जाणी लेवा. पछी सूरि पण अनुक्रमे अनेक भव्यजीवोने प्रतिबोध करीने तथा जैनधर्मनी प्रभावना करीने स्वर्गे गया.

" विद्यारूप कांतिवाळा, जैनधर्मरूप जगतने विषे सूर्य समान, अज्ञानरूप अन्धकारनो नाश करनार, अने चौलुक्य यशमां सिंह समान कुमारपाळ राजाने प्रतिबोध पमाडनार एवा श्री हेमचन्द्र गुरुने हुं नमन करुं छुं."

॥ इत्युपदेशप्रासादे द्वितीयस्तंभे द्वात्रिंशत्तम व्याख्यानम् ॥ ३२ ॥

व्याख्यान ३३ मुं.

सातमा सिद्धप्रभावक विषे

अञ्जनचूर्णलेपादिसिद्धियोगैः समन्वितः ।
जिनेन्द्रशासने ह्यत्र, सप्तमः स्यात्प्रभावकः ॥ १ ॥

भावार्थ—" अंजन, चूर्ण अने लेप विगेरे सिध्ध करेला योगोए करीने सहित जे होय, तेने आ जिनेन्द्रना शासनने विषे सातमा प्रभावक कहेला छे. अर्थात् शासननी उन्नतिने माटे अंजनादिकनो उपयोग करे, ते सिद्ध प्रभावक कहेवाय छे. " आ श्लोकनो भावार्थ श्री पादलिप्तसूरिना दृष्टांतवडे दृढ करवामां आवे छे.

पादलिप्तसूरिनु दृष्टांत

अयोध्या नगरीमा नागहस्ती नामना सूरिनी पासे प्रतिमा नामनी श्राविकाना पुत्रे आठ वर्षनी वये दीक्षा ग्रहण करी. एकदा ते क्षुल्लक (बाळक) साधु श्रावकने घेरथी कांजी (जातनु ओसामण) वहोरी लावीने गुरु पासे आवी उभा रह्या तेने गुरु महाराजे पूछ्यु के ' हे वत्स ! तु आलोचना जाणे छे ? ' (अहीं गुरुने प्रश्न करवानो हेतु ए हतो के कांजी सर्व जातनी अचित्त नथी, माटे आ कांजी सचित्त अचित्तनो विचार करीने लाव्यो छे के नहीं ? ए प्रश्ननु तात्पर्य छे.) ते सांभळीने क्षुल्लके कह्यु के ' हे पूज्य गुरु ! हु आलोचना जाणु छु, तेमां (आलोचना शब्दमां) आ ए उपसर्ग छे, अने तेनो अर्थ—इषदर्थे क्रियायोगे मर्यादाऽभिविधौ च यः। एटले थोडु, चोतरफ, मर्यादा, अभिविधि विगेरे थाय छे तथा क्रियानी साथे पण ते आवे छे, अने लोचना एटले जोवु ते. अर्थात् चोतरफ जोवु ते आलोचनानो अर्थ हु जाणु छु. अने

अंबत वल्लीए, अपुप्फियं पुप्फदतपतीए ।
नवसालिकजियं नवहु हूइ कुडएणमह दिन्नं ॥[1]

लाल वर्णना वस्त्रवाळी अपुष्पित (ऋतुमा नहीं आवेली) अने पुष्पनी कळीसमान दांतवाळी नवोढा स्त्रीए आ नवी डांगरना जातनी कांजी मने प्रफुल्लित मनथी आपी छे. " आ प्रमाणे शृंगारना वचनो सांभळी गुरु क्रोध करी बोल्या ' अरे पलित्त (प्रलिप्त) एटले मर्कर्ष करीने (पापथी) लिंपायेला ! तु ए शु बोले छे ? ' ते वखते ते क्षुल्लक साधु गुरुना चरणकमळमा नमन (वंदना) करीने बोल्यो—

१ आ गाथानो अर्थ बराबर बेठो नथी

गुरुचरणे नमिउं, विन्नवइ देह पसिऊण ।
अद्दियं एगं मत्तं, जेणं हवेमि पालित्तं ॥

" हे पूज्य ! मारापर कृपा करीने पलित्त शब्दमा एक कानो वधारी आपो, के जेथी हुं पालित्त (पादलिप्त) थाउं. " अर्थात् पाद एटले पगे, लिप्त एटले लेपायेलो, अर्थात् पगे लेप करवाथी आकाशे उडी शकाय तेवी विद्यावाळो थाउं. ते सांभळीने तेनी बुद्धिथी प्रसन्न थयेला गुरुए तेने पादलेपनी विद्या आपी अने अनुक्रमे तेने योग्य जाणी सूरिपद आपी तेनुं पादलिप्त सूरि एवुं नाम स्थापन कर्युं.

पादलिप्ताचार्य विहार करतां अन्यदा खेटकपुरमा आव्या. त्या जीवाजीवोत्पत्ति प्राभृत, निमित्त प्राभृत, विद्या प्राभृत, अने सिद्धि प्राभृत ए चार पाहुडा[१] तेमने मळ्या. पछी सूरि हमेशां पादलेप विद्याए करीने पांचे तीर्थोए जइ त्यां रहेल जिनबिंबोने वंदना करीने पछी भोजन करवा लाग्या.

एकदा सूरि ढंकपुरे आव्या त्यां जेणे घणा लोकोने वश कर्या छे एवो नागार्जुन नामनो योगी सूरि पासे आवी विद्या शीखवानी इच्छाए श्रावक थइने निरंतर तेमना चरणनी सेवा करवा लाग्यो. निरंतर गुरुना चरणकमळमा वंदना करवाथी औषधीओना गंधवडे तेणे एकसोने सात औषधीओ ओळखी लीधी. पछी ते सर्व औषधिओने जळ साथे मेळवी वाटीने तेनो पगे लेप करी आकाशमां उडवा लाग्यो. पण थोडे दूर उडीने पाछो जे ते स्थाने ते पडवा लाग्यो. तेथी तेना शरीरे चाठा पड्या. ते जोइने एकदा गुरुए तेने पूछ्युं के ' हे भद्र ! आ तारा शरीरे क्षत शेना छे ? ' त्यारे ते योगीए गुरु पासे सत्य वात कही बतावी. ते साभळीने तेनी बुद्धिथी रंजित (आनंदित) थयेला गुरुए तेने शुद्ध (सत्य) श्रावक बनाव्यो. पछी विहार समये गुरुए तेने कह्युं के " हे श्रावक ! जो तारे आकाशमां उडवानी इच्छा होय तो ते एकसोने साते औषधिओने साठी चोखाना ओसामणमा एकत्र करीने तेनो लेप करजे, जेथी तने स्खलना नहीं थाय. " आ प्रमाणेना गुरुवचनथी तेनो मनोरथ पूर्ण थयो एटले ते पण स्वस्थाने गयो.

एकदा ते नागार्जुने घणा द्रव्यनो व्यय करीने सुवर्णसिद्धि निपजावी.

---

[१] शास्त्रो (पूर्वमांथी उद्धरेला)

पछी गुरुनो उपकार संभारीने तेणे गद्यो वाळवा माटे तेना रसनी एक कुपी ह इने पोताना शिष्यद्वारा गुरुने ते भेट तरीके मोकली. ते जोइ गुरुए ते शिष्यने कह्यु के ' अमे तृणने तथा सुवर्णने समान गणीये छीये, माटे आ अनर्थकारक रसनी अमे इच्छा राखता नथी. ' एम कहीने गुरुए राख मगावी ते सर्व रस रा खमां नाखी दीधो अने ते कुपीमा पोतानु मूत्र भरीने ते कुपी पाछी आपी. त लइने ते शिष्ये नागार्जुन पासे आवी सर्व वृत्तांत कह्यु ते सांभळीने क्रोधथी आरक्त थयेला योगीए विचार्यु के ' अहो ! ते साधु केवा अविवेकी छे " ' एम कही तेणे ते कुंपीने एक पथरपर पछाडी फोडी नाखी. क्षणवारमा ते शिला सु वर्णमय थइ गइ. ते जोइने आश्चर्य पामेला योगीए विचार्यु के ' अहो '

मया क्लेशसहस्रेण, रससिद्धि विधियत ।
अमीषा तु स्वभावेन, स्वरपुर्स्येव विद्यते ॥

" में हजारो क्लेश सहन करीने आ रससिद्धि उत्पन्न करी, अने आ गुरुना तो शरीरमा ज ते सिद्धि स्वभावथी ज रहेली छे. " त्यारपछी नागार्जुने ते कल्पवृक्ष समान गुरुनी वंदना अने स्तुति वगेरे करीने चिरकाळ सेवा करी

ते समयमा शालिवाहन राजानी सभामा चार ऋषिओ लाख लाख श्लोकना ग्रन्थ रचीने राजा पासे आवीने बोल्या के ' हे राजा ! अमारा ग्रन्थ तमे सांभळो. ' राजाए जवाब आप्यो के ' एवडा मोटा ग्रन्थो सांभळवानो मने अवकाश नथी ' त्यारे तेओ पचास पचास हजार श्लोकना ग्रन्थ करीने आव्या. त्यारे पण राजाए तेटला मोटा ग्रथ सांभळवानी अशक्ति जणावी. त्यारे तेओ तेथी अर्धा ग्रथ करी लाव्या एम छेवट ओछा करता करता एक एक श्लोक करीने लाव्या तो पण राजाए सांभळवानी ना कही. त्यारे तेओ एक एक पाद करीने आव्या ते वखते राजाए सांभळवानी हा कही. त्यारे प्रथम आत्रेय नामना ऋषि चिकित्सा (वैद्यक) शास्त्रना रहस्य रूप एक पाद बोल्या ' जीर्णे भोजन मात्रेय ' आत्रेय कहे छे के एक वार जमेलु जीर्ण थया पछी (पच्या पछी) बीजु भोजन करवु बीजा कपिले कह्यु ' कपिल प्राणिना दया ' प्राणी मात्र पर दया राखवी एज खरो धर्म छे एम कपिले धर्मशास्त्रनो सार कह्यो. त्रीजा बृह स्पतिए नीतिशास्त्रनो सार आ प्रमाणे कह्यो ' बृहस्पतिरविश्वास ' बृहस्पति कहे

छे के कोइनो विश्वास करवो नहीं. चोथा पचाले कामशास्त्रनुं रहस्य आ प्रमाणे जणाव्युं 'पञ्चालः स्त्रीषु मार्दवम्' पंचाल कहे छे के 'स्त्रीओने विषे मृदुता (कोमळता) राखवी. आ प्रमाणे चार लाख श्लोकनुं रहस्य मात्र एकज श्लोकमां बतावी आप्युं. ते सांजळीने राजाए तेमने सारु सन्मान आपीने वारंवार तेमनी प्रशंसा करी. ते वखते राजानी राणी जोगवती बोली के—

ता गज्जंति वाईदगयघडा मयन्नरेण दुप्पिच्छा ।
जावन्न पायलित्तयं, पंचवयणनाऊ समुल्लसई ॥१॥

जावार्थ—"ज्यांसुधी पादलिप्ताचार्य रुपी सिंहनुं लांगूल (पूछडुं) उल्लासपाम्युं नथी (सिंहनाद थयो नथी), त्यांसुधी ज मदना समूह वडे गर्विष्ठ थयेला दुःप्रेक्ष्य एवा मोटा वादीओ रुपी हस्तीओना समूहो गर्जना करे छे."

ते सांजळीने राजाए पोताना प्रधानोने मोकली पादलिप्ताचार्यने तेमाव्या तेओ सूरिने लइने आवता हता, ते वखते सर्वे विद्वानोए एकठा थइने एक घृतथी भरेलो थाळ सूरिनी सामे मोकल्यो. ते जोइने सूरि महाराजे तेमां एक सोय नाखीने ते थाळ पाछो मोकल्यो. ते जोइने राजाए पंमितोने तेनो जाव पूछयो. त्यारे तेओ बोल्या के "हे राजा! घीना थाळनी जेम आ नगर विद्वानोथी पूर्ण छे, माटे तमारो प्रवेश तेमां शी रीते थशे? एवो अमारो जाव हतो. तेमा सोय नाखीने सूरिए ए थाळ पाछो मोकल्यो, तेमणे ए अभिप्राय जणाव्यो के जेम घीना थाळमा सूक्ष्मताने लीधे आ सोयनो प्रवेश थयो, तेम हु पण आ नगरमां प्रवेश करीश." ते सांजळी राजा आश्चर्य पाम्यो पछी सर्वे पंमितो सहित राजा सूरिनी सामो गयो. अने तेमने महोत्सव पूर्वक पुरी प्रवेश कराव्यो. पछी गुरुए निर्वाणकलिका, प्रश्न प्रकाश, विगेरे शास्त्रो बनावी राजाने सभळाव्या. तेथी राजा प्रसन्न थइ जैनी थयो. तथा सर्वे ब्राह्मणो पण पोतानो गर्व तजीने श्रीगुरुना चरणकमळमा भ्रमररूप थया. सुरि पण जैनशासननी प्रज्ञावना करी शत्रुंजय गिरिपर जइ बत्रीश दिवसनु अनशन करीने स्वर्गे गया.

"आ प्रमाणे श्री पादलिप्त सूरिनी अमृत समान कथानु श्रोत्ररूप पात्रवमे पान करीने (सांजळीने) शक्तिवान माणसोए अजन विगेरेना गुणोवमे शासननो

महिमा वधार्यो. ”

आ दृष्टांत दर्शन सप्ततिका प्रथमा वधारे विस्तारवाळुं छे त्यांथी जाणी ले

॥ इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तम्भे त्रयस्त्रिंशत्तम व्याख्यानम्॥३३॥

व्याख्यान ३४ मु.

आठमा कविप्रभावक विषे

अत्यद्भुतकवित्वस्य, कृतौ शक्तिर्भवेद्यदि ।
सम्यक्त्वे स कविर्नाम, प्रोक्तोऽष्टम. प्रभावक ॥ १ ॥

भावार्थ—“ जो अति अद्भुत कविता करवानी शक्ति होय, तो
समकितने विषे कवि नामनो आठमो प्रभावक कहेलो छे. ”

कवि बे प्रकारना छे सत्य अर्थनु वर्णन करनार अने असत्य अर्थनुं वर्ण
करनार. तेमां जिनमतना रहस्यने जाणीने सद्भुत अर्थवाळा शास्त्रना रचनारने सत्य
र्थनु वर्णन करनार जाणवा ए प्रमाणेना सत्यार्थवाळा श्रीहेमचन्द्रसूरिए त्रेसठ श
लाकापुरुष चरित्र, अने शब्दानुशासन व्याकरण विगेरे मळी त्रण करोड ग्रन्थ
बनाव्या छे श्री उमास्वाति वाचके तत्त्वार्थ विगेरे पांचसो ग्रन्थ रच्या छे. वा
देवसूरिए चोराशी हजार श्लोकप्रमाण स्याद्वाद रत्नाकर ग्रन्थ बनाव्यो छे. श्री
हरिभद्रसूरिए चौदसोने चुमाळीश ग्रन्थो रच्या छे. श्री हरिभद्रसूरिनी क
नीचे प्रमाणे—

श्री हरिभद्रसूरिनी कथा

चित्रकूट (चितोडगढ)मां हरिभद्र नामे एक ब्राह्मण रहेतो हते
ते चौद विद्यामां निपुण हतो, सर्व शास्त्रार्थने जाणनार हतो, तेथी जाणे पोता

१ अष्ट शब्द आठ वाचक छे एम कहेवाय छे, अन्यत्र सातमा पण कहेला छे

ट फाटी जाय तेवी बीक राखतो होय तेम पोताना पेटपर लोढानो पाटो बांधी राखतो हतो अने ' जो हुं कोइनुं बोलेलु न समजुं, तो हुं तेनो शिष्य थाउं ' एवी प्रतिज्ञा करीनें ते फरतो हतो. एकदा ते नगरमा फरतो हतो तेवामा याकिनी नामनी साध्वीना मुखथी तेणे आ प्रमाणेनी एक गाथा सांभळी—

चक्किदुगं हरिपणगं, पणगं चक्कीण केसवो चक्की ।
केसव चक्की केसव, दुचक्की केसि अ चक्की अ ॥ १ ॥

भावार्थ—" प्रथम बे चक्रवर्ती, पछी पांच वासुदेव, पछी पांच चक्री, पछी एक वासुदेव, पछी एक चक्री, पछी एक केशव (वासुदेव), पछी एक चक्री, पछी एक केशव, पछी बे चक्री, पछी एक केशव अने पछी एक चक्री—ए प्रमाणे बार चक्री अने नव वासुदेव आ चोवीशीमा थयेला छे. "

आ गाथा सांभळीने तेनो अर्थ नहीं समजवाथी ते हरिभद्रे साध्वी पासे जइने कह्यु के ' हे माता ! आ शु चिकचिक करो छो ? ' साध्वीए जवाब आप्यो के ' जे नवुं होय ते चिकचिक शब्द करे छे, परन्तु आ तो जुनु छे ' ते सांभळीने हरिभद्रे विचार्यु के ' अहो ! आ साध्वीए मने उत्तर आपताज जीती लीधो. ' पछी तेणे साध्वीने कह्यु के ' हे माता ! आ गाथानो अर्थ मने कहो. ' त्यारे ते बोल्या के ' मारा गुरु तमने तेनो अर्थ कहेशे. ' तेणे पृछ्यु के ' ते गुरु क्यां छे ? ' त्यारे साध्वी तेने लइने गुरु पासे गया. त्यां देरासर हतु, तेनी अंदर प्रथम तेओ गया. त्यां श्री वीतराग देवनी मूर्ति जोइने हरिभद्रे स्वयमेव स्तुति करी के—

वपुरेव तवाचष्टे, भगवन् वीतरागताम् ।
न हि कोटरसंस्थेऽग्नौ, तरुर्भवति शाड्वलम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे भगवान ! तमारुं शरीरज (मूर्तिज) तमारा वीतरागपणाने जणावी आपे छे, केमके वृक्षना कोटरमा जो अग्नि रहेलो होय तो ते नवपल्लव देखायज नहीं. "

ए प्रमाणे स्तुति करीने ते गुरु पासे गया. गुरुने नमन करीने तेणे गाथानो अर्थ पूछ्यो, त्यारे गुरुए तेनो अर्थ कह्यो. एटले प्रथम प्रतिज्ञाथी बंधायेला ते हरिभद्रे गुरु पासे दीक्षा लीधी. त्यां तेणे जैनशास्त्रोनो अभ्यास कर्यो. तेथी तेनुं

समकित दृढ थयु. अनुक्रमे तेने योग्य जाणी गुरुए आचार्य पद आप्यु. ते हरिभद्र सूरिए आवश्यक निर्युक्तिनी मोटी वृत्ति (टीका) करी, तेमा 'चक्किदुग'[१] गाथानु सारी रीते विवरण (स्पष्टीकरण) कर्यु छे

एकदा हरिभद्रसूरिना हंस अने परमहंस नामना बे शिष्यो जेओ जैन दर्शनमा सारा विद्वान थया हता, तेमणे सूरिने विज्ञप्ति करी के "हे पूज्य बौद्ध धर्मना शास्त्रनु रहस्य जाणीने अमे तेमनो पराजय करीए माटे अमने तेमनी पासे जणवा जवानी आज्ञा आपो " सूरिए कह्यु के 'भले, वेषान्तर करीने जाओ 'ते सांभळीने ते बन्ने वेषपरावर्त्तन करीने बौद्धलोकोनी शाळामा जइ अभ्यास करी तेमना शास्त्रना मर्मने जाणनारा थया एकदा ते बौद्धना गुरुने तेमनी क्रिया प्रवृत्ति जोवाथी तेओ श्वेतांबरी छे एवी शंका आवी, तेथी तेमने खात्री करवा माटे ज्यारे सर्व छात्रो अभ्यास करता हता, ते वखते शाळाना दा रना पगथीया उपर खडी वडे अर्हततु चित्र चितर्यु. पछी जती वखते सर्व छात्र ते चित्रपर पग मूकी मूकीने उतर्या, परतु पेला बे जणे तो ते चित्रना कंठपर प्रथम त्रण रेखा करी. पछी तेपर पग मूकीने उतर्या. पण ते बन्नेने भय लाग्यो के 'जरूर आपणने तेओए श्वेतांबरी जाण्या छे, माटे हवे आपणे अहीं रहेवु योग्य नथी.' एम विचारीने ते बन्ने पोताना पुस्तको लइने त्याथी नाठा. तेनी खबर थतां गुरुना कहेवाथी त्याना बौद्ध राजाए तेमनी पाछळ सैन्य मोकल्यु तेमा हंसे सैन्यनो घणो भाग हणी नाख्यो, परतु छेवट घणु सैन्य एकठु थयु अने तेणे हंसने मारी नाख्यो. बीजो जे परमहंस हतो ते नासीने चित्रकूटनी नजीक आवी कोइ स्थाने विश्राम माटे सुइ गयो त्या आवीने ते बौद्धना सैन्ये तेने पण मारी नाख्यो[१] ने वृत्तांत जाणीने हरिभद्रसूरिने महा कोप थयो, तथी उकाळेला तेलना कडाहमा से चौदसो ने चुमाळीश बौद्धोने होमवा माटे आकर्षण करवा सारु तेओ मंत्रजाप करवा लाग्या, ते वृत्तात तेमना गुरुए जाण्यो, तथी गुरुए बे साधुओने नीचेनी गाथाओ लखी आपी तेमनी पासे मोकल्या तेओए आवीने ते गाथाओ सूरिने वाची संभळावी—

---

१ आ बन्नेना मरणनी हकीकत अन्यत्र बीजा रीते कहेली छे.

गुणसेन अग्गिसम्मा, सीहाणंदाय तह पिआ पुत्ता ।
सिहि जालिणी माइ सुओ,धण धन्नसिरिमो अ पइन्नज्झा ॥१॥
जय विजयाय सहोयर, धरणो लच्छी अ तह पइन्नज्झा ।
सेण विसेणा पित्तिअ, उत्ता जंमंमि सत्तमए ॥ २ ॥
गुणचंद वाणमंतर, समराइच्च गिरिसेण पाणो उ ।
एकस्स तओ मुक्खो, ऽणंतो बीअस्स संसारो ॥ ३ ॥
जइ जलइ जलं लोए, कुसत्थपवणाहओ कसायग्गी ।
तं जुत्तं न जिणवयणअमिअसित्तोवि पज्जलइ ॥ ४ ॥

भावार्थ—" गुणसेन राजाए अग्निशर्मा ऋषिने मासक्षपणना पारणानु निमंत्रण आप्यु हतुं, पण कारणने लीधे ते तेने पारणु करावी शक्यो नहीं, तेथी अग्निशर्माए तेनापर वेरभाव राख्यो ने नियाणु कर्युं ए पहेलोभव. बीजा भवमां सिंहराजाने आणंद (अग्निशर्मानो जीव) नामना पुत्रे झेर दइने मार्यो. त्रीजा भवमां शीखी पुत्रने जालणी माताए झेर आपीने मार्यो. चोथा भवमा धनाने धनश्री स्त्रीए मार्यो. पाचमा भवमा जयने विजयभाइए मार्यो. छठ्ठा भवमा धरण नामना पतिने लक्ष्मीवती स्त्रीए पीडा करी सातमा भवमा सेननो विसेन नामना पितराइ भाइए पराभव कर्यो. आठमा भवे गुणचद्र विद्याधरने वाणमतरे पीडा करी. अने नवमा भवे समरादित्य (गुणसेननो जीव) मोक्षे गया तथा गिरिसेन (अग्निशर्मानो जीव) चंडाळ थइ अनत संसार भटक्यो. माटे हे भद्र ! जेम लोकमा कुशास्त्ररुपी पवनथी आहत थयेलो—हणायलो— वृद्धिपामेलो कषायरुपी अग्नि जळने (जड—मूर्खने) पण बाळे छे, तेम जिनवचनरुप अमृतथी सिंचायेला तमने युक्त नथी. "

आ प्रमाणे सांभळीने श्री हरिभद्र सूरि ते पापकर्मथी निवृत्त थया, अने मनथी करेला पापना प्रायश्चित्त तरीके ते बौद्ध जेटला एटले चौदसो ने चुमाळीश ग्रंथो नवा करवानु तेमणे कबुल कर्युं. तेमां प्रथम उपरनी चार गाथाने अनुसरीने क्रोधनो सर्वथा निरास करनारुं श्री समरादित्य केवळीनु चरित्र मागधी गाथाबध रच्युं.

मालपुर नामना नगरमा धन नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो. ते जैन धर्मी
हतो. ते नगरमां सिद्ध नामनो एक राजपुत्र (रजपूत–क्षत्रिय) रहेतो हतो. ते
जुगारी लोको साथे जुगार रमतां हारी गयो. तेने आपवानु धन तेनी पासे नहो
तुं, तेथी ते लोकोए तेने एक मोटा खाडामा नाखी दीधो. तेनी धनश्रेष्ठीने खब
पडतां तेणे तेनुं देवु आपी दइने तेने छोडाव्यो. पछी श्रेष्ठीए तेने पोताने घेर नोकर
तरीके राख्यो. अनुक्रमे ते बुद्धिमान सिध्दकुमारने श्रेष्ठीए पोतानो सर्व कार्यभार
सोंप्यो अने तेने एक कन्या साथे परणाव्यो. पछी ते सिद्धकुमार श्रेष्ठीनु सर्व काम
करीने घणी रात्री गये घेर सुवा जतो. एकदा ते घणो मोमो [असूरो] सुवा ग
यो. ते वखते निद्रा पामेली तेनी माए तथा स्त्रीए कहु के " आटलो बधो मोडो
केम आव्यो? अत्यारे हवे कोइ बारणा उघाडतु नथी, तेथी ज्यां उघाडा बारणां
होय त्यां जा. " ते सांभळीने सिद्धकुमार ' बहु सारु ' कही गाममां भमवा ला
ग्यो. तेवामा श्री हरिभद्र सूरिनो उपाश्रय उघाडो जोयो. तेथी ते सूरि पासे ग
यो त्या तेणे प्रतिबोध पामीने दीक्षा ग्रहण करी. पछी अनुक्रमे शास्त्रनो अभ्यास
करी ते सारो विद्वान थया पछी तर्कशास्त्रनी जिघृक्षावाळा तेणे बौध्द धर्मनुं रह
स्य जाणवा माटे हरिभद्र सूरिनी आज्ञा मागी. त्यारे सूरिए तेने कहु के " ज
कदाच बौद्धना संगथी तारु मन फरी जाय अने ते धर्मपर श्रद्धावाळु थाय, तो
तारे अमारो वेष पाछो आपवा माटे अमारी पासे आववु. " सिध्द मुनि ते वा
अंगीकार करीने बौद्ध लोको पासे जणवा गया. त्यां बौद्धोए कुतर्कथी तेनु मन फे
रवी नाख्युं. एटले ते वेष पाछो आपवा माटे सूरि पासे जवा चाल्या. ते वखते बौ
द्धोए पण तेने कहु के " जो कदाच तमारु मन हरिभद्र सूरि फेरवी नांखे, तो
अमारो वेष पाछो आपवा अहीं आववु " तेमनी वात पण कबूल करीने ते ह
रिभद्र सूरि पासे आव्या. एटले सूरिए तेनो कुतर्क दूर करीने फरी समकित प
डयु. त्यारे बौद्धनो वेष पाछो आपवा गया ते वखते पण सूरिए कहु के "
कदाच तारु मन फरी जाय, तो अमारो वेष पाछो आपवा अहीं आववु. " ते
कबूल करीने सिद्ध मुनि बौद्ध पासे गया. एटले फरीथी तेओए कुतर्कोथी तेनुं
फेरव्युं. तेथी ते मुनिवेष पाछो आपवा सूरिपासे आव्या. ते वखते पण बौद्धोए
तानो वेष पाछो आपवा आववानु कबूल करावी रजा आपी.एवी रीते तेणे एकवी
वार जाव आव करी त्यारे सूरिए 'आ बिचारो मिथ्यादृष्टि थइने दुर्गतिमा न प

म विचारीने अत्यत तर्कमय ललितविस्तरा नामनी शक्रस्तवनी टीका र-
ीने तेने वांचवा आपी. ते वाचीने सतोष पामी दृढ समकितवाळा थयेला ते
ोल्या के—

'नमोऽस्तु हरिभद्राय, तस्मै प्रवरसूरये ।
मदर्थं निर्मिता येन, वृत्तिर्ललितविस्तरा ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे गुरुए मारे ज माटे ललितविस्तरा नामनी वृत्ति रची
ते हरिभद्र नामना श्रेष्ठ सूरिने मारो नमस्कार हो. "

पछी ते सिद्ध मुनिए सोळ हजार श्लोकना प्रमाणवाळी उपमितिभव-
प्रपंच नामनी कथा बनावी. अंते ते बन्ने सूरि स्वर्गे गया.

" शास्त्ररूप मंदिरनुं निर्माण करवामां सूत्रधार समान जे श्री हरिभद्र-
सूरि कुदेव अने कुशास्त्रनो त्याग करी पूज्य पदने पाम्या, ते गुरु महाराज अमने
कविताना विषयमां सारी शक्ति आपो. "

इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तम्भे चतुस्त्रिंशत्तम
व्याख्यानम् ॥ ३४ ॥

व्याख्यान ३५ मुं.

हवे बीजा अतिशयवाळा कविनुं स्वरूप कहे छे.

सातिशयाढ्यकाव्याना, भापणे कुशली भवेत् ।
सोप्यत्र शासने ज्ञेयो, विस्मयकृत्प्रभावकः ॥ १ ॥

१ आ श्लोक उपमिति भव प्रपंचमां मूकेलो छे

भावार्थ—" जे अतिशयवाळां काव्यो कहेवामां कुशळ होय तेने पण आ जैनशासनने विषे विस्मयकारक प्रभावक जाणवो. " आ विषयपर श्री मान तुंगसूरिनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

मानतुंग सूरिनो प्रबंध.

धारा नगरीमां बाण अने मयूर नामना बे पंडितो हता. तेमां बाण मयूरनो साळो थतो हतो तेवा नजीकना संबंधी छतां तेओ परस्पर एक बीजानी स्पर्धा करता हता. अने पोतपोतानी विद्वत्ता देखाडीने ते बन्ने राजसभामां प्रतिष्ठा पामेला हता एक वखत बाण पोतानी बेहेनने मळवा माटे मयूरने घेर गयो. त्यां रात्रीए मोडु थवाथी तेनेज त्यां बहार ओरडीमां सूतो. मयूर पोतानी स्त्री सहित अंदरना भागमां सूतो. रात्रिमां दंपतीने परस्पर कोइक प्रेमकलह थवाथी स्त्री रीसाइ गइ. तेथीने मयूर घणी रीते समजाववा लाग्यो. आखी रात्री तेने मनाववामां व्यतीत थइ परंतु ते स्त्री समजी नहीं. (आ सर्व हकीकत बहार सूतेलो बाण सांभळतो हतो) छेवट प्रातःकाळ थवा आव्यो, त्यारे मयूरे पोतानी पत्नीना मानत्याग करवा माटे कह्यु के—

> गतप्राया रात्रि कृशतनु शशी शीर्यत इव
> प्रदीपोऽय निद्रावशमुपगतो घूर्णित इव ।
> प्रणामान्तो मानस्त्यजसि न तथापि क्रुधमहो

अर्थ—" हे कृशतनु स्त्री ! (जेनुं शरीर कृश छे एवी) रात्रि प्रायः पूर्ण थवा आवी छे, चंद्र पण क्षीण थया जेवो थयो छे, आ दीवो पण निद्राने वश थवाथी घूर्णित थयो होय तेम झाखो देखाय छे, तेमज हुं तने प्रणाम पण करुं छुं, तो पण तुं हजु मानने छोडती नथी, अहो! तारो क्रोध ते केवो छे ! "

आ रीते त्रण पद सांभळतांज बाण बोली उठ्यो के—

> कुचप्रत्यासत्त्या हृदयमपि ते चण्डि कठिनम् ॥ १ ॥

" हे चण्डिका ! (क्रोधी स्त्री !) स्तननी पासे रहेवाथी तारुं हृदय तेना जेवुं ज महा कठण जणाय छे. "

आ प्रमाणे पोताना ज्ञाइना मुखथी चोथुं पाद सांजळवाथी क्रोध अने लज्जा पामेली ते पतिव्रता स्त्रीए तेना ज्ञाइने शाप आप्यो के 'तु कुष्टी था.' एटले तरतज वाण कुष्टी थइ गयो. प्रातःकाळे ते बन्ने पंडितो राजसजामा एकठा थया. ते वखते मयूरे वाणने कुष्टी कहीने बोलाव्यो. तेथी वाण अत्यंत लज्जित थयो. एटले सजामाथी उठीने नगरीनी बहार जइ तेणे एक मोटो स्तंज खोड्यो. तेनी साथे एक काष्ट वाधी नीचे एक मोटो खाडो खोदी तेमां खेरना अंगारा ज-र्या. पछी ते स्तंजनी टोचपर बांधेला लाकडा साथे एक सींकुं बांधी तेमां ते बेठो, अने नवा श्लोकोवडे सूर्यनी स्तुति करवा लाग्यो. तेमां एक श्लोक बोलीने सीं-कानी एक दोरी कापी नांखी. एवी रीते पांच श्लोक बोलीने तेणे पांच दोरीओ कापी नांखी. छेवट छठ्ठे श्लोके छठ्ठी दोरी कापतां सींकुं तमाम त्रुटी जवाथी ते खेरना अंगारामां पडवानी तैयारीमां हतो, तेवामां सूर्य प्रत्यक्ष थइने तेनो देह व्याधि रहित सुवर्ण जेवो कर्यो. पछी बीजे दिवसे वाण पंडित मोटा आडंबरथी राजसजामां आवी मयूरने कहेवा लाग्यो के "हे क्षुद्र पक्षी! गरुडनी पासे का-ळा कागडानी जेम मारी पासे तारी शी शक्ति छे? जो होय तो मारी जेम प्र-त्यक्ष देखाड. मारी शक्ति तो में तने प्रत्यक्ष देखाडी छे." ते सांभळीने मयूर बोल्यो के "निरोगीने वैद्यनुं शु काम छे? तोपण तारु वचन कुंठित करवा माटे हु तैयार छुं." एम बोलीने तरतज तेणे छरीवडे पोताना हाथ पग कापी नांख्या पछी चंडीदेवीनी स्तुति करतां प्रथम श्लोकनो छठ्ठो अक्षर बोलताज चंडीदेवी प्रसन्न थइ, अने तेना हाथ पग साजा करी आखुं शरीर वज्रमय बनाव्युं. ते जोइ राजाए आश्चर्य पामी मयूरने घणु मान आप्युं

ते वखते जैनधर्मना द्वेषी ब्राह्मणोए राजाने कह्यु के "जो जैनोमां कोइपण आवो प्रजाववाळो होय, तो श्वेतांबरो (जैनो)ने आ देशमा रहेवा देवा, नहीं तो ते सर्वने देश बहार काढी मूकवा जोइए." आवु वचन मानतुंग आचार्य-ना सांजळवामां आव्यु. तेथी तेने जैनशासननो प्रजाव बताववानी इच्छा थइ. ए-टले ते सूरिए राजसजामां आवी राजा पासे पोताना शरीरपर चुमाळीश बेडीओ नंखावी, तथा एक ओरडामा बीजो ओरडो बीजामां त्रीजो एम चुमाळीशमा ओरडामां पोते रह्या. अने ते दरेक ओरडे ताळा मराव्या पछी सूरिए भक्तामर स्तोत्र रच्यु.तेना दरेक श्लोके एक एक बेडी त्रुटवा माडी अने एक एक ताळुं त्रुटी

एक एक ओरडो उघडवा मांड्यो. एवट चुमाळीशमा श्लोके सर्व बेडीओ तथा सर्व ताळां तुटी गयां एटले सूरि महाराज सभामा आवी पहोंच्या. तेथी जैन शासननो मोटो प्रभाव प्रकट थयो.

आ विषय उपर बप्पभट्ट सूरिनो पण प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

बप्पभट्ट सूरि प्रबंध.

मोढेरा गाममा श्री सिध्धसेन सूरि श्री वीरस्वामीने वांदवा पधार्या, ते वखते तेमनी पासे एक छ वर्षनो बाळक आव्यो. तेने सूरि महाराजे पुछ्युं के 'तुं कोण छे? अने अहीं केम आव्यो छे?' त्यारे ते बाळक बोल्यो के "पांचाळ देशमां डुंब नामे एक गाम छे. त्यां बप्प नामे एक क्षत्रिय वसे छे, तेने भट्टी नामनी स्त्री छे तेमनो हुं सूरपाळ नामे पुत्र छुं. हुं मारा पिताना शत्रुने हणवा माटे तैयार थयो. ते वखते मारा पिताए मने अटकाव्यो, अने पोते शत्रुने हणवा गया. तेथी मने घणो क्रोध चड्यो तेथी मारी माताने पण कह्या विना हुं रीसाइने अहीं आव्यो छुं." ते सांभळीने सूरिए विचार्युं के 'आ बाळकनुं तेज (प्रताप) मानुषी (मनुष्य जेवुं) नथी पण कोइ दैवी अंश (शक्ति)वाळो जणाय छे.' एम विचारीने गुरुए तेने कह्युं के 'हे वत्स! त्यारे तुं अमारी पासे रहे.' ते सांभळीने ते बाळक तेमनी पासे रह्यो. सूरिए तेने भणाववा माड्यो ते हमेशां एक हजार श्लोक कंठे करवा लाग्यो. तेनी एवी तीव्र बुध्धि जोइने गुरु बहु ज प्रसन्न थया. पछी तेना मावापने समजावीने गुरुए तेने दीक्षा आपी. ते वखते तेना मावापे पोतानुं नाम राखवा प्रार्थना करी. तेथी गुरुए तेनुं बप्पभट्टी नाम राख्युं. पछी एकदा गुरुए तेने सरस्वती देवीनो मंत्र आप्यो. तेनो तेणे यथाविधि जाप कर्यो, तेथी देवी प्रत्यक्ष थइ तेने वरदान आपीने अदृश्य थइ.

एकदा बप्पभट्टी मुनि देवकुळ (देरासर)मा जइ प्रभुनी स्तुति करता हता ते वखते तेमनी पासे गोपगिरि (ग्वालीयर गढ)ना राजा यशोवर्मानो पुत्र आम नामनो कुमार पोताना पितानी शिक्षाथी रीसाइने क्रोधथी आव्यो. त्यां ते बकुळमां बप्पभट्टीनी पासे प्रशस्ति काव्यो वाचवा लाग्यो. आम कुमार काव्यनो रसिक होवाथी बप्पभट्टीनी साथे तेने प्रेम बंधायो. पछी ते बप्पभट्टीनी साथे उपाश्रयमां आव्यो. त्यां गुरुना पूछवाथी तेणे पोतानुं वृत्तांत कह्युं तेमां पोतानुं नाम

लेवानी जरुर पमी, ते वखते तेणे खमीवमे पोतानु नाम लखीने गुरुने जणाव्युं, पण पोताना मुखथी तेणे पोतानु नाम लीधुं नहीं, तेथी गुरु घणा प्रसन्न थया. पछी बप्पजट्टीनी साथे तेने पण गुरुए शास्त्रनो अभ्यास करावत्रा माड्यो एकदा आम कुमारे पोताना मित्र बप्पजट्टी मुनिने कह्युं के ' हुं ज्यारे राज्य पामीश त्यारे ते राज्य हु तमने आपीश. ' पछी केटलेक काळे आम कुमारने राज्य मळ्युं. त्यारे तेणे बप्पजट्टीने तेमाव्या अने सिंहासनपर वेसवा माटे प्रार्थना करी. त्यारे बप्पजट्टी बोल्या के " अमने सूरिपद मळ्या पछी सिंहासनपर वेसवानो अधिकार छे, ते पहेला अमाराथी वेसी शकाय नहीं. " ते साजळीने राजाए श्री सिध्धसेन गुरु पासे प्रार्थना करी तेमने सूरिपद अपाव्युं. पछी बप्पजट्टी सूरिने सिंहासनपर बेसामीने राजाए प्रार्थना करी के ' हे स्वामी ! आ राज्य आप ग्रहण करो. ' सूरि बोल्या के ' हे राजा ! अमे अमारा देहने विषे पण निःस्पृह छीये, तो पछी अमारे राज्यने शु करवुं ? ' ते सांजळीने राजा अत्यंत आश्चर्य पाम्यो. पछी गुरुना उपदेशथी राजाए एकसो आठ हाथ उंचो एक जैन प्रासाद कराव्यो, अने तेमां अढार भार सुवर्णनी श्री महावीर स्वामीनी मूर्ति स्थापन करी.

एकदा राजाए पोतानी राणीने म्लान मुखवाळी जोइने ते विषे गुरुने समस्या पूछी के ' अज्जवि सा परितप्पइ, कमलमुही अप्पणो पमाएण ' (ते कमळना सरखा मुखवाळी स्त्री हजु सुधी पण पोतानाज प्रमादथी परिताप पामे छे.) ते सांजळीने जेने सरस्वती देवी प्रसन्न थयेल छे, एवा आचार्य बोल्या के ' पुव्व विबुध्देण तए, जा से पच्छाइय अग ' (हे राजा ! आजे तमे प्रातःकाळे राणीनी पहेलां जाग्या हता, ते वखते राणीनुं कोइ अग उघाडुं थयुं हतु, ते अग तमे ढांक्यु तेथी तेणी हजु सुधी म्लानमुखवाळी छे.) ते साजळीने राजा आश्चर्य पामी लज्जित थयो. पछी फरीथी एकदा राजाए पगले पगले मद मद चालती राणीने जोइने सूरिने पूछ्यु के ' बाला चकमती पए पए कीस कुणइ मुहं तंग ' (हे पूज्य ! ते स्त्री चालती वखते पगले पगले मुखने वांकु करे छे, तेनुं शुं कारण ?) त्यारे गुरु बोल्या के ' नूण रमणपएसे मेहलिया छिवइ नहपंति ' (हे राजा ! खरेखर तेणीना रमण प्रदेशे—गुह्यस्थाने नखक्षत थयेला छे, ते स्थाने तेणीनी कटीमेखळा घसाय छे, तेथी ते चालती वखते मुखने मचकोमे छे.) ते सांभळी राजाना मनमा कांइक कोप उत्पन्न थयो. तेथी गुरुपर तेनो अनादर

थयो. राजानो गुप्त कोप जाणीने सूरिए पोताना उपाश्रयना दरवाजापर एक श्लोक लखी त्यांथी विहार कर्यो. ते श्लोक आ प्रमाणे हतो—

आम स्वस्ति तवास्तु रोहणगिरे मत्तः स्थितिं प्रच्युता
वर्तिष्यन्त इमे कथं कथमपि स्वप्नेऽपि मैव कृथाः ।
श्रीमत्ते मणयो वयं यदि भवल्लब्धप्रतिष्ठस्तदा
के शृंगारपरायणाः क्षितिभुजो मौलौ करिष्यन्ति न ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे आम राजा ! तारुं कल्याण थाओ. (अहीं अन्योक्तिथी राजापर घटावे छे) मणिओ रोहणगिरिने कहे छे के—हे रोहणगिरि! तारुं कल्याण थाओ. अने माराथी जुदा पडेला आ मणिओ हवे क्यां जशे ? तेमनी शी दशा थशे ? एम तुं स्वप्नमां पण धारीश नहीं. केमके ताराथी प्रतिष्ठा पामेला अमे श्रीमान् मणिओ छीए. तेथी अलंकार करवाना लालचु एवा क्या राजाओ अमने पोताना मुकुटपर धारण नहीं करे ? बधा करशे " (आ अन्योक्तिथी आम राजाने सूरिए समजाव्युं के—तारी पासेथी जुदा पडया पछी अमारुं शुं थशे ? एम तारे कदी धारवुं नहीं. केमके अमे मणि जेवा छीए, तो पछी अमने घणा राजाओ मान आपशे इत्यादि.)

त्यांथी विहार करीने श्री बप्पभट्टी सूरि गौडदेशमां गया. त्यां धर्मराजा राज्य करतो हतो. सूरिने आवेला जाणीने राजाए पोताना नगरमां रहेवा माटे घणा आग्रह पूर्वक प्रार्थना करी, ने त्यां राख्या. तेना आग्रहथी ज्यां सुधी आमराजा पोते बोलाववा न आवे त्यां सुधी त्यांथी विहार न करवो एवी प्रतिज्ञा करीने सूरि त्यां रह्या.

अहीं आमराजाने खबर थया के ' गुरु महाराज द्वारपर एक श्लोक लखीने विहार करी गया छे ' ते जाणीने तेणे ते श्लोक वांच्यो. त्यारे तेना मनमां ते अति दुःखी थयो. एकदा आमराजा वनमां गयो हतो. त्यां एक कृष्ण सर्प तेना जोवामां आव्यो. ते सर्पनुं मुख राजाए दृढ मूठीथी पकडी तेने एक वस्त्रमां ढांकी सभामां आवीने राजाए सर्व पंडितोने समस्या पूछी के—

शस्त्रं शास्त्रं कृषिर्विद्याऽन्यद्वा यो येन जीवति ।

शस्त्र, शास्त्र, कृषि (खेती), विद्या अथवा बीजु कांइ के जेनावडे जे (मनुष्य) जीवे छे. (अर्थात् आ बधानु शु करवु ? एवो प्रश्न आ समस्यामा छे.)

आ समस्या कोइपण पंडिते राजाना अभिप्राय प्रमाणे पूर्ण करी नहीं, त्यारे राजाए पटह वगडाव्यो के "आ समस्याने जे कोइ मारा मनना अभिप्राय प्रमाणे पूर्ण करशे, तेने लक्ष सोनामहोर इनाम मळशे." ते सांभळीने कोइ एक द्यूतकारे (जुगारीए) सूरि पासे जइने ते समस्या पूछी. एटले सरस्वतीनी कृपाथी सूरिए ते आ प्रमाणे पूर्ण करी—

सुगृहीत च कर्तव्यं, कृष्णसर्पमुखं यथा ॥ १ ॥

ते शस्त्र विगेरेने (आजीविकाना हेतुरूप छे तेओने) कृष्ण सर्पना मुखनी जेम सारी रीते ग्रहण करवा. (एटले के राजाए जेम कृष्ण सर्पनु मुख सारी रीते ग्रहण कर्यु. तेम शस्त्रादिक आजीविकाना कारणने पण सारी रीते ग्रहण करवा.) के जेथी आजीविका बराबर चाली शकशे.

पछी ते द्यूतकारे आमराजा पासे आवीने ते समस्या पूर्ण करी. ते सांभळीने राजाए ते द्यूतकारने अत्यत आग्रहथी धमकी आपीने पूछ्यु के 'आ समस्या कोणे पूर्ण करी ? सत्य वात कहे.' त्यारे तेणे खरी वात जाहेर करी. ते सांभळीने राजाने विचार थयो के "गुरु आटलासगा दूर छे, तोपण तेणे कृष्ण सर्पनी वात कही, तो में जे तेमनापर वहेम राख्यो हतो ते केवळ खोटोज छे." इत्यादि विचार आववाथी राजाने घणोज पश्चात्ताप थयो. पछी गुरुने बोलावी लाववा माटे आमराजाए पोताना प्रधानोने मोकल्या, अने तेमनी साथे एवु कहेवराव्यु के—

छायाकारण शिर धर्या, पत्त वि भूमि पडंत ।
पत्तह एहु पडत्तणं, वरतरु काइ करंत ॥ १ ॥

भावार्थ—"हे गुरु ! वृक्षोए मुसाफरोने छाया करवा माटे पोताना शिरपर पांदडाने धारण कर्या. ते पादडा त्यांथी भूमिपर खरी पडे, तो तेमा वृक्ष शु करे ? ते तो पत्रनुंज पडवापणु छे"

इत्यादि अन्योक्तिवडे गुरुने विज्ञप्ति करवा प्रधानोने मोकल्या. प्रधानोए

ते प्रमाणे गुरुने जइ विज्ञप्ति करी. त्यारे गुरुए कह्यु के " तमारे आमराजा पासे जइने आ प्रमाणे कहेवु—

असमाभिर्यदि कार्यं वस्तदा धर्मस्य भूपतेः ।
सभाया भ्रन्नमागत्य, स्वयमापृच्छ्यता द्रुतम् ॥ १ ॥
जाते प्रतिज्ञानिर्वाहे, यथायामस्तवान्तिकम् ।
प्रधाना प्रहिता पूज्यैरिति शिक्षापरस्तरम ॥ २ ॥

'तुअरिपत्र'[1] (तुवेरना पादडामा वींटेलो कागळ–तेनो बीजो अर्थ तुं अरि एटले तारा शत्रुनो पत्र केः कागळ छे.')

आ प्रमाणे सर्व गूढार्थथी जणाव्यु, पण सरलपणाने लीधे धर्मराजा काइ पण समज्यो नहीं. छेवट आमराजा सभामाथी उठीने धर्मराजानी वेश्याने घेर पोतानुं एक कंकण (कडु) आपीने रात्रिवासो रह्यो. प्रातःकाले वेश्याने घेरथी नीकळी बीजुं कंकण राजद्वारना द्वारपाळने आपीने आमराजा पोताना नगर तरफ चाल्यो.

बीजे दिवसे राजसभामा जइ गुरुए धर्मराजाने कह्युं के 'हे राजा! अमारी प्रतिज्ञा पूर्ण थइ छे माटे हवे अमे आम राजा पासे जइशु.' ते साभळीने धर्मराजाए पूछ्युं के 'हे गुरु! आम राजा आव्याविना आपनी प्रतिज्ञा शी रीते पूर्ण थइ?' त्यारे गुरुए 'आम जाते आव्यो हतो.' एम कहीने सर्व गुह्य वाक्योनो बीजो अर्थ राजाने समजाव्यो. तेज वखते वेश्याए तथा द्वारपाळे पण आवीने आमराजानां नामवाळा बन्ने कंकण धर्मराजानी पासे रजु कर्या. तेथी धर्मराजाने ते वातनी खात्री थइ. धर्मराजाए गुरुने कह्यु के 'हे गुरु! हु वचनना छळथी (कपटथी) छेतरायो छुं.' पछी धर्मराजानी रजा लइने गुरु विहार करी आम राजाने रस्तामाज मळ्या. अने तेमनी साथे ग्वालीयर गया. त्यां प्रथमनी जेम आमराजाए भक्तिपूर्वक गुरुने बहुमानथी राख्या.

एकदा त्या सुंवर्नु टोळु आव्यु. तेमा एक सुदर मातगी बाळा अति मधुर स्वरे गायन करवा लागी. ते जोइने आम राजा कामातुर थइ बोल्यो के—

> वक्त्रं पूर्णशशी सुधाधरलता दन्ता मणिश्रेणयः
> कान्तिः श्रीर्गमन गज परिमलस्ते पारिजातद्रुमः ।
> वाणी कामदुघा कटाक्षलहरी सा कालकूटच्छटा
> तत्किं चन्द्रमुखि त्वदर्थममरैरामन्थि दुग्धोदधिः ॥१॥

भावार्थ—" चंद्र समान मुखवाळी हे स्त्री! तारं मुख पूर्णिमाना चद्र

---

1 धर्मराजा अने आमराजा परस्पर शत्रु हता, तेथी समभ आवा अन्योक्तिवाळा वचनो कहेवाता हता. परतु तेमा धर्मराजा मात्र सीधोज अर्थ समजतो हतो गूढ अर्थ समजतो नहोतो.

जेवु छे, तारा अधरो सुधा (अमृत) समान छे, तारा दात मणिनी पंक्ति जेवा छे, तारी कांति लक्ष्मीना जेवी छे, तारी गति (चाल) ऐरावण हाथीना जेवी छे, तारा श्वासनो गंध पारिजात वृक्ष जेवो छे, तारी वाणी कामधेनु जेवी छे, अने तारा नेत्रना कटाक्षनी लहेर काळकूट विषनी छटा जेवी छे (कामी पुरुषोने हण प्रहत करनारी छे.) तो हे मुग्धा ! शु तारे माटेज देवताओए क्षीर समुद्रनु मं थन कर्यु छे ? अर्थात् देवोए क्षीरसमुद्रनु मथन करीने जे रत्नो काढ्यां छे, ते सर्व तारा शरीरना अवयवोमा जोवामा आवे छे. "

ते सान्नळीने सूरिए विचार्यु के अहो ! महा पुरुषोनी मति पण केवी विपर्यास पामे छे ? ' पछी गायन बंध थयु, अने सन्ना विसर्जन थइ. परंतु राजानु चित्त ते मातंगीपर मोह पामेलु हतु, तेथी तेणीनी साथे रहेवा माटे तेणे गामनी बहार एक मासाद त्रण दिवसमां तैयार कराव्यो. ते प्रासाद कराववानो हेतु समजीने गुरुए विचार्यु के " अहो ! आ राजा मारो संग छता पण कुकर्ममां प्रवर्ते छे, तेथी ते अवश्य नरके जशे माटे कोइपण युक्तिथी तेने प्रतिबोध करु के जेथी ते आवा नरकना हेतुरुप कुकर्मथी अटके. " एम विचारीने सूरिए रात्रे गुप्त रीते जइने ते नवा प्रासादना भारवटपर रत्नीथी तेने प्रतिबोध करवा माटे जळ उपरनी अन्योक्तिवाळा श्लोको लख्या—

> शैत्यं नाम गुणस्तवैव न्नवति स्वान्नाविकी स्वच्छता
> किं ब्रूम शुचिता न्नवन्ति शुचयस्त्वत्सङ्गतोऽन्ये यत. ।
> किं चात परमस्ति ते स्तुतिपद त्व जीवित देहिना
> त्वं चेन्नीचपथेन गच्छसि पय कस्त्वा निरोद्धु क्षम ॥१॥

न्नावार्थ—" हे जळ ! तारामा शीतना गुण एकांते रह्यो छे. तारी स्वच्छता (निर्मळता) स्वाभाविक ज छे. तारी निर्मळता विषे वधारे शु कहीए ? पण तारा संगथी बीजा लोको पण निर्मळ—पवित्र थाय छे. वळी तु प्राणीओना जीवितनो आधार छे तो तेथी वधारे तारी शी स्तुति अमारे करवी ? परंतु हे जळ जो तुज नीच मार्गे जइश, तो पछी तने रोकवाने कोण समर्थ छे ? "

> क्षिज्जइ जेण जणे, मइलिज्जई निअकुलक्कमो जेण ।

कंठट्ठिए वि जीए, तं न कुलीणेहिं कायव्वं ॥ २ ॥

भावार्थ—" जे अकार्य करवाथी लोकमा लज्जा पमाय छे, अने जे अकार्य करवाथी पोताना कुळनो क्रम मलीन थाय छे, तेवुं अकार्य कुलीन माणसोए कंठे प्राण आवे (मरवानी तैयारी थाय) तो पण करवु नही." विगेरे.

प्रातःकाळे राजा ते प्रासाद जोवाने माटे गयो. त्या तेणे ते श्लोको जोया, वाच्या, अने पछी विचार करवा लाग्यो के—' मारा मित्र विना मने आवो बोध कोण आपे ? अरे हु केवु अकार्य करवा तैयार थयो ? धिकार छे मारा जीवितने ! हवे हु गुरुने शी रीते मारु मुख बतावु ? माटे हवे तो मारा आ कलंकित जन्मने ज धिक्कार छे. " इत्यादि घणी रीते पश्चात्ताप करीने राजाए अग्निमा प्रवेश करवानो निश्चय कर्यो. प्रधानादिकोए ते वात सूरिने आवीने करी. त्यारे गुरु महाराज राजा पासे आवी बोल्या के " हे राजा ! आम आत्महत्या करवाथी शु फळ मळवानु छे ? मनथी बांधेलुं कर्म मनथी ज नाश पामे छे. अथवा आ विषे तुं स्मार्त धर्मवाळा ब्राह्मणोने पूछी जो केमके स्मृतिओमा पण पापनु प्रायश्चित्त आपेलु छे. " ते सांभळीने राजाए ब्राह्मणोने बोलावीने तेनुं प्रायश्चित्त पूछ्युं. त्यारे तेओ बोल्या के—

आयःपुत्तलिकां वह्निध्मातां तद्वर्णरूपिणीम् ।
आश्लिष्यन्मुच्यते सद्यः, पापाच्चांडालीसंभवात् ॥ १ ॥

भावार्थ—" लोढानी पुतळीने अग्निमा तपावी अग्निना वर्ण जेवी लाल करीने तेने आलिंगन करे, तो चंडालीना स्पर्शथी उत्पन्न थयेला पापथी माणस तत्काळ मुक्त थाय छे. "

ते सांभळीने राजा तेम करवा तैयार थयो. त्यारे गुरुए तेने कह्यु के " हे राजा ! तें तो संकल्प मात्रथी पाप कर्यु छे काइ तेनो संगम कर्यो नथी, तेथी ते पश्चात्ताप करवाथीज मुक्त थयु छ. तो हवे पतंगीयानी जेम फोगट मृत्यु करवाथी शुं फळ छे ? हवे तु चिरकाळ सुधी जैनधर्मनु आचरण कर के जेथी आत्मानुं कल्याण थाय. " ते सांभळीने गुरुनु वचन मान्य करी राजा पोताने घेर आव्यो.

एकदा राजाए गुरुने पूछ्यु के ' हे गुरु ! हुं पूर्व भवे कोण हतो ? ' त्यारे गुरुए कह्युं के ' आ प्रश्ननो जवाब हु काले आपीश. ' एम कहीने गुरु उ-

पाश्रये आव्या रात्रे सरस्वती देवीने पूछीने गुरुए राजानो पूर्वभव जाणी लीधो. पछी प्रातःकाळे सभामां गया. त्यारे गुरुए राजाने तेनो पूर्वभव आ प्रमाणे कह्यो के "हे राजा ! पूर्वभवे तुं तापस हतो. तें कालिंजर नामना गिरिना तट उपर शाल वृक्षनी नीचे रहीने एकांतर उपवास करवावडे दोढसो वर्ष सुधी उग्र तपस्या करी हती. त्याथी आयुष्यनो क्षय थये, मृत्यु पामीने तुं राजा थयो छे. आ वातनी प्रतीति करवी होय तो ते वृक्षनी नीचे हजु सुधी तारी जटा पडेली छे." ते सांभळीने राजाए पोताना सेवकने मोकली ते जटा मगावी. ते जोइने राजाने खात्री थइ. तेथी ते शुद्ध श्रावक धर्म पाळवा लाग्यो. पछी गुरुना उपदेशथी मोटा आडंबर सहित ते राजाए सिद्धाचळनी यात्रा करी, अने ते वखते दिगंबरीओए दबावेला गिरिनार तीर्थने वाळी श्वेतांबरनुं तीर्थ कर्युं.

आम राजाए राज्यनुं न्यायथी प्रतिपालन करी नमस्कारनुं ध्यान करवामां तत्पर थइ उत्तम धर्मने साध्यो. अने कविनी सभामां सूर्यसमान एवा गुरु पण आयुष्यने क्षये स्वर्गे गया. आ कथा पूर्वसूरिए रचेला चतुर्विंशति प्रबंधमां सविस्तर आपेली छे

"कोइथी बोध न पामे एवा आम राजाने प्रतिबोध पमाडी, कवितादिकना गुणे करीने ब्राह्मण वर्गनो पराजय करी, विद्वानोना चक्रवर्ती बप्पभट्टी सूरि शासननी उन्नति करी स्वर्ग सुखने पाम्या."

इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे पंचत्रिंशत्तम
व्याख्यानम् ॥ ३५ ॥

व्याख्यान ३६ मुं.



समकितना पांच भूषणमांना पहेला स्थैर्य नामना भूषण विषे

धर्मांगमेभिर्भूष्यन्ते, भूषणानीति कथ्यते ।
सुरादिभ्योऽप्यक्षोभत्वं, तत्राद्यं स्थैर्यभूषणम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" स्थैर्यादिके करीने धर्म रुपी अंग शोभा पामे छे, माटे ते भूषण कहेवाय छे. तेमा देवादिकथी पण क्षोभ न पामवो, ए पहेलु स्थैर्य नामनु भूषण (समकितनुं घरेणु) कहेवाय छे. "

आ स्थैर्य नामना भूषण पर सुलसानु चरित्र जाणवु. ते आ प्रमाणे—

तद्दर्शनं किमपि सा सुलसाप येन, प्रादाज्जिनोऽपि महिमानममानमस्यै।
नैर्मल्यतःशशिकला न च केतकीस्त्रमालातुला चहरमूर्ध्नि वभारगंगा[1]॥

भावार्थ—" अलौकिक एवुं ते समकित तो सुलसाए ज प्राप्त कर्युं छे के जेथी तेणीनी निर्मळताने लीधे साक्षात् श्री महावीर स्वामीए पण ते सुलसानो अत्यंत महिमा वधार्यो. पण ते योग्य छे केमके महादेवना मस्तक पर चंद्रनी रेखा, केतकीनी माळा अने गंगा नदी ए त्रण रहेला छे, पण तेमा निर्मळताने लीधे जेवी गगा शोभे छे, तेवी चन्द्ररेखा के केतकीनी माळा शोभती नथी. "

सुलसा चरित्र

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अने शूद्रादिक अनेक जनोथी भरपूर अने श्रीमंत लोकोथी विराजमान एवा रमणीक राजगृह नगरने विषे श्रेणिक राजा राज्य करता हता. ते समये ते नगरमा नाग सारथि नामे एक श्रावक रहेतो हतो. तेने सुलसा नामनी पत्नी हती. ते सुलसा शीलादिक गुणोथी युक्त हती, परंतु दैवयोगे तेने काइ पण संतान थयु नहोतुं. एकदा बीजाना पुत्रोने जोइने तेणीनो पति नाग सारथि शोकातुर थयो. ते जोइने सुलसाए कह्यु के "हे स्वामी ! तमे खेद

[1] उत्तरार्द्ध अशुद्ध छे

न करो. आपणो मनोरथ धर्मना आराधनथी फळीभूत थशे." ए रीते पतिने शांत करीने सुलसा निरंतर जिनेश्वरनी त्रिकाळ पूजा करवा लागी, ब्रह्मचर्य पाळवा लागी अने हमेशा आचाम्ल (आंबेल) करवा लागी.

एकदा शक्र इन्द्रे पोतानी सभामां ते सुलसाना सत्वनी प्रशंसा करी. ते सांभळीने इन्द्रनो सेनापति हरिणैगमेषी तेणीनी परीक्षा करवा माटे वे साधुनुं रूप धारण करी सुलसा पासे आवीने बोल्यो के 'हे श्राविका' रोगी साधुओने माटे औषधमां लक्षपाक तेलनो खप छे माटे ते आपो.' ते सांभळीने हर्ष पामेली सुलसा घरमां जइ लक्षपाक तेलनो सीसो लावीने तेने वहोरावया जाय छे तेटलामां ते देवे दैवी शक्तिथी तेणीना हाथमां रहेलो सीसो पृथ्वी पर पाडी फोडी नाख्यो. एटले सुलसा फरीथी बीजो सीसो लावी, ते पण देवे फोडी नांख्यो. ए प्रमाणे तेणीए सात सीसा आप्या. ते साते ते देवे फोडी नाख्या, तो पण तेणीनो भाव बिलकुल खंडित थयो नहीं ते जोइने प्रसन्न थयेलो ते देव प्रत्यक्ष थइने बोल्यो के "हे भद्रे ! हु हरिणैगमेषी देव तारी परीक्षा करवा माटे आव्यो हतो. तारो दृढ भाव जोइने हुं तारा पर प्रसन्न थयो छु, माटे तु मारी पासे काइक वरदान माग" त्यारे सुलसा बोली के 'हे देव ! जो तमे प्रसन्न थया हो तो मारे पुत्र नथी ते आपो.' ते सांभळीने ते देवे हर्षथी बत्रीश गुटिका (गोळीओ) आपी अने कह्यु के 'आमांथी एक एक गोळी खावी. एटले तेथी एकेक पुत्र थशे.' एम कहीने फोडेला सीसा पाछा हता तेवा करीने ते देव स्वर्ग गयो.

पछी सुलसा ज्यारे ऋतुस्नात थइ त्यारे तेणीए विचार कर्यो के "आ गुटिका एक एक खावाथी बत्रीश वखत गर्भना तथा सूतिकाना दुःखने सहन करवां पडशे. माटे एक साथे ज बत्रीशे गुटिका खाइ जाउं तो बत्रीश लक्षणवाळो एकज पुत्र थाय" एम धारीने सर्व गुटिकाओ खाइ गइ तेथी तेने एक साथे बत्रीश गर्भ रह्या. ते गर्भोना अत्यंत भारने लीधे सुलसाने बहु व्यथा थवा लागी एटले तेणे कायोत्सर्ग करीने ते देवनुं स्मरण कर्युं. तरतज ते देव प्रत्यक्ष थइ तेणीनी व्यथा दूर करीने बोल्यो के "हे सुलसा ! तें आ अघटित कार्य कर्युं छे, केमके बत्रीश गोळी एक साथे खावाथी तने एक साथे बत्रीश पुत्रो थशे, अने तेओनुं आयुष्य सरखुं होवाथी ते सर्व समकाळेज मृत्यु पामशे परंतु भवितव्यता दुर्लंघ्य छे. कह्यु छे के—

गुणाभिरामो यदि रामचन्द्रो, राज्यैकयोग्योऽपि वनं जगाम ॥
विद्याधरश्रीदशकन्धरश्च, प्रभूतदारोऽपि जहार सीताम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" अनेक गुणोथी सुंदर अने राज्यने ज योग्य एवा रामचंद्रने पण वनमा जवु पड्युं. तथा विद्याधर एवा दशकंधर (रावण)ने घणी सुंदर स्त्री ओ हती छता तेणे सीतानु हरण कर्युं. (आ सर्व भवितव्यताने लीधेज थयुं.)

आ प्रमाणे कहीने ते देव स्वर्गे गयो सुलसाए गर्भस्थिति पूर्ण थये बत्रीश पुत्रो एक साथे प्रसव्या नाग सारथिए ते पुत्रोनो जन्मोत्सव कर्यो. अनुक्रमे ते पुत्रो युवावस्थाने पाम्या. त्यारे तेने बत्रीश बत्रीश कन्याओ परणावी. ते सर्वे श्रेणिक राजाना अंगरक्षक सेवको थया.

एकदा कोइ एक तापसी चेटक राजानी सुज्येष्ठा नामनी पुत्रीनुं चित्र लइने श्रेणिक राजानी सभामां आवी. राजाने ते चित्र जोइने तेणीने परणवानी इच्छा थइ. तेथी राजाए ते विषे अभयकुमारने आज्ञा करी. एटले अभयकुमारे गाधीना वेषे चेडा राजानी विशाळा नगरीमा जइ राजाना अन्तःपुरनी पासे दुकान मांडी. पछी ज्यारे सुज्येष्ठानी दासी तेनी दुकाने कांइ वस्तु लेवा आवे त्यारे अभयकुमार श्रेणिक राजाना चित्रनी पूजा करे. ते जोइने एकदा दासीए तेने पूछ्युं के ' आ कोनुं रूप (चित्र) छे ? ' त्यारे तेणे ' श्रेणिक राजानुं छे ' एम कह्यु. ते सांभळीने दासीए अभयकुमार पासेथी ते चित्र मागी लइने सुज्येष्ठाने बताव्युं. ते जोइने सुज्येष्ठा अत्यंत कामातुर थइने बोली के ' हे दासी ! आ राजा मारो पति थाय, तेवी तुं काइ पण युक्ति कर. ' ते सांभळीने दासीए ते वात अभयकुमारने जणावी. त्यारे अभये तेणीना अन्तःपुरथी आरंभीने राजगृह नगर सुधी सुरंग करावी. पछी ते रस्ते पिताने अमुक दिवसे त्यां आववानुं जणाव्युं. तेज वखते श्रेणिक राजा पोताना बत्रीश अंगरक्षकोने लइने त्यां आवी पहोंच्या. ते खबर जाणी मोहित थयेली सुज्येष्ठा श्रेणिकनी साथे जवाने तैयार थइ. ते वखते तेनी नानी बेन चेल्लणा बोली के ' हे बेन ! मारो पण एज स्वामी थाओ.' एम कही ते बन्ने बहेनो सुरंगना द्वार पासे आवी. तेवामा सुज्येष्ठा पोताना आभूषणनो करंडीयो (डाबडो) भूली गइ हती. ते लेवा जवा उत्सुक थइ, अने बोली के " हे बहेन ! हुं मारो अलंकारनो करंडीयो लेवा जाउं छुं, मा-

रा विना तु आगळ जइश नहीं. " एम कहीने सुज्येष्ठा पाछी गइ ते वखते सु लसाना पुत्रो के जेओ श्रेणिक राजानी साथे आव्या हता तेओए राजाने कह्यु के ' हे स्वामी ! अहीं शत्रुना घरमा घणीवार रहेवु योग्य नथी ' ते सांभळीने राजा चेल्लणाने लइने चालता थया. थोडीवारे सुज्येष्ठा पोतानो करंडीयो लइने आवी. पण राजाने के पोतानी बहेनने के कोइने जोयां नहीं तेथी इर्ष्याने लीधे तेणीए पोकार कर्यो के ' दोडो, दोडो, मारी बेन चेल्लणाने कोइ हरी जाय छे ' ते सांभळीने चेटक राजानु सैन्य तरतज आव्यु अने ते सुरंगमा श्रेणिकनी पाछळ पड्यु. ते सैन्य श्रेणिकनी नजीक आवी पहोंच्यु एटले त्यां युद्ध थयु तेमां चेटक राजाना सेनापति वैरंगिके सुलसाना एक पुत्रने हण्यो एटले तेज वखते बीजा (बाकीना) एकत्रीश पुत्रो पण मृत्यु पाम्या. श्रेणिक राजा उतावळो चाली पोताना नगरमा आवी पहोंच्यो. अने तरतज तेणे चेल्लणानु पाणिग्रहण कर्यु

अहिं पोताना बत्रीशे पुत्रोनु मरण सांभळीने नाग सारथि तथा सुलसा अत्यंत रुदन करवा लाग्या ते वखते अभयकुमारे तेमने कह्यु के—" जैनधर्मना तत्वने जाणनारा तथा अनित्यादिक भावनाना भावनारा एवा तमारे अविवेकी मनुष्योनी जेम शोकसागरमा पडवु युक्त नथी कह्यु छे के—

कुशकोटिगतोदकबिन्दुवत्, परिपक्वद्रुमपत्रवृन्दवत् ।
जलबुद्बुदवच्छरीरिणा, क्षणिकं देहमिदं च जीवितम् ॥१॥

भावार्थ—" दर्भना अग्र भागपर रहेला जळना बिंदुनी जेम, वृक्षना परिपक्व थयेला पत्रसमूहनी जेम अने जळना बुद्बुद (परपोटा) नी जेम प्राणीओनो आ देह तथा जीवित क्षणभंगुर छे "

ते सांभळीने नाग सारथि तथा सुलसा शोक रहित थया.

एकदा चंपा नगरीमां श्रीमहावीर स्वामीने नमीने अंबड नामनो परिव्राजक जे जैन धर्म पाम्यो हतो ते राजगृही नगरी तरफ चाल्यो ते वखते श्री जिनेश्वरे तेने कह्यु के—" हे परिव्राजक ! तमे राजगृही नगरीए जाओ छो तो त्यां सुलसा श्राविका रहे छे, तेने अमारो धर्मलाभ कहेजो " ते प्रभुनु वाक्य अंगीकार करी अंबड परिव्राजके राजगृही नगरीए आवी विचार कर्यो के—" भगवाने पोते जे सुलसाने धर्मलाभ कहेवराव्यो छे, तेणीनी धर्ममा स्थिरता

केवी छे ? तेनी हु परीक्षा करु." एम विचारीने ते परिव्राजके नगरनी पूर्वदिशाना दरवाजा बहार वैक्रिय लब्धिथी चार मुखवाळा, हंसना वाहनवाळा, अने जेना अर्धांगमा सावित्री रहेली छे, एवु साक्षात् ब्रह्मानुं स्वरुप कर्यु. ते जोइने नगरना सर्व लोको ते ब्रह्माने वदना करवा गया, परंतु जैन धर्ममा दृढ अनुरागवाळी सुलसा घणा मनुष्योना कह्या छता पण त्या गइ नहिं. पछी बीजे दिवसे दक्षिण दिशाना दरवाजा बहार ते परिव्राजके वृषभना वाहनवाळा, अर्धा अगमा पार्वतीने धारण करनारा तथा आखा शरीरे भस्मथी शोभित एवा शकरनु स्वरुप विकुर्व्युं. त्यां पण मुलसा विना सर्व लोको तेने वादवा गया. पछी त्रीजे दिवसे पश्चिम दिशाना दरवाजा बहार गरूडना वाहनवाळा, चार हाथवाळा अने सुदर स्त्रीओथी परिवरेला कृष्णनुं स्वरुप विकुर्व्युं. त्यां पण एक सुलसा विना सर्व लोको तेने वांदवा गया. पछी चोथे दिवसे उत्तर तरफना दरवाजा बहार समवसरणमां बिराजेला तीर्थंकरनु रुप विकुर्व्यु, तो पण ते सुलसा तेने वंदना करवा गइ नहिं. त्यारे तेने बोलाववा माटे तेणे कोइ माणसने मोकल्यो. ते माणसे जइने सुलसाने कह्यु के "आपणा नगरनी बहार पचीशमा तीर्थंकर समवसर्या छे, तेने वांदवा माटे केम जता नथी ?" ते सांभळीने सुलसा बोली के "हे भाइ ! ते जिनेश्वर नथी पण कोइ पाखंडी पचीशमा तीर्थंकरनु नाम धारण करीने लोकोने छेतरे छे." एवी रीते ते सुलसा लेश पण धर्मथी चलित थइ नहिं. पांचमे दिवसे ते अखड परिव्राजक श्रावकनो वेष धारण करीने सुलसाने घेर गयो एटले सुलसाए तेनो सारी रीते सत्कार कर्यो. पछी तेणे सुलसाने कह्यु के "हे सुलसा ! तमे पुण्यशाळी छो, केमके मारे मुखे परमात्मा श्री महावीर प्रभुए तमने धर्मलाभ कहेवराव्या छे." ते सांभळीने हर्षित थयेली सुलसा उभी थइ भक्तिथी प्रभुनी आ प्रमाणे स्तुति करवा लागी.

मोहमल्लबलमर्दनवीर, पापपंकगमनामलनीर ।
कर्मरेणुहरणैकसमीर, त्वं जिनेश्वरपते जय वीर ॥१॥

भावार्थ—"मोहरूपी मल्लना सैन्यनु मर्दन करवामां शूरवीर, पापरूपी पंकने धोवामां निर्मळ जळ समान अने कर्मरूपी रजनु हरण करवामां वायु समान एवा हे श्री जिनेश्वर पति ! हे महावीर स्वामी ! आप जयवता वर्तो."

आ रीते स्तुति करती सुलसानी प्रशंसा करीने ते परिव्राजक पोताने स्थाने गयो.

श्रीअगुणथी शोभती सुलसा सद्धर्मनु आराधन करीने स्वर्ग गइ त्यांथी चवीने आ भरतक्षेत्रने विषे आवती चोवीशीमां निर्मम नामना पदरमा तीर्थंकर थशे.

" श्री वर्धमान स्वामीना मुख थकी स्थिरता, उदारता अने महार्थवाळी भरेलुं, त्रण जगतने आश्चर्य करनारु आ निर्मळ सुलसानु चरित्र सांभळीने हे भव्य प्राणीओ ! तमे पण आ श्रेष्ठ धर्मने विषे स्थिरता राखो, के जेथी समकितवडे विभूषित थयेला तमे मुक्ति रुपी स्त्रीना आलिंगन सुखने पामो. "

इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तम्भे षट्त्रिंशत्तम
व्याख्यानम् ॥ ३६ ॥

व्याख्यान ३७ मु

प्रभावना नामना बीजा भूषण विषे

अनेकधर्मकार्येण, कुर्यात्तीर्थोन्नतिं सदा ।
प्रभावनाख्यं विज्ञेयं द्वितीयं सम्यक्त्वभूषणम् ॥१॥

भावार्थ—" धर्मना अनेक कार्यो करवा वडे निरंतर तीर्थनी (जैन शासननी) उन्नति करवी ते प्रभावना नामनु समकितनु बीजु भूषण जाणवु. " आनो भावार्थ देवपाळ राजाना मवथी जाणवो.

देवपाळ राजानी कथा

अचलपुरमां सिंह करतो हतो ते नगरमां जिनदत्त
[illegible] श्रेष्ठी हतो ते राजा देवपाळ नामनो एक

चाकर हतो ते हंमेशा वनमां श्रेष्ठीनी गायो चारवा जतो हतो. एकदा वर्षाऋतुमां देवपाळे नदीना कांठा पर श्रीयुगादि जिनेश्वरनुं सूर्यनी कांति जेवुं प्रकाशित बिंब जोयुं. ते जोइने तेणे एक घासनी झुंपडी करी तेमां ते बिंब पधरावी पुष्पादिकथी पूजा करी नियम ग्रहण कर्यो के ' आजथी हमेशां आ प्रजुनी पूजा कर्या विना मारे जोजन करवुं नहिं. ' एवो नियम लइने ते पोताने स्थाने गयो. पछी एकदा पाणी वृष्टिने लीधे नदीमां पूर आव्युं तेथी ते देवपाळ नदीने सामे कांठे जइ शक्यो नहिं. तेथी प्रजुना दर्शन न थवाथी शोक करतो ते घेरे पाछो गयो. त्यां श्रेष्ठीए तेने जोजन करवानुं कह्युं. त्यारे तेणे पोतानो नियम कहीने जोजननी ना पाडी. ते सांजळीने हर्षित थयेला श्रेष्ठीए तेने कह्युं के ' आपणा गृहचैत्यनी पूजा करी ले ' ते सांजळीने तेणे गृहचैत्यनी पूजा करी पण जोजन कर्युं नहिं. एम करतां सात दिवस वीती गया. तो पण नदीनुं पूर उतर्युं नहीं. तेथी ते सातदिवस सुधी जोजन रहितज रह्यो. आठमे दिवसे पूर उतर्युं त्यारे प्रातःकाळे देवपाळ ते पर्णकुटीमां आदिनाथनी पूजा करवा गयो. त्यां तेणे एक जयंकर सिंहने जोयो. पण तेनाथी जरा पण डर्या विना तेनी शीयाळनी जेम अवगणना करीने तेणे प्रजुनी पूजा करी. पछी ते बोल्यो के—

> त्वद्दर्शन विना स्वामिन्ममाजूत्सप्तवासरी ।
> अकृतार्था यथारण्यजूमिरुहफलावलिः ॥ १ ॥

जावार्थ—" हे स्वामी ! आपना दर्शन विना अरण्यमां रहेला वृक्षोना फळ समुदायनी जेम मारा सात दिवसो अकृतार्थ (निष्फळ) गया. "

ते वखते तेना सत्त्व अने जक्तिथी प्रसन्न थयेलो कोइ देव बोल्यो के ' हे जद्र ! हुं तारा पर प्रसन्न थयो छुं माटे तुं वरदान माग. ' त्यारे देवपाळे कह्युं के ' हे देव ! जो प्रसन्न थया हो तो मने आ नगरनुं राज्य आपो. ' ते सांजळीने देव बोल्यो के ' आजथी सातमे दिवसे तने अवश्य राज्य मळशे. ' एम कहीने देव अदृश्य थयो. देवपाळे पण पोताने स्थाने जइ जोजन कर्युं.

सातमे दिवसे ते गामनो अपुत्रीयो राजा मरण पाम्यो. तेथी प्रधान विगेरेए पंचदिव्य प्रकट कर्यां. ते फरतां फरतां अरण्यमां ज्यां देवपाळ ढोर चारतो हतो त्यां आव्यां. एटले हाथीणीए देवपाळ पर कळश ढोळ्यो. तेथी प्रधानोए

तेने राज्याभिषेक करी गादीपर बेसाड्यो. ते देवपाळ राजा थयो, परतु ते प्रथम चाकर हतो, तेथी तेनी आज्ञा कोइ मानतु नहिं. तेथी तेणे खेद युक्त थइ राज आपनार देवने संभार्यो. ते प्रकट थयो, एटले तेने कह्यु के " हे देव ! मारे तमारु आपेलु राज्य जोइतु नथी, मने पाछु चाकरपणुज आपो, केमके ज्यां मारी आज्ञा कोइ माने नहिं, त्यां राज्यने शु करु ? " ते सांभळीने देवे कह्यु के " हुं कहु तेम तु कर, एटले तारी आज्ञा सर्व कोइ मानशे. तारे कुंभार पासे माटीनो एक मोटो हाथी जेवडो हाथी कराववो, पछी तेनापर बेसीने फरवु, एटले सौ कोइ तारी आज्ञा मानशे. " देवपाळे ते प्रमाणे कर्यु. एटले दिव्य प्रभावथी ते माटीनो हाथी गध हस्तिनी जेम मार्गमा चालवा लाग्यो. ते जोइ सर्व लोको आश्चर्य पामी तेनी आज्ञा मानवा लाग्या पछी ते देवपाळ राजाए पोताना पूर्वना स्वामी श्रेष्ठीने प्रधानपद आप्यु, अने नदीने कांठे कुपरीमां स्थापन करेला बिंबने लावी गाममा एक मोटो भव्य प्रासाद करावी तेमा स्थापन कर्यु. ते जिनबिंबनी त्रिकाळ पूजा करीने ते देवपाळ राजाए जिनशासननी प्रभावना करी

ते देवपाळ राजा पूर्वना राजा सिंहनी पुत्री साथे परणीने तेणीनी साथे भोगविलास करवा लाग्यो. एकदा ते राणी राजानी साथे पोताना महेलना गोखमां बेठी हती, तेवामा एक वृध्ध पुरुष पोताने माथे काष्ठनो भारो लइने महेल पासेथी नीकळ्यो. तेने जोइने राणी तरतज मूर्छा पामी. राजाए शीत उपचार करीने तेणीने सज्ज करी त्यारे तेणीए ते वृध्धने महेलमां बोलावी तेनी समक्ष पोतानु वृत्तांत राजाने कही संभळाव्यु के " हे स्वामी ! हु पूर्वभवे आ पुरुषनी स्त्री हती. ते वखते में तमे जे बिंबनी पूजा करोछो तेज बिंबनी पूजा करी हती. ते पूजाना प्रभावथी आ भवे हु राजपुत्री थइने आपनी राणी थइ छु पूर्वभवे में आ पुरुषने पण कह्यु हतु पण तेणे वीतराग धर्म अंगीकार कर्यो नहिं, तेथी ते हजु सुधी आवी अवस्था भोगवे छे. " ते सांभळीने ते वृध्ध काष्ठवाहक कांइक धर्मनो रागी थयो

देवपाळ राजाए अनुक्रमे परमात्मानी पूजा प्रभावना करीने तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन कर्यु अने अंते प्रव्रज्या ग्रहण करीने स्वर्गे गयो.

" रंक जेवो देवपाळ पण जिनेश्वरनी पूजाना प्रभावथी तेज भवे अश्व हस्ती विगेरे सैन्यथी व्याप्त एवु राज्य पाम्यो अने जिनमतनी प्रभावना करवाथी तीर्थंकर

नाम कर्म उपार्जन कर्युं. तेवी रीते अन्य भव्य प्राणीओए पण जिनधर्मनी प्रभावना करवी, जेथी अक्षय सुख प्राप्त थाय. ”

॥ इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तम्भे सप्तत्रिंशत्तमं व्याख्यानम् ॥ ३७ ॥

व्याख्यान ३८ मु.

क्रियाकुशलता रूपी त्रीजा भूषण विषे

कौशल्यं विद्यते यस्य, क्रियास्वावश्यकादिषु ।
द्वितीयेतरमाचर्यमेतत्सम्यक्त्वभूषणम् ॥ १ ॥

भावार्थ—“ आवश्यकादिक क्रियाओने विषे जेनी कुशळता होय ते समकितनु त्रीजु भूषण (भूषणवान्) कहेवाय छे. तेनु भव्यप्राणीए आचरण करवुं. ” आ संबंधमा उदायी राजानी कथा छे. ते नीचे प्रमाणे—

उदायी राजानी कथा.

राजगृह नगरमा कोणिक राजानी राणी पद्मावतीए पूर्णसमये पुत्रने जन्म आप्यो. तेनुं नाम उदायी पाड्युं. एकदा कुणिक राजा पोतानो भावो जघा उपर उदायी कुमारने बेसाडी भोजन करवा बेठो हतो. तेणे अर्धु भोजन कर्यु एटलामा ते बाळके घीनी धारानी जेम राजानी थाळीमां मूत्रनी धारा करी. ते वखते वत्सलताने लीधे राजाए ते बाळकने मूतरवाज दीधो, जरा पण हलाव्यो नहिं. केमके हलाववाथी मूत्रनो निरोध थाय अने तेथी व्याधि उत्पन्न थाय. पछी राजाए ते मूत्रवाळु भोजन हाथवडे काढी नाखी बाकीनु भोजन कर्युं. ‘ अहो ! मोहनो विलास केवो छे ? ’ पछी स्नेहथी परवश थयेला राजाए पोतानी माता चेल्लणाने कह्यु के “ हे माता ! आ पुत्रनापर मारो जेवो स्नेह छे, तेवो स्ने-

ह कोइनो हतो नहि, छे नहि, अने थशे पण नहि. " ते सांभळीने चेलणा देवी बोल्या के " हे वत्स! तारो स्नेह शी गणत्रीनो छे ? जेवो स्नेह तारा पिताने तारापर हतो, ते स्नेहना करोडमे अंशे पण तारो तारा पुत्रपरनो स्नेह नथी." कोणिके पुछ्युं 'हे माता ! मारापर मारा पिताने स्नेह केवो हतो ?' त्यारे चेलणा बोल्या के " हे वत्स ! ज्यारे तुं मारा गर्भमां हतो, त्यारे मने तारा पिताना आंतरडां खावानो दोहद थयो हतो. ते कोइ प्रकारनी युक्तिथी अभयकुमारे तारा पितानुं रक्षण करीने पूर्ण कर्यो हतो. पछी पूर्ण समये तारो जन्म थयो त्यारे 'आ पुत्र तेना पितानुं अहित करनार थशे' एम धारीने में तने तरतज दासीने आपी उद्यानमां तजी दीधो त्यां एक कुकडाए तारी टचली आंगळीने चावखी करडी. ते आंगळीमां कीडा पडवाथी ते पाचवाळी थइ गइ. में तने तजी दीधानो वृत्तांत तारा पिताना जाणवामां आव्यो एटले तेणे मारी निर्भत्सना करी पोतेज तने उद्यानमांथी पाछो लइ आव्या. पछी स्नेहने आधीन थयेला तारा पिता सर्व राजकार्यनो त्याग करी तारी आगळीनी सारवार करवा लाग्या. परतु ते आंगळीनी असह्य व्यथाने लीधे तुं घणोज रोवा लाग्यो. एटले तारा पिताए ते आगळी पोताना मुखमां राखी, त्यारे तुं रोतो बध थयो. अने तने कांइक पीडानी शांति थइ. आ रीते रात दिवस ते आगळी पोताना मुखमांज राखीने तारा पिताए तने आराम उपजाव्यो. ते वखते में तारा पिताने घणी रीते वार्या, पण तेणे मारुं कहेवुं मान्युं नहि एवो तारापर तेनो अपूर्व स्नेह हतो. " इत्यादि हकीकत सांभळीने कुणिक राजा घणो पश्चात्ताप करवा लाग्यो. पछी पोताना पिताने पोते पांजरामां पूरीने राज्यपर बेठो हतो तेथी तेने पांजरामांथी मुक्त करवाना हेतुथी ते हाथमां एक मोटो दंड लइने पांजरा तरफ दोड्यो तेने तेवी रीते यमराजनी जेम आवतो जोइने ते कुपुत्रना हाथथी अपमृत्युए मरवा करता जातेज मरवुं उचित धारी श्रेणिके तरतज तालपुट विषनुं आस्वादन कर्युं. तरतज ते मृत्यु पाम्या पिताने आत्मघातथी मृत्यु पामेला जोइ पोताना दुराचरणनी निंदा करतो अने पिताना स्नेहनुं स्मरण करतो कुणिक अत्यंत विलाप करवा लाग्यो. रात दिवस महा शोक करी अत्यंत दुःखने अनुभवता कुणिकराजाने जोइने मंत्रीओए तेनो शोक ओछो करवा माटे राजगृहीथी राजधानी फेरवीने चंपानगरी नामनी नवी राजधानी वसावी. त्यां रहेवाथी कुणिकनो शोक ओछो थयो.

कुणिक राजा महा बळवान हतो तेणे अनुक्रमे दक्षिण नरतार्धना सर्व राजाओने जीती लीधा. पछी पोताना बळथी तेणे कार्त्रिम चौदे रत्नो बनाव्या, अने ' हुं आ नरतक्षेत्रमां सप्तम नामनो तेरमो चक्रवर्ती थयो छुं ' ए रीते गर्वथी जोवा लाग्यो. पछी वैताढ्य पर्वतनी तमिस्रा गुहाना द्वार पासे जइ तेणे द्वारना कमाड पर जोरथी दंडनो प्रहार कर्यो. ते जोइ ते गुफाना अधिष्ठायक कृतमाळ देवने अति क्रोध चड्यो. तेथी तेणे तेने तेजक्षणे बाळीने नस्म करी नाख्यो. पछी मंत्रीओए तेनी गादी पर बाळक छता पण उदायी कुमारने स्थापन कर्यो. ते उदायी पण निरंतर पिताना स्नेहनुं स्मरण करी शोकातुर रहेवा लाग्यो. तेथी तेना शोकने दूर करवाना हेतुथी मंत्रीओए नवी राजधानी करवानो विचार करी शिल्प शास्त्रमां निपुण एवा शिल्पीओने राजधानीने योग्य एवा क्षेत्र (नूमि) नी शोध करवा माटे मोकल्या. ते शिल्पीओ पण उदयवाळी नूमिने शोधता शोधता गंगा नदीने कांठे आव्या. त्यां आर्णिकासुत नामना महामुनिए काळ कर्यो हतो. तेना अस्थि ते स्थाने पड्या हता तेना पर एक पाटल नामनुं वृक्ष उग्युं हतुं. ते वृक्ष पर पोपट बेठा हता. ते पोपटना मुखमां आवी आवीने पतंगीआओ स्वयमेव पडता हता. ते जोइने ते शिल्पीओए विचार कर्यो के " जेम आ पतंगीआओ पोतानी मेळेज पोपटोना आहार माटे आवे छे तेम जो अहीं नगर कर्युं होय, तो तेना राजा पासे पण शत्रुओनी लक्ष्मीओ आयास विनाज नोगववा लायक थाय, अर्थात् प्राप्त थाय. " एम विचारीने ते शिल्पीओए ते ज स्थाने राजधानीनुं खात मुहूर्त करीने पाटल वृक्षना नामथी पाटलीपुर नामनुं नगर वसाव्युं पछी उदायी राजा त्यां आवीने राज्य करवा लाग्यो.

ज्यारथी उदायी राजा पाटलीपुरमां आव्यो त्यारथी तेना प्रताप रूपी सूर्यना उदयने नहीं सहन करता शत्रु राजाओ घुवडनी जेम अंध थइ गया. उदायी राजाए प्रतिदिन दान, युद्ध ने धर्मनो घणो विस्तार कर्यो. जैनधर्मनी पृथ्वीपर सर्वत्र प्रनावना करी. सद्गुरु पासे बार व्रतो अंगीकार कर्या. ते व्रतना स्वप्नमां कदापि पण प्रवर्त्यो नहीं. तेनुं समकित अत्यंत दृढ हतुं. चार पर्वणीने विषे चार प्रहर पौषध चतुर्थ (उपवास) करी, देवगुरुने वंदना करी, छ आवश्यकनी क्रिया करी, पौषध ग्रहण करीने आत्माने पवित्र करतो हतो तेणे अंतःपुरमां ज पौषधशाळा करावी हती. तेमां रात्रिने समये विश्रांति लइने साधुनी जेम संथारो करतो

हतो. आ प्रमाणे ते जैनधर्मनी सर्व क्रियाओमा अत्यंत कुशळ थयो हतो

उदायी राजाए रणसंग्राममां कोइ राजाने मार्यो हतो, तेनो पुत्र पिता
वेर लेवा माटे अहर्निश चिंता कर्या करतो हतो. पण उदायी राजाने मारवाने
शक्तिमान थयो नहोतो. लेवट अन्य स्थान नहीं पामवाथी ते उज्जयिनीमा जइ
त्याना राजानी सेवा करवा लाग्यो एकदा तेणे अवंतिना राजाने विज्ञप्ति करी
" हे स्वामी ! जो आपनी आज्ञा होय तो आपना शत्रु उदायी राजाने हु मारी
नाखु. परंतु जो हु तेम करु तो मारा पर कृपा करीने आपे मने मारा पितानु राज्य
पाछु मेळववामा मदद करवी. " ते सांभळीने ते राजाए हर्षथी तेनु वचन कबूल
कर्यु. पछी तेने केटलुक द्रव्य आपीने त्याथी विदाय कर्यो ते राजपुत्र पाटली
पुरमा जइने उदायी राजानो सेवक थइ निरंतर तेना छिद्र जोवा लाग्यो परंतु ते
कांइ पण छिद्र पाम्यो नहीं. परंतु राजाना गृहने विषे निरंतर अस्खलित गतिए
जता आवता जैन मुनिओने तेणे जोया, बीजा कोइनो तेमा प्रवेश थतो दीठो
नहीं. पछी उदायी राजाना गृहमा प्रवेश करवानी इच्छावाळा ते राजपुत्रे कपटी
मुनि थवानो विचार करीने गुरु पासे जइ वंदना करीने विज्ञप्ति करी के " हे पू
ज्य ! हु संसारथी वैराग्य पाम्यो छु, माटे मारा पर अनुग्रह करीने मने दीक्षा
आपी कृतार्थ करो." ते सांभळीने ते कृपाळु महात्माए तेनो हृद्गत भाव जाण्या
विना तेने दीक्षा आपी. ते मायावीए कपटथी पोताना ओघामा गुप्त रीते एक
कंकलोहनी छरी संतामी राखी हती एवी रीते मायाथी तेणे सोळ वर्ष सु
धी व्रतनु पालन कर्यु, तो पण तेनी माया कोइना जाणवामा आवी नहीं क
ह्यु छे के—

दत्त प्रधान श्रामण्यं, न तच्चालक्षि केनचित् ।
सुप्रयुक्तस्य दम्भस्य, ब्रह्माप्यन्तं न गच्छति ॥ १ ॥

भावार्थ—" उत्कृष्ट चारित्र आप्यु, तोपण तेनी माया कोइ
ए जाणी नहीं. केमके अत्यंत गुप्त करेला कपटने ब्रह्मा पण जाणी शकता
नथी "

कपटमात्र मननी एकाग्रताने राखता अने अस्थिर चित्तवाळा ते माया
साधुए यथास्थित व्रतनु चिरकाळ पालन कर्यु. तोपण कागमु मननी

नो एक वाळ पण दयाना रसथी आर्द्र थयो नहीं. एकदा गुरु पाटलीपुरे धार्या. तेमनु आगमन सांभळीने उदायी राजा गुरुने वांदवा आव्यो. अ- गुरुने तथा बीजा साधुओने वंदना करी पछी गुरुना मुखथी व्याख्यान सां- ळी पोताने स्थाने गयो अन्यदा पर्वणीने दिवसे राजा प्रातःकाळे उठी विधि- र्वक प्रतिक्रमण करी अष्ट प्रकारी जिनपूजा करी गुरु पासे गयो. त्यां गुरुने चार- ो ने ओगणत्रीश स्थानकरुंे उपशोभित द्वादशावर्त वंदना करी, अतिचार आ- ोवी, गुरुने खमावीने चतुर्थ (उपवास)नु पच्चख्खाण लीधु. पछी सायकाळे ोताना अतःपुरनी पौषधशाळामा पौषध ग्रहण करवानी इच्छाथी राजाए गुरुने ोलाव्या. कह्यु छे के—

ज किंचि अणुठाणं, आवस्सयमाइयं चरणहेउ ।
तं करण गुरुमूले, गुरुविरहे ठवणापुरओ ॥ १ ॥

भावार्थ—" चरणना हेतुरूप जे कांइ आवश्यकादिक अनुष्ठान करवुं होय ते गुरुनी समक्ष करवु. गुरुने अभावे स्थापनाचार्यनी पासे करवुं. "

राजाना आमत्रणथी सूरि महाराज महेलमां आव्या. अने सोळ व- र्षयो चारित्र लइ विनयथी गुरुनो एकात सेवा करनार ते मायावी विनयरत्न ना- मना साधुने साथे लइ गया पछी राजाए गुरुने अभिवदना करी शास्त्रोक्त विधि- पूर्वक पौपध लइ गुरु साथेज प्रतिक्रमण कर्यु अने पहेलो प्रहर वील्या पछी प्र- तिलेखना करी सथारो पाथरीने ते पर कुर्कुटनी जेम चरणने सकोचीने सुइ गयो. सूरि पण धर्म सभळावीने त्रीजे पहोरे सुइ गया. ते समये पेलो दुष्ट मायावी क- पटथी घोरवार सुइ रही ' आज पिताना वैरीनुं वेर लेवानो समय छे ' एम वि- चारी निद्रावश थयेला राजाना कठपर कक्कोहनी छरी मूकी दीधी. पछी ते पापी अभव्य पौपधशाळामाथी नीकळी स्थण्डिल जवानु मीष बतावी द्वारपा- ळोए नहीं रोकवाथी राजमहेलमाथी नीकळी अनुक्रमे नगरनी पण बहार नीक- ळी चालतो थयो. अहीं राजाना कठमाथी रुधिरनो प्रवाह नीकळ्यो. ते गुरुना सथारा सुधी आव्यो. साक्षात् जाणे आपत्तिनोज प्रवाह होय, तेवा ते रुधिरना स्पर्शथी गुरु महाराज जागृत थइ गया. पछी तेवी रीते मृत्यु पामेला राजाने जोइ गुरुए विचार कर्यो के " अहो ! ते दुरात्माए जिनशासनने मलिन करनार अने

युगना अंतमुधी अपकीर्ति करावनार आवु महा दुष्ट कार्य कर्युं. पण हवे हुं स्वघात करीने श्री अरिहंत दर्शननी म्लानीनुं रक्षण करुं." एम विचारीने स्रि एं भवचरिम पच्चख्खाण करीने तेज छरी पोताना कंठपर मूकी. जेथी तत्क्ष देह छोडीने स्वर्गे गया. प्रात:काळे राजसेवकोए तेवुं अमंगलिक कार्य जोईने कार कर्यो. जेथी सर्व एकत्र थइ गया. तपास करतां जणायुं के पेला दु साधु वेषधारीए आ अकार्य कर्युं छे. तेनी घणी शोध करी, पण तेनो पत्तो म्यो नहीं.

पेलो दुष्ट अभव्य त्यांथी नाशीने उज्जयिनीए पहोंच्यो अने त्यांना जाने पोते उदायी राजाने मारीने आव्या संबंधी सर्व वृत्तांत यथास्थित कही ताव्युं. ते सांभळीने ते राजाए तेनो अत्यंत तिरस्कार करी कह्युं के "अरे दुष्ट तने धिक्कार छे. अरे अप्रार्थ्य (मृत्यु)ना प्रार्थनारा! काळी चौदशना जन्मेला महा पापी! तारुं मुख काळुं कर. हे पापीष्ठ! धर्मना मीषथी धर्म करतां एवा उदायी राजानो तें घात कर्यो! आवुं अधर्म कार्य करनार तुं मारा देशमांथीज चाल्यो जा" इत्यादि अत्यंत निर्भर्त्सना करीने तेले पोताना देशमांथी काढी मूक्यो. 'पापी पुरुषोने कोइ पण स्थाने इच्छितनी सिद्धि थतीज नथी.' ते दुष्ट अभव्य हतो तेथी बार[1] वर्ष सुधी आगमनुं श्रवण कर्युं, कराव्युं, अनेक प्रकारनी धर्म क्रिया करी, परंतु ते सर्व निष्फळ गयुं.

उदायी राजा तथाप्रकारनी धर्मक्रियामां कुशळ होवाथी मृत्यु पामीने देवलोकमां गयो. तेनी गादीपर नंद राजा थयो.

"आ प्रमाणे घणी पृथ्वीने भोगवनार श्री उदायी राजाना आश्चर्यकारक मनोहर चरित्रने कमळनी जेम कर्णमां धारण करीने हे पण्डित पुरुषो! श्री जैन धर्मनी सर्व क्रियाने विषे कुशळतानो विस्तार करी समकितने शोभावो, के जेथी तमने मनवांछित लक्ष्मी आनंदथी आलिंगन आपे."

1 प्रथम गाथाना स्मरण छ

॥ इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे अष्टत्रिंशत्तम
व्याख्यानम् ॥ ३८ ॥

व्याख्यान ३९ मुं.



अरिहंतादिकने विषे अतरंग नक्ति रूप चोथा नूषण विषे.

यथार्हमर्हदादीना, यद्भक्तिरान्तरीयकी ।
अलंकारश्चतुर्थः स्यात्सम्यक्त्वगुणद्योतकः ॥ १ ॥

नावार्थ—" यथायोग्य अर्हदादिकनी जे अन्यतर नक्ति करवी, ते सम्यक्त्व गुणने उद्योत करनार चोथुं भूषण कहेवाय छे "

धर्म पर अंतरग प्रीति विषे एक स्त्रीनु दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

एक स्त्रीनु दृष्टात

राजपुर नगरमा अमिततेज नामे राजा हतो. ते नगरमा एक परिव्राजक मत्रनो जाणनारो हतो ते विद्याना बळथी नगरमा सर्वत्र चोरी करतो हतो अने लोकोनी रूपवत स्त्रीओनु हरण करतो हतो. कह्यु छे के—

जं ज पासई जुवमणीणं, अलिउलसामलकुंतलवेणिं ।
नालत्थलअट्ठमिससिकरणिं, मयणंदोलत्तोलियसवणिं॥१॥
रूवविणिज्जियसुरवरतरुणिं, रइरससायरतारणतरणिं ।
तणुपहदासीकयनवतरणिं, त त सामिय हरइ स रमणिं॥२॥

नावार्थ—" भ्रमराना समूह जेवो जेनो श्याम केशपास छे, जेणीनु कपाळ अष्टमीना चद्र जेवु शोभे छे, कामदेवना आदोलन (हींचका) जेवा जेणीना कर्ण छे, जेणीए पोताना स्वरुपथी देवागनाओने जीती लीधी छे, जे क्रीडारसना सागरने तरवामा प्रवहण समान छे, जेणे शरीरनी कांतिथी नवा उगता सूर्यने पण दासरूप कर्यो छे, एवी जे जे युवती स्त्रीओने ते जोतो, ते ते स्त्रीओनुं ते हरण करतो हतो "

तेना दुःखथी व्याकुळ थयेला पौरजनोए राजाने विज्ञप्ति करी, त्यारे राजा पोते ते चोरनी शोध करवा नीकळ्यो. पाचमे दिवसे राते राजाए कोइ पुरु-

पने गाममांथी सुगंधी वस्तुओ, तेल अने तांबूल विगेरे लेतां जोयो तेम पुरुष चोर जाणीने राजा तेनी पाछळ चाल्यो ते पुरुष अरण्यमा जइ एक मोटी शिला थी ढंकेला पोताना गुप्तगृहमां जवा माटे ते शिलाने उपाडवा जतो हतो, ते क्षणमां राजाए खड्ग वडे तेनो शिरच्छेद कर्यो. पछी राजाए पौरजनोने बोलावीने ते गुप्तगृहमांथी सौ सौनी वस्तुओ आपी. तथा सर्व स्त्रीओने बहार काढी अने हती तेने सोंपी तेमां एक स्त्री ते परिव्राजकना कामणथी अस्थि मज्जा पर्यंत तेना पर रागी थइ हती, तेथी तेणीए परिव्राजकनी पाछळ बळी मरवानो निश्चय कर्यो, पण पोताना स्वामी पासे रहेवानी तेणीनी इच्छा थइ नहीं. तेवामां कोइ मंत्र जाणनारे तेना स्वामीने कह्यु के "जो ते परिव्राजकना अस्थिने पाणीमां वाटीने तेणीने पावामा आवशे तो ते परिव्राजके करेलु कामण दूर थशे अने स्वस्थता पामशे" ते सांभळीने ते स्त्रीना भर्तारे तेम कर्यु. एटले तेणीनो स्नेह परिव्राजक परथी उतरी गयो अने पोताना भर्तार पर थयो.

आ दृष्टान्तनो उपनय (तात्पर्य) ए छे के जेम ते स्त्रीए परिव्राजकनी उपर दृढ अनुराग कर्यो हतो, तेवो दृढ अनुराग जो जैनधर्म पर करवामा आवे तो अवश्य मोक्षपदनी प्राप्ति थाय

आ सबधमा जीर्ण श्रेष्ठीनी कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

जीर्ण श्रेष्ठीनी कथा.

ध्यात परोक्षेऽपि जिनस्त्रिभक्त्या, जीर्णाभिधश्रेष्ठिवदिष्टसिद्ध्यै ।
सिन्धुप्रवृद्ध्यै कुमुदौघलक्ष्म्यै, चकोरतुष्ट्यै विधुरभ्रगोऽपि ॥१॥

भावार्थ—"जेम वादळमां रहेलो पण चन्द्र सागरनी वृद्धिने माटे, कुमुदना समूहनी लक्ष्मी माटे (तेना विकास करवा माटे) अने चकोर पक्षीनी प्रीतिने माटे थाय छे तेम परोक्ष रहेला जिनेश्वरनु पण मन, वचन कायावडे भक्तिथी ध्यान कर्यु होय, तो ते जीर्णश्रेष्ठीनी जेम इष्टसिद्धिने माटे थाय छे"

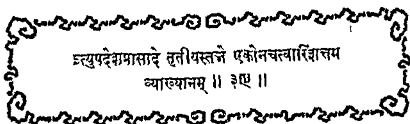
विशाला नगरीना उद्यानमा श्री महावीर स्वामी चातुर्मासी तप करी प्रतिमा धारण करी रह्या हता ते नगरना रहेवासी जीर्णश्रेष्ठीए प्रभुने जोइ विज्ञप्ति करी के "हे प्रभु ! आजे पारणा माटे मारे घेर लाभ देवा पधारजो."

कहीने ते श्रेष्ठी पोताने घेर गयो. भोजन समये तेणे घणी वार सुधी प्रभुनी राह जोइ पण प्रभु तो आव्या नहीं. त्यारे बीजे दिवसे ' आजे छठ्ठनु पारणु हशे ' एम धारी प्रभु पासे जइ बोल्या के ' हे कृपासागर स्वामी ! आजे मारा घरने अने मने पवित्र करवा पधारजो. ' ते वखते स्वामी तो मौन धारीनेज रह्या. (कांइ बोल्या नहीं.) ए रीते ते जीर्णश्रेष्ठी हमेशा आवीने जिनेश्वरने निमंत्रण करतो हतो. तेम करता चातुर्मास पूर्ण थयु त्यारे चातुर्मासने अंते तेणे विचार कर्यो के ' अवश्य आजे जिनेश्वरने पारणानो दिवस होवो जोइए ' एम धारी तेणे प्रभुने कह्यु के " दुर्वार ससार रूपी व्याधिने दूर करवामा धन्वतरी वैद्य समान हे स्वामी ! कृपा दृष्टिथी मारा सामु जोइने आजे तो जरुर मारी विज्ञप्ति मनमा अवधारजो. " एम कहीने ते पोताने घेर गया. मध्यान्ह समये हाथमां मोतीनो थाळ लइ प्रभुने वधाववा माटे घरना द्वार पासे ऊभा रही विचार करवा लाग्या के " आजे विश्व-बंधु भगवान अहीं पधारशे, तेमने हु परिवार सहित वदना करीश, पछी प्रभुने हु घरमां पधरावीश, पछी श्रेष्ठ भोजन अने जळवडे हु तेमने प्रतिलाभीश अने बाकी रहेलु अन्न हु खाइश. " इत्यादि मनोरथनी श्रेणीपर आरुढ थइने तेणे बारमा देवलोकने योग्य एवुं कर्म उपार्जन कर्यु. तेवामा श्री भगवान् अभिनव नामना श्रेष्ठीने घेर भिक्षा माटे पधार्या. ते श्रेष्ठीने घेर समय थइ जवाथी सौ जमी रह्या हता तेथी काइ अन्न नहीं होवाथी थोमा बाकी रहेला अडदना बाकळा वहोराव्या. ते दानना प्रभावथी त्या पच दिव्य प्रकट थया. ते वखते दुन्दुभिनो शब्द सांभळीने जीर्णश्रेष्ठीए विचार कर्यो के " मने धिक्कार छे, हु अधन्य छु, के जेथी मारे घेर प्रभु पधार्या नहीं. " एम विचारता तेना ध्याननो भग थयो.

अन्यदा ते गाममां कोइ ज्ञानी मुनि पधार्या. तेनी पासे राजाए कह्यु के " हे पूज्य ! मारु नगर धन्य छे के ज्या श्री महावीर प्रभुने पारणु करावनार भाग्यशाळी अभिनव श्रेष्ठी वसे छे. " ते सांभळीने ते मुनि बोल्या के " हे राजा ! एम न बोलो. जो के ते अभिनव श्रेष्ठीए प्रभुनी द्रव्यभक्ति करी छे, परतु भावभक्ति तो जीर्णश्रेष्ठीएज करी छे माटे खरो पुण्यवान तो जीर्णश्रेष्ठी छे. जो जीर्णश्रेष्ठीए ते समये भावना भावता देवदुंदुभिनो शब्द सांभळ्यो न होत, तो तेज वखते तेने उज्ज्वळ एवुं केवळज्ञान प्राप्त थयु होत. " आ प्रमाणे गुरुनु वाक्य सांभळीने राजा विगेरे लोको देवगुरुनी भक्तिने विषे आदरवत थइ पोताने

स्थाने गया

" श्री प्रभुने विषे भक्तियुक्त चित्तवाळो जीर्णश्रेष्ठी बारमा स्वर्गनुं सुख भोगवीने अनुक्रमे शिवपद (मोक्ष)ने पामशे. "



इत्युपदेशप्रासादे तृतीयस्तंभे एकोनचत्वारिंशत्तम व्याख्यानम् ॥ ३९ ॥

व्याख्यान ४० मुं.

पांचमा तीर्थसेवारूप समकितना भूषण विषे

तीर्थानां सततं सेवा, संगः संविग्नचेतसाम् ।
कथिता तीर्थसेवा सा, पंचमं बोधिभूषणम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" निरंतर तीर्थोनी सेवा करवी, तथा संविग्न छे चित्त जेनुं एवा मुनिओनो संग करवो, ते तीर्थसेवा नामनुं पांचमुं समकितनुं भूषण कहेलुं छे "

जेनाथी संसाररूपी सागर तरी शकाय छे ते तीर्थ कहेवाय छे श्री शत्रुंजय, अष्टापद विगेरे तीर्थो छे तेनी निरंतर (अश्रांतपणे) सेवा एटले यात्रा करवी. संविग्नचित्तवाळा साधुओनो संसर्ग करवो कह्युं छे के—

साधूनां दर्शनं पुण्यं, तीर्थभूता हि साधवः ।
तीर्थं फलति कालेन, साधवस्तु पदे पदे ॥ १ ॥

भावार्थ—" साधुओनुं दर्शन पुण्यरूप छे, केमके साधुओ जंगमतीर्थरूप छे. स्थावर तीर्थ तो काळे करीने फळदायक थाय छे, पण जंगम तीर्थ साधुओ पगले पगले फळदायी थाय छे. "

आ प्रमाणे सत्तीर्थनी सेवा मोटो गुण उत्पन्न करे छे, परन्तु अप्रशस्त तीर्थनी सेवा काइपण गुणकारक थती नथी. ते उपर एक दृष्टांत कहे छे—

लौकिक तीर्थसेवापर तुंबडीनो दृष्टांत.

न श्लाघ्यतीर्थैरमलीभवन्ति, जीवा दुरन्तैर्दुरितैः प्रलिप्ताः ।
मीष्ठा सुतीर्थे स्नपितापि मातुर्वाग्भिस्तनूजेन न तुंबिकासीत्॥१॥

भावार्थ—" दुरन्त पापोथी लिप्त थयेला जीवो प्रशस्त तीर्थो करवाथी पण निर्मळ थता नथी. माताना वचनथी पुत्रे सुतीर्थमा स्नान कराव्युं तोपण तुंबडी (कडवी तुबडी) मीठी थइ नहीं. "

विष्णुस्थळ नगरमा गोमती नामे एक सार्थवाहनी स्त्री परम श्राविका हती. तेने गोविंद नामनो पुत्र हतो. ते गाढ मिथ्यात्वी हतो. माताए तेने जैन धर्म पमाडवा माटे घणो घणो प्रतिबोध कर्यो, पण तेणे मिथ्यात्वनो त्याग कर्यो नहीं. एकदा गोविंद तीर्थयात्रा करवाने जवा तैयार थयो. त्यारे तेने तेनी माताए कह्युं के " हे वत्स ! गंगा, गोदावरी, त्रिवेणीसंगम, प्रयाग, विगेरे लौकिक तीर्थमां जळ, दर्भ अने माटी विगेरे वडे स्नान करवाथी हिंसा, असत्य, चोरी, विगेरेथी बंधायेलां पापोनो नाश थतो नथी. " आ प्रमाणे अनेक रीते उपदेश आप्या छतां ते पुत्रे पोतानो आग्रह मूक्यो नहीं, त्यारे तेने बोध करवा माटे एक कडवी तुबडी आपीने कह्युं के " हे पुत्र ! सर्व तीर्थोमा तारी साथेज विधि पूर्वक आ तुबडीने पण स्नान करावजे. आटलुं मारु वचन तारे अवश्य करवु." ते सांभळीने मातानुं वचन अंगीकार करी पोतानी इच्छा प्रमाणे गोविंद तीर्थ यात्रा करवा नीकळयो अने घणा तीर्थोमा माताना कह्या प्रमाणे तुबडीने पण पोतानीज जेम स्नानादिक कराव्युं. अने पोते केटलेक ठेकाणे मुंडन करावी हाथ उपर घणी छापो मरावी पोताना नगरमा पाछो आव्यो. पछी पोताने घेर आवी माताने विनय पूर्वक वंदन करी तुंबडीनु वृत्तांत कहीने ते माताने आपी. भोजन वखते गोविंद जमवा बेठो, त्यारे माताए पेली कडवी तुंबडीनु शाक करीने तेने पीरस्यु. गोविंदे ते शाक लेशमात्र चाख्युं के तरतज ते बोल्यो के ' अरे ! आ तो शाक कडवुं झेर जेवुं छे, ते खाइ शकाय तेवुं नथी. ' त्यारे माता बोली के " हे पुत्र ! जे तुंबडीने तें सर्व तीर्थोमां स्नानादिक कराव्यु छे, ते तुंबडीना शाकमां कडवाश क्यांथी ? " गोविंद बो-